MSS Sangrah in Hindi Language (Durlabh) Pages 240
by Raja Charan Dass - Pages 2040 one side
size 12" x 12" (not in Sanskrit)

Mangla Charan, Sri Krishan Ustat Brij Charitar, Amar Dham Akhand Dham, Ashat Mukti Guru Chela Sanvad, Guru Chela Sanvad Ashtang Dharam Jahaj, Eight kinds of Pranayam Kumkadh, Panch Pratiahar Angh Varnan, Dharna Khasht ~~Angh~~ Ka Angh Varnan, Sato Dhian Angh Varnan, Smadhi Dhian Angh Varnan, Karam Hath Cheh Yog Angh Varnan, ~~[illegible]~~ Khechri Vidhya, Agochari Vidya, Ashth Shidhyion Ke Nam, Shri Gyan Shodey, Hans Nad Upnishdey, Sarv Upnishdey, Brahm Gyan Sagar, Bhagat Padarath, Charo Yug Vritant, Nam Kritya Ang, Sheel Ang, Daya Ang, Bhagat Padarath Ninda Ka Pranam Sadhu Sabhav, Purash Gyan Manush Sovidha Gyan, Vishyon Se Man Hatana Gutka, Yog Sandheh Sagar, Nirgun Bhajan Mala, Gyan Ke Doar etc. 1396-MS.





बृज चरित्र इत्यादि

बृज चरित्र, रासलीला आदि

श्रीत्रिभुवनचंदायनमः श्रीसुषदेवायनमः।श्रीकृस्न
ायनमः।प्रहलादनारदपारासुरपुंडरीकःब्यासांबरीकसु
कसौनकभीषमकाव्यारुक्मांगदार्जुनबिसिष्टबिभीषण
ाद्याएतानहंपरमभागवतांनमामि।१ हरेरामहरेरामराम
हरेहरे।हरेकृस्नहरेकृस्नकृस्नहरेहरे।अथश्रीमहारा
जसाहिबश्रीचरनदासजीकृतग्रंथअनेकप्रकारलिष्यते
मथुरामंडलपरमपवित्रसकलसिरोमनधामब्रजच
रित्रबरनीते॥श्रीसुषदेवगुसांईकागुलाम॥अथश्रीचर
नदासजीकृतब्रजचरित्रलिष्यते।दोहा।दीनानाथअ
नाथकी॥बिनतीयहसुनलेहु॥ममहिरदेमैंआयकर॥
ब्रजकथाकहदेहु॥१॥चारबेदतुमकूंरटैशिवसारदा
सेस॥औरनसीसनिवायहूं॥श्रीकृस्नकरोउपदेस
॥२॥कैगुरकैगोबिंदकूं॥नतौकैहरिदास॥सबकूंनकूं
एकैगिनौं॥जैसैंपुहपऔरबास॥३॥नारदमुनिऔर॥
ब्यासजू॥किरपाकरहुदयाल॥अक्रूरसूंलौंजोकही॥
कहोमोहितत्काल॥४॥श्रीसुषदेवदयालगुर॥ममम
गपरईस॥ब्रजचरित्रकहतहूं॥तुमहिनिवाउंसीस॥५॥
सबसाधनपरनामकर॥करजोरहूंसिरनाय॥चरनदा
सबिनतीकरैबानीयोहबनाय॥६॥सदासिवब्रजमैं

रहै॥ कर गोपी को रूप॥ मूरत तो परगट भई॥ आप रहत हैं गु
प्त ९॥ बंसीबट ढिग रहत हैं॥ करत रहत हैं ध्यान॥ ब्रह्मा वेद पुरा
न के॥ परम पुरातन ग्यान॥ ब्रह्मादिक कलपत रहैं॥ वृंदाबा
न के हेत॥ सुष आयें ब्रजभूमि की॥ बिसर जाय सब बेद॥ ९॥ चौ
पैई॥ अब ब्रज की गत गाय सुनाऊं॥ बुध सुध हरि भक्त जु पाऊं
॥ चिंता मेटन भूम बषानी॥ रतन जीत मीनत जहां डरम छिनां नी॥ कम
लापत को अचक सुंदर सन॥ चरनदास ता कूं करै बंदन॥ मथु
रा मंडल ता पर रहै॥ व्यासदेव मुनि ऐसें कहै॥ बराह संहिता मैं
जो गायो॥ सो मैं भाषा बीच बनायो॥ गोवर्द्धन महिमा अति भारी
॥ चरनदास ता के बलिहारी॥ जा की महिमा सब नैं गाई॥ ज
हां कृस्न नित गऊ चराई॥ घर कबना यं थेन जहां राषी॥ आज ल
चिह्न देत हैं साषी॥ १०॥ दोहा॥ गोवर्द्धन बिनती करूं॥ बिन
ती मो सुन लेह॥ जगत फांस सूं काढ कर॥ नंद नंदन मोहि देह॥
११॥ चौपैई॥ हाटक रूप अडोल षरारी॥ जा की सरन रही ब्रज
सारी॥ ता दिन इंदर कोप पठायो॥ सकल मेघ ले ब्रज पर आ
यो॥ कर पल्लव पर गिरधारो। तब ही सरन रहो ब्रज सारो॥ दिव्य
दिष्ट बिन दिष्ट न आवै॥ कंचन रूप पुरान बतावै॥ मथुरा मंड
ल मैं गिर सोई॥ मथुरा मंडल अब सुन लोई॥ चौरासी कोसी प
रमानो॥ मथुरा मंडल ब्यास बषानो॥ हर के चरन सदा जो परसै

कृस्नरूपमैंनिसदिनसरसैसषासंगालियेहरिडोलैं।स
षियनकेसंगाकरतलोलैं।१२।।दोहा।।सदाकृस्नब्रजमैं
रहैं।।मोहिमिलतहैंनांहि।।लहरमिहरकबहूंकरैं।।आं
नगहैंमोरीबांहि।।१३ चौपई जामैंबारहबनबडभागी।।बा
रहउपबनहैंअनुरागी।।जिनमांहींहरिबैंनबजावैं।।मधुर
मधुरबांकेसुरगावैं।।चौथेपदकोहैवहस्वामी।।सबजीव
नकोअंतरजामी।।न कोंहेतरहैब्रजमांहीं।।गुप्तरहैबृंदाब
नठांई।।फिरतरहैसबहीबनसुंदर।।अंतरबन्यौरासकौ
मंदर।।जगतदिष्टसोंरहैअलोपा।।मिलहैताहिध्यानजिन
रोपा।।मथुरामंडलपरगटनांहीं।।परगटहैसोमथुरानांहीं
मथुरामंडलवहीकहावै।।दिब्यदिष्टबिनदिष्टनआवै।।१४।।
दोहा।।बनउपबनअबकहतहूं।।मथुरामंडलमांहि।।बिनांभक्त
ब्रजनाथकी।।क्यौंहींदीषतनांहि।।१५।।चौपई उपबनकदममंड
तबनहूजा।।नंदीसुरनंदबनसूजा।।मंगलआनंदबनवहीगायो।।ज
हांमहरजागांवबसायो।।संकेतबनसोसबजगजानैं।।बरसानौंस
बकोपहचानैं।।भोजनथालीवहीकहायो।।जहांबैठभातहरषा
यो।।सुगंधबनसोईकहावै।।आषंडबनपुस्तगादरसावै।।षेलन
कुसमबनषेलतरहै।।मोहनबनकेतीबनकहै।।दधिगरामब
नवहीकहायो।।लूटलूटजहांदधिषायो।।बछहरनबनवही
कहायो।।ब्रह्मामायादेषभुलायो।।१६।।दोहा ग्वालबालब्रह्माह

र।राषेकर्त्तुउराय॥मांनबूझटारोदियौ।लीन्हैंऔरबना
य॥१७॥चौपाई॥जबब्रह्मासमझोकरज्ञानं॥करताक
मसत्यकरजानं॥फिरचेतनहोयसीसनिवायौ॥आ
दिपुरसपरमोतमपायौ॥द्वादसउपबनगायसुनाये
मथुरामंडलमध्यबताये॥द्वादसबनकीगतसुनली
जै॥जिनमांहीहरध्यानकरीजै॥मइबनअतिमहासुहा
यौ॥श्रीबनलालनकेमनभायौ॥भांडीरबनकीमिह
मांगाऊ॥भिन्नभिन्नकहतोहिसमझाऊं॥लोहबनमि
हमांकहियतभारी॥महाबनसुंदरताअतिधारी॥ता
लरबनवहीदिष्टनिहारयो॥दानौधेनकजहांहरिमारयो
॥१८॥दोहा॥दानौंधेनकमहाबलीआवभगतहरहेत।मुक्त
काजसेवनकियौ॥तालरबनकोषेत॥१९॥चौपाई॥षिदर
बनजाननसबकोई॥फूलमालजहांलालनपोई॥बकुला
बनघनउरमनछायौ॥कुमदबनतोसूंकहसमझायौ॥
कामांबनलालनसुषदाई॥मधुबनलालनभूमसुहाई॥वृं
दाबनकीसोभाभारी॥रासरच्योजहांश्रीबनवारी॥बनउप
बनसोभागतईसा॥शिवब्रह्मादिकनायौसीसा॥इंदरबर
नकुबेरबिनानी॥इनकुगातमतब्रजकीजानी॥बलरावन
जहांसेवालाई॥ऊंचीनवनिधउनहूंपाई॥सातरिषिनमि
लसेवनकीन्हों॥ऊंचोआसनधूकोंदीन्हों॥२०॥दोहा॥

बहुत क सुर नर तिर गए॥ तप कर ब्रज को बीच॥ जात
पांत कुं को गिनै॥ ऊंचा नीचा नीच॥२१ बृंदाबन सब बसी
बडो जैसै दूध मैं घीव सब धर्म न हरम क्र जैसैं जैसे पिंड मैं
जीव॥२२॥ सब तीरथ जग मैं बडे॥ जिनहूं मैं है ईस उन
तीरथ फल कामनां। इंहि सेवत जगदीस॥२३॥ बीस को
स के फेर मैं बृंदाबन कों जांन॥ कुंज गली अति सोहनी
द्रुम बेली पहचांन॥२४॥ कंचन की जहां भूमि है धरैं सकै
गुन भेष॥ चरनदास सब लिख लिए गयो॥ दिब्य दिष्ट कर दे
ष॥२५॥ फूल जु फूले रहत बिनां। नांनां छबि बहु रंग अ
लि मलकत गुंजत फिरैं॥ भंवरी सुत लिये संग॥२६॥ रहत ब
संत जहां नित रहत बिहरत नंदकिसोर॥ कुहकत को
यल मगन होय बोलत दादुर मोर॥२७॥ तिंह मध बृंदाब
न महा॥ निज बृंदाबन जांन॥ तिरकौं नीबर नन किये
जो जन है परवांन॥२८॥ चौपई॥ जा की महिमा सब नै गाई
रास करैं जहां कुंवर कन्हाई॥ जमना जहां परकम्पां
दीन्ही॥ गुप्त प्रिया की लीला चीन्ही॥ जो परसत जहां ति
तउठ न्हाई बर पूरन पा[illegible] कुंवर कन्हाई॥ स्याम रंग नि
र्मल जल गहरी॥ बृंदाबन के दिग दिग लहरी॥ आसा
मनसा कर कोइ न्हावै॥ सहस सुरसुरी को फल पावै
दिब बृंदाबन दिब कालिंदी देखैं सो जो हैं मन नइंडी॥ कि

३
हेजः

नारनिकट है छैन की छांई ॥ आय परी जमनां जल
मांही ॥ २९ ॥ दोहा ॥ भक्ति बिनां पावै नहीं ॥ वृंदाबन
की संध ॥ बिन पायें निंदा करैं ॥ सो इजा मूरष अंध ॥ ३० ॥
॥ चौपैई ॥ झिलमिल सब की उठत तरंगा ॥ बोलत
दादर और सुर नंगा ॥ कालीदह मिह मां सुन चाता
सहस गंगा के फल की दाता ॥ बिहार घाट ॥ बसन ज
न करीजै ॥ जिह सेवन जम्नां बन दीजै ॥ बंसी बट ब स
हठ्ठ समकीजै ॥ तजै देह जब दरस न लीजै ॥ अब सु
न वृंदाबन की बतियां ॥ सीतल करी हमारी छतियां
॥ बन घट कुंज लता छबि छाई ॥ झुक टहनी धरनी पर
आई ॥ करत मंद समीर पयानां ॥ बसत सुगंध सबै अ
रघानां ॥ बरषत इंद्र तफुई सुहाई ॥ निकसत कोमल
गोन गुहाई ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ वृंदाबन में रहत हैं ॥ ज्ञानी गुनी
अतीत ॥ वृंदाबन कूं नो मिले ॥ कोऊ लहत जा जीत ॥ ३२ ॥
चौपैई ॥ नित बसंत जहां सुगंध सु एरी ॥ चलत मंद ज
हां पवन सुषाई ॥ पुहप बिगस रहे रंग बिरंगा ॥ लेत बा
स गुंजत सुर नंगा ॥ बोलत मंवर सहा धुन गाजैं ॥ मानों
अनहद की गत साजैं ॥ जुगनूं दमक चमक चकरावैं ॥
समौं जांन कर हरष बढावैं ॥ नांचत मोर करत चतुराई

पेमपसार मुदित मन नाई ॥ केइक कूक चक बोल निज बोले
केइक कुंजन क पर डोलै ॥ जुगल नाम लेकीर पुकारैं ॥
बारबार बन ओर निहारैं ॥ वृंदाबन चारैं जुग मांही ॥ गो
पर है सुष देव बताई ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ वृंदाबन की साध गत
। का पै बरनी जाय । जैसी जाकूं दिष्ट है । जै सोही दरसाय
। ३४ । जैसैं हरि मथुरा गए । सब जन बिलोको आय । काल
कंस की दिष्ट में । साधन प्रभु मूल षाय । ३५ । मथुरा में जो
धाबडे ॥ जिन्हैं मल्ल दरसाय ॥ नारिन दरसे काम सम ॥ प्रीतरी
त अधिकाय ॥ ३६ ॥ वृंदाबन सोई देषि है ॥ जिन देष्यो हरि
रूप ॥ उरल मदे वन कूं भयो ॥ महा गुप्त सूं रूप । ३७ । वृंदाब
न सेवन करै ॥ अमर लोक कूं जाय ॥ इहि जीतै हरम जे ॥
प्रेम प्रीत के भाय । ३८ ॥ चौपेई ॥ रसिक केल वृंदाबन मां
हीं ॥ अमर लोक की भात करां हीं ॥ अमर लोक का ति
लोक सत्यारे ॥ मथुरा मंडल अंस बिचारे । अमर लोक
के बिच है निज धामा ॥ जा को अंस वृंदाबन नामा ॥ पर
सोतम निज धामा मांही ॥ कारन प्रेम रहै ब्रज मांई ॥ प
रसोतम प्रभू लीला धारी ॥ वृंदाबन में सदा बिहारी नि
ज धामा की कहियत सोभा ॥ वृंदाबन में रहै अलोपा
दिब्य दिष्ट बिन दिष्ट न आवै ॥ सक पुरान बेद यो गा
वै ॥ गोलचौं तरा निज वृंदाबन ॥ ता पर वारैं अपनैं तन
मन ॥ ३९ ॥ चौपेई ॥ रहो चौतरा छिपवे ह ठांई ॥ जैसे

आगनका इकेमांही॥ तापरचौसठ घंभोसोहै॥ को
टकाम कोनिजमन मोहै॥ तायर रंगमहल अधिका
री॥ कुंदनरूपसरूपसुधारी॥ रंगमहल ओरखेत॥
नमांही पन्नालालबेलकीनांई॥ पन्नानगलागेजं
हांमोती॥ झलकैजगामगजगमगजोती॥ रंगमहलयौं
छिप्योगुंसांई॥ जैसैंलालीमिंहदीमांहीनितबिहारजहांक
रैंबिहारी॥ कृस्नकुंवरजहाराधाप्यारी॥ गवररूपवृषमांन
दुलारी॥ स्यामसरूपहैंकृस्नमुरारी॥ ४०॥ चौपई लीलांब
र ओढेंसंगराधा॥ दिब्यआभूषनरूपअगाधा॥ भूषनअं
गसंगलाजतऔसैं॥ चंदनिकटलघुतारेजैसैं॥ पीतब
सनपहरैंनंदलाला॥ मोरमुकटमाथेगलमाला॥ ज
रदबादलेकोअंगनीमां बखीगलजिंदेसुखसीमां॥ मु
तियनकीमालागलसोहै॥ नांकबुलाकअधरपर
जोहै॥ मकराकृतकुंडलसरवनमैं॥ जुगलदामिनी
मानौंघनमैं॥ स्यामसवंगमुजुलपैंप्यारी॥ बांकीभौं
हकुटिलअनियारी॥ ललचौंहैंऔरनैंनढरारे॥ रसभे
मांतेऔरकुजरारे॥ ४१॥ चौपाई॥ मोतीनासाकेबिच
लटकैबोलतबोलहोठपरमटकै॥ मुरलीमुकता
कीरसपीवै॥ चाहनवारेदेखतजीवै॥ गलेधुकधुकी
मुंदरफनके॥ तामधिकौस्तुभमनिअतिदमकै॥

अथकसुघरपहरैंहियचौकी॥बनमालाकाहियन
नौनिधकी॥गोलभुजनपरबाजूसोहैं॥पुंहचीकड
कनवाकरदोहैं॥पुंहचीटिगपहरैंजहांगीरी॥रतनन
चौककापीठहथेली॥लगीजंजीरमुंदरियनमेली॥से
हैंछापछलाऔरमुंदरी॥तहसतहरैसुंदरअंगुरी॥
४२॥चौपैई॥इकीसचिह्नचरननमैंधारैं॥झुनक
झुनकपैंजनझुनकारैं॥मंदमंदबिहसनमुसका
ई॥रनजीतमीतछबिकहीनजाई॥नितकिसोर
औरनितकिसोरी॥बादसबरसअवस्थाओरी॥राधे
भूषनछबिकाहागाऊं॥तावलेतमनमेंसरमाऊं
॥हूंमैंदासतावररनजीतभक्तदानमोहिदीजैरीत॥ब
ऊंतसषीजिनकेनिजसंगा॥रासकेलषेलैबऊरगा
बनकेचौसठषंभेमांही॥हेतअषंडरासवंहठांई॥झु
नकझुनकसषियनपगबाजैं॥घुंघरूअधिकमहा
धुनगाजैं॥४३॥चौपैई॥दिबभूषनपहरैंपियप्यारी॥
ससिबदनीतिरगुनतैंन्यारी॥नवलकिसोरगोरी॥
सुघरसयानीचातुरनारी॥दिबबस्तरऔरमधरस
रीरा॥अधिकरूपछबिगहरगंभीर॥कजियारीक
चलटकैंबैंनी॥कंजनमैंनमैंनपियदैंनी॥चूडामन
गहनेअतिनीको॥सीसफूलऔरबैंनीटीको॥नथ

बुलाक और बंदी ऊ कैं ॥ घूंघरवारी लट कैं अलकैं ।
मुष ऊपर अलकैं छबि ऐसी ॥ चंद्र चटी दो नागम जै ।
सी ॥ करन फूल संग झुमके मलकैं ठब साषियन के भूष
न झलकैं ॥ ४४ ॥ चौपैई ॥ चंपाकली औ लडीमाला ॥ चंद्र
नहार सु पहरैं बाला ॥ कंठला जेसैं गले जनेऊ । और हि
य चौकी महा अनेक ॥ फूल माल सषियां सब पहरैं गुजन
की माला हियल हैरें ॥ बांहन मैं बाजूबंध बांधें ॥ बाक ब
ला बाहन पर बांधें ॥ सदा सुहागन पहरैं चूडी सुबक पछे
ली बंगारी रूडी ॥ कंगनी और पहरैं जहांगीरी ॥ रतन चौक
आरसी धीरी ॥ छाप छला और पहरैं गूंठी ॥ नुह अनपहरैं
ज बक अनूठी ॥ पावन में मग नेवर बाजें । नष सष लै आभू
षन साजैं ॥ ४५ ॥ चौपैई ॥ झुनक झुनक नांचैं और गावैं ॥ ठु
मक ठुमक निरतैं और धावैं ॥ क थेई थेई थेई थेई करैं
कबहूं कर ऊपर कर धरैं ॥ कबहूं घिनन घिनन नंआ मो
रैं ॥ भाव बतावत तान बकूतोरैं ॥ कबहूं कर उठाय गत चालैं
संग नपंग बतावत हालैं ॥ हो अनुराग बकु गावैं ॥ घूघ
रू की गत धक बजावैं ॥ कोई नांचैं कोई गावैं ॥ कोई मृदं
ग कोई ताल बजावैं ॥ बैन सरू का झंकार राजैं ॥ को ऊंन बू
रन नारी साजैं ॥ उपंग लियें कर को ऊ सहेली । अमृतकुंड
ली को ऊ अलबेली ॥ कोई बीन कोई लिये मुचंग ॥ मदन

रूपसबहीनिजसंगा॥४६॥दोहा॥कहाबुधिकहाकहसकूं
रासकेलकोसाज॥बाजेहैंब[illegible]कूंभांतकेबरनतक्षावै।
लाज॥४७॥कबकूंकरसोकरमिला॥नतृतश्रीगोपाल॥क
बकूंबैठैसावरे॥नृतनसुंदरबाल॥४८॥कबकूंहेसकरथि
कटबुलावै।कबकूंफूलमालपहरावै॥कबकूंमंदमंद।
मुसकावैं।बैनसैंनदैनृतबतावैं।वृंदाबनमैंऐसीलीला
चरनदासकोजहांरसीला॥जोकोईइनकोध्यानलगावै
अमरलोकनिहचैकरपावै॥समटोमनकबकूंनहिफूटै सो
वनजागतध्याननछूटै॥जोकोईइनकोध्याननकरिहै।भ
रमभरमचौरासीपरिहै॥सुरनरमुनिसबहीमिलधावै॥शिव
वृह्मादिकअंतनपावै।वेदबिनायहभेदनपावै॥आपभरम
औरजगभरमावै।बेदपुरानसंहितागावैं॥चारौजुगहरभक्तब
तावैं॥४९॥चौपैई॥इतवितभटकेयाजगफिरे।कीनौंनाहिवि
चार।सत्यपुरसजान्यौंनही॥कैसैंउतरैपार॥५०॥चौपैई॥का
परबीत्योकलजुगआयो रजाकूंसुषदेवसुनायो कलजुग
कीइरबुधवरताऊं सुनऊपरीछतकहसमझाऊं औछीबुध
मनुषकीहोगी सकलविकलऔरमनकेरोगी सूद्रमगा
नमहाअभिमानी नहींमानहैंवेदपुरानी परमेसरकीनिंदाभ
करिहैं भूतमसानीचितमैंधरिहैं षेत्रपालभूमियामानैं कि
रतमकूंकरताकरजानैं परमेसरकीबाननमावै औसोकत

रतुरतब तावै ॥ कहैं रामभक हो है भाई ॥ हम भक्त कूं तुरेह दिषाई ॥
५१ ॥ दोहा ॥ चंद्र और हरि की बिसै सत दीपत्रौ भंड । चरनदा
स कहैं सुन आधरे कि नराचो ब्रह्मंड । पर भक्त बिना दीषै नहीं
इन नैन हरि रूप साधन कूं परगट भयो । बिना भक्त हरगूप । ५२ ।
चौपाई ॥ साध संत की निंद्या करि है । भजन करै तासूं बहु अरि
हैं ॥ कर अभिमान आप मैं जरि हैं ॥ गुर को कहो नैं कान हीं करि
हैं ॥ पंथ घडे करि हैं छत्तीसा ॥ भरम पूजन जहैं हरि ईसा । दिंभ झूठ ।
की सेकरि है ॥ झूठे पंथन मैं जारलिहैं । गऊ ब्राह्मण मिष्टला हो
ई । बाप पूजन मैं पर रिहै दोई । बिद्या दान कपट को हारा । राजा ।
डंड दुषित संसार ॥ बेद पढै करि हैं अभिमानां । हम पंडत औ
र सब अज्ञानां ॥ षट पुरांन भेद नहिं जानै । साधन सूं कगरो ब
ऊठानैं । ५४ ॥ चौपैई ॥ पंथ पुजाय हरि कूं बिसरावैं ॥ झुठे ब
द बिबाद बढावैं ॥ बिबचार न होय है बहु नारी ॥ बोलैं झूठ
बहु तपरकारी । सुष देव कहे राजा सूं बैंनां । सो अब देष
अपनें नैनां । राजा डंड बांध कर लूटैं । पूजैं भूत राम सूं छूटैं ।
गऊ बिष्टा सो घाती जानी ॥ पंडित देष बहु अभिमानी । दिंभ
कपट बहु पूजा देरी । कल वा जाहर पूजैं बैरी पंडत बेद प
ढैं बिसरावैं । स्यानैं भोपे कूं सिर नावैं ॥ हरि के साधन कूं बिस
रावैं तजैं राम औरन कूं धावैं ॥ ५५ । चौपैई ॥ हरि की भक्ति सदा
चल आई ॥ बेद पुरानन मैं जो गाई ॥ इन कूं सम भजन मं ऐजो ज्ञानी ।

ताम जिनकी भक्त बषानी॥ जिनकी मिहमां सबजग जा
नी। सब जानत हैं चतु[illegible]र ज्ञानी॥ पीपा सदनां सेना
नाई॥ धनजाट और मीरा बाई॥ नामदेव रैदास चमा
रा। तुलसी माधो मीर बिचारा॥ कूबा कुम्हार फरूस का
से क्रसम्मन रंका बंका॥ ५६॥ चौपई॥ करमैती
औ करमां बाई। दास कबीर बानी गाई॥ जैदेवा और
नरसी महता॥ दास मलूक कंकड मैं रहता॥ अंगदनें द्वकी
ल औरं रंकुगी॥ देवमुरार त्रिपटसबैगी। नरहर लालद
सह बेसा। रंगनाथ बनवारी हेसा॥ नानक सूरदास और
दादु। सनक सनंदन कहियें आद॥ धू पहलाद अंब्री
हनस्यौरी॥ हनूमान संकर औरगोरी। मौरधुजरा
जा संग्राम मां॥ बंकुतक भक्त औरजो भए॥ तेगनजान्
जात न कहे॥ कई कोट बैसनौ बांके॥ सबही गंगरा मुक
त कैनाके॥ चरनदास हरभक्त बिचारी। सुमरसु मरपु
ह चोनरनारी॥ ५७॥ दोहा॥ लिषपट समझ बिचार क
र॥ सदा करो हरध्यांन॥ कलम भक्त डिभक रगाहे। मिटै
सकल अग्यांन॥ ५८॥ कबित सवीत॥ मुकट जटित
सिर अधिक बि[illegible]राजत गहैं बसुरिया अधर धर॥
संष चक्र गदा पद्म बिराजत कोट मदन छबि वारत
नें। गिरवर नषधारे असुर नमारे संतनके उपकरनें

७१
छ्ज:

मन चरनदास चरनन को चेरो सदा है गिरधरसुरनं । ५८ ।
कबित्त सांगीत । कुमकुमम का बिंदि दिपै भाल उदद ज्ञा
नउतहरनंनं ॥ मकराक्रत कुंडल अति राजत कम क
दामिनी छबि धरनं ॥ कटि किंकल पैंजन पग बजत मुक
तमाल सुरसुर ॥ जन चरनदा चरनन को चेरो सदार है गि
रधरसरनं ६० ॥ कबित सांगीत ॥ सुंदर बाल लला लसं ग्याल्लि
यें रास करत मन मगनंनं ॥ घुमर घुमर फक फकक कर तन्नि
रत घुटर घुटरनाटक बरनं । मफर मफरफ नबजत ग
न्नत कनन कनन क कांकर नं ॥ जन चरनदास चरनन
को चेरो सदार है गिरधसरनं ॥ ६१ ॥ कबित सांगीत ॥ रा
सरचावैं सब सुच पावैं सावरे बदन छबि बरनंनं ॥ फ
धक फकधू धूकर निरतंता ना कि ती घिननननंनं । झुन
कझुनक नूपर झुन कारत झनक झन कझनक झ
नननंनं ॥ जन चरनदास चरनन को चेरे सदार है ।
गिरधसरनं ६२ ॥ कबित्त ॥ नंद के कुंवार कृतो क हं बा
र बार मोह ली जियै उबारओट अपनी मे कीजियै ॥
काम और क्रोध को काटि जम बेड़ा प्रभू मांगूं एक नाम
मोहि मकदा न दीजियै ॥ और की छुटावो आस सं
तन को दीजे साथ बंदा बन निवास मोहि फेर रूपती
जियै ॥ कहै चरनदास मेरी होय नाहि आस स्याम क

ऐसे प्रकार मेरी सरवन सुन लीजिये ।६३॥ कवित ॥ उं
ही हाथ कुसब्याह के पूतना के प्रान सोषे पावक कूं ची
प दही निज धाम कूं सिधारा है ॥ उंही हाथ श्रीधर को म
घ मा डो दही सेती । छाती पर पांव दे मरोरजी गडारा है
उंही हाथ कुबरी को कूबका ढसी धो कियो उंही हा
थ मस्त गजराज पै चमूह मारी है ॥ उंही हाथ बाह चरनद
स कहैं छाय गहो उंही हाथ जमना मैं नाथो नाग कारी
है ६४ ॥ इति श्रीमत्करसमंडल परम पवित्र सकल सि
मन धाम ब्रज चरित्र बरनंते ॥ श्री सुषदेव गुसांई का
गुलाम ॥ इति श्री चरनदासजी कृत ब्रज चरित्र संपूर्ण
समाप्तं ॥ = = = ॥ अथ श्री अमरलोक अषंड धाम ब
र्नते ॥ दोहा ॥ परणाम श्री सुषदेव कूं ॥ मो है गुरु दया
ल ॥ काम क्रोध मोह लोभ से । काटे मेरे साल ।१। बानी
बिमल प्रगास दी । बुध निर्मल कीनी तात । मोहि मूरष
अज्ञान कूं । नहिं आवत ही बात ।२। अमरलोक ब
रनन करूं । वे ही करैं सहाय ॥ दिष्ट हिए मम षोल कर
सब ही देह दिषाय ॥३। भेद लियो गुरदेव सूं । अनुत्तर
चूं गिरथ । साषी बेद पुरान मैं ॥ जानी सुनियो संत ॥४॥
चौपैई ॥ भेद अगोचर कोई कोई जानै गुरु दिषावैं तौ
पहचानैं पता कहै कछु बेद पुरानं ज्यौं का त्यौं उन

2

नबूषाना॥ कछुकछु मतमारगढूंमोषै॥ फिर मूलें स
मझैं नहिं सोषै। हरिकिर पा मैं परगट गाया। किया उजागर
षोल सुनाया॥५॥ दोहा॥ महा कठिन दुरगम अता अम
रलोक का भेद। ताको मैं बीजक कियो। गोषा भेद अभेद
द। निराकार तो ब्रह्म है। माया है आकार दो नौं पद ही कूं॥
लियैं। औसी पुरष निहार॥७॥ चौपैई॥ माया जीव दोनूं तें
न्यारा सो निज कहि पीव हमारा। अर अक्षर निह अक्ष
रती नैं। गीता पट सुन इन कूं चीन्हें। गीता अक्षर बूतावै
अर माया सोई दिष दिषावैं। निह अक्षर है पुरष अपारा
गानी पंडत ल्यो हबिचारा। जीव आतम परमातम दोऊं
परमातम ज्ञानत है कोऊ। आतम चीन्ह परमातम ची
न्हें। गीता मध्य क्रम सकह दीन्हें। माया उपजै बिनसै अ
तिही॥ चेतन ब्रह्म अमर है नितही। पारब्रह्म परसोत
मजो नै॥ चरनदास के सेम न मानैं॥८॥ दोहा॥ अमर
लोक बिच पुरस है॥ ब्रह्म जु सबके मांहि माया दरसत है
सबै॥ ब्रह्म दीषत है नांहि॥९॥ चौपैई॥ अब सुन अमर
लोक की बानी तिरगुन रहत न परमपद जानी। तेज पुंज के
ऊपर राजै। अहं बैराठ सूं बाहर गाजै॥ ता कूं जोन कहत
नर सोई। तेज पुज कहियत है सोई। सूरज मंडल नाहि ब
ता वैं। जोगी जो गजुगत सू पावैं॥ सूरज मंडल जै है चीरा॥

बा लोकैं कोई पैहै बीरा। कोट भांन को सोत जियारे
तेज पुंज को रूप बिचारो। तीन लोक सूं बाहर होई। सा
त भंवन सूं बाहर सोई। ता के ऊपर अबचल लोका। पा
प पुन्य दुष सुष नहिं सोगो। काल न जाल अबंध नहिं
होई। रनजीत दास जहां सुरत समोई। महा अगोचर
गुप्त सूं गुप्तं। जहां बिराजत हैं अगवंता ॥१०॥ चौपई ॥
अमर लोक निके लोक कहावै। चौथा पद निरबांन ब
तां। अगम पुरी बेगम पुर ठां के। कहा बुध सो सब गात
गा के। कछु यक बरबंता के वाको ॥ ब्रह्मा सुत सत
जुग मैं भायो॥ पुहप दीप है सेत अकारा सब ब्रह्मं
डन सूं है न्यारा। जो कोई जाय बहुर नहिं आवै। आ
वागवन सकल बिसरावै। जो कोई गयो बहुर न फि
आयो। देही दिब्य रूप अति पायो। सोलह बरस उम
र निरंतर है॥ अजर अमर निध आनंद लहै। बूढ़ बा
ला होय न तरनां॥ षोडस भांन रूप जहां धरनां ॥११॥ चौ
पैई॥ तत्व सरूपी काया पावै। भव सागर मैं बहुर न
आवै। पांच तत्त बिन है थिर थायो। और [illegible] दी
नावह स्पोन किरत बनायो॥ ओर छोर कछु छेदी घत
नां हीं॥ कब स हैं और कब सूं नां हीं। है चंडोल मरजा
द न ता की॥ बेमरजाद नवेद यौ भाषी वे द पुरान पारन

हिंपावैं। कछु कछुधरध्यांन बतावैं। अनंत भां
नकोसोउजियारे। पिंड ब्रह्मंड दोउतैं न्यारे। लोक
मध्य अबचलनिज धामा। सेत रूप अगमपुर नामा।
अगमपुरी। निरधारा सूंची॥ हंसलहै जिनकी मरउ
ऊंची॥ बेहदलोक बन्यो अतिभारी। असंख भान
की उजियारी॥१२॥ सोहद्द कालतो है नहीं। बेहदक
लतो नांहि॥ ध्यानसरूपी कहत हूं बैन सैंनके मा
हि॥१३॥ चौपई। अति उजलर बिदिष्ट न ठहरै। मन नहीं
रालागे जहा गहरै॥ कईरंगके हीराभाषे॥ कलसक
गूरअस्थिर राषे॥ ताभीतर बहुत रमअसो। का। अ
हौहूफल ललोनि रेगा॥ कलप बिरछबहुरंगा बि
रंगा॥ फल औरपान फूल इक संगा। कोमलदल
सोभाअतिभारी॥ अजरपुर सदर सन अधिकारी
चेतन रूपा हरषअतिछांई॥ साधर हत तितनकी
परछांई॥ षोडसभांन समदेह स्वरूपा॥ हरि रस सब
मांते निधरूपा। उपन हृद्द नके निच्च निच मंदर। अ
नगिन महलन महा मठ सुंदर १४ चौपैई॥ महलम ह
लमहल परफजा पत्ताका परसोत मपुर षना वलि
षराषा फजाषता कालहर तजैसैं सिमत्त बीज
रीबहुत कजैसैं रतन जटित्त तिन अंगनाई बेठ

तनउठत्न्चलतहरषाई॥कामक्रोधनहिंलोभछ्र
धीरा॥निर्मलदिसासीलिगुनधीरा॥जहंनआलस
नींदजंभाई॥भूषप्यासमलतानहिंभाई॥मैलपसी
नांअंसूनांहीं॥दिब्बदेहधररहेगुसांई॥एकरूपए
कैगातपांई॥एकबरनएकैसबदोई॥संसैसोगारोग
नहिंदहैं॥मगानरूपमनआनंदलेहैं॥१५॥चौपैई॥
षोडसबरसअवस्थाजितहीं॥गुनयौरवहरजनके
अतिहीं॥दिबभूषनदिब्बबसरअंगा॥स्यामगात
सुंदरसुढंगा॥बिअंगाजुलफैंलटकारकीजियारी॥
कुंडलछबिसोहतअधिकारी॥नासामोतीसुबकसु
ढारा॥सुंदरतिलकलगतअतिप्यारा॥दीरघदिरगकछू
आरुनाई॥माथेमुकटजटितललिताई॥घरघरछिबआ
सनसिंघांन॥औरमहासुषहैहरदासन॥१६॥दोहा॥भै
मेटनऔसतिमहरन॥तुमहिनिवाजंसीस॥चरनदास
चरनमपस्यो॥भक्तकरोबकसीस॥१७॥सुषदेवगुरू
किरपाकरी॥दीनौंभेदलषाय॥साधनकेपगपूजतैं सफ
लब्याधमिटजा॥१८॥आसपासहरजनरहैं॥मध्यईसद
रबार॥रसिककेलबकुंजहैं॥ललितबारहैचार॥१९॥
राजमहलजनपतरहैं॥कापैबरनौंजाय॥गिनतसारदाछ

बिअधिकगौरीसुतपकजाय।२०।चौपाई।।अनंतभांनकोसे
उजियारो।वामंडलकोरूपबिचारो।समातुलऔरकासकूंलाऊं
बैंनसैंनदेताहिबताऊं।चंदसूरवंहठौरनचीन्हैं।।द्रिष्टांतदैनं
कूंपटतलदीन्हैं।।आदिअनादिपुरातमधामां।जैसैंआदिपुर
सघनस्पामां।सेतरूपसरूपसुगंधा।।सहस्रमहकजहांउठत
सुगंधा।चारद्वारबऊबाजनबाजैं।अनहदशब्दमहाधुनगाजैं।
दिब्यरूपजोलगेकिवाड़ा।तिनकेआगैबागसुढारा।हरेबाग
अद्भुतहैभाई।दूजेद्वारमहाअरुनाई।।२१।चौपई तीजेद्वारबा
गपियराई।चौथेकूंदोहैपिरथाई।।वनबागनकेआसापासा।
बहुतभांतवनजहांसाधनिवासा।मैड़ीमंडपबहुतसुढारी।से
तबरनसुंदरअधिकारी।साधसंतजहांहरजनपूरे।दासभाव
नांसूरे।षोडसभांनकीसुंदरताई।जगतजीतपुंहचैजोजाई।।सखा
भावपुंहचतवंहठांई।सखीभावभीतरकूंजाई।धरैसरूपअन
पमनारी।सदासुहागनहरपियप्यारी।।परमपुरषोपरसो
नमपावे।।निकटरहैनितकेलबदावैं।।२२।चौपई।चारैंमुक
तजहांकरजोरैं।भावबनायतांनबहुतोरैं।।दरसनकारनकी
सुषदाई।धरसतपुरषाई।रतनजड़ितजहांभूमिसुहाई।कोट
भांनछबिरहतलजाई।एकसमोंनितरुतछबिपावत।।सीत
उस्नपावसनहिंआवत।लतबसंतपीरीछबिसोहै।।बनघन
कुंजलतामनमोहै।निजबृंदाबनहैवंहठांई।सदाबसोमेरे

उजारे है ह

मनमांही।दिब्यफूलफूलेबहुरंगा।बिनरुतफूलेरंगबिरंगा
सकलसषीबिचरतहरसंगा॥गौरीसषीस्यामहरअंगासन॥
दोहा॥पुहपजुफूलेनितरहैं।मोरैनांकुम्हिलांय॥कईबरन
कईरंगसें।अतिसुगंधहरषांय॥२४॥चौपई।उनपुहपन
कोनांवनजानें।कहानांवलेताहिबषानें।बहुतबहुकुं
जनघनछांई॥फलअौरफूललगेउनमांही॥काहूद्रुम
नफलनहिंफूला।पुहपरूपधेआपहीफूला॥कोउलाल
रूपकेछायो॥कोउसेतरूपमनभायो।रंगरंगकेछत्रबषां
नैं।सोपरसोतमकेमनमानैं।बनकेमांहिबहुतजहां।
क्यारी।पुहपरंगछबिन्यारीन्यारी।कईभांतकीबासतरं
गा॥मगानरूपबोलतसुरसंगा।बनबिचसेतरूपछबिनांनां
गोलचौंतरोरूपनिधानां।इच्छारसचेतनपरमसदोला।को
टभांनछबिअमरअडोला॥२५॥चौपई॥जहांपरकमां
सषीसहेली॥बारहभांनरूपअलबेली॥दिब्यदमकजहां
हीरालागे।सातरंगकेझिलमिलताके॥कुदालालसेत
अौरपीराहरितस्यामलहरीअतिधीरा॥तापरचौसठषं
भोदमकैं।मांनौंकोटभांनछबिजमकैं॥षंभनलगेला
लअौरमुक्ता।पन्नांलगेबेलकीजुगता।मूंगालालपिरो
जाभारी॥ध्यानधरेताकोनरनारी॥एसबलगेबषानें।
कैसें।जैसीजुगतलगेहैंजैसें।जड़ेलालनकीबिद्रुमडा
रीपन्नांपातबहुरंगतधारी।चुंनीपचरंगफूलसुहाए।फल

मुकताहल कुकत कुकाए ॥ और बनी बहु चित्र
(का)री बेल बंक बूटा अधिकारी ॥ हीरा मोती चेतन होइ ॥
मानैं साधू बिरला कोइ ॥१८॥ दोहा ॥ ताकी छबि अ
तिललित हैं ॥ सो आसरस सुजांन ॥ लगो चंदोवा दि
ब्य अति चेतन करै बखांन ॥२७॥ चौपैई ॥ लगो चंदे
वा झालर मोती मानौ उडुगीन किलमिजोती ॥ कालर
रंब तीचंदोवा केरी दिब दिष्ट कर साधन हेरी ॥ तापर
रंगमहल की सोभा चेतन आनंद सुष की गोभा ॥ अ
स्थिर इक सरं भीत सुढारे बैनै करै घाआ ॥ बुत बा
री ॥ अजब कंगूरा सुबक सुढारे चौसठ कलस लाल
गै अति प्यारे ॥ रतन जटित की षिडकी सोहैं ॥ ताके
आगे दिनकर को है ॥ भीत मोषा कलस नमां ही ॥ नापप
नां लागे सब ठांई ॥२८॥ दोहा ॥ मनहीरा मानक लगे ॥ रं
गमहल के माहि ॥ बिन पुंहचै निज धाम के ॥ केयों ही दी
षत नांहि ॥२९॥ आसपास बहु कुंज हैं ॥ बीच लाल को
धाम ॥ चरनदास कूं दीजियै ॥ सषियन मैं बिराम ॥३०॥
जैसें चौसठ षम्ब हैं ॥ तैसें करूं बषांन ॥ छत्र सिंघासन
बरनवं ॥ औ रस पियुन की आन ॥३१॥ चौपैई ॥ तीस
षम्भ में षंभा बीस ॥ तामें चौदह षम्भा ईस ॥ परम बिछौ
नां है थिर धारा ॥ मानौ सूरज लछबि छाए ॥ तापर सिं

घासन बडभागी ॥ सेत रूप चेतन अनुरागी ॥ सिंघासन पर
कुछ विछायो ॥ सोभा ताकी कहत लजायो ॥ ध्रुव ऐसो दृष्टांत
कियासी के [illegible]न सो है रूप पर पिय के ॥ पिय की सोभा कहा
बषानूं ॥ आदि अंत ता को नहीं जानूं ॥ अजर पुरस परसोतम
स्वामी सब जीवन को अंतरजामी ॥ पारब्रह्म अबचल अ
विनासी ॥ वा पै अंग रूप को रासी ॥ ३२ ॥ चौपैई ॥ गोरा राधा स
अस्याम घन ॥ सिंघासन पर ललित मुहिम न ॥ आसन जहां
अषिल जगदीसा ॥ मुकट चंद्रका सोहै सीसा ॥ मकराकृत
कुंडल छबि ऐसी ॥ जग में कहा बषानूं जैसी ॥ जुलफैं स्याम
न बलम कारी ॥ कजियारी औ रघूघरवारी ॥ सहज सुगंधर
है महकाई ॥ लाबी चिकनी औ रबलषाई ॥ बांकी भौंह कु
टिल अनियारी ॥ तिरछी पलकैं लागैं प्यारी ॥ रस के मा
ते घूम घुमारे ॥ ललचौहैं द्रग हैं कजियारे ॥ बांके दीरघ औ
रल लचौहैं ॥ चितवन सखियन के मन मोहैं ॥ सुबक कबु
लाक नाक मे सोहै ॥ ध्यान करत मेरो मन मोहै ॥ ३३ ॥
चौपैई ॥ बिजरी सी मुसकान पिया की ॥ मन षैंचन औ
र भालया की ॥ बदन स्याम घन कहा बषानूं कोट अं
नं छबि मुष परवारूं ॥ त्रिबली मां अंग माहीं सोहैं ॥ सूर
ज कोट कला छबि मोहै ॥ कंठ ही कंठ ध्रुकधुकी जग
मे ॥ ता मधि कौस्तुभ मनि अति दमकै ॥ मुक्तियन की मा
ब

लाबनमाला॥झूलसै दे सुधामकी बाला॥दिब्बब दीगल
जिरजडाऊ।नौरतन नके बाजूबाङू॥पुहचीक युकहा
छबिगाऊं॥समतुलता की कहाबताऊं॥दिबजहंगीरी
दोऊ करमांही॥ताकी समकुछ कलमैंनांही॥३४॥चौपै
ई॥रतनचौकमेलीला बिराजै॥सो भाग्य वतमो मनला
जै॥रतनचौकहैपीठ हथेली॥लागीजंजीरमुदरियन॥
मेली॥चौकीसुघर हियेपर राजै॥कटकिंकनघुंघरू
कनबाजै॥जुगलचरनपैंजन झुनकारैं॥दिबटेरेनि
नमैंठनकारैं कोटचंद दसनषयरवारूं॥तलवनचि
हनइकीसलिहारूं॥बावें श्रीराधिकाप्यारी॥कोटचंदछ
बिमुषपरवारी॥जुगलसषी लियैं चंवर दुरावैं॥हो सेहू
रषमहासुचपावैं॥बंन बंनादि गसबीसहेली॥चौदहषडीई
सञ्जलबेली॥३५॥चौपई॥औरसषी बहुतकावहठाऊं।सोना
जिनकी कहतलजाऊं॥नित्तकिसोरीगोरीसारी।पांचतत्ति
रगुनतैंन्यारी॥दिबबस्तरदिब्यभूषनजानां॥अधिकरूपछबि
बारहनांनां॥कजियारी कचलटकैं बैनी॥मुतिपनमांगन
रैं छुबिपैनी॥चडामनगहनौं अतिनीको॥सीसफूल अरु और
बैनौटीको॥करनफूलसंगबंदीलागी॥झुमकेघिरकैं म
हासुभागी॥अंजनआंजैंनैंनन टूरारेतीषेअनियारे पिय
प्यारे॥घूघरवारी अलकैं लटकैं॥बैसरनासाछबिलि
यैंमटकैं॥३६॥चौपैई॥चंपाकलीनौलडीमालाचंद

नहारसुपहरैबाला॥ कंठलाजैसेगलेनेक॥ औरहिये
चौकीमहाअनेक॥ सषीसिंगारहारसबसांधें॥ बाजूबंध
बाहनपरबांधें॥ सदासुहागानपहरैंचूडी॥ सुबकपछे
लीबंगारीरूडी॥ कंगनीऔरपहरैंजहागीरी॥ रतनचोक
छबिलागीजंजीरी॥ छापछलाऔरपहरैंमुंदरी॥ बुहस
तुपहरैंसुंदरआगुरी॥ पांवननमैपगनेवरबाजे॥ नषसष
लोआभूषनसाजे॥ औरसषीबिषरीबनमांहीं॥ सोकात्त
बिधगीनीनजाहीं॥ ३७॥ दोहा॥ सुंदरछबिपियरसबस
न॥ कुंडसषियनकोजांन॥ कोईपुंजकूदेबसन॥ सुघरसं
वारीआंन॥ ३८॥ लालबसनबहुतकसषी॥ सेतबसनब
हुनार॥ लीलबसनबहुभामिनी॥ सबकोरूपअपार॥
३९॥ हेरेबसननारीघरी॥ घनीगुलाबीभेस॥ बहुतकु
डकईरंगसों॥ गायासकेनहिसेस॥ ४०॥ चौपैई॥ निजब
नचौसठषंभेमांहीं॥ होतअषंडरासब्रहठांईं॥ कुंडसबै
यैबनबनआवैं॥ फूलसफूलसलालन[illegible]गाधावैं॥ रा
सकेलषेलैबहुरंगा॥ सदाबिहारकरैंपियसंगा॥ कब
हूघूमरघुमरघुमरावैं॥ नैननसैंनदैभावबतावैं॥ कब
हूथेईथेईथेईथेईकरैं॥ कबहूअंगुलीनासाधरैं॥
कबहूकरउठायगतचालैं॥ सांगउपंगबतावतहालैं
कबहूठुमकठुमकपगधावैं॥ घूघरूकीगतअधिक
बजावैं हो अनुरागनीगावैं॥ बाजेअद्भुतअधिकबजा

अमरलो

दो॰ ४१ ॥ दोहा ॥ कहाबु ॥ कहा कहसकूं ॥ रासकेलके
साज ॥ अनुसलीला होय रही ॥ बरनत आवै लाज ॥ ४२ ॥ अ
षंड धाम लीला अमर ॥ नितहूं दाव नरास ॥ नित बिहार
जहां होत है ॥ चरनदास को बास ॥ ४३ ॥ गौरी सुत न हो गा
सकै ॥ नहीं सारदा बाम ॥ चरनदास कहा बुध है ॥ बरन
सकै निज धाम ॥ ४४ ॥ बडी दया मोपै करी ॥ कान्हकुंवर
सुन लाल ॥ बानी आप बनाय कै ॥ कीनो मोहि निहा
ल ॥ ४५ ॥ मम हिरदे मैं आय कै ॥ तुम्ही कियो परगास ॥ जो
कुछ कहे सो तुम कहो ॥ मेरे मुष सू भास ॥ ४६ ॥ आदि
पुरस परमातमा ॥ तुम हि निराक माथ ॥ चरनन पास नि
वास दे ॥ कीजै मोहि सनाथ ॥ ४७ ॥ तुमरी भक्ति न छाडूं
तनमन सिर क्यों न जावै ॥ तुम साहिब मैं दास हूं ॥ भलोबरैयों
है दाव ॥ ४८ ॥ सुषदेव गुरु किरपा करी ॥ मूरष भयो प्रबीन
मम मस्तग पर कर धर्यो ॥ ज्ञान दिपट आधीन ॥ ४९ ॥ को
टनों व को फल लहै ॥ तिरथैनी अस्नान ॥ सो भाग पावै लो
क की ॥ मूरष होय सुजान ॥ ५० ॥ पढै सुनै जो प्रीत सों ॥ पावै
भक्ति हुलास ॥ नित उठ कर तू पाठ यह ॥ चरनदास कही
भास ॥ ५१ ॥ प्रेम बढै अघ सहरै ॥ कलह कलप तो जाय ॥ प
ठकै रैया लोक को ॥ धका न करत साय ॥ ५२ ॥ इति श्री अमर
लोक निज धाम नित्य असथान पर सोतम पुरष बिराजमान
मा प्रेम नरोत्तर्थ मोह इति श्री सुषदेवजी के दास चरनदास कृत

अमरलोकलीलासंपूर्णसमाप्तं ॥ ॐ ॥ अथषट्मुकु
ताश्रीचरनदासजी सतगुरुन्चेलोंकी गोष्टलिष्यते

(3)

छप्पै ॥ बोधरूपसोपुरषम हाबिज्ञानउजपार ॥ अज्ञान
तिमरकूंहरकरनज्यौं कोटप्रभाकर ॥ सोवेजनकबिदे
हदेह्मजिननारीकीनहींरहे राजकेमांहिसुरतकबहूंन
हिंदीनहीं ॥ औरजिनकैसिषसुषदेवहै सगावृतमतपर
गटकियौ ॥ चरनदासपरनामकरत भ्रमनधनवारनादि
यौ ॥१॥ छप्पै ॥ गंगाजमनकेबीचजहां निजडेरादीन्हां ॥ म
नमातावकुरूपधैंचआपबसकरलीन्हा ॥ गगनगरजघ
नघोरतूरअनहदधुनबाजा ॥ जातैपांचैपचीसभये
पूरनसबकाजा ॥ अष्टजोगकूंसाधतुम भएरूपअद्भुत
बरन ॥ जनक्षौंनांपरनामकरसुचरनदास तारनतरन
र ॥ चौपैई ॥ महाराजगुरबंदनकरूं ॥ चरनतुम्हारेमाथा
धरूं ॥ चरनदासगुरसीसनिवाऊं ॥ देपरकम्मांबलिब
लिजाऊं ॥ जोकोईसरनतुम्हारीआवै ॥ दुबधादुंदतिमर
नसजावै ॥ दासतुम्हारेबिनतीकरै ॥ तुमकिरपाभव
सागरतिरै ॥ तुमप्रगटेजगमेउजियारा ॥ ज्यौंसूरजनिकै
सं सैसारा ॥ सोवततैंनरदियेजगाई ॥ जीवनबार भक्तिफै
लाई ॥ किरपासागरसिंधअपारा ॥ आमीपिवायकरे
मोहिपारा ॥ दूसरकुलजनमैंसुषदाई ॥ जनक्षौंनांकीक

सहाई ३ ॥ दोहा ॥ जोजो आए तुमसरन । सोसोउतरे
पार ॥ बहुतक नरगुरसरन बिन डूबना ए मझधार ॥ ४
चरनदास सतगुरदेवजी ॥ पंथबतावोमोहि ॥ अपना आपकी
दीजिये ॥ तममन अरपूंतोहि ॥ ५ करजोरूं बिनती करूं
भक्तकरोमोहिदान जनछोंनां आयासरन ॥ आपनो
करमोहिजान ६ चौपई ॥ ब्रह्मरूप कैसे कारपै है जी
वभाव कैसे नसजै है ॥ हूं मैं कौन कहातें आयो ॥ जैहूं
कहाकौनपुनलायो ॥ तत्पतपर लै कैसें होइ ॥ किरपा
करेसुनावोसोई ॥ जीवब्रह्म कैसें होय जावै ॥ देहम
मतकैसें नसजावै ॥ ज्यौं का ज्यौं दीजैसमझाई ॥ तासूं
पीरअवद्याजाई ॥ त्यागकहाकहापुनराषूं ॥ कासूंमौं
नगहूंकहाभाषूं ॥ संजमकहाकौनबिधसाधूं ॥ अंत
रध्यानकहा आराधूं ॥ चरनदास गुरतिमरनजा
वो ॥ आतमज्ञानध्यानसमझावो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ निरगुन
सर्गुरूपदोनो भेदबताय ॥ छौंनां परकिरपा करो ॥
पूछतहूं सिरनाय ८ ॥ सीसनिवाबिनतीकरूं ॥ अरज
करूंमहाराज ॥ संसैसकलनिवारकर ॥ छौंनांके कार
काज ९ मुक्तभेद षटरूपहै ॥ भिन्नभिन्नकहदेव
कोकरनीकहावासहै ॥ कहोमोहिगुरदेव ॥ १० ॥ गु
रबचन ॥ दोहा ॥ धनछौंनांपूछनकारी धन तुम्हा

रैबुध॥ सरब्रनदेचित्तव्रनकरो॥ सकलकहूमेंसुध
॥११॥ छियीबातसबहीकहूं॥ कछूहरामूमेद॥ मे
रीतेरीमोहकूं॥ सुनेंसुमेटैभेद॥१२॥ जनममरनदुख
सबमिटै॥ चौरासीकेत्रास॥ ज्ञानहोयजोगनछुटैं॥
पावैमुक्तनिवास॥१३॥ कुंडलिया॥ सालोकमुक्तसामी
पता॥ औरकहियतसारूप॥ चौथीतोसाजुज्यहै॥ क
रनीमहाअनूपकरनीमहाअनूपरहतकोईबिर
लापावै॥ पंचमुमुक्तबिदेहसोईसतगुरसमजावै॥
छठीसुजीवनमुक्तहैअंरुजभेदअपार॥ भिन्नभिन्न
सबहीकहूंसुनछौंनेंतरधार॥१४॥ दोहा॥ सालोकमु
क्तपहलेंकहूं॥ सबसेंछोटीहोय॥ संसारीजानेन
ही॥ समझैसाधूकोय॥१५॥ चौपैई॥ करनीतोहिब्रज
ताऊंसारी॥ जोहरिजीकूंलागेप्यारी॥ जासूंरीझेंहरि
रया॥ चरनकंवलकीकरिहैंछाया॥ जीवतसुखज
गतमेलैहैं॥ अंतलोकमेंबासादैहैं॥ तनछूटैंजोलो
काबिराजै॥ बैकुंठलोकमेंनिर्भैराजै॥ उतकेसुषसो
कहाबतावै॥ जोकोईजायसोईफुनपावै॥ करनी
कहूसुनोअबजेती॥ निहचैमुक्तहोयजासेती॥ ती
रथबर्तकरैचितलाई॥ परसैबिष्णुमहासुखदाई॥ आ
नदेवकीवारेनपूजा॥ हरिबिनराखैभावनदूजा॥ प्र
भुचरनकंवलचितला॥ वैनितदिनगोबिंदकगुनग

चरनभक्त

वौ॥चरनदासकहैसबसुनलीजै॥छौंनांमननमैपि
हचैकीजै॥१६॥दोहा॥कथासुनैचितवनकरै।क
रेकीरतनध्यानकीरतकरसुमरनकरै।नानेंहपछ
कीआंन॥१७॥कपटकुटलतासबतजो॥सुबुधराख
मनमांहि।ऐसेंपरमारथसधै॥स्वारथसभीकसां
हि॥१८॥चौपैई॥सीलछिमाजतसतसूरहो।स
तसतमुखसेतीकहो॥परद्वारापरधननलैडरो।मद
नमोहतजभोजनलतिरो॥हरिचरचामैमनकूंजु
रै।कुबुधभरमतासकलनिवारै॥रामनामऊं
तरगाहरोषो॥झूठबचनकडवामतभाखो॥नाम
समांनऔरनहिहोई॥नरनारीसुमरैकेयोनको
ई॥नामबिचारैआपापावै॥देहसंजोबसकूंबु
कै॥नामबिनांकोईसाधनसाधै।जैसेंबांझपूत
आराधै॥चूनबिनांजैसेंतुसकूटैपावैकाहाम
गानकूंलूटै॥१९॥दोहा॥जोगजज्ञतपनापबिन।स
बीसुफलहोजाय।फलसैनलकोसेयकरक
हानिकासेमाहि॥२०॥नामलियैंपातगकटैं॥पुह
चैहरिकेदेस।छौनांकेगिरहीजयो॥कैसुतीन
केभेस॥२१॥भूषेभोजनदीजियै।प्यासेदीजेनीर
छोनामीठाबोलियै॥यौहजडायेचीर॥२२॥चौ
पैई॥रोटीमेंटुकरादेखाबो॥सरधाहोभरनदरजि

वावै॥ बिनसरधा कोइ इनकीयो॥ यह उपदेस सु
सहमैं दीया॥ जातबरनमैं भेदनराषै॥ झूंठा मांगो
भिछ्या भाषै॥ तनमनबचनसकलसुषदीजे॥ सब
जीवनकी रिछ्या कीजे॥ तजअभिमांनदीनतागहि
यै॥ जो कोई कहै तो सब कीसहियै आगसैं हंसदीजे भाई॥ पाप
तापदुषजांहिनसाई॥ है सराय काजगतबसेरा॥ यांनहिंतेरा
निहचलडेरा॥ चरनदासकहैं ऐसा कीजे॥ जोडजोडघर
मैं मतधरीजे॥ २३ दो॰॥ जो कुछ बने तो पुन्य कर॥ जग
सुकृत के दाय॥ अबतीरथकी कहतहुं॥ जाबियहन्नर
न्हाय॥ २४॥ चौपैई॥ चरनपद्मादेतीरथजइयै॥ मा
चीपलकरमसुषकहिइयै॥ पापपतिग्रहकोही ली
जै॥ चलतैं दयाधर्म ही कीजै॥ जे जनवरै ठौर कर बासा
तीरथ रजनहिं कैं रैनिवासा परबी के दिन तीरथ जावै पह
लै आप नीकैरहीन्हावै॥ महासुष होकीजै दरसन॥ तीरथ
थदेव होय जब परसन॥ फूलपांनमिष्टांनचढावै॥ क
रकादरसनसीसनिवावै॥ तीरथ मांहि याव न हिंदीजे॥ अ
बोहनकर कारजल लीजे॥ एक तीरथ बाबा हरन कहइयै॥ सब
निचोडनांहीचहियै॥ २५ दोहा॥ जलछुवत पातगनसैं॥
मनसुधनिर्मलअंग॥ चरनदासकहैं या जुगतसें॥ जो
कोई न्हावे गंगा॥ २६॥ चौपैई॥ वेही ठौर आवैं जहां तुरत राज
बकांकसननिवोडे सुथरा आपनीसरषाधिज मुगतावे॥

ऐसैं तीरथ कर फल पावै। ऐसैं तीरथ हो यतो कीजे नांही इन मैं चित
न हिं दीजे॥ तीरथ बरत करै नर लौजां नतमा सैजावै॥ तीरथ के फल
कैसैं पावै॥ कूद फांद जल गदला करैं॥ कौरैं अवस्ता नांही डरैं॥ सम
झैं नां मरथ अस्तानै साधन संज गरीब कुठानै॥ ऐसे दुष्ट मुकत न
हि पावै॥ फिर फिर जंना संकट आवै॥ २७ दोहा॥ तीरथ का बिधजु
गत सं॥ मुकत होंन की रीत॥ बर्तक रूं बिध दूसरी॥ जन छौं नां की
प्रीत॥ २८॥ चौपई॥ ग्यारस बरती ऐसैं रहियै। जैसैं धर्मनी कक्कंच हियै
सांचा बर्त बताऊं तोही॥ गुर सुषदेव बतायो मोही॥ नौमी नैंम करै
चित लाई॥ दसमी संजम जुगत बताई॥ ग्यारस बर्त बताऊं नीका
सब ही बर्त्त सिरोमन टीका॥ निरजल करै नीर नहिं परसै॥ पु
ह फाटै जब सूरज दरसै। एक पहर के तडके जागै॥ जब ही सुमर
न करनैं लागै॥ कर बिचार सुध कर काया। जा कर बैठे नंदन मंझा
या। कोठे के पट दे कर राषै॥ नर नारी सों बचन न भाषै। कुंड काठ
बैठे तिंह मांही॥ ताके बाहर निकसे नांही। कर आवाहन आसन
मारै। बर्त करै बैराग हि धारै॥ सत धर्म दृढ ही कर राषै। मन संसक
ल वासना नाषै॥ जप गुर मंतर कै हरि ध्यानां। ताकूं नैंक न ही बि
सरानां॥ २९॥ दोहा॥ जो तेर गुर नैं कहा॥ ता का कर तू ध्यान। बैठा
थिर नो पहर करो बर्त पहचान॥ ३०॥ बर्त करै तो हार सा नो
नार के स्वाद॥ भोग करैं तप नां करै। सब करनी बरबाद॥ ३१॥ चौ
पई। पांचो इंडी बस कर लीजै॥ पलक कांप नैंनन पर दीजै॥ इत बि
त मन कहां नाहि चलावो॥ आंषन कूं नहि रूप दिषावो॥ सरव न

श्रवन षइये भाई॥ तुचा न सपरस आलगाई॥ षटरस स्वाद
न जिभ्या दीजे॥ नासा गंध सुगंध न लीजे॥ ऐसा बर्नन करै तो
बर्ती मुकत होय। पारस का करता॥ ऐसा बरतैं न तारै पार॥
कौं नाति रतन लागै बारा॥ बकुरबादसी काहर आवै॥ अप
नी सरधा बिष जिवावै॥ ऐसा बर्नै मुकत बिध कहिये॥ सतगु
र के बालक कूं चहिये॥ ३२ दोहा॥ बिष्नु भक्त तीरथ कहा। ब
र्नै कहा सब बोल॥ यह कारन सालोक की॥ चरदास कही बो
ल॥ ३३॥ यह कारनी रहनी रहै। मिटैं पाप के थोक॥ चौरासी भ
रमन मिटैं। बसै बिष्नु के लोक। ३४॥ इति सालोक मुक्त सं
पूर्न समाप्त॥ अथ दूसरी सामीप मुक्त बर्नते॥ गुरु बच
न॥ दोहा॥ ॥ सामीप मुक्त अब कहत हूं॥ आगा अंग स
म झाय॥ जिह साधन हरि कूं मिले॥ चरन कंवल लिपटाय॥ १
चौपई॥ सेवा होहु हरि सेवा कीजे॥ तन मन सूरत जहां लै दीजे
जगत बासना भोग बिसारे॥ दासातन हो टहल बिहारै॥ मन
सूं हरि की कीजे पूजा॥ हरि बिन राषै भाव न दूजा॥ अनन्य
भक्त गोबिंद कूं प्यारी॥ जो कोई करै साई अधिकारी॥ आन
धर्म सब चित सूं त्यागौ॥ हरि के चरन सरन ही लागौ॥ गिरह त
दे तरसैं न नमानैं॥ नग्ल देव की सेव न ठानैं॥ तीरथ बर्त
सकर्म हिय धरपै॥ जो कछु करै सो हरि कूं अरपै॥ सामीप मु
क्त की यह बिध कहिये॥ चरनदास तासू पद लहिये॥

5

॥दोहा॥ कहाराजसीमानसी॥पूजाकाहियेंहोय॥बुरनत
हूंअबमानसी॥छौंतांसुरतसमोय॥३॥करअस्नानपहिरतेरहो
य॥रचेचित्रकऔरछाप॥अतिहीप्रेमऔरनेमसों॥हरिसे
वाअस्थाप॥४॥चौपई॥मनमैंमंदरसुंदररचियै॥तामैंहरिकी
सेवासचियै॥कंचनमहलबहुतअस्थांनां॥नंवनतिबारीऔ
रकहुनांनां॥काचमहहकीसोभाभारी॥रंगमहलसुंदरअधि
कारी॥जहांबिराजैलछमीनाथा॥आपनकूंकोदेषसाथादास
भावहेसेवाकीजे॥निकटविराजप्रेमरसपीजे॥भोरभयेंसो
वतहरिजागे॥हाथजोरठाढेरहैआगे॥अझालेपानीभरला
वो॥हरिजीकूंदातौंनकरावो॥मुषपषालसबदेहन्हुलावो
देहअंगोछागातपुछावो॥५॥दोहा॥पीतंबरकीधोवती॥लेह
रिकूंपहरावो॥नषसषलषछबिदेहकी॥अपनैंनैनरिझा
वो॥६॥चौपई॥सिंघासनपरलैबैठावो॥नौतमबागाचुन
पहरावो॥जैसेबसनरतेमनभावैं॥रातेपीरेसेतसुहावैं॥म
स्तगऊपरमुकटधरावो॥नषसषभूषनललितकरावो
लेदरपनमुषछबिदिषलावो॥देपरकमांबलबलजा
वो॥हाथजोरफिरठाढेरहै॥इकटकदेषैदिष्टनबहै॥फि
रभोजनकीआज्ञालीजे॥सकलसौंजसजबिंजनकीजे॥
नानांबिधकेबिंजनकीजे॥तोभोजनसंहरिजूरीझे॥आ
सनचौकेमांहिबिछावो॥तापैमहाविसुबैठावो॥थाल
कटोरेधरतिंहठांई॥नांनांबिधभोजनतिंहमांहि॥सो

घरमुक्त

चरन रंजल अरध धरियै ॥ भोग लगै जब ठाढे रहियै ७ ॥ दोहा ॥ श्र
द्धि पुरस जीवन न लगै ॥ तू ठाढो कर सेव ॥ भोजन कर अचवन
न करै ॥ दोर अंगोछा देव ८ ॥ चौपैई ॥ हाथ पोंछ फिर बीड
रखावै ॥ संवाधा न दे बीरी षावै ॥ काच मंडल मैं सेज सुधारौ ॥ औ
सीसे वाम न मैं धारौ ॥ हरि पौटैं जब चरन पलोटै ॥ सपनें नाग
जागत मोटै ॥ जब जागैं मुष नीर धुलावौ ॥ सिंघासन पर लै बै
ठावौ ॥ फिर ठाढो होय चंवर दुरावै ॥ हीयै अंस हरष सुच पावै
संज्या समै आरती कीजै ॥ तन मन सकल नौछावर कीजै ॥ तब
हौं सुंपद गावन लगियै ॥ एक पहर बैसें हौं तकियै ॥ श्रज्ञा लै फि
र सेज बिछावौ ॥ फूल पान तिह निकट धरावौ ॥ जुगल रूप ह
दै मैं धारै बारंमबार जाइ बलिहारै ॥ हरि पौटैं जब चरन पलो
टो ॥ तुम सोवौ तो चरनन ओटो ९ ॥ दोहा ॥ इति बिध जामान
सी ॥ मन मै कीजै मीत ॥ आठ पहर साठौं घरी ॥ टहल करन की
चीत १० ॥ चौपैई ॥ ध्यान मध्य हरि रूप बिचारै ॥ नष सष लों
छबि झलक निहारै ॥ दास अंग निस बासर रहै ॥ अनन्य भा
व टिढ ही कर गहै ॥ हरि की सेवा तिह चैठानै ॥ बारबार अस
तुति बषानैं ॥ मो दलो नत्याग जब कामं ॥ देह छुटै पहुचै
हरि धाम ॥ देह अनूप धरै दिव भारी ॥ निकट रहै कै नर
कै नारी ॥ दास अंग है सेवा करै ॥ हरि के निकट सदा ही र
हे ११ दोहा ॥ माधौ कारन लेत हैं ॥ हरि जग मैं अवतार ॥ जहां त
हां जन संग तिलियै ॥ षेलत षेल अपार ॥ १२ ॥ सदा रूप निरष

तरहै। रहैं निकट जन जांन ॥ चरनदास कहैं सामीपता ऐसी
बिधपहचांन ॥१३॥ इति दूसरी सामीपमुक्त संपूर्णं समाप्तं ॥
अथ तीसरी सारूपमुक्त बर्नते ॥ गुरबचन ॥ चौपई ॥ सारू
पमुक्त बिन प्रेम न पावै ॥ लगै नेह आपा बिसरावै ॥ ध्यान
ध्यांन सुध रहै न कोई ॥ आवै प्रेम जाय बुधषोई ॥ हक धकार
है कभी वह रोवै ॥ नैन मूंद कर प्रेम समोवै ॥ पांव डिगमगे अ
कबक बानी ॥ प्रेम लटक यों जाय पिछानी ॥ उमंग्या कुलासक
भी वह गावै ॥ कबहूं हंसे मगन है जावै ॥ जागत ध्यान ध्यान
कर सोये ॥ राषे ध्यान आप कूं षोय ॥ जैसे रूप को जाकूं ध्यांनं
सोई होत है ताहि समानं ॥ चरनदास सारूब षानी ॥ छौं नं
बेद पुरानन जानी ॥१॥ कुंडलिया ॥ इहि बिध ध्यान सह्याक
रै ॥ आपा आप बिसार ॥ जैसैं भ्रंगी कीट कूं करै आप बिहार ॥
करै आपनैं रूप काई साधू जन न बूझै ॥ धरै चतुर्भुज रूप बरन
रु जान नहिं सूझै ॥ चरनदास कहैं सुन छौं न जीय ही मुकत ॥
सारूपता ॥ अब तो सौं चौथी कहूं बेद कही साजूज्जता ॥२॥ इति
तीसरी सारूपमुक्त संपूर्णं ॥ ० ॥ अथ चौथी सा जूज्ज मुक्त
बर्नते ॥ सिष्यबचन ॥ दोहा ॥ तीन मुक्त जो तुम कही ॥ सो आ
ई मन न मोर ॥ जन छौं नं साजूज्जता पूछत है कर जोर ॥१॥ गुर
बचन ॥ तत बिनां साजूज्जता ॥ पावत नांही कोय ॥ साधे जोग
बैराग कूं ॥ लहैं तत न कूं सोय ॥२॥ सिष्यबचन ॥ तत मिलन की

(5)

५
षटमुक्त

साधनं ॥ कहो माहि सम काय । कहा जुगत कहा ध्यान है ॥ पू
छत हूं सिर नाय ३ ॥ गुरबचन ॥ तत्व पदारथ कठिन है । बि
नां जोग अभ्यास ॥ जिंह साधन सब ही मिटै ॥ भिन्न समाध मैं आ
स ४ ॥ चौपई ॥ आसन संजम जुगत अहारे ॥ सहज सहज अभी
धारन धारे ॥ इंद्रिन के गुन लै मैं गारे ॥ तन कूं बस कर मन कूं
मारे ॥ इंद्रिन को स्वामी मन जानौं ॥ मन को स्वामी पवन पिछा
नौं ॥ पवन को स्वामी अनहद नादा ॥ नाद को स्वामी कही स
माधा ॥ जब लग रहै सुरत फुन जागी ॥ तब लग कहियै ध्यान
सु भागी ॥ सुरत लीन होइ वही समाधा ॥ मिटैं बासनां षेद अग
गाधा ॥ चौरासी अंत सकरन मुनाई ॥ भूना बीज न उपजे भाई ॥ स
बै बासनां दग्ध कराबौ ॥ गर्भ जोनि संकट हि षावौ ॥ सू
क्षम सीख तासौं गाई ॥ और भेद सतगुर सौं पाई ॥ अैसे ज
नम मरन मिट जाय । सुन लीजौ चरनदास बताई ॥ ५ ॥ दोहा
नवौं द्वार कं राक कर । दसवैं काटे प्रान ॥ सहज मुक्त
सो इ लै ॥ पावै पद निर्बान ६ ॥ सुरत बड़ी सुष चरी ॥ ब
धो बडा जल मूल ॥ ताहीं न बडी जु सुषमनां ॥ रहै जु निगुरा भू
ल ७ ॥ सिध पद आसन बडे ॥ कवलन कुंभक मांहि ॥ बा
नी चारौं मैं परा ॥ इंहि सम तुल कछु नांहि ॥ ८ ॥ चार अवस्था
मैं बडी ॥ तुरी अवस्था जान ८ महा मंत्र तानंद है । न
ही मूल पद चांन ९ ॥ परम सुक्ष सो ध्यान नां ॥ जहां लीन
मन होय ॥ जाप न अजपा जाप सा । चरनदास लहे को

य॥१०॥ साजुज्ञमुक्ति वहीजानियै॥ जोतमैंजोतसमाय॥ परमधर (6)
10 मआगौतमत॥ तामैंदियौदिषाय॥११॥ इति श्री चौथी साजु
जमुक्ति संपूर्णसमाप्तं॥ अथ पांचवीं बिदेहमुक्ति बर्नने॥
गुरबचन॥ दोहा॥ बिदेहमुक्ति अबकहत हूं॥ परमहंस
को भेद॥ जातैदेहअध की॥ सबही छुटै षेद॥१॥ चौपैई॥ सांख्य
जोगकी धारनलीजै॥ निसअनिस बिचारनकीजै॥ नारछीर
करन्यारेन्यारो॥ देहउपध देहासिरडारो॥ आतमरूपआप
गहचानौं॥ आपनकूं आतमहीजानौं॥ आतमनित्य अनित्य
मुक्ताय॥ देषैसुनैंकहैसोमाया॥ तू नहिंदेहनइंद्रीबाला॥ चि
तबुधमनअहंकारनराचा॥ पंचबिषैपंच्चौं ततनांही॥ ती
नौगुंननांही तोमांही॥ पांचौंइंद्रिनकेरसत्यागो॥ देहमोहत
जआतमपागोरो॥ भोगसुषरहैनकोई॥ बर्नआसरमजा
हि लहकोई॥ गुरकृपाबिन भेदनपाई॥ बेदपूरान साष्यथौ
गाई॥ बिदेहमुक्ति ऐसैंकरपावै॥ चरनदासयहबिधसम
झावै॥२॥ दोहा॥ देहजुदीकरदेहमैं॥ रहज्यौंपरआस्थान॥३॥
चौपैई॥ काहूकीसंक्यानहिंमानैं॥ रावरंककूंनांपहचानैं॥
सिंघसर्पकोभैनहिंब्यापै॥ कायालोभूतजैजषआपै॥ प
वनकशास्त्रकोभैनांही॥ उत्तममध्यमलषैनठांई॥ रोगाहेय
सहजैंपुनजाई॥ जतनकहायहलै बिसराई॥ करमधर
मओरनैंमआचार॥ कौंनकरैनहिदेहसंभार॥ पाल

धतनसह है होई ॥ अपनीजुगतनइछा कोई ॥ बिदेहमु
क्तपरगटदरसाई ॥ रहनगह ताकीसम काई ॥ होयपरमगा
तकहाबषानैं ॥ छौंनोमुक्ताहोयसेजानैं ४ ॥ दोहा ॥ ल
छनमुक्तबिदेहके ॥ कहेनाहिसमजाय ॥ जीवनमुक्त
बतायके ॥ सुनछौंनोचितलाय ५ ॥ इति पांचवीबिदेहमु
क्तसंपूर्ण ॥ अथछठीजीवनमुक्तबर्नते ॥ गुरबचनाचौ
पेई ॥ जीवनमुक्तावही कहावै ॥ जीवतजनममरनमिट
जावै ॥ जगतबासनारहेनकोई ॥ जीवअबिद्यानांही होई ॥
बंधमुक्तकासंसानांही ॥ आतमरूपलषैघटमांही ॥ जडकूं
चेतनरूपबनाया ॥ ब्रह्मऊपरजूबनासीमाया ॥ सबहीब्रह्म
आपब्रह्म होई ॥ दूजादिष्टनआवैकोई ॥ कामक्रोधमदका
सूंउपजै ॥ मोहलोभकहूकासूंनिपजै ॥ बैरप्रीतवहका
सूंकरै ॥ काकीसरनकौनसूंडरै ॥ चरनदाससूंऔरठाकुर
कैसा ॥ जैसैंबिषअंमृतहै जैसा १ ॥ दोहा ॥ रावरंकसबएकसे
नारपुरषसबएक ॥ जैसैंमाटीएकही ॥ बासनबनैंअनेक
२ ॥ चौपेई ॥ ऐसैंसबकूं ब्रह्म ही जानै ॥ ब्रह्मीछत्रसोब्रह्मपिछा
नैं ॥ नाहरनागपसूब्रह्मरूपा ॥ पानीपावकब्रह्मस्वरूपा ॥ तौ
जबकासूंकोवहभागै ॥ कासूंडरैकौनसंगलागै ॥ जीवतम
रैजाहिकोमारै ॥ ससरछेदनपावककाजारै ॥ ब्रह्मरूपआनं
दऊलासा ॥ इच्छातुईसा लाई आसा ॥ दुषसुषरहितपर ॥

मगन ह्वायैं ॥ जीवन मुक्त भूरम नसायैं ॥ आप ब्रह्म सब ही ब्रह्म
दीषै ॥ ऐसी बिद्या गुर सूं सीषै ॥ ऐसे छौ नां चरनदास सुनावैं ल
क्ष्मन जीवन मुक्त दिषावैं ३ ॥ सिष्य बचन ॥ दोहा ॥ करनी जीवन
मुक्त की ब्रह्म होंन की कौंन ॥ सतगुर मोहि बताइये ॥ छूटै संकट जौं
न ४ ॥ गुरबचन ॥ जीव अबिद्या सब मिटै ॥ इच्छा दुई नसाय ॥ चरन
दास यौं कहत हैं ॥ जीव ब्रह्म है जाय ५ ॥ चौपैई ॥ पहलैं ब्रह्म ज्ञा
नकूं पावै ॥ दूजैं सतगुर ब्रह्म लषावै ॥ तीजैं ब्रह्म भोग कर आई ॥ चौ
थै ब्रह्म रूप है जाई ॥ ब्रह्म ज्ञान यह ब्रह्म पिछानैं ॥ काया बचन
परै ही जानैं ॥ पांच तत्त सूं न्यारा सोई ॥ देषै सो तत दरसी होई ॥ ब्रह्म
भोगी ब्रह्म है गलतानैं ॥ याका भेद गुरू सैं जानैं ॥ अमल चढै आ
पै ब्रह्म होई ॥ आपै ब्रह्म ब्रह्म जग जोई ॥ जब वह होवै जीवन
मुक्ता जिह कारन जोगी बहु जुगता मन की करनी तन सूं न्यारी
चरनदास कहैं मोहि पियारी ६ दोहा ॥ द्वंद्व मुक्ति को भेद द जो
भिन्न भिन्न कहि दीन जाकूं ले हिरदै धरौ ॥ छोंनां सिष परबी
न ७ ॥ चरनदास बरनन करी ॥ षट मुक्ती तत सार ॥ जैसी जाकी
समझ है ॥ तैसी लेवो धार ८ ॥ इति श्री षट रूप मुक्ति गुर चेले
की गोष्टि संपूर्णं समाप्तं ॥०॥ अथ श्री गुर चेले का संवाद धर्म
जिहाज लिष्यते ॥ दोहा ॥ ठाढे हो कर जोरि कै अरज करै च
रनदास ॥ हो श्री सुषदेव जी कछु पूछन कक आस १ ॥ गु
रबचन ॥ पूछौ मम कूं बालक मेरे ॥ सब संदेह औरु तुम्हरे हि
रदे बिषैं सदा हमरो येहर ॥ सिष्य बचन ॥ मैं तौ चरन ही

(7)

दासकहूं तुम तौ परम दयाल । एकन पगा पन हीं नहीं एक चढै सु
षपाल ॥३॥ यही जु मोहि बताइयै एक मुक्ति कूं जांहि । एक नरक
कूं जाय करि मार जमौ की मांहि ॥४॥ एक दुषी इक अति सुषी
एक भूप इक रंक ॥ एकन कूं बिद्या बडी एक मटै न हीं अं
क ॥५॥ एकन कूं मेवा मिलै एकन चणे भी नांहि ॥ कारन कौन
दिषाइयै करि चरनन की छांहि ॥६॥ यही मोहि समझाइयै मन
न का धोषा जाय ॥ हाथ करि सिर संदेह मैं रहूं चरन लिपटाय ॥७॥
गुरबचन ॥ जिन जैसी करनी करी जे सा ही फल पाय ॥ भुगत
है वे जगत मैं जा का बदला आय ॥८॥ सिषबचन ॥ तुम कही
मो हिरदे धरी ब्यास पुत्र सुषदेव ॥ सुगति कुगति करनी को भि
न भिन्न भेद कहु भेव ॥९॥ गुरबचन ॥ अब मैं बरनन करहूं ए
सिष धर्म जिहाज ॥ तामे बैठै बिध सहित रहनी गहनी साज ॥१०॥
जो कोई करनी ना करै बकवत करै बकबद रीता जानौं तास
कूं [illegible] दै ना ज बाध ॥११॥ कथनी कै पूंजी नही करनी है तत सार
तामैं लाभ है लाभ है बूंद कर गार ॥१२॥ सूरत की तनमन लगी
चेपागा ॥ बिन करनी के संबु झे हरि सूं नांही लाग ॥१३॥ कथनी
काथि डिंभीन एक है [illegible] दूर की बात ॥ अंतर में करनी नहीं मन
ही मांहि लजात ॥१४॥ डिंभीन न कूं जानियें जग मैं सिष दिषात ॥ त
नमन बचन न साधया तिहूं बिध रोयी घात ॥१५॥ तन मन साधे साध
सो बचन साधि जो लेय ॥ उज्जल करनी के सहित राम भक्ति चित दे
य ॥१६॥ तनसं करनी ही करै मन संसि हिचै लाय ॥ बचन जु ऐसा

बोलियैसबहीकूंजुसुहाय॥१७॥चौपैई॥बिनकरनीछायीबबातें
जैसैंबिनचंदाकीरातें॥तातेंसमझकरोतुमकरनी॥बिनबोयेंन
हींउपजेधरनी॥जैसाबावैतैसालुणिये॥जानतज्ञानीपंडितगुनये
कीकरनीबबोवैसोईपावै॥अरुमेवाबोवैसोईषावै॥पिछली
करनीअबकेपावै॥ताहींकूंनरकमबतावैं॥होनहारअरुभागा
वुहीहैपरालब्धसोईबडेकहीहै॥षोटीकरनीसैंदुषभारी॥होवैंर
कपुरषअरुनारी॥कहैंसुषदेवसांचयहींजोनो॥चरनदाससलेमन
मेंआनो॥१८॥दोहा॥कोइकोटीकोइ॥आषरएकोईरोगीनिरधन्न
अंगहीनमांगफिरैकोईभूषाबिनअन्न॥१९॥बिनबुधिकोईछो
टेहान॥कोईकरमौसेंअतिदुषीजीवैंनसंतान॥२०॥कोईजगतआधी
नहैंकाईबिनापरतीत॥कोईसबबसोंनहीनहैंयहपापोंकीरी
त॥२१॥जनममरनबहुभांतिकेनानाजेवननिवास॥करनीहींसें
होतहैंनीचऊंचघरबास॥२२॥पसुपंछीअरुचरअचरसोबीछूटैंना
हिं॥करमौंहींकीचालसैंभुगतैंजगकेमांहिं॥२३॥चौपैई॥भांतिभां
तिकेकषघनेंही॥पावतहैंवेकरमसनेंहीं॥इनहींआंषिनसंतुम
देषौ॥अपनेंमननमैंवारिकरिलेषौ॥तनछूटेंनरकैंजावैंहीं॥नानांबि
धकेत्रासमहैंहीं॥नरकनकीगतपरगटजानौ॥मांहिशास्त्रकियो
बषानौ॥अरुइकनरकजगतकेमांहीं॥कोतवालहाकिमकेताई
षोटेकरमनसंकांजावैं॥त्रासमहैंबहुतैबिरलावैं॥अरुसुकरमी
जानिकासैंअभौ॥उहहाकिमचरनौंमैंलागौ॥कहैंसुषदेवसांचहै
करनी॥सुमिरनजीतकरैसोईभरनी॥२४॥दोहा॥सुमकरनपि

छली करी उज्जल पाई देह । २४ ॥ सो भजिन के भाग की चरनदास सुनि
लेह ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ तनसूं सुखी और धनधारी सुत नारी सुंदर संसा
र । नांनां बिध के भोग भोग करत हैं । अरु बहुतन के उछाह रहैं । ऊंचे
महल महा सुख दाई । जहां बिराजत हैं मन लाई । तीनों रित मैं वे सु
ख पावै बहुत लेग टहल मैं आवै । पिछली करनी करम जु लाये । जे
मैं जैसे ही सुख पाये । काहु मिली तुरंग असवार । काहु पालकी झालर
दारी । काहू राज पाये बहुतेरे । लाखों मनुष रहत हैं चेरे ॥ श्री सुखदे
व कहै ये बैनां ॥ चरनदास लष अपने नैनां ॥ २६ ॥ दोहा ॥ लाखों पग
सूं लगार है रषैं जीव का आस । इसरति नके जइ है वै हैं चरनहीं दास
२७ ॥ चौपाई ॥ ऐसी इश्वर पदवी पाई । पुन्य प्रताप कहा नहीं जाइ
सुनि करि सुभ करमन कूं कीजो । खोटे करम सभी तजि दीजो । इ
नहीं आं बिन सूं सब सूझै । बुधिवान परतिछ जु बूझै । कोई घटे
जो हिरदय मांही । सूरज मुखी तास की छांई । कोउ पती कोई लाषन
वारा ॥ कोई हजारन का बोहारा ॥ कोई थोड़े मैं सुख पावै ये वै सु
खी बहुत दुर षावै ॥ पिछली जैसी करी कमाई तैसी तैसी ही नि
ध पाई । सुखदेव कहै यो आलस हरियै । चरनदास सुभ करनी
करियै । २८ । दोहा ॥ देवत दानें आप राज हगाण सनुष परेग । क
रमों हीसें होत हैं पाप पुन्य का हेत ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ नहीं तो हरि
दो दिषाओ ही ॥ एक दिन सब कूप छांडें । जो जैसी करनी कर
लेवै । हरि तैसा ही बदला देवै । आप ना किया आप पावै । पर
न अपराध नाद कहावै । घटै बढ़ै वह वै का न कोंही पावैब

हीजु करनी ज्योंही ॥ नरपुरुष मिलकर ख्यो हरा ॥ करनी सूं उपजे ऐसा
रखा है बोहे षेत किसान ॥ भांति भांति के उपजें दान ॥ बाग लगा
वै सींचे माली ॥ जब फल लागें डली डाली ॥ पंछी और मनुष पावें ॥ च
रनदास सुषदेव सुनावें ॥ ३० ॥ दोहा ॥ माली करनी जतन सें सींचे ना
षटमास ॥ जब वह बाग उदास हो ॥ दिन दिन वाको नास ॥ ३१ ॥ दया
धरम पुन दान नहीं बड करनी है सा च ॥ तीन लोक चौदह भुवन मां
हि न आवे ॥ साचे ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ तीरथ बर्त कछु जो कीजै ॥ अरु कांहूं
कूं दान जु दीजे ॥ याका भी फल नीका पावे ॥ चरनदास सुषदेव दि
षावे ॥ सु मन करनी करि जक्ति न पावे ॥ तातें हरि कें निकट रहावे ॥ कर
नी जेणा महा बल दाई ॥ ईस्वर हो पावे मुकताई ॥ चार मुक्त करनी
सूं पावे ॥ मन करनी सूं ज्ञान जगावे ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ उत्तम सदा किये ॥
आपे हित भगवान ॥ लही मुक्ति सालोक ही ॥ जनम मरन कारि
हांन ॥ ३४ ॥ सेवा के रि भगवान निकट बिराजे जाय ॥ सामीप मुक्ति
पाई तिन्हों इंदर सों अधिकाय ॥ ३५ ॥ ध्यान किया श्री कृष्ण का भए
जु वाके रूप ॥ सारूप मुक्ति जन पाइया तन धरि अधिक अनूप ॥ ३६
पांचौ मुद्रा जोग बल दसवें काट प्रान ॥ मिला जोत में जोति ही यह
सायुज पिछान ॥ ३७ ॥ सब ह करनी है बडी भक्ति सबन सिरमौर ॥ बां
ह पकरि हरि हेत करि राषें आपनी ओर ॥ ३८ ॥ अजामेल सूं भी अधि
क जो कोई पापी होय ॥ नाम जपैं यह सिधसूं पातिग जावै षोय ॥ ३९ ॥
सिहं मां गुर के ध्यान की को करि सकें बषान ॥ मेरे मन निहचे वही
जाइ मिले भगवान ॥ ४० करनी सूं सत्ती भवे करनी सू दातार ॥ क

रनी संसरा भवै जावै स्वर्ग मंझार ॥४१॥ भांति भांति के सुख जहां भो
गै भोग अपार ॥ धरम पंथ कोई चले सूदर के नर के नर नार ॥
॥४२॥ चार समैं नित नैंम करि सदा रहै निहपाप ॥ गिनां जाय ह
रिजन बिषैं होय नहीं जम ताप ॥४३॥ जिन जैसी करनी करी सो
निरफल नहिं जाय ॥ जाका बदला होय गा सुषदेवा कहै गा
य ॥४४॥ चौपई ॥ ब्राह्मण करनी ब्राह्मण होई ॥ छत्री कर्म सूं छ
त्री सोई ॥ बैश्य करम सूं बैश्य कहावै ॥ सूद्र कर्म सूं दर दर सावै
नहीं भेस सब की देह बराबर ॥ पांच तत्त तिरगुन सूं करि करि ॥ कां
न आंष मुष नासा की ॥ सीस हाथ पग काया देषी ॥ एक बाट हो
स बही आये ॥ एक ही भांति सभी बनवाये ॥४५॥ दोहा ॥ जाति बर
न आरु आश्रम करनी सूं दरसाय ॥ चरनदास निह चै करै भूरष
बी ले पाय ॥४६॥ धोबी छीपी आदि दे राछनी सैं पोंन ॥ करनी के स
बतंवर हैं जैसी करैं सु जौन ॥४७॥ चौपई ॥ करमों हंसे जगाय ह भासै क
रमों ही से फिर होय नासै उतपत परलै करम करावै ॥ हो निह क
रम ब्रह्म हो जावै ॥ परलै समैं कर्म जीव साथा ॥ बुरे भले को लागे
गाथा ॥ संग ही जाय रहै माया में ॥ मया जाय लगत चरनन तै ॥ बासा
करि हरि चरनन मांहीं ॥ होय लीन वह मिटै जु नांहीं ॥ पूंजी क
रम सु माया पासा ॥ फिर उतपत की वाकूं आसा ॥ परलै काल बुद्धी
तेज बुही ॥ उपपत करै जगत कूं तब ही ॥ चरनदास तुम औसें जा
नौं कहै सुषदेव सांच करि मानौं ॥४८॥ दोहा ॥ छह इव परलै मैं रहैं इ
न का नांस न होय ॥ सो मैं बरनन करत हूं बुध आगे पिन संजोय ॥

॥४९॥ चौपाई ॥ काल कर्म का सजीव औरमाया ॥ पापपुन्यपरतिन्ह बताया ॥ फिर उतपत्त इनहीसूं होई ॥ जानैं पंडित बिरला कोई ॥ कालन
एकूं करै पुरानां ॥ परले होय सुनि ह चै जाना ॥ फिर पर नै कूं लाग
रहै ॥ करै समायपत आपन गहै ॥ उतपुत समैं और न ही होई ॥
परलै कूं राजा उतपत सोई ॥ करमधरे रहै ज्यों के त्यों ही ॥ उलटे पु
लटे नांहीं क्यों हीं ॥ जैसे के तैसे तन धारै करम लगे रहै उन के
लारै ॥ कहै सुषदेव करम गति भारी ॥ चरनदास कोई छूटै बि
लारी ॥५०॥ सिष्य बचन दोहा ॥ चरनदास यौं कहत हैं सुनौं गुरू सुष
देव ॥ जो करि होनिह करम है जाको कहियै भेव ॥५१॥ गुरबच
न ॥ चौपाई ॥ कहैं सुषदेव संदेह मिटाऊं ज्यों की त्यों ही पूरी म
मझाऊं ॥ षोटी करनी नरकै जावै ॥ पाप छीन मृत्युलोक हि आ
वै ॥ भले करम जा स्वरग मंझारा ॥ पुन्न छीन मृत्युलोक ह डारा ॥
ऐसैं लोक लोक फिर आवै ॥ करम न छूटै दुष सुष पावै ॥ जासें
करम छूटै सो कहूं ॥ तो पै दया करत ही रहूं ॥ षोटे करम सु सुक
ल निवारै ॥ सुभ करनी कूं नीकैं धारै ॥ जाके फल कूं मन नहीं
लावै ॥ होनिह करम परम पद पावै ॥ फल त्यागै सोई चरनदा
सा ॥ चरन कंमल की राषै आसा ॥५२॥ दोहा ॥ सो पावै निर्बान पद
आवागवन मिट जाय ॥ जनम मरन होवै नहीं फिर फिर काल न षाय ॥५३॥ सिष्यबचन ॥ जो जो कही गुरदेव जी सूछम परी परतिह
चरनदास कूं दीजियै साध होंन की सिष ॥५४॥ गुरबचन ॥ वही सा
धु बी जानियैं निरवारै सब कर्म ॥ तन मन बचन सुधे रहैं पलै
आपनां धर्म ॥५५॥ पहलै साधे बचन कूं दूजे साधे देह तीजे मन कूं सा

धर्मजि० २४

धिये गुरसूं राषै नेह ।५६। जिन हीं के उपदेस कूं राषे आपने नित
ता कूं मनन सदा करै भूलें ना नित्त ।५७ सिष्यबचन ॥ जो जो कही सु
जानियां । हो श्री सुषदेव ॥ साधनतन मन बचन को सब ही कहि
ये भेव ॥५८ गुरबचन ॥ अब सिष तो सूं कहत हूं तीकैं सुनियें का
न ॥ ज्यों ज्यों करम बचैं दसौं ता की करि पहचांन ।५९ ॥ चौपैई ॥ प्र
थम बचन के चार सुनाऊं ॥ तेरे चित मैं नीकें लाऊं ॥ एक यही जो
झूठ न बोलै ॥ सांच कहै जब हिरदै तोलै ॥ झूठ कहन का पातिग
भारी ॥ जो जप कहै सो देह उजारी ॥ झूठे का जप लागै नांही ॥ सिष
होय नहीं निरफल जांई ॥ अरु झूठे की नां परतीतैं ॥ झूठे की षोटी
सब रीतैं ॥ दूजैं निंद्या नहीं करिये ॥ पर के औगुन चित न हिं धरि
ये ॥ निंद्या का भारी है पाप ॥ यासूं बी निरफल हो जाय तीजें कडु
वा बचन न भाषै ॥ सब जीवन सूं हित ही राषै ॥ षोटा बचन महा
दुषदाई ॥ जो साधे सो अति बलदाई ॥ षोटा बचन तप सा षोवै ॥ नर
क मांहि ले जाय सु सोवै ॥ मीठे बचन बोलि सुष दीजे ॥ उन के मन
सो गाहरी जे ॥ कहै सुषदेव चौथा सुनियें ॥ चरनदास लेमन मैं गु
निये ॥६० दोहा ॥ चौथे मैं ना गाहैं रहत लहन अधिक अमोल ॥ करम
लगैं जा बात सूं हरि चरचा मैं बोल ।६१ ॥ चौपैई ॥ तन सूं तीन करम
जो लागैं ॥ सो मैं कहूं तुम्हारे आगैं ॥ चोरी जारी अरु हिंसा है ॥ इन पा
पन सूं भारी भै है ॥ करम छुटैं जा की बिध गाऊं ॥ भिन्न भिन्न तो
कूं समझाऊं ॥ तन सूं चोरी कबऊं न कीजै ॥ काहू की न ही

वस्तहरीजे चोरी त्यागै सो सत वादी ॥ ताप रिरी जै राम अराधी ॥ जा
री के कर्म ऐसे आनौं ॥ पर तिरियाकूं माता जानौं ॥ तीजी हिंसा
त्याग हीं कीजे ॥ दया राखि जीव नसु मखीजे ॥ दयाबराबर तप न
हीं कोई ॥ आतम पूजा तासूं होई ॥ करम छूटन का मारी गैला ज्यौं
मा बन उज्जला पर मैला ॥ सुषदेव कहें तन के कहे ॥ तीन करम
अब मन के रहे ॥ ६२ दोहा ॥ कहूं जु मन के तीन अब जी नीजि न
की बात ॥ गुरु दिषायें दीयई ऐ बिषन हि दिषात ॥ ६३ ॥ षोटी चि
तवन न बैरही अरु तीजा अभिमान ॥ इनसूं करम लगैं घनें मेटै
संत सुजान ॥ ६४ चौपैई ॥ षोटी चितवन षोल दिषाऊं जासू के
हियै सो समझाऊं ॥ कबहूं चितवै पर नारी कूं ॥ कबहूं चितवै प
लबारी कूं ॥ मनहीं मन मे भोगौं भोगा ॥ हाथ न आवैं उपजै
सोगा ॥ कबहुं चितवै वाकूं मारूं ॥ कबहूं चितवै फांसी डारूं ॥ क
कहूं चितवै दरब चुराऊं वाका धन अपने घर लाऊं ॥ कबहूं चि
तवै बड़ाई करूं ॥ माल बिराना छल करि हरूं ॥ भांति भांति चित
वन उपजावै ॥ बुरे मनोरथ करम लगावै ॥ ता तै याका करे उपाय
होय जु साधु करम छुटाऊं ॥ जो चितवै तो हरि गुर चरनं ॥ ब्रह्म
बिचार सदा ही करनं ॥ षोटी चितवन चितवै नांही ॥ सदा रहै थि
रता के मांही ॥ कहैं सुषदेव सु हिरहै इत चित कूं चित मांही ब
है ॥ ६५ दोहा ॥ दुजा करम जु बैर है महा पाप की पोट ॥ सदा हिया
जलता रहै करै षोट ही षोट ॥ ६६ दोहा ॥ बैर भाव मैं षोगु न भारी
तन छुटैं जा नरक मंझारी ॥ बैरी याद रहै मन मां हीं ॥ हरि सूं हेत

लगनेदे नांही ॥ तातें बैर भाव नहिं कीजै ॥ याका करम लगन न हीं
दीजै ॥ अरु तीजा नैं अभिमानं ॥ गुर किरपा सूं कूं जानं ॥ हूं हूं हूं
हूं करता रहे नीची होय तौ अमरद है ॥ कबहूं फूलै मन के मां
हीं ॥ मो से मान कोई कुं चानां हमें ही यों करियौ करि करिया ॥ मो
बिन कारज कछु न सरिया ॥ आपन कूं चतुर बहु जानैं ॥ औरस
बन कूं मूरष ठानैं ॥ अभिमानी वै सामन लावै ॥ हरि के गुण कि
रपा बिसरावै गरब भरा षोटी बुत धारै ॥ आपने मन में काहूं न हारै
सुष देव कहैं वाहि पापी जानो ॥ नरक जाय गा निहचै मानो ॥ रत
जीत सुनौं अभिमान न कीजै ॥ करम बचायाय परम सुष लीजै
६७ दोहा ॥ किरत घ्नी बेमुष भये गुर सूं बिद्या पाय ॥ उन कूं जानैं त
न कही आपन कूं अधिकाय ॥ ६८ चौपेई ॥ जैसें इक दिसा तसु
नाऊ ॥ कथा पुरान कहत समझाऊं ॥ महापुरस इक स्वामी पुरा
ज्ञान ध्यान में पा मर पूरा ॥ लछ नस भीऊ तेव माहीं ॥ आठ पह
र हरि ही घांई ॥ उनका सिष्य आनइक भया ॥ वाहि उपदेस जु
नी कैं दया ॥ करि करि प्यार निकट जो राषा ॥ प्रीत करी अरु सब कु
छ भाषा ॥ फिर रमत की आज्ञा दीनी ॥ उन कूं किरपा करि कर
दीनी ॥ पुहचा एक नगर अस्थाना ॥ कां के मनुषो सिद्ध बड
जानं ॥ ठहराया अरु पूजा कीनी ॥ बहुत नरौं नैं कंठी लीनी ॥ ब
हुत कपा नी आवैं जावैं ॥ संज्या भोर सी सब हुंनावैं ॥ मिहमा
देष फूल मनु मांही ॥ कहा कि हम सम गुर बी नांही ॥ ६९ दोहा ॥ गा
दी पर बैठा रहत किया बडा लगाय ॥ बहुत रहैं आज्ञा विषैं सिर

परिचं वरदुराय ॥१०॥ चौपैई ॥ गुरपरताप नहीं वह जानैं ॥ आपनी
ही बुध बडी जु ठानैं मूरष आगै कैसों नहीं भया ॥ सीष मंगात पा
रेगया ॥ थोडे ही में बहुत रातना ॥ गुर की किरपा पार न जानां ॥
बार बार सोचै मन सोई हमरे गुर क्या ऐसे होई ॥ उन कूं तौ न
र कोई केई जानैं ॥ हम कूं सगरा देस बषानै ॥ दिन दिन बढ
ता दीषै आगे ॥ मेरे भाग बडे ही जागे ॥ मेरे मन मैं ऐसी आवै ॥
उठ का सिष अब कौन कहावै ॥ उहीं अचानक गुरु कूं आ
या ॥ बैठै ही सिष सीस निवाया ॥११॥ दोहा ॥ जैसैं आते बैश नैं क
रता वडंडौत ॥ ऐसें ही गुर सें किया आदर किया न बोत ॥ अ
चौपैई ॥ देषि गुरूं मन मंहं सी ठानी ॥ वा कूं जानौ बहु अभिमानी
मुष सूं कहि करि बहु फिडकारा ॥ कहा किटू अभिमानी भा
रा ॥ नीका बुधि तेरी गई षोई ॥ बसी मछर तघट मे सोई ॥ मे
रा सब उपदेस बिसारा ॥ जग मेहन का मन मैं धारा ॥ दस
बीसन कूं सिष करि भूला ॥ गदी ऊपर बैठा फूला ॥ सि
ष नैं कहा ॥ और क्या कीया ॥ वही किया आज्ञा तुम दीया
तुमने ही सतसंग बताई ॥ कीजो दीजो जितमन माई
सिष साषा करि संगत बढाई ॥ मेरी तुमरी भई बडाई
देषि इरषा तुम कूं आई ॥ हमरी देषी बहु अधिकाई
इ फिर सु गुर कही तुम्ह जानी ॥ मैं संगत कही तू
न हि जानी ॥ मैं कही भक्तों का संग कीजो ॥ सतपुरस
न के चरन गहीजो दिन दिन ज्ञान न होय सरसाई ॥

हरिगुरसूं होप्रीतिसवाई ॥ तेरी तो गति औरै भई ॥ महा अवि
द्या मैं मत छई ॥ ७३ दोहा करतै मुद्रा याये ॥ ज्ञान के ठाय रह
अज्ञान रामरु ठार हह नहीं क्रिया भई मुक्ति की हानि ॥ ७४ ॥
कहा बात पूंज कहा इत ने मैं गाय मूल ॥ मति औ छी घट
थो घरा ता परि बैठा फूल ॥ ७५ ॥ सिष परापत बी भवै रेह बिसर
जन होय वह बीजो गुर कूं तजै जाय नरक कूं सोय ॥ ७६ ॥ कछु
तपस्या ना करी मांहि कि या कुछ जोग नां तो लागी समाध हीं
ले बैठा तूं भोग ॥ ७७ ॥ रजगुन तमगुन ले लया तज्ञा सतो गुण अं
ग ॥ ७८ ॥ भक्तिभाव कूं छोड कै करी डिंभ की हाट ॥ मुक्तिपंथ
कूं तज दिया लई नरक की बाट ॥ ७९ ॥ इन बातन सूं व्यास रै
बहुत भया बिषवाद ॥ तुमसे अधिकी मूढ नर जग के घेर नाहि
षाव ॥ ८० ॥ कुकम बडा माया बडी नामी बडे जु भूप ॥ नर नारी बहु
टहल मैं सुंदर अधिक अनूप ॥ ८० ॥ संतन की गति और रहै हरिगुरसूं
सनमुख ॥ मुक्ति होय छूटै सबै जन्ममरन के दुख ॥ ८१ ॥ जगत ब
डे मैं फसे पडे अविद्यां छांहि ॥ नरक भुगतजम डंड ही फिर चौ
रासी मांहि ॥ ८२ ॥ चौपाई हरि अरु गुर कूं सिर परि धरिये सतपुरषों की
संगत करिये साधन के संग मांही ॥ ध्यान भजन जहां छूटै ना
ही ॥ हो परपूरक जहां मन रहै ॥ गुरमत दया दीनता गहै ॥ सहज
सहज उपदेस लगावो ॥ भूलों कूं हरि बाट बतावो ॥ तारनतरन
बहुत जन भए ॥ छिमा दीनता धारैं रहे ॥ पै जन कूं अभिमानं न
आया ॥ नैक न पडी अविद्या छाया ॥ आपा मेट गुरु ही राषा ॥ ज

बबोले तब गुरु लियै भाषे । तू अभिमानी जनम गंवायो । पाप सीस
सिर धर उठाया ॥ ६४ ॥ दोहा ॐ हीनन की ओर सूं बाणी नहीं सुन्या
यु ॥ गुरु सं किया अभिमांन तै चौरासी कूं जायु ॥ ६५ ॥ का सै गुरु रमते भेषु
सिष कूं दे फिटकार ॥ कहा कि तेरे तन बिषै रू जो बडा बिकार ॥ ६६ ॥ ता
पाछै कछु दिनन मैं देही भयो बिकार ॥ निकट न आवैं ता सबै कांके
सब नर नार ॥ ६७ ॥ कष्ट भयो अंग को रहे न काहू जोग ॥ आठ पहर
वां कूं भयो निरासो गही सोग ही सोग ॥ ६८ ॥ तन तज कै नरकैं गयो
फिर चौरासी मांहि ॥ जो गुरु सूं करै मांन ही ताकी गत होनां हि ॥ ६९ ॥ क
हैं गुरु सुषदेव जी चरनदास परबीन ॥ मन सूं तज अभिमांन कूं सि
ष गुरु सूं रहे दीन ॥ ७० ॥ मांनन कां रू सूं करै सब ही सूं आधीन ॥ सम
य हरि की भक्ति मैं जगत काज सूं हीन ॥ ७१ ॥ दस करमो कूं जानि
यै महापाप की षांन ॥ तन मन बचन संभारियै एही जु अधिक
सयांन ॥ ७२ ॥ कहूं एक दिष्टांत ही सो परमारथ भेस ॥ सुन सम
झै हिरदे धरै तौ लागै उपदेस ॥ ७३ ॥ नगर एक सुहांवनां बसै लोग सुष मां
नि ॥ नर नारी सुंदर सबै अरु धनवंते जांनि ॥ ७४ ॥ नया करै जहां भूप ही बर
दिं नां के मांहि ॥ संबत बीतैं तस कूं फिर देरा षैं नांहि ॥ ७५ ॥ चौपैई ॥ पक
ड डुरहै नदी पारा ॥ सो वह भ्यानक अधिक उजारा ॥ पसू आदि ताकूं
भष जावैं ॥ सुपनें सा देषै बिनसावैं ॥ नया भूप करि अज्ञा मानैं ॥ वा
कूं षतांई स्वर जानैं ॥ रहैं कुकम मैं ही कर जोरैं ॥ वाका बचन न कुब
हू मोरैं ॥ छत्रधारी कांई डारैं ॥ जो मैं आगै कही उजारैं ॥ कई सैकडों बै
से भए ॥ चेते नांही निरफल गए ॥ राज नया और इक कीया ॥ सो वह

समका चेता हीया। मनहीं मन मैं कहै बिचारे॥ बहुत भूप जंगल मैं
डारे॥ ९६॥ दोहा॥ बरस दिना जब बीति है हम कूं दे डार॥ सलिता ही
के पार ही अधिकी जहा उजार॥ ९७॥ चौपई॥ याका कछू उपाव बिचा
रूं॥ तासे तीय हज नम न हारूं॥ एक दिनां उन यही बिचारा॥ देष नग
या जु नंदी पारा॥ जहां भूप जा जा करि मरते॥ तिनके हाड कांई जा पी
रते॥ षडा जु होय देष मन आई॥ नीकी ठौर बनां कूं द्याई॥ दिष उठां कूं
चीजे कीनी॥ काम दार कूं आज्ञा दीनी॥ बनका टै आज्ञा दई॥ तम
फिर वा पांच कोस मैं जेता॥ सुंदर साइक कोट बनावो॥ तामैं सुंद
र बाग रचावो॥ करो हवेली ताके मांही॥ जैसी भूपन कूं वैं नांही॥
गीलम बिछौंने परदे लावो॥ और तयारी सबै करावो॥ होय चुकै
जब मोहि सुनावो॥ बहुत इनाम अधिक तुम पावो॥ ९८॥ दोहा॥ वैसी ब
नने हीं लगी जैसी आज्ञा दीन॥ बन तैं बन तैं बन चुकी सुंदर अधिक न
वीन॥ ९९॥ चौपई॥ फिर राजा कूं आन सुनाया॥ राजा सुनि बहुतै सुष पा
या॥ आछी चीज सुकां पुंह चाई॥ हां जो रहीन सु राती लगाई॥ कहा कि
एक दिनां षजांनां॥ छिन छिन होय अवध की हांनां॥ पांच ही गांव
कोट के सापा॥ किये दिये लिष आपने हाथा॥ आपनां एक हितू मन
आई॥ नरीका चह डी लिया बुलाई॥ करि इनाम ताकूं वह दीया॥ वाका
देषा सां चाहीया॥ और कही जो राजा होवै॥ वाहि तलाष षाहि जो षोवै
कं हीं आठ महीनें बीते॥ कारली करि मन एमन के चीते॥ १००॥ दोहा॥ हे भि
चंत आनंद मगा चिंता मै नाहिं कोय॥ आपनो कारज कर चुके हं
का एक ही होय॥ १०१॥ चौपई॥ सुष ही मैं वह बरस बिताया॥

अरध बीत फिर वह दिन आया । सब उमराव जु घिर कर आये
नया भूप करनें कूं लाये ॥ याहि सिंघासन सूं दिया डारी । कहा
कि तुम्हरी बीती बारी ॥ ऐसें कहि कर गह ले चाले । पार नदी के
जंगल घाले । सुभ करनी कूं करि वह राजा । अपनें महल लै जाय बि
राजा । दूयो सै मी कां सुख बहु भारी ॥ ना कोई बैरी ना कोऊ आरी ॥ आप
नी करनी से उ सुख पावे ॥ रहे असोग न चिंता आवे ॥ कहें सुख
देव चरन हीं वा । सुभ करनी करि पाया बासा ॥ १०२ ॥ दोहा ॥ ऐसें
मन या देष कूं नगार की सुभ जान ॥ राजा या में जीव है सुभ करनी प
रवांन ॥ १०३ ॥ चौपाई ॥ नहीं तो चौरासी जगल है ॥ भांति भांति का
जित ही भै है ॥ पसू पसू कूं जित भष जावें ॥ जित मैं मांन नहीं सु
ष पावे ॥ बहु दुष पावे घोर करनी ॥ जेसी कै तर सी भरनी ॥ सुभ क
रनी कूं जो न रषावें ॥ बहु भांती सुष सुरपुर जीवें ॥ १०३ ॥ दोहा ॥
भूप त भर आपनी किया अपनां पूरन काम ॥ ऐसें हीं सुभ क
र्म सूं तुम हूं पावो धाम ॥ १०४ ॥ चौपाई ॥ अरु क कथा कहूं अ
तिनी की जा सुन जाय अबिद्या जी की ॥ इक राजा था बहु परबी
नां ॥ सो वह पुत्र बिन था हीनां ॥ एक समें वाहि रोग जु आया ॥ पु
त्र बिनां बहु तकलय पाया ॥ सो कारज कौन अब करि है ॥
जो मेरी देही यह मरि है ॥ ए मत करता सिध ई का आया राजा
नें सब वाहि सुनाया ॥ सि कही बालक गोद घलावो ॥ बेटा
कारति हराज बैठावो ॥ राजा कही जु ध्यान लगावो ॥ राज भाग
मैं ताहि बतावो ॥ फिर जु कही जु घोल दिघाऊं साहूकार

काधुवबताऊं॥ वाकेभागानमैंयहराजा॥ ताकूंसुतकरिकीजे
काजा॥ फिरउनवाकूंगोदजुलीनां॥ फांका राजकाजसबदी
नांकोईकदिनमेंउनतप्यागा॥ पुत्रराजकारनजबलाया॥ राज
पितासूंनिकाकीया॥ अपनीपरजाकूंसुषदीया॥१०५॥ दोहा॥ ए
नकरतबरसैं भए सुफलेअरु सुषदीन॥ वाकेनगारकेबिषे
नांमहिहीन॥१०६॥ चौपई॥ एकदिनांनयाऐसाकाजा॥ सोवत
चौंकउठावहराजा॥ भोरभयेंसबफोजबुलाई॥ हरिकींअज्ञा
सोसमझाई॥ कहांजहांतकपरजामेरी॥ ताकूं लूटोजायसंवरी
अज्ञालेसबफोजपधारी॥ परजालूटीनीकैंसारी॥ दूजैंफिरकहीं
काई तुमजावो॥ जिनकूंलूटाभेंधनजलावो॥ घरपरजाकेसभी
जलाये॥ नीचकूंचनैंबहुतदुषपाये॥ तीजैंबचनभूपयोंभाषो
कहांफोजसूंषोजनराषो॥ बडौंबडौंपरसस्तरमेलो॥ लडकेबा
लेकोलूंपेलो॥ यहसुनिकेपरजाघिरआई॥ राजापासपुकारसु
नाई॥ बहुतकूराजाभगऐसैनूठा॥ अपनीपरजाकूंनहींलूटा॥
१०७॥ दोहा॥ पहलैंसबकूंसुषदिया अबभयेतुमदुषदाय॥ कार
नयहकहदीजियेसबहीकूंसमझाय॥१०८॥ यहकहीसाहू
कारनैंजोथावाकाबाप॥ कुजसचलासंसारमेंबहुतलगाए
१०९॥ साहूकारपडितघनेंऔरबडेहीलोग॥ कोलकीसुनकात
लकीबहुतकमानांसोग॥११०॥ आयेहैंफिरस्यादकूंसुनेंबिग
डतेकाज॥ सबूपरजाकूंमारिकैंकिसकाकरिहोराज॥१११॥ सब
हीपरजसरनहैबकसदेहुमहाराज॥ अपनीअपनीभूमिमैं

फेर बसैं जासा ज॥१२ चौपई॥ राजा कही सुमैं नहिं जम्बू॥ आप
नें मुख सू कहा बखानूं॥ कहा मनुष सो ईक तुम आनो॥ जिन
का कहा सो तुम मानों॥ यह सुनि जाब खालही बारे॥ आ
करि बैठे सब बन मंझारे॥ सो इक नर बऊ ते इस बारी॥ ति
नकी साष भऊती जो भारी॥ जिनकूं ले राजा के पासा॥ षडे कि
ए सब चर नहीं दासा राजा उठ उमही के मांही॥ मिल क
र बैठा ज्ञाही वांई॥ राजा कही जु हरि की ओरें॥ ध्यान ल
गावो मन कूं मोरें॥ घडी चार जब ध्यान लगाया॥ नन सें
शब्द यही जो आया॥१३ दोहा॥ ढील नृप ते क्यौं करी इनकी
कीजे जेल॥ बडे कतल ही कीजियें छोटे का ल्हू पेल॥१४॥
॥चौपई॥ तीन ही बार लगाया ध्यानी॥ बारम बार यही भ
ई बानी॥ भूप कही कहा दोस हमारा॥ को यम्नय जो सि
रजन हारा॥ अब तुम परजा सें कहि देवो॥ कतल पेल नां
कोल्हू तुम लेवो॥ आय वरो नैं सबमें बोली॥ सुनि परजा
ऐसें उठ बोली॥ आपस में सब कहने लागे॥ हम तो मूरष
बडे अभागे॥ हम सुन करम कछू न ही कीनें तिथ परबी
कूं दान न दीनें॥ कथा कीरतन में नहीं गए॥ कुटंब जाल
मैं पचि रहे॥ हरि की भक्ति नहीं चित लाई॥ तातें अब हो
ती मुकताई॥१५ दोहा॥ हरि कौं कूं बिसराइ यापू सम
हल के काज॥ तां वर है गा जगत में सो भी रहा न आज॥१६
चले नरक कूं निह चै जै है॥ मार जमौं की दीह न षैहैं॥

कोपत है सब देह हमारी ॥ आपस मैं कहै नृप अरु भा
री ॥ ऐसैं ही सब वेरा बोलैं ॥ व्याकुल आधर न पैंडो लैं ॥ हे
य इक के मता उपाय ॥ सो रजा कूं जाय सुनाया ॥ कर जो
रैं मुष पति एक कालीयें ॥ नष सिष तन मन दीन जु कीयें ॥ इक षट मास
जु हमैं बचावो ॥ आप ने हरि कूं अरज सुनावो ॥ या मैं जप तप धरम बढावै ॥
बोलैं सांच कूठ बिसरावैं ॥ चोरी जारी हिंसा त्यागैं ॥ रात दिनां हरि ही सूं लागे ॥ १७
दोहा नित प्रति उठ सुभ करम करि लहैं धाम मैं बास ॥ काम क्रोध बिसराय कर रहैं
य चरन हीं दास ॥ १८ ॥ चौपई ॥ अब तुम हम मैं बेगा बकसावो ॥ मास षट न की छुट दि
वावो ॥ हम रइयत हैं सभी तुम्हारी ॥ एक बार करो अरज हमारी ॥ और कहा तुम्हें बो
क हमारा ॥ राजा सुन उन ओर निहारा ॥ कही कि मैं अब कैसे करूं ॥ आठ पहर डर
ता ही रहूं ॥ अरज करत कांपै तन सारा ॥ तेजवंत है वह दरबारी ॥ पै तुम देषि दया उ
पजाई ॥ मेरे बी मन ऐसी आई ॥ बैठ आ के लैं ध्यान धरूं हीं ॥ तुम्हरे कारन अरज क
रूं हीं ॥ दिन बीता जब निस ही आई ॥ भूप ध्यान कर अरज सुनाई ॥ १९ ॥ दो
हा ॥ अरज करी उन दीन हो बार बार यही भाष ॥ या परजा कूं मास षट छि
मं दिष मैं राष ॥ २० ॥ जो जो इन के मन बिषैं सो सो करें अघाय ॥ छठे मह १
ने कू परै एक दोस नहीं जाय ॥ २१ ॥ देषि भूप की दीनता पिघल दीनद
याल ॥ नभ सैं बानी यों भई उही समें तत्काल ॥ २२ ॥ परजा ही तो कारनैं
बकसी है षट मास ॥ कू परजा दिन एक जब की जोइ का नास ॥ २३ ॥ चौ
पैई ॥ अग्या भई भूप कूं जब ही ॥ सोया निचंत पलंग परि तब ही ॥ भोर भ
ये बाहर कूं आया परजा कूं निकट बुलाया ॥ कहा कि षट ही मास ब
चाया ॥ अपने मन का कर लो भाया ॥ यह सुनि परजा सब हरषाई ॥

आप नें आपूनें घरकूं आई ॥ किन्हीं सिरकी किन्हीं छपरडारा ॥ पका
मदरनाहि बिचार चोरी जारी सबैबिसारी झूठ लेनभास मीब्योहारी ॥
अरु साधनकीसी ब्रतधारी ॥ बालकमदरओरसबनारी [illegible] है नहीं
वेषोट मनके भूपतय स्तीमैं सबबनके ॥ १२४ दोहा ॥ गडाकुतां जो ॥
दरही ताकी करीन ओट ॥ रापिलिया षटमासका अरु सबदी ना
बाट ॥ २५ चौपई ॥ जिनजिनकारहा तिनयौंकीनां ॥ जिनपै नाष्या ति
नकूं दीनां ॥ आपसमें कही धन कहा करिहै छूठे मही बेंपा छे
मरिहैं यहीसमझ उयजा बैरागा ॥ इंद्रियनका रससबही त्यागा ॥
फीके लगे भोगसबजगके ॥ सहजैं छुटगए कामजु अघके ॥ सब
की दिसा एक जो भई मोतें ज्ञान करि चिंता रही ॥ दिनदिन दुबले
होते जावैं ॥ हरिही का जपध्यान लगावैं ॥ एका एकादिन लागे प्यारा ॥
जगामजनकरें न्यारा न्यारा ॥ जिद आलवाद कोई नहीं ठानैं ॥ इक इक घडी
अमोलक जानैं ॥ कहैं कि षोवैं तो कित पावैं ॥ कथाकीरतन सों चित लावैं ॥
कथा कीरतन जित तित होई ॥ साधसमागम होगया सोई ॥ घरघर सुभक
रमन ब्योहारा ॥ धरम पकड अधरम सब डारा ॥ ज्यों ज्यों दोस आरूधके आ
वैं ॥ घनें घनें सुभ करम कमावैं ॥ १२६ दोहा ॥ जाकूं होवै मोत मैं जगमैं लगै
न चित्त ॥ झुकै रामकी ओरही बकुतलगावै हित्त ॥ २७ चौपई ॥ उनमन
यौंकी यह गति भई ॥ जगकी चाल डार सब दई ॥ लाड चाव ब्योहार न कोई
॥ ब्याह सगाई पुत्र न होई ॥ काम क्रोध नहीं उपजै मोहा ॥ लोभ मान नहीं
प्रीत न द्रोहा ॥ ऐसें रहि सुभ करम जु करैं ॥ सदा मोत सें डरते रहैं ॥ सहज सह
जा फिर वह दिन आया ॥ डरे नहीं सुभ करम कमाया ॥ आपस मैं यो हैं हम कूं का
है जम की मार नरक मैं नांहै ॥ राजा जाना वह दिन आया ॥ अपना सेवग

३० धर्मजि

रतपठाया ॥ कहीकि फौजैंसबबनिआवैं ॥ कतलकरनपरजाकूंधावैं ॥
फौज[?]सजकरिढाढीमई ॥ असाओरदोयजोरहीं ॥ राजाकेमनऐसीआ
ई ॥ उनसौमनुषोलैंऊबुलाई ॥ सबसबहीकोरतबारी ॥ फेरखुलाकूंआ
बकीबारी ॥ यहीसोचफिरसीसनुठाया ॥ अग्याकारीनिकटबुलाया ॥१२८॥
दोहा ॥ कामदारसूंयोकहीवेसोमनुषबुलाय ॥ जिनमैंमिलबैठायहै
लहरिसोध्यानलगाय ॥१२९॥ चौपई ॥ फिरउनहींकूंलियाबुलाई ॥ मिल
बैठासबकासुषदाई ॥ कहीसबमिलसुरतठावो रामओरकंध्यान
लगावो ॥ अग्याहोयसोइतुममानौं ॥ मेरादोसकछुमतजानौं ॥ मो
कूंअग्याहोयसोकरिहूं ॥ आपनीहियेनैकनहीधरिहूं ॥ राजाकहि
मिलध्यानलगाया ॥ औसाउडगुगगनसूंआया ॥ राजामैंअबबकास
दियाहै ॥ सबपरजाहितयासुषकियाहै ॥ जिनकारमोसैंकोपभया
था ॥ तिनकेकारनषडगलयाथा ॥ सोपरजावेबातेंडारी ॥ श्रुन्नकर
महरिभक्तिसंभारी ॥१३०॥ दोहा ॥ तातैंअग्यायोंईस्वोकुटंबघरबार ॥ श्रु
मकरमोंकूंकीजियोघोटेकर्मनिवार ॥१३१॥ चौपई ॥ राजाकहीघो
लद्वारादीजै ॥ अग्याभईसोईअबकीजै ॥ घोलओषकरजोरैराषे ॥ ब
कसेगरातुम्हारेराषे ॥ जोतुमकहोसोईअबकरैं ॥ बचनतुम्हारेहि
देधरैं ॥ राजाकहीयुहीतुमकीजो ॥ रामनामकूंसंगीलीजो ॥ गुर
काध्यानधरौमनमांहीं ॥ जासूंबिपताआवैनांहीं ॥ आपनीतिरिया
तिरयाजानौं ॥ परतिरियाकूंमाताआनौं ॥ परधनकूंपाहनसमदे
षौं ॥ सुभकरमनकूंकरौंसेषो ॥ बोलौसांचझूठमंनाषो ॥ निरयाहिं
मानकनराषो ॥ होरहियोसबकेसुषदाई ॥ कडुवाबचनबोलो ॥

काहू॥ जो ब्यौहार करै सो साच्चा॥ लोक परलोक न आवै आंचा॥१३२॥ दो
हा॥ कहै श्री सुषदेवजी सुनौं चरनही दास॥ राजा नैं उपदेश पाई सब ही त्रा
स॥१३३॥ चौपाई॥ फिर वे मनुष दरा होय आये॥ हरि राजा के बचन सुनाये॥ जि
न चालन सूं बसे सारे मार षियो तुम हीये मंझारे॥ उज्जल करम भूल मत ज
इयो॥ हरि की भक्ति माहि ही रहियो॥ सुनि कर आपस मैं फैलाई॥ एक एक
नैं सुनी सुनाई॥ सब नैं मानी निहचै कीनी॥ परगट आपनी आंषों चीनी
हाथ कंगन कूं दरपन केहा॥ जैसी करनी भुगतैं जेहा॥ षुसी भए लागे
ब्यौहार॥ राम भक्ति कूं जिये संभार॥ कहै सुषदेव चरनही दासा॥ स
ब परजा रहै उमंग हुलासा॥१३४॥ दोहा॥ सुषदेव कहैं चरनदास सुनि
मैं उपदेस्यूं तोहि॥ जो यह लै हरि कूं भजे पाछै दुष नहीं होय॥१३५॥ चौप
ई॥ कथा कहूं इक और पुरानी॥ करनी करै सो समझै प्रानी॥ इक नृ 7
मइक बस्त एकूता॥ जाके दस पुत्र इक सुता॥ सुता ब्याह दई घर
की ऊई॥ जाके पीछै मात मुई॥ पीता मुवा दस पुत्र रहे थे॥ आपस मैं
सब बैठ कहे थे॥ ऐसी कछु करनी कीजे॥ जग मैं ऊंची पदवी
लीजे॥ एक नें ही कहूं जियै भूपा॥ सुंदर देही धरौ अनूपा॥ तेज मुलक मै क
हो वै भारी॥ हुकम जु माने नर और नारी॥ और एक ऐसें उठ बोला॥ सा
ह्रधां न है आंतर षोला॥१३६॥ दोहा॥ राजा ही का हुकम तो पोरे ही मैं जाय॥ ऐसी क
रनी कीजियै नृप चक्रवै होय॥१३७॥ एक दीप नौ षंड मैं जाका परा राज॥ एक
और कहि उठ बोलिया॥ यह बी ओछा साज॥१३८॥ चक्रवै से इंद्र बडा देवन हू
का भूप॥ अमर बडी आनंद बडे दुष की लगै न धूप॥१३९॥ चौपाई॥ करनी करि इं
द्र ही लोका॥ होकरि राजा कीजै भोगा॥ जहां अपसरा निरत करत हैं॥ सुंदर

अधिकीरूपधरतहैं॥ औरबडाअनाईयौंभाषा॥ सुरपतिहूकूंनांहींराषा॥ कहा
किपदवीब्रह्माकीसी औरनदीषैकाहूहीकी॥ जाकेएकदौसहीमांहीं॥ चौ
दहइंदरहोहोजांई॥ सबब्रह्मंडआसरेवाके॥ बिनसजायमिटजायैंजाके॥
तीनलोककापितावहीहैं॥ बेदपुराननमांहिकहीहै॥ करनीकरिकरिब्रह्मा
हूजै॥ ऐसीपदवीक्यौंनहिंलीजै॥१४०॥ सगरेयौउठबोलियासत्पसत्पयह।
बात॥ ऐसाहीअबकीजियेठहराईसबभ्रात॥१४१ दोहा॥ दसौंतपस्याकरनै
लागे॥ पारब्रह्मकीओरीपागे॥ अधिकतपस्याकीनीभारी॥ मांससूकगया
दीषैंनाडी॥ हाडतुचाचिपटीरहगाई॥ लोहूधातकछूनांरही॥ सबहीचित्तरसे
हगाए॥ कष्टतपस्याऐसेसहे॥ फूलपातजलहूंनहीलीनां॥ ऐसातपद
सहूंनैंकीनां॥ तनत्यागैइंद्रहीजनमां॥ दसौंभ्रातजोहूयेब्रह्मा॥ जिन
केदसब्रह्मांडबनेहै॥ एकएकतिनमांहिठनेहैं॥ करिनीकम्मंनफिर
फलजावै॥ जोमननधारैसोईपाई॥१४२ दोहा॥ करनीसैंइंदरभयेकरनी
ब्रह्माहोय॥ करनीसैंईस्वरभवैसुषदेवाकहैंसोय॥१४३॥ दसहजारकै
बीसहीबरषतपस्याकीन॥ हरिजाकोबदलोदियोमांगोसोबरदी
न॥१४४॥ चौरैंजुगकेमांहिजोकरनीहीपरधांन॥ गुरसुषदेवाकहत
हैंचरनदासउरआंन॥१४५॥ उज्जलकरमनकेकियेंदिनदिनउज्जल
होय॥ मनमैंउपजैनतिहिप्रेमपदारथदारथसोय॥१४६ चौपई॥
चरनदासतुमकरनीकीजौ॥ याहीमैंमननीकैंदीजौ॥ ऐसाजनम
बहुरनहींपैहै॥ बीतजायतौबहुरपछूतैहैमनुषादेहीदुर्लभम
जानौं॥ याकूंपायसुनकरनीठानौं॥ यादेहीमैंकरीकमाई॥ जायसु
रगामैनौनिधपाई॥ भक्तिकारीदेहीकेमांहीं॥ जाबैकुंठसुआये

नाहीं॥ या देही मैं ज्ञान न पाहै नीव ब्रह्म जो होय गया है। मूरख कथन १
कूं नहीं जानैं। कथनी कथि कथि बऊत बषानैं॥ पोथी कथनी का
म न आवै॥ पो था फट कै उड उड जावै १४७ दोहा कथनी ही के बी
च सूं लीजै तत्त बिचार। सार सार गहि लीजिये। दीजो डार असार। ४८।
चौपई। पोथी कथनी कहीं जु जानैं॥ बिन करनी जो करै बषानैं॥
लोक पलोक न सो पावै॥ बकि बकि बकि पाली मर जावै॥ कथ
नी के सूरा बऊ जानैं॥ करनी मैं कायर अरु पानैं। सूरा सवही जु क
रनी करै॥ दया धरम ले सनमुख अरै। पाव धरै सो नाहिं उठावै॥ क
रनी करता चला जु जावै॥ फिरे न भी फल ले कर आवै॥ सो वह सूरा म
ल कहावै॥ कायर बिच ही सूं फिर आवै॥ सो वह करनी कूं बिसरावै
अपना षोट न जानैं भैया॥ वह तो कथनी ही का गैया १४९ दोहा ऐसे ज
ग मैं बऊत है वैसे जग मैं नाहिं॥ कोई कोई ही देषिये सतगुर के मध मां
हिं १५० चौपई हो नहार कूं बऊत बतावै। पेट काज कुछ मरम न पावैं
कहैं कि होनी होय सु होई। ताकूं मेटि सकै नहीं कोई॥ या कूं समझ उ
पजै न करिया। सरधा तज कायर हो परिया। समझ नि षद्द गिर ही अ
ए भेषधारी बिन करनी रहे। जानत नाहिं जु पिछली करनी॥ अब
के मई जु होनी मरनी॥ पारालब्ध अरु भाग कहावै॥ पिछल करमों
सें उपजावै॥ अब के करै सो आगे पावै॥ कछू क कछू फल अभी दिषावै॥
के काहू गाली दे देषो॥ के काहू कूं मारू सेषो॥ के काहू कूं भोजन छा षा
वो॥ के काहू कूं सीस निवावो॥ के कोई चोरी जू वा षेलो॥ के काहू का
गुस्सा झेलो॥ हो नो का फल आगे आवै॥ चरनदास सुषदेव बता वै

३२

धर्मजि

परगट देषे यो यही तमासा ॥ नीच ऊंच करनी परगासा ॥१५१॥ दोहा ॥ कोइ उप
ही उपदेस यही जु सारी बात ॥ करनी ही बलवंत है यौं सुष देव दिषा
त ॥१५२॥ मन की करनी हो न होय परमातम मल षले ॥ ब्रह्म सरूप है जाय
जब छूटै सब ही झै ॥१५३॥ भौ सागर मैं मैं घने ता की लगै न आंच ॥
रूठे कूं भेबऊ तहे भै न हीं व्यापे सांच ॥१५४॥ करनी ही सें पाइये पा
रब्रह्म का षोज ॥ सतगुर चल जाइये मेटै सब ही सोच ॥१५५॥ चौपई ॥ इ
च्छा ब्रह्म करी सोइ करनी ॥ ईश्वर रूप धरा ले धरनी ॥ मह तत्त करि अहं
कार जु कीये ॥ तीन रूप तें कूं दीये ॥ राजस तामस सातग जानौं ॥ एही त्रिर
गुण मन मैं आनौं ॥ राजस जग कूं उपजावै ॥ सात क सूं पालै सरसावै ॥ ता
मस सूं बिनसावै तोडै ॥ बऊ त सिष नहीं भूप जोडै ॥ जोडै तो वह क
हा समावै ॥ धरती का पर वा न कहां वै ॥ पचास कोड जोजन बतला
ई ॥ बेद पुरानन मैं जो गाई ॥ धरती करनी हीं सूं ठाटी कच्छ वासे सम
ए जो आडी ॥ करनी हीं सूं मेह बरसावै बादल मिलती पवन चला
वै ॥१५६॥ दोहा ॥ करनी सें करतार ही धरा ब्रह्म का नाव माया भी तो उ
व करी षेली बऊ बिध दाव ॥१५७॥ चौपई ॥ कोई निराकार बतलावै
कोई निरगुन कहि समझावै ॥ कोई कहे दोनें सें न्यारा ॥ है जु अ क
र्त्ता अलष अपारा ॥ कहैं कि माया किस का पसारा ॥ जे ता दीषे यह सं
सारा ॥ तौ कऊ माया कित सूं आई ॥ अंत पही हरि मैं उपजाई ॥ वह ही
सिष्ट का कारन काजा ॥ वा नैं जगत प्यार करि साजा ॥ देह देह मैं वह
दरसावै ॥ चातुर हो चतुराई पावै ॥ जैसें बर्त न घडे कुम्हारा ॥ सब
मैं दीषै सिरजन हारा ॥ चित्त मैं चित्रा मीस न कै ॥ सुर ल्लगाय लगाय जु

उरझै ॥ जबही बनी बनाई ॥ तीकें कहै सुषदेव जु आयने जीकैं ॥ ५५
दोहा ॥ बिना किये कछु होय नहीं आपही लेऊ बिचार । करनी देषी
दूर लेसो चाबारमू बार ५९ । चरनदास तोसूं कहूं उठउद्यम कूं लाग
आलस सकल गंवाय करि बिषयन मे मत पाग ॥ ६० । कारज लोक
प्रलोक के बिन करनी होंनां हि ॥ करनी ही सूं होत हैं करनी सब
के मांहि ॥ ६१ ॥ षोटकारमन संकुषी याकु त्रिया के बीच । करनी ही
सूं होत है कुंचा नर अरु नीच ॥ ६२ । संगत मिल करनै गोऊचे नीक
मे ॥ बुध मैली जो होत है षोवै आप नांधर्म । ६३ । सतसंगत धरम हत है
कूं संमत धर्म जाय ॥ सुषदेव कहैं चरनदास सु निरो नो दिये दि
बाय ॥ ६४ ॥ धरम गया जब सत गया मिष्ठल भई जु बुधि । संब तो पाप
अरु पुन्य की कछू रही नासुधि ॥ ६५ ॥ पाप पुन्य ही सत्य हैं ठहर रह्या
ब्रहमंड ॥ इन दोनों के मिटे से होय जाय षंडषंड ॥ ६६ ॥ पायपुन्य बौ
हार है ताहि देष परतक्ष ॥ जाही सेती प्रेत जम देवत गण अरु जक्ष ।
पायपुन्य के फेर मैं सबही पडे पिछान ॥ ६७ ॥ पाप किये नरकै पडै
पावै दुष्ष अपार ॥ पुन्य किये सुष बढत है देषो हिय उघार ॥ ६८ ॥ बिर
ले जन कूं होत है पापपुन्य की सूक ॥ सोई छुटै जगजाल सूं बकुते
रहे अरुझ ॥ ६९ ॥ लाष बात की बात है कोट बात की जान ॥ पायपुन्य सूं
जानियैं लाभ होय कै हांन ॥ ६९ ॥ करनी बिन षोयार है कछू न पावै
भेद ॥ बिन प्रापत होय नां कहैं जु यों सुषदेव ॥ ७० ॥ चौपई ॥ होंनी क
है जु बैठी मारे ॥ करनी करते दिष निहारे ॥ बिन करनी ब्यौहार न
चाले । नहीं तो बैठ रहत जा ठाले । किरत करै सो भी यह करनी । ब

नियां हाट पंडित बरनी ॥ करनी हीं सूं धारें पीवै ॥ जोग करै बक्ु तै दि
नजीवै ॥ मन माजै सब ही परगासै ॥ करनी बिन कू औसब नासै ॥ करनी
हीं सूं सिद्ध होजावै ॥ आठौं सिध करन सूं पावै ॥ जीवन मुक्ता करनी है
ती सुनले सकल शास्त्र सेती ॥ गुरसूं निहचै यही जु कीनी ॥ रनतीत्र
मैं तो कूं दीनी ॥ ७३ ॥ दोहा ॥ यह तौ धरमजिहाज है मै तो हिरदै निहा
र ॥ भौसागर मैं डारयौं चढै सु उतरै पार ॥ ७४ ॥ बादवान पुन बेड यौ ही
जो ताहि चलाय ॥ पानी पाप निकासि यो नैक रून्न भरजाय ॥ ७५ ॥ च
ढि उतरै जो पार ही पावै सुष का धाम ॥ आनंद ही आनंद लहै है का
रै तहां बिश्राम ॥ ७६ ॥ सिष बचन ॥ धन्न श्री सुषदेव हो बचन तुम्हा
रे धन्न ॥ सब संदेह मिटाय करि निहचल नां मन्न ॥ ७७ ॥ चौपई ॥ ब्यास पु
त्र तुम मम गुर देवा ॥ करूं मान सी तुम्हरी सेवा ॥ मन मैं तुम्हरी पूजा साजूं ॥
तुमसैं पूछ करूं सब काजूं ॥ मेरे ध्यान सिताबी आए ॥ जो थे सो संदेह मि
टाए ॥ मैं तो ध्यान कर तही रहूं ॥ तुम्हरी मूरत हिरदै धरूं ॥ मेरे जीवन प्रान
आधार ॥ मैं न हिरदै कूं चरन सैं न्यारा ॥ तुम ही चरनदास कहीऊं ॥ बा
र बार तुम पै बलि जाऊं ॥ तुम ही कूं ईस्वर करि मानूं ॥ पारब्रह्म तुम ही कूं
जानूं ॥ और न कोई दूजी आसा ॥ मो हिरदै मैं राषौ बासा ॥ ७८ ॥ दोहा ॥ आय
नै चरन ही दास कूं सब बिध दिया अघाय ॥ अस्तुति करूं तौ क्या करूं
मोपै कही न जाय ॥ ७९ ॥ इति श्री गुर चेले का संबाद धर्मजिहाज संपूर्णं ॥ ॥ राम राम राम राम

अथ श्री गुरु चेले का संबाद अष्टांग जोग लिष्यते सिष बचन ॥ दोहा ॥
ब्यास पुत्र धन धन्न तुम्हीं धन धन्न यह अस्थान ॥ मम आसा पूरी करी
धन धन्न वह भगवान ॥ १ ॥ तुम दरसन दुरलभ महा भए जु मो कूं आ 7
ज ॥ चरनन लगो आपा दियो ऊ राजु पूरन काज ॥ २ ॥ चरनन दास अपनौं
कियो चरनन लियो लगाय ॥ सिर कर धरि सब कुछ दियो भक्ति द
ई समझाय ॥ ३ ॥ बालपने दरसन दियो तब ही सब कुछ दीन ॥ बीज
जु बोयो भक्ति का अब भयो है छे नवीन ॥ ४ ॥ दिन दिन बढता जाय
गा तुम किरपा के नीर ॥ जब लग माली ना मिला तब लग ऊता अधीर
॥ ५ ॥ अरु समझायो जो गही बहु भांती बहु अंग ॥ उर धरे सा ही कही जीत
न बिंद अनंग ॥ ६ ॥ अरु आसन सिष लाइया तिन की सारी बिध ॥ तु
म किरपा सूं हो हिंगे सब ही साधन सिद्ध ॥ ७ ॥ इक अभिलाषा और है क
हन सकूं सुकचाय ॥ हिये उठे मुष आय करि फिर उलटी ही जाय ॥ ८
गुरु बचन ॥ सतगुर सैं नहीं सुकचिये हे चरनहीं दासा ॥ जो अभि
लाषा मन बिषै बोलि कहो अब तास ॥ ९ ॥ सिष बचन ॥ सतगुर तुम
अज्ञा दई अब कहूं अपनी बात ॥ अष्टांग जोग मम काइयै तातें हि
यो सिरात ॥ १० ॥ मोहि जोग बतलाइये जो है वह अंगा ॥ रहनी गह
नी बिध सहित जा के आठौं अंग ॥ ११ ॥ मत तमारग देषे घनें स्यां सिय
रे मन धांन ॥ जो कुछ चाहो तुम करो मैं हूं निपट अयान ॥ १२ ॥ गुरु ब
चन ॥ अष्टांग जोग समझाय हूं भिन्न भिन्न सब अंग ॥ पहले संजम सी
षिये ताते होय न भंग ॥ १३ ॥ सिष बचन ॥ संजम का सूं कहत है कहो गु
रु सुषदेव ॥ सो सब ही समझाइये ताको पाऊं भेव ॥ १४ ॥ गुरु बचन ॥

३४ चौपेई॥ प्रथमसूंछमभोजनषावे॥ छुधामिटैआलसननहिंआवे॥ थो ७
अ०जो डासाजलपीवनलीजे॥ सूछमबोलैबादनकीजे॥ बहुतनींदभरिसो
वैनांहीं॥ दूजामनुषनराषैपाहीं॥ षट्टाचरपराषारनषावै॥ बीरजंछी
णहोंननहिंपावै॥ करैंनकाहूंबैरीमीता॥ जगतबसकीरषैनचींता॥ नि
हचलहोमनकूंठहरावै॥ इंद्रियनकेरससबबिसरावै॥ तिरियातेलन
देहछुवावै॥ अष्टसुगंधअंगनहिलावै॥ मनषोकीराषैनहिंआस॥ गुर
कारहैचरहीदासा॥ १५ दोहा कामक्रोधमोहलोभनहीराषैनांअभिमांन
रहैदीनताहीलियैंलगौंनमायाबांन॥ १६ चौपई॥ छलनहींकरनैनछ
लमैंआवै॥ इंद्रकूठकेनिकटनजावै॥ जंतरटौंनांभूतनधावै॥ कूठजानि
केसबबिंरावै॥ धातरसायनमननहिंलीजे॥ कूठजांनियाकूंतजदीजे
खागतमासेबागनजइयै॥ आसनऊपरबेठारहियै॥ डिठहोलगैजगा
तिकेमांहीं॥ तातैंबिघनहोयकछुनांहीं॥ रूठारहैजगतलोगनसूंन्या
राहैसभीभोगनसूंइंद्रआदिलौंसुषसंसारी॥ नेंकनचाहैचित्तमंझारी
सिमटिरहैंहियमांहिसमावै॥ ऐसैंजोगसधेसिधपावै॥ १७ दोहा रिध सि
धअरुकामनातिनकीरषैनआस॥ मांनबडाईचपलगतगोचरनहें १
दास॥ १८ चौपई॥ गाहिसंतोषहि मांहियेंधारै॥ संजमकरिकरिरोगनि
वारै॥ अहंकारकूंछोटीकरियै॥ कुटलमनोरथमननहिंधरियै॥ ब
सियैजितहोदेससुथानां॥ निरउपाधधरतीअस्थानां॥ भलीभूमि
लषिगुफाबनावै॥ नीचीऊंचीरहननपावै॥ जिंमीबुराबरचौरसहोई॥
होलदावूकीमुंधरीसोई॥ संकडाद्वारापाटलगावै॥ कहींछेदरहननैं
नहिंपावै॥ तामैंबेठिजोगतपकीजे॥ भीतरदूजामनुषनलीजे॥ काहे

सुषदेवचरनहीदासा ॥ जागसूंरहियेसदाउदासा ॥ १९ ॥ दोहा ॥ यहसबनि
हचैहीकरैजोगजुगतिकेआदि ॥ पहलेंअभ्यासाहोयकरि पाछेसाध
नसाधि ॥ २० ॥ आठअंगकहूंजोगकेसुनोंचरनहीदास ॥ मेरेबचन
नकेबिषेंचितदेकरौंनिवास ॥ २१ ॥ चौपई ॥ पहलेंजमकाअंगसुनिलि १
जै ॥ दूजैंनेमकहूंचितदीजैं ॥ तीजेआसनहितकरिसाधौ ॥ प्राणायाम
चौथेंआराधौ ॥ प्रत्याहारपंचवांजानें ॥ छठेधारनांकूंपहचानैं ॥ स
तवेंध्याननमिटैंसबबाधा ॥ कहूंआठवांअंगसमाधा ॥ सिष्यबचन ॥
धन्यधन्यतुमश्रीगुरदेवा ॥ मेरेप्राणपतिश्रीसुषदेवा ॥ ब्यासपुत्रतुम
दीनदयाला ॥ मोअनाथकूंकियोनिहाला ॥ मोहिआठअंगयेतुमगाई
न्यारकहेभिन्नभिन्नसमझाई ॥ एकएककूंजुदाबषानों ॥ जासूंजग
यदासयेंजान्यो ॥ २२ ॥ गुरबचन ॥ दोहा ॥ एकएककाकहतहूंजुदा
जुदाबिस्तार ॥ सरवनसुनेंबिचारकै लेलेहियेमेंधार ॥ २३ ॥ अथजम
काअंगबरनते ॥ चौपई ॥ पहलेंजमकेदसकहूंअंगा समझेजो
गनहोवेभंगा ॥ प्रथमअहिंसासुनिलीजे ॥ मनकरकाहूदोष
नकीजे ॥ कडुवाबचनकठोरनकहियै ॥ जीवघाततनसूंनहिंदहि
यै ॥ तनमनवचननकभिलगावै ॥ यहीअहिंसाधरमकहावै ॥ दूजैंसत्यम
त्यसत्यहीबोलै ॥ हिरदेतोलबचनमुषबोलै ॥ तीजैंअस्तेयत्यागसुनीजे ॥
तनमनसूंकाहुनांहिहरीजै ॥ तनचोरीकेलछननराषै ॥ मनकीचोरीकूंनहि
राषै ॥ चौथाब्रह्मचर्यबतलाऊं ॥ भिन्नभिन्नकरितोहिसुनाऊं ॥ २४ ॥ दोहा ॥ ब्र
ह्मचर्ययांकहैंसुनहोचरनहीदास ॥ आठअंगसूंनारकीनेंकारराषै
आस ॥ २५ ॥ चौपई ॥ जतीहोयडिंभकाछगहीजे ॥ बीरजछीणनहोनेंदीजै

अजो मैथुन न करहु अष्ट प्रकारा। ब्रह्मचर्य रहै इन सूं न्यारा॥ सुमरन त्रिया का
नहिं करिये सरवन सुरति सुन हिं धरिये॥ रस सिंगार पढै नहिं गावै
२ नारि संग सूं नहिं सेहं सावै॥ द्रिष्ट न देषै बिषय हिदै रै। मुष देषे मन न होज १
औरै॥ बात इकंत करै नहिं कबही॥ मिलन उपाव जुत्या गोस बहीं अ
ठवां सपरस निकट न जावै॥ कामजी ति जोगी सुष पावै॥ अष्ट प्रका
रके मैथुन जानौं॥ इन्है तजै ब्रह्मचर्य पिछानौं। कहैं सुषदेव चरन
हीं दासा॥ ब्रह्म सत्य मैं करै निवासा॥ २६॥ दोहा॥ पंचवीस सुषदाई छिमा
जन बुझावै सोय॥ जो टुकआवै घट बिषै पातिग डारै धोय॥ २७॥ चौप
ई॥ कोई दुष्ट कडवा कहि जावै॥ गाली देकरि कोई षिजावै॥ कै कोई सि
परिकूं डाडारै॥ कै कोई दुष देवै अरु मारै॥ वाकी कछू न मन मैं ला
वै॥ तलटा उन कूं सीस निवावै॥ ऐसी छिमा हिये मै लावै॥ बोलै ऐसी
तल आगन बुझावै॥ छठा अंग धीरज का नौं॥ धीरज ही हिरदे मैं आ
नैं॥ जोग जुगति धीरज सूं कीजे॥ सब कारज धीरज सूं लीजे॥ धीर
ज सूं बैठे अरु डोलै॥ अंतप इंदु ब नांउ कलावै॥ धीरज सूं डिट
ता गहि लावै॥ २८॥ दोहा॥ धीरज रह्या तौ सब रह्या काहूं सै न ड
राय॥ सिंघ प्रेत अरु काल का धीरज सूं डर जाय॥ २९॥ चौ॥ पद्म पा
सातवां अब सुनि लीजै॥ सब जीवन की रिछ्या कीजै॥ लष
चौरासी का सुषदाई॥ सब के हित कवै बनाई॥ रहिये तुम
मन बचन दयाला॥ सब ही सूं निरबैर कृपाला॥ आठवें क
हूं आर्जव षोलै॥ हिरदै कौमल कौमल बोलै॥ सब कू
कौमल द्रिष्ट निहारै॥ कौमलता तन मन मैं धारै॥ कौमल धरता॥

बीजबुवावै ॥ बधै बेल फूलै फल लावै ॥ जैसे कैं मल हियाब
नावै ॥ जोग सिद्ध करि पद पुंहचावै ॥ यही आज वलहू न जानै
सुषदेव कहैं रनजीत पिछानैं ॥ ३० ॥ दोहा ॥ मित आहार जो नवै का
सम जै है मन मांहि ॥ सत गुन भोजन षाइये जो सा वैसा नाहि
३१ ॥ षावै अन्न बिचार करै आहार ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ सहस मषि का तौ
हलका षावै ॥ चौथा भाग छोड़ करि पावै ॥ बानप्रस्थ के हा संन्या
से ॥ भोजन सोलह ग्रास गिरासै ॥ और ग्रहस्थ बतीस गिरासा ॥ आ
वै नींद न बहुत न सांसा ॥ ब्रह्मचारी भोजन करै इतना ॥ पथ्य
मांहि धीजै रहै जितना ॥ दसवां नेम चप त्रिहर रहियै ॥ कारि इतो नह
मेसैं न कहियै ॥ जो सरीर मैं होवै रोगा ॥ रहन तन जल छूवन जोगा ॥ तै 7
तन माटी संसुध कीजै ॥ जब अंतर सुध की सुधि लीजै ॥ राग द्वेष
हिरदै से टारै ॥ मनसा बाचे कर्म निवारै ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ जम कहा दस
परकार का पहल जोग की नींव ॥ नेम कहूं अब दूसरा सो है सा
धसीव ॥ ३४ ॥ अथ नेम को अंग बरनते ॥ चौपई ॥ दूजा अंग नेम का
गाऊं ॥ त्रिं भिन्न सब अंग सुनाऊं ॥ पहला तप इंद्री सब कीजै इ
नके स्वाद सभी तजि दीजै ॥ षाते पीते सोवत जागत ॥ जोगी इंद्रियन
कूं बस राषत ॥ तन कूं बस करि मन कूं मारै ॥ ऐसी बिधि तप का अंग
धारै ॥ दूजा अंग का हूं संतोषा ॥ हां न भयै नहि मानै सोका ॥ ला भ भ यैं
नाहीं हरषावै ॥ ऐसी सम ताहि यमैं लावै ॥ पराल ब्धतन होय सु हाई ॥
संकलप बिकलप रषै न कोई ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ तीजा आस्तिक अंग है ता
का सुनौं बिचार ॥ सम झि सम झि मन मैं धरै तां कूं गहौ संचार ॥ ३५ ॥

अंगु० चौपई ॥ श्रा सु नियरती वृज कीजे ॥ सन्न बुस निहचै करि लीजै ॥ बुध निह
चल आतम के मांही जगत सांच करि मानै नांही ॥ चौथा दांन अंग अबि
धि दाई ॥ पात्र कुपात्र बिचारो सोई ॥ एक दांन अपदेस जु दीजै ॥ भासागार
सूं यार करीजै ॥ दूजा दांन अन्न अरु पानी ॥ दीजै कीजै बड़ सनमानी
और पराये दुष की बूझै ॥ सुषदा नी परमारथ सूझै ॥ पंचवैं ईस पूजा करि
यै ॥ तन मन बुधि जहा ले धरियैं ॥ हो निहकाम तजै सब आसा ॥ सेवा क
रै होय निज दासा ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ पीती फूल जु न्याव संषे सुं धकरि धूप ॥ सुष
देव कहैं यौं कीजियै पूजा अधिक अनूप ॥ ३७ ॥ चौपई ॥ छठें सिध्यात श्रव
न सुनैं बानी ॥ करि बिचार गहियै मन मानी ॥ सार असार बिचार जु की
जै ॥ पानी कूं तजियै कूं पीजै ॥ अरु सतगुर सूं निहचै करियै ॥ पर घिसं भ
ल हियैं मैं धरियै ॥ करनी करैं तिन्हों सैं मिलनं ॥ बचन अजोगी के न
हिं सुननं ॥ सतवै ह्री जु कहियै लाजा ॥ सो नहसकल सवारै काजा ॥ साध
गुरु सूं लाज करीजै ॥ तन मन दुल नैं नांही दीजै ॥ करम बिबर्जित
सब परहरियै ॥ हियअंषन मैं लज्जा भरियै ॥ सुषदेव कहैं सु नि
चरन सौ दासा ॥ लज्जा अंब मांहि करि बासा ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ कुटं
ब मित्र जुग लोग ही सब सैं कीजै लाज ॥ बडी लाज हरि सूं करै
नीकै सुधरै काज ॥ ३९ ॥ आठवें संतोष ही जो कहियै सो बसेष
सांधो कूं चहियै ॥ सु न करम नकी कीइ दया करनी ॥ हो न है
तौ नी हिय धरनी ॥ बहकै नाका हूं बहका ये ॥ कैसें हूं न हिं ६
लैव लाये जग सुषदे बन मन मैं आने ॥ सुरग आदसुष कूं तु
छ जाने ॥ कोई न्म सुति आदर करि सैवैं ॥ कोइक नाव करि

गाली देवै ॥ दोनों मैं तिह चल रहै जोई ॥ सुषदेव कहैं द्रिढ मत है सोई
तौ मैं जाप करै ॥ हिंसो नां ॥ मन जिभ्या सूं कीजै नौं नां ॥ होय सकै म
न यथ न गाहीजै ॥ गुरु मंतर जपता ने कीजै ॥ ४० ॥ दोहा ॥ हरि गुरु की अस्तु
ति पढै सो भी कहिये जाप ॥ सुषदेव कहैं रनजीत सुनि तिरविध ना
सैं ताप ॥ ४१ ॥ दसवें सम जो है पहंही कीजै दोय प्रकार ॥ आगन मां हिंसा
किल्ल कूं बेद कहैं ज्यौं ज्ञार ॥ ४२ ॥ दूजे पाव कज्ञान की तामैं इंद्री होम ॥ बा
को पराग टसू मिहैया कूं हिरदा भोम ॥ ४३ ॥ चौपई ॥ जम कज्ञोग सभी कहि
दीन्हां ॥ नेक कहा सो भी तुम चीन्हां ॥ निरजोग ही के मत जाने सब के
कारज के पहचानैं ॥ ऐसे जोग पलये चहिये ॥ सुभ करमन के मार
ग कहिये ॥ जोय होय उठै होवै जोग ॥ तांही बहै जगत के जोग ॥ अज्ञासी
कूं पहस्तु नीजे ॥ पाछे भेद जोग का दीजै ॥ जम और नेम भेद कु बतलाये
आछे ज्ञी की भांति सुनाये ॥ अब तीजे आसन सम जो कूं जुदे जुदे
कहिस बेसुना कं ॥ जोग पह आसन नही साधे ॥ आसन बिनां जोग ब
बादै ॥ ४४ ॥ अथ आसन दोहा ॥ थिरन आसन बिह चैकरै ॥ बिन आसन न
ही जोग ॥ जो आसन द्रिढ होय तौ जोग सधे भजि रोग ॥ ४५ ॥ चौपई ॥ चौरा
सी लष आसन जानौं ॥ जौंन न की बैठक पहचानौं ॥ तिन मैं चौरासी चु
ग लीने ॥ दुरलभ भेद सु गम सो कोकीनें ॥ सो तुम कूं पहलैं बतलाये
जिन कूं साधे गो चित लाये ॥ जिन मैं दोय अधिक परधावें ॥ तिन कूं
सब जोगेश्वर जानें ॥ आसन सिद्ध पदंम कहलावै ॥ इन कूं बिह च
लकरि ठहरावै ॥ और आसन सब रोग नजावै ॥ याद आसन जोग स
धावै ॥ इन कूं साधे जो जन कोई ॥ ध्यान सम मांचल गावै सोई ॥ चरन

दासमुषदेव कहे यों ॥ आसन दोनों बरनें है ज्यों ॥४६॥ अथ पद्मआ
सनबिध ॥ चौपई ॥ पहलें आसन पद्म बताऊं ॥ ज्यों कीयों सूरत दि
षलाऊं ॥ पहलें बावां पांव उठावै ॥ दहनी जांघाऊ पर लावै ॥ दुहनां
पांव फेरयौं लाके ॥ बावीं साथल ऊपर राषै ॥ बाबा कर पीछे सैं लावै
बाम अंगूठा गहि तनतावै ॥ ऐसैं हाथ दाहनें लावै ॥ दहनां गूठा पकड
डिढावै ॥ ग्रीवां लटक चिबुक हिये आवै ॥ नासा अग्रपोडी ठहरावै ॥ दि
ब्य दिष्ट हे कोतिग दरसै ॥ कहे सुषदेव अभै पद परसै ॥४७॥ दोहा ॥ केहि
रदै राषै चिबुक कै सम राषै देह ॥ कै चोटों दोऊं हाथ रषि कै गूठा गहि ले
ह ॥४८॥ ॥ अथ सिद्ध आसन बिध ॥ चौपई ॥ दूजा आसन सिद्ध जु कीजे
बावां पांव गुदा ढिग दीजे ॥ दहनों पांव लिंग परि आवै ॥ दिष्ट भ्रकु
टी मै ठहरावै ॥ अचल जहां अधिक दरसावै ॥ षुलक पाट मोष ग
ति पावै ॥ आसन साधि ब्याध परहरै ॥ भूष नींद जो ये बस करै ॥४९॥ दो
हा ॥ एडी बावें पांव की सीवन मध्य राष ॥ लिंग गुदा के मध्य मैं मूल बो
लिये साष ॥४९॥ संजम सूं इडी गहे राषै सलिल सरीर ॥ दिष्ट उठाय भ्रकुटी
धरै मिटैं जु दोनों पीर ॥५०॥ दहनीला वै लिंग परि भाग बराबर राष ॥
बारी बारी कीजिये सुषदेवा कहे भाष ॥५१॥ अथ प्राणायाम का अंग
बर्नत ॥ दोहा ॥ चौपै प्राणायाम ही कहूं सुनें चित लाय ॥ जा बल जो
गै पवन कूं चढै गगन कूं धाय ॥५२॥ षट चक्कर कूं छेद करि सुषमन
ही की राह ॥ सहंस्र दल के कंवल में पूंहचै करै उछाह ॥५४॥ दिर
दे मैं अस्थान है प्रान बायु का जान ॥ या के रोकें सब रहें बायु मैं प
रधान ॥ जैसे गंगा एक ही घाट घाट की नाव ॥ ऐसे प्रान ही बायु

केतांवहकहे वकऊठांव ॥५६॥ चौरासी आस्यानपरि चारासी ही वाय
तासैं रस एमुष्य है बरनं सुनियै ताहि ॥५७॥ प्रान अपांन समांन
हीऔर बानउदांन नागधनंजय देवदत्त कूरम किरकल जा
न ॥५८॥ दस बाई ओ एकही तिनमैं दीरघ होय ॥ सो वे प्रान ओ पा
नहै तिन्है पिछानै कोयु ॥५९॥ अपांन जायप्रानै मिलैरहै प्रा
नकी प्रांन ॥ सुषदेव कहै बरनन करूं ॥ ओ बड़न के ओ स्थान
६० ॥चौपई॥ प्रांन बायु हिरदे कठांई ॥ बसै अपान गुदा के मांहे ॥ १
बायसमांन नाभ आस्या नं ॥ कंठमांहि बाई उदान ॥ ब्यान
जु ब्यापक है तन सारे ॥ नाग बायसूं उठै डकारे ॥ पलक उघाडे
कूरम बाई ॥ देवदत्तसूं होय जंभाई ॥ किरकल बायजु छींक
गावै ॥ मुयेंधनंजय देह फूलावै ॥ सब मैं प्रान बायमुष जानै
सो हिरदे के मध्य पिछानौ ॥ हिरदा ही देही के मांही ॥ जो कु
छ है सो हाई हांई ॥ जोगेश्वर होइ फल पावै ॥ सांससूं आवह
बनाइ जगावै ॥ अथ चक्रबर्नने दोहा ॥ अब चक्र कर बरनन क
रूं पाऊं प्राणायाम ॥ बरनूं नाडी सुषमना सुधरै सब ही काम
हर ॥ है वे सूरत कंवल की कोट और बिसाल मूलस्थले कारि
सीस लौं एक ही जिनकी नाल ॥ ६१ ॥ कुंडलिया ॥ लाल रंग य
हलाक हंस आधार चक्र तिह नांव ॥ चारये परी तास की है गुरु
दा के ठांव ॥ है जु गुदा के ठांव देह ताही परिसाजै ॥ चारे मो
ही रत हां दे वगणेस बिराजै ॥ यह बनसुरति कंवल धरै सो लि
कहै सुषदेव ॥ जा लिग आस्थान है जाको सुनि ओब ॥

मेव॥६४॥पीतबरनषट पैंघडी।तांकुजुस्वाधिष्टानं॥षटअक्षरजायै
हिपैंब्रह्मादेवतजानसंगसावित्रीदासी॥इनसहितसबदेवताहां
सबहीकाबासा॥मणिपूरकचक्ररकहूंतीजानामअस्थान॥नील
बरनदसपैंघडीदसअक्षरपरवान॥६५॥दो०॥बिसुजहांकादेव
तामहालक्ष्मीसंग॥चरनदासअबकहतहूंचौथेकोपरसंग॥६
६॥अनाहदचक्रहिरदेबिषैद्वादसदलजानसेत।सोसकतीज
हांदेवताद्वादसअक्षरमेव॥६७॥पंचवांचक्रकंठमेबिसुधनाव
जिहकेर॥षोडसदलजीवदेवताषोडसअक्षरहैर॥६८॥छठमु
भौंहनबीचमेआज्ञाचक्करसोय॥जोतिदेवताजानियेंदोदल
अक्षरदोय॥६९॥सिषबचनकवलोंयेंअक्षरकहेसमझनआई
माहिं॥कौनकौनअक्षरतहांसतगुरुकहियेसोय॥७०॥गुरबचनचौ
पई॥पहलकंवलआधारसुनाऊं॥बुधाषसअक्षरबरनबताऊं॥दू
जाकंवलजुस्वाधिष्टानां॥बभमयरलजुबषानां॥त्रितियैमणिपूर
काजोकहियैं॥डढणतथदलहियै॥दधनपफजोगाए॥येदस
अक्षरबरनबताये॥चौथेचक्रअनहदमांही॥द्वादसअक्षरब
रनबताई॥कखगघङ जोजान॥चछजझञटठजुमान॥पंच
वांषोडसबिसुधजोआछै॥आदिअकारअःकारसोपाछै॥छठमआ
ज्ञाचक्रमानों॥हंसबबरनदेअक्षरजानों॥७१॥दोहा॥भंवरगुफा
मंडअषंडतिरवेंनीजहांस्नान॥तितपरबीजहुहांहोतहैकरैपाप
कीहान॥७२॥उलटिपवनबैंधेघटनकपरदुहचेंजाय॥सुषदेवक
हैचरनदासजुसुमनसहजसमाय॥७३॥कंवलसहसदलसातवासी
समध्यहीबास॥तहांदेवतासतगुरुपूरीकरेंजुआस॥७४॥कांतकसु

षमन का सिर सैं स्याती की नाल । हे ब्रैं उसटे षूट कें वुल तलें आपंम्न ब
याल ७५ ॥ अपांन बाय कूं साध करि परलावे मोड ॥ जब होवे सुल
टकं वूल सुषम्ना कास की ओर ॥ ७६ ॥ अपान बाय ज्यों ज्यों चढे
चक्कर चक्कर पास ॥ त्यौं त्यौं सीधे होय सब पूरे जां न अभ्यास ॥ ७७ ॥
अयना बायु आवे जबे चक्र जोना हद मांहि । दस प्रकार के ना
द हीय मनैं मन ने षुल जाहि ॥ ७८ ॥ चौपई ॥ पहलैं नाद षुलै जो जैसो नि
ची कला बोलै जैसा ॥ एक ही बार कहै ये चिन ॥ दूजी बार षुलै चिनचि
न ॥ तु दूघंट ज्यों तीजा नैं ॥ चौथी नाद संष प हच्यानो ॥ पंचवीं
नाद बीन ज्यों गाजै ॥ छठवीं उपजत ताल ज्यों बाजै ॥ सतवीं नाद मुरलि
या ऐसी ॥ अठवीं उठे पषावज जैसी ॥ नवैं नफीरी नाद सुनावे ॥ दसवैं
सिंध गरज उपजावे ॥ नाद ज दस बैं सूं हित लावे ॥ सो हूं दसु निम्न
हद होजावे ॥ होय जीव सू ब्रह्म अगाधा । जो कोइ सुनैं सु अनहद
नादा ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ षुलै जु अनहद नाद ज्यों सो साधन सुनि लेह जा
सूं पुहचै सिध कूं कार नीचित देह ॥ ८० ॥ आधा चक्र सूं षैंचि करि अ
पांन बाय सजि लेह स्वाधिष्ठान के पास ही तीन लपेटे देह ॥ ८१ ॥ चौप
ई ॥ या की बिध सब तोहि सुनांऊं ॥ जैसे है तैसैं समझाऊं ॥ पहलैं मू
लद्वार कूं सोधे ॥ बंध लगाय अपांन निरोधे ॥ पहले चक्र मैं ठहरा
वै ॥ षैंच दूसरे के ढिग लावे ॥ वाके आसे पासे फिरावे ॥ दह नैं तीन
लपेट लगावे ॥ फिर मणिपूरक मैं पुहचावे ॥ फेर अनाहद मैं लेजा
वे ॥ आन हद षुलै सुनैं सुषमावे ॥ फिर कां प्रान मिलावे ॥ हिरदे कूं
ठ मध्य ठहरावे संजम सूं ताकूं परचावे ॥ बंध दूसरो ठहां लगावे

३९
अंजो

चरनदासमुषदेवबतावै ॥ ८२ ॥ अष्टपदी ॥ पहलैंअनहदनादसु
लैहियेऊपरै ॥ कंठसूंनीचैरोकिध्यानकोईधरै ॥ जहांअपरबल
होयजुअनहदशब्दही ॥ फिरयोंजानोंजापकंठकेमध्यहीतहां
कियैंअभ्यासध्यानराषैंघनां ॥ होवैअधिकीनादसुनैंसाधू ॥
जनां ॥ केतकुदोसनोहिब्रह्मरंध्रकनें ॥ जायसुलैजहांनादसु
रतिदेकानसुनें ॥ सुनैंसनैंयोहोयजानैंकोईसाधही ॥ हिरदेआरु
ब्रह्मलोकलौंराकेनादही ॥ मीठीऔरसवादबडौतहीपाइयै
सतगुरकेपरतापजबत्रामनलाइयै ॥ ब्रह्मलोककीबासमसुनैंहो ॥
वैंजाकूं ॥ सबहीसूझैबस्तजुकुछहोवैंतहां ॥ ८३ ॥ दो० ॥ अनहद
कीसमऔरनांफलबरनेंनांहिं ॥ पटतलकेचकनदेसकूंमबकु
छहैवामांहिं ॥ ८४ ॥ पांचथकैआंनदबढैआरूमनुवाबसहोय ॥
सुषदेवकहैंचरनदाससुनिआपअपनजोषोय ॥ ८५ ॥ नारिनमैं
सुषमनबडीसोअनहदकीमातकुंभकमैंकेवलबडासोब्रह्म १
कातात ॥ ८६ ॥ मुद्रौंबडीजुषेचरीवाकीबहनीजांन ॥ अनहद
सावाजानहींऔरनसासमध्यांन ॥ ८७ ॥ सेवककेसैंसामीभवैंसु
नैजुअनहदनाद ॥ जीवब्रह्महोयजातहैपावैंअपनआद ॥
८८ ॥ चरनदासअबकहतहूंवहीजुप्राणायाम सुषदेवक
हैंताकेकियैंपावैंमनबिश्राम ॥ ८९ ॥ चौपई ॥ बहत्तरहजारऔ ७
ठसैचोसठनारी ॥ सबकीजडहैनाभमंकारी तिनमैंदसनाय
डीसिरमोरी ॥ पंचबावैंपंचदहनीओरी ॥ जिनमैंतीनअधिक
परधान ॥ इडापिंगलासुषमनजांन ॥ तिनमैंसुषमनअधिक

त्ता नूप ॥ सो वह कहियै आगम सरूप सम ताहु ॥ आयांन बुतांकं ॥
ठौर ठौर सौ हि कहि समझाकं ॥८०॥ दोहा ॥ नारि संग नौ गुदा मैं कुर
कलिंग अस्थान ॥ पोषा सरब नदा है नैं जखनी बावै कान ॥८१॥ गं
धारी द्रग बाम हीं हस्तनी दहने नैन ॥ नारि लिब का जीभ मैं सब
नाद सुष दैन ॥८२॥ नासा दहनैं अंग है पिंगल सूरज बास ॥ इडा सुबा
मी ओड है जहां ससि पर परगास ॥८३॥ दोनों कू मधि सुषमना नाम हु
तिया को भेद ॥ ब्रह्म नाडी कूं कहत है यों कहै मो सुष देव ॥८४॥ इडा
ब्रह्मा जमुनां जहां सुषमन विष्नु निवास ॥ और सुरसती जानियै
रहो चरन ही दास ॥८५॥ रेषा पिंगला गंगा सहित सो वह दह नैं भा
ग ॥ तिरबैनी यातें भई मिली जुती नौं संग ॥८६॥ कमी इडा ओर चल
त है कबही पिंगल मांहि ॥ मध्य सुषमनां बहत है गुर बिन जानें
नांहि ॥८७॥ सो वह आगम स्वरूप है बडौ जोग सिरदार यांही तें कार
ज सरै ऐसी सुषमन नार ॥८८॥ चौपई ॥ नसू प्राणायाम करीजे ॥ पूरक
कुंभक रेचक हीजे इडा पिंगला मारग याके ॥ उलटि सुषमनां चा
लन लागो ॥ बाय षैंचनां पूरक जानौ ॥ ठहरावन कू कुंभक मानौं
फेर उतारै रेचक होई ॥ प्राणायाम कहावे सोई ॥८९॥ दोहा ॥ इडा
पवन पूरक करै कुंभक राषै रोकि ॥ रेचक पिंगल सूं करै मिटै या
प के थोक ॥९०॥ चौपई ॥ पिंगल रोके पवन न जावै इडा ओर सूं
बाय चढावै ॥ कुंभक करि हिये चिबुक लगावै ॥ जिव का निम
कू नह रवै ॥ सोलह मात्रा पूरक लीजे ॥ चोसठ कुंभ मैं जय कीजे ॥ रेच
के फिर बत्तीस उतारो ॥ धीरैं धीरैं गहि निवारो ॥ पहल पहल ही की

जैं आधे तीन महीजैं ऐसैं साधे ॥ यासूं आगो फेर बढ़ावै ॥ होय अभ्या
सचार चढ़ावै ॥ बढ़त बढ़त ऐसैं ही बढ़ै ॥ योंही चौसठ तांई चढ़ै
॥ इडा बाय सूं पूरक कीजै ॥ पिंगल सूं रेचक तजि दीजै ॥ फिर पिंगल
सूं पूरक धारै ॥ बहुर इडा ही सूं निरवारै ॥ ऐसैं बारी बारी करियै ॥ जी
तैं प्रान बाय अघ हरियै ॥ होय सकै कुंभक सरकावै ॥ चौसठ
सैं भी परै बढ़ावै ॥ १०१ ॥ सिष्यबचन ॥ दोहा ॥ चरनदास कहै कर
जोर कै सुनौं गुरु सुषदेव ॥ कौंन समैं याकूं करैं ॥ तहदिन कहि
देव ॥ १०२ ॥ मात्रा यासूं कहत हैं जो बतलायो जाप ॥ केतो करै अ
हार ही जाकों कहियै नाप ॥ १०३ ॥ गुरुबचन ॥ जै बिंदी स[illegible]ही
ताहि मात्रा जान बीज मंत्र तासूं कहत परणव कूं पहचान ॥ १०४ ॥
कौं मल भोजन न कीजियै आधी रषियै भूष ॥ पवन बसै सुष सूं ज
हां तन नहीं पावै दूष ॥ १०५ ॥ साठ घड़ी दिन रैन की आठ तास कज
म ॥ लीजै चौथा भाग ही कीजै प्राणायाम ॥ १०६ ॥ चार समय ता के क
रै चार समै ठहराय ॥ चार चार घटिका करै दिढ़ हुत चित लगाय
१ ॥ चौपई ॥ और दूसरी भांति सुनीजै ॥ होय न सकै तौ याकूं कीजै
बारह उ पवन चढ़ावै ॥ कुंभक मांहि बीस ठहरावै ॥ बारह पिं
गल पवन उतारै ॥ रात दिन मैं चार ही बारै ॥ फेर बढ़ावै कुं
भक दुगुनी कै तैं बीस न मैं फिर तिगुनी ॥ फिर पिंगल सूं पू
रक लीजै ॥ इडा बायु रेचक हीजै ॥ बिरियां एक इडा सूं खैंचै ॥
पिंगल दूजी बार जु ऐंचै ॥ का बहूं यासूं का बहू वासूं रेचक
करै सु पूरक जासूं ॥ कुंभक तिगुनी सूं आधिक ावै ॥ होय स

कै जितनी सरकारौ ॥१०८॥ दोहा ॥ भांति दूसरी और सुनि साधु न
अधिक अनूप ॥ गुर बिन भेद न पाइये महा गूप सूं गूप ॥१०९॥ चौ
पई ॥ प्रान बाय की जुगति कहूं जिह बात हैं ॥ दास न अंगुल न
सि का आगै जात है ॥ सजम हीसैं सहज जु उलट घटाइयै ॥ सनै
सनैं ही साधि जु त्यहि समाइयै ॥ अपंन बाय कूं षैंचि प्रान घर ला
इयै फिर बाहर सूं रोकि जु तिन्है मिलाइयै ॥ तीन करम पूरक के
कुंभक के कहे ॥ रेचक ही के करम होय निहचै भए ॥ दोरेच
क के करम पूरक के तीन हीं ॥ एसब ही रहजांय होय जब छीन
हीं ॥ पूरक रेचक छुटै केवल कुंभक बही ॥ तौ रस मैं का बं
धन राषै नां सही ॥ फिरि याकों अंत जाओ तुम वाई ॥ प्रान हीं बाय ता
सा कूं तेकै काया के मही ॥१०९॥ दोहा ॥ साठ हजार इक्कीस लष सास ब
के सास परवान ॥ यह तो रेकै देह मैं जब लग राकही प्रान ॥११०
याके ऊपर सौ दिनां साधन न करें जु सिध ॥ केवल कुंभक जो दि
यो पूरी हवै जु बिध ॥१११॥ आषपदी ॥ इतनी हो वै शक्ति कुं न
जब सास की ॥ रहै नहीं परजु गिनती मांस की ॥ दस कैसी ब
रस हंस केला षहीं ॥ चाहै जब लग रषै सा च यह साषहीं ॥ गुपत
महा यह जान कठिन है साधनां ॥ कोटन मैं कोइ एक करै आ
राधनां ॥ देषा देषी बहुत मनुष याकूं लगै ॥ कोइ चढै परवान
घनें मघुमे थके ॥ चरन हीं दास समझक है सुषदेव ही ॥ सनई
सनई करै याय यामें वही ॥११२॥ दोहा ॥ मूलबंध अलषे चरी मुद्रा
हीं कूं जान ॥ दोनौ के साधे बिना अपान नहीं वै प्रान ॥११३॥ चौप

४१
श्री०जो०७

बिचरैसुद्ध कहैबखानैं ॥ जाके कोट नमैं कोई जानैं सकल सिरो
मन जोगमंझारी ॥ ज्यौं मनुषों मैं छत्रधारी ॥ सीसफूल ज्यौं गहनों
मांहीं ॥ याबिन ताडी लागै नांहीं ॥ साधन करि कुंडली जगावै ॥
सो ब्रह्मरंध्र तांई लावै ॥ उरै ताल बंधि सैरकहावै ॥ सत नाम सूं कांठ
धलगावै ॥ जु सूं पवन न सरक न पावै ॥ सरवन नैन मुबाटरु कावै प्रा
नबाय बाहर नहिं आवै ॥ मुष नासा हो निकस न जावै ॥ सुषदेव
कहै चरनदास सब ताके ॥ आगै मूलबंध समझाऊं ॥११४॥ दोहा ॥ मूल
बंध जानों यही एडी गुदा लगावै ॥ पकदहनी बाम्ही कजी सिध
आसन ठहरावै ॥११५॥ चौपई ॥ मूलबंध जा कारन दीजै ॥ सो मैं तं
कुंस बै सुनि लीजै ॥ आधारचक्र सूं पवन उठावै ॥ स्वाधिष्ठा तांही
कूं ढिगलावै ॥ दहनी ओर कूं ताहि फिरावै ॥ ओसे तानतपे टल
गावै सीधा हो कंकरकूं धावै ॥ मणिपूरक चक्कर में आवै ॥ मनई
मनई ताहि चढावै ॥ चक्कर चक्कर मैं युह चावै ॥ मूल चक्र कौ ऊं
पर तांई ॥ ब्रह्मरंध्र के लावे ठांई ॥ ओसे षटचक्करकूं सोधै ॥ प्रानबा
यकूं यो परमोधै ॥ आपांनबाय जो हयां तक आवै ॥ प्रानबाय ह्वै
सहजै समभावै ॥ सुषदेव कहै सुन चरनदासा सहज सुन्न
मैं करैं निवासा ॥११६॥ अथ अष्टप्रकार के कुंभक बर्नते ॥ सि
ध्यवचन ॥ दोहा ॥ प्राणायाम की बिधि सबै गुर तुम दई सुनाय ॥
मो ले करि हिरदे धरी ता हिन दे भुलाय ॥११७॥ चरनदास पूरन तुम
हीं गुर सुषदेव ॥ कुंभक आठ प्रकार के तिनको कहिये भे
व ॥११८॥ लच्छ गप्ना बसु नीव गुणा जु देषु है सम जोय ॥ चरनदा

सकेमनविषैसुनिबेकोअतिचाव॥११९॥गुरबचन॥अबजो
ठेकुंभकअष्टनाद भेदगुणरूप॥सुषदेवकहैपरसिद्धहै
जोगहीमांहिअनूप॥१२०॥प्रथमकुंभकहीकहूंगाचजुसू
रजभेद॥दूजेउज्जाईसुनोसाधेचतुरैंमेद॥३॥सीतकारअरुसी
तलीपंचवींभस्त्रकजांन॥छठीजुभ्रमरीनामहैनीकैसमझ
पिछांन॥१२२॥नावसूंछ्यांसातवीं आठवीं केवलहोय॥रवजीतास
बसैंबूढीआवबढावैसोय॥१२३॥चौपई॥पूवनपूरिपूरकहीकी
जै॥पाछेबंधजलधरदीजै॥कुंभकरेचककेमध्यजानो॥कांइ
बंधउडग्यानपिछांनों॥पवनजोरहीसुगहिलीजै॥अधऊरध
संकोचनकीजे॥मध्येकीजियेप्रसमगानो॥बस्ताबाडीकेमा
हिसमानै॥नाडीयवननसैंचियैंजोसैं॥भरियैंसबसंधानजुजै
सैं॥अपांनवायूकूंऊपरलावै॥प्रानबायनीचेलेजावै॥जोयेयह
साधनबनिआवै॥जोगीबूढाहोंननपावै॥तरुनअवस्थाहीषै
असी॥नितहीरहैजानियैजैसी॥१२४॥अथसूर्जभेदनीकुं
डलिया॥कुंभकसूरजभेदहीयहलेंदेंऊंसुनाय॥सुषआस
नकैअथवाबज्जलगाय॥अथवाबज्जलगाय॥अथवाबज्रल
गायपूरकदहनेस्वरकीजे॥तबसिषतीरोकिबायकूंबंधकरी
जैबायैंसेनीरेचियेंहोरेंहोरेंजान॥कपालसोधनीजानियैंच
रनदासयहचांन॥१२५॥दोहा॥बायुकिरमपीडाहरैकीजैबा
रम्बार॥कुंभकसूरजभेदनीसुषदेवकहिहियेधार॥१२६॥

अथ उज्जाई चौपई ॥ अब उज्जाई कुंभक सुनियैं समकसीष मन मांहीं
गुनियै ॥ दोऊ सुर सम करि पवन भरावै ॥ पेट कंठ लौं ताहि भरावै ॥ ताकू
रोकै दृढ करि राषै ॥ सहज भंडा सूरे चक नाषै ॥ ऐसैं जो कोई साधन करै
रोग सलेषम के सब हरै ॥ हिरदै कंठ मांहि जो होई ॥ कफ का रोग रहै
नहीं कोई ॥ रोग जलंधर ही का भागै ॥ नजैं बाय दुष पावक जागै ॥ बैठैं तच
लत पवन कूं भरै ॥ यूही उज्जाई कुंभक करै ॥ चरनदास सुषदेव बतावै ॥ सी
जी मंत कारसम कावै ॥ १२७ ॥ अथ सीतकारी दोहा ॥ ओंड जंत्राई नासि
का लीजे षिचे जु पौन ॥ ताहि कछू ठहराय कैं छोडे मुष संजौन ॥ १२८ ॥
धारै धारैं रेचियैं सी सी शब्द उचारि ॥ सुंदर होवै तेनवंत आधिक रूप वूं
धारि ॥ १२९ ॥ भूष प्यास ब्यापै नहीं आलस नींद न होई ॥ तन चेतन
हीं होत है रहै उपाधन कोई ॥ १३० ॥ इंहिं बिध साधत ही रहै होय जो गि
न मैं भूप ॥ सुषदेव कहैं चरनदास सुनि कुंभक यही अनूप ॥ ३१
अथ सीतली चौपई ॥ कहूं सीतली कुंभक आगै ॥ जो कोई करै
भाग तिह जागै ॥ तालमूल जिभ्या बल सेती ॥ प्रान बायु पीवै क
रि हेती ॥ कुंभक राषै सब तन मांही ॥ टीला गातु रमा छांड़ै ॥ नासा
सेती रेचक कीजै ॥ ताकू मास सिद्ध होय सुन लीजै ॥ पीवै पवन जी
भ कूं मोड ॥ सहजैं छोडै नासा ओड ॥ दो नौंरधूर सेत जि दीजै ॥ यौं
अभ्यास पूरा करि लीजे ॥ ताय तिली गोला जुवर होई ॥ वाके तन मैं
रहैं न कोई ॥ देह पुरानी नौतम होई ॥ तीन बरस साधे जो कोई ॥
जैसैं सांप कांचली छोडै ॥ सेत बाल तजि काले होंहि ॥ काहू

भांतिका दुष नहीं ब्यापै ॥ भूष प्यास ति भाजै आपै ॥१३२॥ अथ भस्त्रिका
दोहा ॥ अब कहूं कुंभक भस्त्रिका पित कफ बाय नसाय ॥ अग्र बुद्धि अ
भ्यास सों तीन गांठ षुल जाय ॥१३३॥ चौपई ॥ आसन पद्म सु या बिध
करै ॥ बांवीं जंघ दहनै पग धरै ॥ बांयें पग दहनी परि लावै ॥ जाघन
मैं दोउ कर हाथ मिलावै ॥ ग्रीवा पेट बराबर राषै आगे मुनु सुष देवा आ
षै ॥ मुष सूं दे रेचै नास सूं पूरक अभ्यासें कीजे ॥ बार म्बार जैं आसलीजे
जैसें षाल लुहार भरै ॥ रेचक पूरक आतुर करै ॥ करत करत जब ही किजा
वै ॥ तैं कठहर दुजी बिध लावै ॥ फिर पूरक सूरज सूं करै ॥ पवन उदर के
मांही भरै ॥ तर्जनी अंगुली सूं दिढ रोकै ॥ नासा मध्य धार करि जो षै ॥१३४
दोहा ॥ कुंभक पिछली भांति करि रेचइडा सूं बांय ॥ कफ पित बा
य नसाय कैले वै आग न बढाय ॥१३५॥ कुंडलनी देवै जगाय यह कुंभ
क सुषदाय ॥ करै जु हितहर धारि कै चरनदास ति तलाय ॥१३६॥ कुंड
लनी सिर काय करि बैंधै तीनों गांठ ॥ सो सी पंच वी भस्त्रिका रहै न
कोई आंट ॥१३७॥ चौपई ॥ ब्रह्म नाडी की छिद्र मांही ॥ रोकि रही मु
ष दे रही कांई ॥ लाय लपेटैं नाभी मांही ॥ दिढ हो बैठी सरकै नांही ॥ स
वा बिलस्त की जाकी देही ॥ ता मैं अस्थित जीव सनेही शक्ति नाग
नी यही जु कहिये ॥ याका भेद गुरू सें लहिये ॥ महा कष्ट परबल तु जा
गै नांही ॥ तातें नर सब भरमर जांहीं ॥ कोई क जोगी ताहि जु लावै ॥ सु
षमन बाट गगन लेजावै ॥ ब्रह्मरंध्र मैं जाय समावै ॥ लगै समाध ब
त सुष पावै ॥ जो कुछ होय सो कहा न जावै ॥ चरनदास सुषदेव सु
नावैं ॥१३८॥ दोहा ॥ स्वास करी भेला मवै रहै न इतिया भाव ॥ कुंड

जो०

लनीपरबोधकाजोकोईकरैउपाव॥ १३९॥ सिषबचनब्यासपुत्रसु
षदेवाजीकिरयाकरीदयाल॥ चरनदासमाधीनहौंसमझोभयो
निहाल॥ १४०॥ एकबारफिरषोलकरिकुंडलनीसमझाव॥ याके
सबहीभेदकोसुनबेकोअतिचाव॥ ४१॥ गुरबचन॥ फिरभीतोसूंक
हतहूंकुंडलनीबिस्तार॥ ताकेसगरेभेदहीसुनिकहियेमेंधार॥ ४
२॥ नाभअस्थाननागनरहै॥ कुंडलससीआकार॥ पूंछमुषियारखहै ?
है आगेसुनौंबिचार॥ ४३॥ कुंभककरमकोईकरैदेवैशक्तिजुगा
य॥ जैसेंलागीलहिकानागनसीसउठाय॥ ४४॥ चौपई॥ सीषगुरुदे
कुंभकसाधैनीकीबिधताकूंओरधे॥ पवनठूंबकलगिताहिजि
गावै॥ तबऊरधकूंसीसउठावै॥ नाभिठौरताकाहैबासा॥ पद्मराग
मणिजैसोंपरगासा॥ स्यामलपेटैबाड़ीजानौं॥ तातैंशक्तिकुंडलीमा
नौं॥ नाडीसंहसगाहिंबासूं॥ ऐसेरहकुटीजानियैताकूं॥ जिनमैं
तीननाअधिकाई॥ इडापिंगलासुषमनगाई॥ तिनकेमांहिसिरो
मनसुषमन॥ नालकंवलज्ञानतजोगीजन॥ जायुहचीब्रह्मरंध
रमांई॥ ऊरधकंवलसातवैंमांही॥ आवनजानयवनकीबाटा॥ उकलच
टनऊरधकाघाटा॥ कहैंसुषदेवचनहीदासा॥ आगेकहूंजुहोयप
रगासा॥ १४५॥ दोहा॥ नागनसूंझमजानियैबालसहंसवांमा॥ सुषदेव
कहैंआकारहीरकबरनज्योंनाग॥ १४६॥ कुंभकहोयअत्यतजबत
बतबऊरधकूंजाय॥ ब्रह्मरंध्रमैंआयकरिघडीदोयठहराय॥ १४७
इंहतकाकैपीनहीपूराहोअभ्यास॥ तडतेदीषैसिधुतब्रह्माकूं॥
मीहिमआकास॥ ४८॥ चौपई॥ येदीषैतहैनैनबिनांहीं॥ चहैकौरैलीला॥

उनमांहीं ॥ खेचरमिलखेचर होजावै ॥ यह बीशक्तिउडनकीपावै ॥
अधिकीठहैरेलगोसमाधा ॥ यहतोकहियेमेलअगाधा ॥ श्येशक्ती
जहांमेलाहोइ ॥ होयलीनमनउनमनसोई ॥ जोगजुगतिकरिया
कूंपावै ॥ पराशक्तिआपनेंबसलावै चावैजाइठोरलेआवै ॥ जबचा
हेकधलेजावै ॥ कबहूंहिरदेकेमधआनैं ॥ याहीकूंआपनपौजा
नें ॥ इछाकरेसिधकीजैसी ॥ होयपराप्तबेगहीवैसी ॥ चहैअस्थूल
द्र सूक्ष्मतनधरूं ॥ वैसाहीहोजायुसवारूं ॥ सुषदेवकहेसुनचरनदीहंदा
सा ॥ जोकुंडलनीहृदेप्रकासे ॥ १४९ ॥ दोहा ॥ कुंडलनीपरगासहीमो
राएकअनूपसोकप्रकासतहैतहांसोरनकेसरूप ॥ १५० ॥ हिरदैमें
उजियारहीहोतचपलइहभांति ॥ जैसेधूमरमेघमेंबिजलीहीप्र
मकांति ॥ १५१ ॥ चौपई ॥ सुषदेवकहेचरनदासबताऊं ॥ औरअनूठी
सिधसुनाऊं ॥ चाहेंपरदेहीमेंबरूंआयनीकायाकूंपरहरूं ॥ रेचकु
प्रानायामप्रतापे ॥ कुंडलनीजोआपनीआपे ॥ रेचककीयेंबाहरेआवै
परकायामेंजायसमावै ॥ आस्थितहोयजाययोजानें ॥ सदाबिर
तजैसेंभागवैंऐसेंयहलोदेहगिरावै ॥ ज्योंमरणकेडोरातजबा
वै ॥ जबचाहेआपनेघटमांही ॥ पराशक्तिहीआवैकांई ॥ कायाप
लटकहतहैंयाकों ॥ कोईकजोगीजानताकूं ॥ १५२ ॥ दोहा ॥ चाहैतनकूं
छोडकरिदेहकलयधरिऔर ॥ मनमानेंजहांआवनकरिफिरआ
वैआपठोर ॥ १५३ ॥ अथभ्रमरीकुंभक ॥ उठीसुकुंभकभ्रमरीसुनियू
चरनहींदासा ॥ सुषदेवाहोकहतहूंतामेंकरैबिलास ॥ १५४ ॥ जैसें
भृंगीकनकरैयोउपजैहियमांहि ॥ दोनोंस्वरसूंकीजियेपरगट ॥

अ० जो० ७

सुनियें तांहि ॥१५५॥ बलसें वी पूरक करैय ही यह ले साथ ॥ भ्रामरी
सों कंभ सहित रेचे मंद सुहात ॥१५६॥ प्राणायाम के किये सैं चि
त चंचल रहै नांहि ॥ जोगी सर लीला करैं चित्त नंद के मांहि ॥१५७॥
अथ मूर्छा ॥ सत वीं कुंभक मूर्छा पूरक औसें होय ॥ पैं चत हो अैसे सा
रसा मेघ धार ज्यौं जोय ॥१५८॥ बंध जलंधर दी जियै सहज कंठ तल
जांन ॥ रेचत बाई मूर्छित होय यही पहचान ॥१५९॥ सुषदाई सुषक १
कर न कही सोई सुषदेव ॥ केवल कुंभक आठवीं गुरु तें पावे भे
द ॥१६०॥ पूरक रेचक ही सहित ये कुंभक करि लेह ॥ केवल कुंभक
नां सधे जब लग थ्याचित देह ॥१६१॥ केवल कुंभक आस धरि ये
साधत लोग ॥ बल पावें बस पौन हो भो भैजें तन रोग ॥१६२॥ अथ
केवल कुंभक ॥ आठ बटा वे सिध दे लागें जोस समाध ॥ केव
ल कुंभक गुण भरी बिन पूरवा त अगाध ॥१६३॥ केवल कुंभक
नस वे तब ये सब रह जांहि जैसें सूरज ऊगें ते तारे सब लुक जा
हि ॥१६४॥ केवल कुंभक जोग में ज्यों आरंभ भय ॥ रेचक पूरक के
बिना जैसें बंधा जु कूप ॥१६५॥ सोतुम सत्य यह लेंक ही बिध गति सब
समझाय ॥ सो सुनि तुम हिरदै हो ना बिसराय ॥१६६॥ चौपई ॥ प्राण
याम बडा तप सोई ॥ प्राणायाम सा बतन नहीं कोई ॥ प्रान बास
कूं यह बस लावे ॥ मन कूं निहचल करि ठहरावै ॥ आवर दा कूं
यही बढावे ॥ तन में रोग रहन नहीं पावै ॥ पाप जलावे निरमल
करै ॥ वपु जैज्ञा न तिमर सब हरै ॥ जो मजुगत की जइय ह ज्ञा
नों ॥ या हि टेक गहि कर नां मनों ॥ ना डि ज्ञ आसन संया कूं ॥

कीजै ॥ नवौ द्वार पवन कौं दीजै ॥ पांचौ इंद्री केर सपेलो ॥ इडा पिंग
ला सुषमन षेलो ॥ कहै सुषदेव चरनही दासा ॥ प्रत्याहार सुनबि
से निरासा ॥ ६८ ॥ इति चौथा प्राणायामका अंग संपूर्ण ॥ अथ पं
चवां प्रत्याहार का अंग बरनते ॥ दोहा ॥ प्रत्याहार जो पांचवां समझा
कं चरनदास ॥ सुषदेव कहै हैं करूं पो लिक रिनी कैं समझो तास ॥ ६
८ ॥ चौपई ॥ प्रत्याहार पांचवां कहिये ॥ सो जोगी कूं निहचै चाहिये ॥
बिसै ओर इंद्री जो जावै ॥ संपदे स्वादन कूं ललचावै ॥ तिनकूं सो
रनजा नेदेइ ॥ प्रत्याहार कहावे एही ॥ रोकि रोकि इंद्रीन कूं लावै ॥
ध्यान अज्ञान मांहि लगावै ॥ जैसें कछुवा अंग समेटै ॥ रंक सीतका
लमें लेटै ॥ जैसें माता पूत षिलावै ॥ बालक बस्तौं कूं ललचावै ॥ सर्प
आग और सस्त्र कोई ॥ कछू और दुषदाई होई ॥ तिनकूं बालक न
ही जानै ॥ पकडन कूं दौडै मन यानै ॥ ७० ॥ दोहा ॥ बालक ज्ञान न है नहीं
दुषदाई मबयेह ॥ जो पकरूंगा हाथ सूं दुष पावैगी देह ॥ ७१ ॥ माता ज्ञान
त है सुबै षोटी षरी बिकार ॥ राषै सुतकूं षैचकरि बार म बार निहार ॥ ७
२ ॥ ऐसें ही बुध ज्ञानसूं पांचौं इंद्री रोक ॥ बिसै ओर सूं फेरियें लहै न अ
पना भोग ॥ ७३ ॥ ज्यौं ज्यौं इनकूं भोग दे परबल होती जांहि ॥ बिना भो
ग हो हीन वह बल रहै जु नांहि ॥ ७४ ॥ नैन जु भोगै रूप कूं औ गंध कूं घ्रा
ण ॥ षटरस भोगै जीभ ही शब्दहि भोगै कान ॥ ७५ ॥ सपरस भोगै तुचा ही
वादै आधिक बिकार ॥ पांचौ इंद्री जांन ले इनका यही अहार ॥ ७६
इनसैं मिल मिल मन बिगा याकहु और ॥ इंद्री रोकें मनरु केर है जु
आयनी ठौर ॥ ७७ ॥ ज्यौं ज्यौं होवे प्रान बस त्यौं त्यौं मन बस होय ॥

ज्यों ज्यों इंद्री घिरत हैं विषैं ज्ञान सम बोय ॥ १७८ ॥ तातैं प्राणायाम करि
प्राणायाम ही सार ॥ पहले प्राणायाम करि पावै प्रत्याहार ॥ १७९ ॥ इति
प्रत्याहार का जोग सम्पूर्ण ॥ अथ अष्टम धारणा का जोग बर्नन ॥ दोहा ॥
तत्वन की कहुं धारनां तिमैं कुरि परवेस ॥ सन ईस न ईमा करियूं हहेचे नि
मैं देस १८० ॥ चौपई ॥ पहलैं भूमि धारणा कीजै ॥ ठौर कार लै जमैं चित
दीजै ॥ पीत बरन चौकोर आकार ॥ बिधि देवत हैत हा बिचार ॥ तहां
प्रांन लीन करि पांच घडी ही ॥ चित अस्थिर होवै गाजबही ॥ यासूं प्र
थ्वी कूं बस करियै ॥ यही धारना जो नित धरियै ॥ हिरदै सैं कंठ पर ज
ल जानैं ॥ कंठ तई ताकूं पहचानै ॥ चंद्रफा कन आरु सेत नआकारे ॥
रिषीके सत हां देव बिहारे ॥ स्वांहं पांच घडी अस्थापै ॥ प्रां नली
न करि चित दे आपे ॥ ब्यापैं ना बिष काहू बिध को ॥ सुष दै स्वकहै
फल के सिधको ॥ १८१ ॥ दोहा ॥ कंठ सैं कंठ पर तालु कलौ पावक कौ अस्था
न ॥ लाल रंग अति रकौं नू है रुद्र देवता मांन ॥ १८२ ॥ जहां लीन कर प्रांन
कूं पांच घडी परवांन ॥ सैं ब्यापै नहिं ज्वाल को आग न धारनां जांन
१८३ ॥ जाके आगे बायु है भृकुटी लौं मरजाद ॥ मेघ बरण षट कोंण
है ईश्वर देवत साध ॥ १८४ ॥ प्रांन लीन जाहां कीजियै घडी पांच रे ता
त ॥ पैहै षेचर सि ब्रही तत पद ही ह्वै जात ॥ १८५ ॥ ब्रह्मरंध्र आकास
है बडा जु तन न मांहि ॥ स्याम बरन ब्रह्म देवता जो गीज हासि एहि
१८६ ॥ लीन प्रांन घडी पंच चकरि पावै मुक्ति नाजय ॥ ब्यामत की धा
रनां जहां कांहि नहि धूय ॥ १८७ ॥ थिर थी संगल कार ही जल के संग
बकार ॥ पावक संगर कार है मारुत संगाम कार ॥ १८८ ॥ पंच मत तत्त्वम

कासहीसबकेऊपरजांना॥जौनूरजहीहकारहीसुषदेवकरैंबषा
न॥१७९॥पहलधारनांयंमनीदूजीदृष्टिसोंहोय॥तीजावहनीजांनियेंचौ
थैंग्रामनसोय॥१८०॥पंचवीनांवजुसोषनीइनकूंलेवोजांन॥सु
षदेवाअबकहतहैंआगेऔरबिधांन॥१८१॥चौपई॥प्रथमगुरूकी
धारनलीजे॥आपनांरूपउन्हींसाकीजे॥ऐसेंध्यानसनीसुषपावे॥
जैसीधारैसाहोयजावे॥बेगीसबसाधनसधिआवे॥आलसका
यरतानजजावे॥लोकपरलोकसनीसुषलेवे॥जोगुरकूंऐसीब्रत
सेवे॥दूजेंपरमातमकीधारन॥मुक्तिदेंनअरुबंधनिवारन॥धारनसो
चितघनांलगावे॥सिमटसमीओरीसूंआवे॥जोकुछहोयसोआ
गेहीआ॥टेकयकडमारगमेंलागें॥चरनदाससुषदेवबतावें॥स
तीसूरमांज्योंमनलावें॥१८२॥दोहा॥प्रांनबायकीधारनांपरमेस्व
रपहचांन॥परमातमहोंयजातहैजोयेरोकैप्रांन॥१८३॥बारहमा
त्रासूंचढैकांतकयुंहचैजाय॥बारहसेंअरुव्याणवैकुंभककमें
ठहराय॥१८४॥यहीधारनांअंगहैसनैंसनैंकरिधाव॥यातेंइसी
ध्यांनमेंप्रांनबायपरचाव॥१८५॥दुनांजोनससमाधलैध्यांनहींसे
तीयेह॥पांचहजारअरुएकसौचौरासीगिनलेह॥१८६॥इतिधार
नांकाअंगसंपूर्ण॥अथमातवांध्यांनकाअंगबर्नते॥दोहा॥अं
गधारनांकाकहांसोधरराचितमांहि॥ध्यांनअंगबरनैंनरेंसैंरडंच
रननछांहि॥१८७॥गुरबचन॥चरनदासअबध्यानसुनिकरतो
हिसमझाय॥सुषदेकहैंसुनिसुनिसमझकरैताहिचितलाय॥
१८८॥ध्यानजुचारप्रकारकेकहूंजुजनकीरीत॥पदस्थपिंडस

पस्य है चौथा रूपातीत ॥१९८॥ अथ पदस्थ ध्यान ॥ हिये पदपंगज ध्यान
करि फिर करु सी देह ॥ नषसिष लों हौ बिनिरषै षके चरनन में ॥ चि
तदेह २० ॥ कै कुंभक ही कीजियै कां परण कोजाप ॥ मन थिर चल
होसहेज मैं भाजै तिरबिध पाप ॥ २०१ ॥ पदस्थ ध्यान या कूं कहैं करै सु
जानैं ॥ भेद पिंडस्थ ध्यान बरनन करै सो लिषा लिसुषदेव २ अथ पिंडस्थ
ध्यान ॥ ब्रह्मंड सोई यह पिंड है या मैं करि करि बास ॥ कवलन के
लषि देव ताल होय पिरायत तास २०३ ॥ सोधे सगरे पिंड कूं षट चक्र
को ध्यान ॥ सोधत सोधत आ चटै भंवर गुफा अस्थान ॥ २०४ ॥ तिरबेनी
संगम बहे जोति जहां दरसाय ॥ सात जनम सुध होय जब ध्यान करै
मन लाय ५ ॥ आगे कंवल हजार दल सतगुर ध्यान प्रधान ॥ अमृत द
रबै बह चलै हंस करै जहां न्हांन ॥ ६ ॥ कपर तेज ही पुंज है कोट भा
नपरगास ॥ पुन्न सिषता कपरै जोगी करै बिलास ७ ॥ अथ रूपस्थ ध्या
न ॥ रूपस्थ ध्यान का भेद सुनि कीजै मन ठहराय ॥ देषै त्रिकुटी म
ध्य हो निहचल दिष्ट गाय २०८ ॥ ध्यान कियें पहलैं जहां आग न फूल
दिषाय ॥ के ते धोम न मांहि हि दीयजोत प्रगटाय ॥ २०९ ॥ सतैं सतैं
आगे जहां दीप माल दरसाय ॥ फिर तारों की माल सी दामिन बज
दमकाय ॥ १० ॥ बजैत चंद सूरज घनें देषैं कोट अनंत ॥ आगा
जैसो कारसूं भर भरे ध्यान मांहि दरसंत ॥ २११ ॥ झिलमिल झिल
मिल तेज मय भासै सब संसार ॥ तम मनत उपजै सु यष घना न्
नद अधिक पार २१२ ॥ जलना याह मैं डूब ज्यों देषै दिष्ट उघार ॥ जो
दीषै तो नी रही दस दिस आ परम पार २१३ ॥ यह है तो ध्यान प्रतिहा

हे गुरु किरपा सों होय॥ सुषदेव कहैं चरनदास करि तन मन ज्ञा
ल सब षोय॥ १४॥ अथ रूपातीत ध्यान॥ चौपई॥ रूपातीत सुन्न ध्या
न ही जानो सुन्न ही कूं परब्रह्म पिछानो॥ त्रिकुटी परै सुन्न अ
स्थान॥ सो वह कहिये पद निर्बान॥ चित्त अंदता कूं हिये ध्या
नौं॥ वाही में मन ही कूं सानौं॥ आठ पहर जहां चित लगा
वा॥ याके कीये सूल पावा॥ ज्यों आकास में पंछी धावै॥ धा
वत धावत दिष्ट न आवै॥ बजर अचान कदी षै आई॥ व
ह ध्यानी ऐसा हो जाई॥ इस परम सुन्न का अधिकी ध्याना॥ सब
ध्यानन में है परधाना॥ सो जोगी यह लहै ठिकाना॥ सा जन मुक्ति
होइ जाय निदाना॥ २५॥ चौपई॥ प्रासं लगे समाध ही नि द्रा कहिये
जोग॥ ध्याता हो वै लीन ही रहै न त्रिपुटी रोग॥ २६॥ सूतवां कहा जु
ध्यान ही आठवीं कहै समाध॥ ज्ञान ध्यान जहां बीसरें तहां न रबिया
बाद॥ २७॥ इति ध्यान अंग संपूर्णं॥ अथ आठवां अंग बरनते॥ अ
छपदी छंद॥ आठवीं कहूं समाध लछन बरनन करूं॥ तो कूं सब बू
समझाय तेरी दुबधा हरूं॥ जब ही लगै समाध जोगी आनंद लहै
नो मन पथा सिध जा न किया कोई ना रहै॥ मिलै ध्याता अरु ध्यान ध्येय एक
हो वैं जहां॥ दूजा रहै न भाव मुक्ति तब ते तहां॥ निरउपाध निरषेद
ऐसा वह देस है कर्म भर्म अरु धर्म नहीं कोई लेस है॥ आ या र
हे न कोय सकल आसा गरैं॥ चिंता का डर नाहिं बासनां सब जरैं
पंच बिसे जहां नाहिं तीन गुन तीन नहीं॥ होवै ब्रह्म सरूप जीव
ता की नहीं॥ जागृत सुपन सषोपत हो वैं ही नहीं॥ चौथे पद कूं

समाधका

पायहोयजहोलीनहीं॥ऐसेंकहैंसुषदेसुनोंचरनदासहीं॥यह।
निरदुंदसमाधकहैजहांबासहीं॥२१८॥दोहा॥जहांकछुगमनार
हैबिद्याबेदनबाद॥रिधसिधमिटआनंदलहैंऐसीसुन्नस
माध॥२१९॥अष्टपदी॥तहंकियेपरवेसरहैनआकारही॥रूप
गुणकिरयासहीसाकारही॥पायुनपुनदुषसुषनहांनहिंपाईये
मतमारगकुलधर्मनदेतदिषाईये॥भूषप्यासमरुतजहांनहि
सीतहै हरषसोगनहिंनेकबैरनहिंप्रीतहै॥इंद्रीमननहिरहतसकल
तहोजातहै॥सिधसाधकगुरसिष्यनभावरहातहै॥उडुगनचंद
नसूरनदीसतरातहै॥त्वंपदईस्वरब्रह्मनजानेंजीतहै॥जैसेंज
लमैंनीरह्वीरमैंह्वीरहीं॥आसियदमैंयेंजीवनीरमैठीरही॥आहंमि
टैमिटजायनुआपाथोकही॥तंपरमातमआतमबंधनमोषही॥ऐ
सेंकहैंसुषदेवयोंह्वेयसमाधमैं॥वेसाहीहोयजायमोइध्याआदमैं
२२०॥दोहा॥ऊतआदिपरमातमांबिचरतलगाबिकार॥मिलिसमा
धनिर्मलभयेंअलहैरूपततसार॥२२१॥अष्टपदी॥जहांआतमदेखआ
नेवमेमनहिंसेवहेस्वामीसीकांनहिंपूजानहींदेवहैगौंधानेंमून
प्रेमज्ञाननहिंध्यानहै॥जडचेतनकछुनाहिंसुरतनहिंज्ञानहै
विधिनिषेदनहिंभेदआन्योंबिस्तरेकान॥जिंहचेआरुब्योहारक
छूतामैंनकां॥उतममध्यमारनसुभआसुभहै॥सिंघसरयडमं
हिंनआसरकोनभै॥यासककदराधनकरैबहादेजलनहीं॥कान
हिपुहचैकालनज्वालाहैतहीं॥ऐसासुंनसमाधज्ञागनसोंपाइये
तजिकैनगातऊपाधनहांमठछाडये॥ततनकरैलषमाहिंऐसा

रसबमे षटी ॥ कोटनमैं कोइ होय सुसमाधा एकाही ॥ कांठकष्टु
हन्नै आय सोई सिध्द सा है ॥ कहै सुषदेव प्रकार जु कठिन समा
ध है ॥ २२ ॥ दोहा ॥ ज्ञान भक्ति अरु जोग की विरविध कहूं समा
ध ॥ गुरु मिलै तो सुगम है नांही कठिन अगाध ॥ २३ ॥ अथ भक्ति
समाध ॥ सब इंद्रियन कूं ऐक करि है स्थिर मन को ध्यान बुधि र
है सुरत हूं रहे तो समाध मत जान ॥ २४ ॥ ध्याता बिसरै ध्यान मे
होय लै ध्येह ॥ बुधली न सुरति नां रहै पद समाध लषि ले ह
२५ ॥ अथ जोग समाध ॥ आसन प्राणायाम करि पवन पंथ
गहि लेह ॥ षट चक्र कूं छेद करि ध्या[illegible] सुन्न मन देह ॥ २६ ॥ आ
पा बिसरै ध्यान मे रहै सुरत नहिं नांद ॥ लीन होय किरया हित
लागै जोग समाध ॥ २७ ॥ अथ ज्ञान समाध ॥ जब लग ततन बि
चार करि कहै एक अरु दोय ॥ ब्रह्म हूंत बांधें रहै ध्यान लग ध्यां
नहीं होय ॥ २८ ॥ मैं तू यह वह भूल करि रहै जु सहज सुभाव ॥ आ
पा देह उठाय करि ज्ञान समाध लगाव ॥ २९ ॥ ध्यान रहित ज्ञाता रहि
त और रहित ज्ञो यज्ञान ॥ लगी कभी छूटै नहीं यह समाध
बिज्ञान ॥ ३० ॥ पूछे आठौं अंगतैं जोग पंथ की बात ॥ सुषदेव क
हैं तामें चलौं गुर किरपा ले साथ ॥ ३१ ॥ इति अष्टांग जोग संपूर्ण
अथ छहौं कर्म हठ जोग के बर्नन सिष्य बचन ॥ दोहा ॥ अ
ष्टांग जोग बरनन किया मो कूं भई पहचांन ॥ छहौं कर्म हठ
जोग के बरनौ क्रपानिधान ॥ ३२ ॥ गुरबचन ॥ पहलै यैस

समाधियें काया होवे सुध ॥ रोग न लागे देहकूं उज्जल होवे बुध ॥ २३३ ॥ चौपई ॥
औरसाधे षट कर्म बताऊं ॥ तिनके नाम कूं मं सुनाऊं ॥ नेती
धोती बस्ती करिये ॥ कुंजर कर्म रोग सब हरिये ॥ न्योली किये भजे
तन बाधा ॥ देखि हे सिद्धि न गुरसूं साधा ॥ त्राटक कर्म दिष्ट ठहरावे ॥
पलक पलक सूं मिलन न पावे ॥ २३४ ॥ अथ नेती कर्म ॥ कुंडलि
या ॥ मिहीं जु सूत मंगाय के मोटी बांटै डोर ॥ ऊपर मोम मराय के सा
धे उठ करि भोर ॥ साधे उठ करि भोर बाल सम डोट की कीजे ॥ ताकूं सी
सी कारै हाथ आप ने में लीजें ॥ नासा रंध्र में लकरि षेंचै अंगुली दे
ई ॥ फेर विलोवन कीजिये नेती कहिये सोय ॥ २३५ ॥ दोहा ॥ कांन नां
क आंख दांत कूं रोग न व्यापे कोय ॥ उज्जल होवे नैंन हीं तिन नेंती करि
सोय ॥ २३६ ॥ अथ धोती कर्म ॥ दोहा ॥ धोती करम यासों कहें पंद्रा सो
लह हाथ ॥ कोट अठार हैं तंतवें करो जु नित पर भात ॥ २३७ ॥ कुंडलिया ॥
चौडी अंगल चार की मिहीं बस्तर होय ॥ जलमें भेई निर्डोड करि
निगल कंठ सूं सोय ॥ निगल कंठ सूं सोय सिरा बाहर रह जावे ॥ फेर स
कासें ताहि पित्त कफ दोष कढावे ॥ काया होवे सुध ही भजें पित्त कफ
रेष्या ॥ सुषदेव कहें धोती करम साधें जो गीस्त्रा ॥ २३८ ॥ अथ बस्ती क
र्म ॥ कुंडलिया ॥ तीजै बस्ती कर्म ही कहूं सुनों चित लाय ॥ किरिया करै
गलेस ही कुंजी नहाल गाय ॥ कुंजी तहां लगाय मूलकूं धोवन कीजे
पसारन संकोच सु सुन्न देह कूं करि लीजे ॥ नीर गुदा सूं षेंच कर रिया भेद
दर मंझार ॥ कछुक डोलना बैठ करि फिर देता हि तनार ॥ २३९ ॥ दोहा ॥
यही जु बस्ती कर्म है गुर बिन पावे नांहि ॥ लिंग गुदा के रोग जो गार मी

केन सजां हि ॥२४०॥ अथ गज कर्म ॥ गज कर्म यह [illegible] पानि पियें पावै पेट न र
नीर ॥ फेर ज्यु प्राति सूं काढ़ियै रोग न व्यापै सरीर ॥२४१॥ अथ न्योली कर्म
चौपई ॥ न्योली पद्मासन सूं करै ॥ दोनों कर घूटनों पर धरै ॥ पेट जो
रूपी ज्वार भवर होय ॥ दहनें बायें न ले बिलाय ॥ मैल पेट में रहन न
पावै ॥ अपान वायु ता सूं बस आवै ॥ ताप तिल्ली अरु गोला सूल ॥ हों
न पावैं नें कफ न मूल ॥ जठर कर कै ताहि दिपावै ॥ न्योली कर्म सु
गम करि पावै ॥ और उदर के रोग कहावै ॥ सो नहिं नेर हनैं नहिं पावै
२४२॥ अथ त्राटक कर्म ॥ चौपई ॥ त्राटक कर्म कठन की लागे ॥ पलक
पल कसं मिलन ता के ॥ नैंन उघारे ही थिर रहे ॥ होय दि[illegible] थि
र सुषदेव कहे ॥ आंषि उलटि त्रिकुटी मैं आनो ॥ यह बी त्राटक
कर्म पिछानो ॥ नेत ध्यान नैंनन के होई ॥ चरनदास फूल है सोई ॥२
४३॥ दोहा ॥ कपाल भाती और धोंकनी ॥ बाघी सबय घाल ॥ चा
र कर्म ये और हैं इन ही छहों के नाल ॥२४४ इति त्राटक कर्म
अथ षेचरी मुद्रा सिष्य उवाच ॥ दोहा ॥ एक बार फिर बी कहो मु
द्रा पांच दयाल ॥ मो से रंक अधीन परि हो करि बहु किरपाल ॥२४
५॥ गुरु बचन ॥ अष्टपदी ॥ आगौ मुद्रा तोहि कही समझाइया ॥ फिर
भी कहूं अब षोलि सुनौं चित लाइया ॥ पहले मुद्रा षेचरी की साध
न भूनं ॥ जैसे आगे करी सभी रिष मुनि जनं ॥ तासे जल के कुरले क
रि जु बइये ॥ ता पीछे चो[illegible] बस्त को चूल्ल गाइये ॥ जिभ्या हाथ में प
कड़ मर्दन छील न करै ॥ दोहन ता नन करै बहु रद रस न धरै ॥ फि
र करै चालन ताहि छेद नहीं कीजियै ॥ तासूं ज्यों कट जाय तनसा

इलीजिये॥ ब्रह्म रंध्र कूं धोय के मैल निवारिये॥ वाके संग टेक पर
काग कूं धारिये॥ सहज सहज असर काढ के आगे लाइये॥ यह सब
साधन कठिन गुरु सें पाइये॥ दो अंगुली कीं कूंची सूं करि मिलना॥
जिभ्या उलटी राषि जु नित प्रति षेलनौ॥ यह उपाव षट मास करै
त जिभ्या नहीं॥ रस नाये बंध जाय चलै न स्यान नहीं॥ ४६ दोहा॥
चार का अनुसरै फल दायक बहु भांति जो गमांहि बड भूप है आ
धिकी जाकी कांति॥ ४७॥ कुंडलिया॥ एक जु प्राणायाम जी मसू
कीजिये दूजे बंध उड्यान याही सूदी जिये॥ तीजे करि करि ध्यान
तू निरषै जहां जोतिहीं॥ चौथे इंद्रत पीवे घुले तहां सोत हीं॥ षे
चे त्रिकुटी पाठ सहज आरु फेरिये॥ इके सुधारस नीर तहां मन
घेरिये॥ इंद्रतही के स्वाद कूं कोंन बषांनई॥ जो काई आचवे हंस
सोई [illegible] न जानई॥ दिन दिन पलटै देह रक तहूं धान द्वै॥ बीस बर
स अरु चार मांहि जो माहवे॥ इन्द्र्या चारि होय बरस छत्तीस मे॥ स
ब लोकन में जाइ जु आपनी शक्ति तें॥ ४८॥ दोहा॥ जेते विषय ब्या
पैं नहीं रोग न दहे सरीर॥ जो कोइ पीवे जुगति सें काम धेन का
षीर॥ ४९॥ भूष प्यास अरु नीद के रहे न तीनों लेव॥ नाद बिंद गुरु
का बंधे कहे यही सुषदेव॥ ५०॥ तीन महीने चार का बांझ मोट हीमा
य॥ वांव्ह पीवे नीर ही अन्न नहीं वह षाय॥ ५१॥ वह तो जीवे दूध सूं
वाकूं वही जु काम॥ लगो रहे माता कुच न बिसरे एक न जाम॥ ५
२॥ इंद्रत पीवे जोगिया ऐसें चर नहीं राम॥ पर हे वह छाडै नहीं का
मधेनका धाम॥ ५३॥ ऐसें धारे तो बने सुधारसी लास त॥ दिबकाय॥

होजायजबधनकहैकमलाकोंथ॥२५४॥आठपहरलागारहै॥
पीवैकैकरधांन॥मैकहाजैसाहीबनैंपरसैपदनिर्बांन॥२५५॥
मेदगुरुसैयेलहैऔरपिछिपावैवूहि॥जोजोफललयाकेअधिक
होंहियरायपतताहि॥२५६॥जोगेस्वरऔरदेवतामुनीरिषीस्वरजां
२ न॥सबवारेयाकेघनेंकरनदेवैध्यांन॥२५७॥टेकगाहैतौजापिवै
औरकरैद्वधांन॥जतीसतीअरुगुरसुषीजाकीऔसीआंन॥२५८॥
बडीजुमुद्राषेचरीमुषमेंयाकावास॥जोकहीमैंसुषदेवहीजां
नलेऊचरनदास॥२५९॥अथभूचरीमुद्रा॥दूजीमुद्राभूचरीनासा
जाकौबास॥प्रांनअपांनजुदीजुदीएककरैचरनदास॥२६०॥जि
तकीतितरषप्रानकूंवाघरलायअपांनतोहिमिलावैजुगति
सूंकरिकरिसंजमध्यांन॥२६१॥जबवूहजीतैपवनकूंमनचं
चलठहराय॥गगनचढनकीआसहोकहैंसुषदेवसुनाय
२६२॥मुद्राकरस्वंधदीजियेएडीपांवलगाय॥आसनसिद्धजु
कीजियेंमनपवनकौंवसलाय॥२६३॥अपानवायजबवसभ
वैकरधमैंचिचलाय॥सनईसनईजाचाढैप्रांनवायहोजाय
२६४॥अथचाचरीमुद्रा॥तीजीमुद्राचाचरीजाकातैंननकास
नासाअगौदिष्टकूराषैमधरिआस॥२६५॥आगुलचारनसि
काआगै॥चितआस्थिरकरिदेषनलागैषुलेपांचतततकारैजुको
ई॥मनअरुपवनजहांथिरहोई॥फिरकसंन्नासापरआवै॥जो
पलटफटकीतहांलगावै॥जहांबकुतकाअपरजरमावै

५०
श्री०ज्ञा०
म

षि भौंखग की आसै आवै ॥ जित सूं पलट तिरकुटी मांही ॥ ध्यान
करे कूं अंत न जांई ॥ दीरघ ता असा पर गासै ॥ उदै होय सू
रज ज्यों भासै ॥ चित चेतन दोऊं लाकरै ॥ ले उपजे आरु दुबधा
हैरै ॥ यही चाचरी मुद्रा जानौ ॥ चरनदास याकूं पहचानौ ॥ २६६
अथ अगोचरी मुद्रा ॥ कहूं अगोचरी चौथी मुद्रा ॥ तामें सु
षपावै जो गिंद्रा ॥ या मुद्रा का सरवन बास ॥ सुषदेव कहै सुन चरन
हीं दासा ॥ २६७ दोहा ॥ ज्ञान सुरति दोऊ एक होय पलट अगोचर जा
य ॥ शब्द अनाहद मैं रसै मन इंद्री थिर पाय ॥ २६८ अथ उनमनी मुद्रा
पंचवीं मुद्रा उनमनी दसवें द्वारे बास ॥ सिद्ध समाध मिलै जहां दुबध
होय सब नास ॥ २६९ आनंद ही आनंद जहां तहां न काल कले
स ॥ तीनौं गुन नहीं पाइयैं कांन ही माया लेस ॥ २७० जीवात मपर
मातमां होय ज्ञाय दो ठोर ॥ ध्याता ध्यान न ध्येह जहां तहां न क्रिया
और ॥ २७१ ॥ अथ महाबंध साधन बिध ॥ चौपई ॥ महाबंध तो हिय
हलब ताऊं ॥ पाछै मूल बंध समझाऊं ॥ बायें पांव सीवन गाहि दी
जै ॥ मूलद्वार पडी बंध कीजै ॥ दहनी जंघ जंघ पर लावै ॥ गउमुख आ
सन नांव कहावै ॥ राषै चिबुक हटे पर लाय ॥ पवन राह परब के जा
य ॥ ध्यान त्रिकुटी संजम करै ॥ प्रान बाय हिरदै मैं धरै ॥ महाबंध औसै
करि साधे ॥ गुरपताप पाहि औराधे ॥ बिनां परषतिर याकूं जानौं
बंध बिनां मुद्रा यह चानौं ॥ निरफ जाय पुरष बिन नारी ॥ मह 7
बंध बिन मुद्रा धारी ॥ मांहि कं उके ध्यान लगावै ॥ सुरति कांई ठ
हरावै ॥ २७२ दोहा ॥ महाबंध आस्थित करे सो जोगा माहोय जाय ॥

पवनपंथमुंदितकरैध्यानकंठमैंलाय॥२७३॥चौपई॥ससियुर
कूंसूरजघरलावै॥रेचकपूरकपवनफिरावै॥महाबंधकरै
अभ्यास॥अंमृतचवैबुझैपियास॥जरामृत्युदेहीनहींआ
वै॥महाबंधतीनोंगुनपावै॥जठरअगनपरचैवकुमारी॥दि
अ नदिनमांहिकरैठवारी॥पहरपहरमैंपौनभरीजे॥प्रथम
अलपअभ्यासकरीजे॥तियसेवनतापननहिंकरै॥काम
क्रोधमनकायानहिंजरै॥२७४॥दोहा॥ऐसीविधसाधे॥पवन
जोगपंथधरिपाय॥पहरपीछलौंपवनतजनआवदाबटजाय॥
२७५॥अथमूलबंध॥मूलबंधअबकहतहूं॥अपांनवायबसहै
य॥ऊपूरकूंषेंचनुकरैमिलैप्रांनमैंसोय॥२७६॥कांवलकंवल
सीधेभवैंनामतलेहोराह॥आगेमारगसुगमहोजोगीनाह॥२७
७॥चौपई॥मूलबंधगुणऐसाहोई॥बायअधोगतजायनकोई॥
रेताऊरधयासूंसधे॥दिनदिनअवसवाईबंधे॥यासूंकारजस
बनिआवै॥रोगरकतकेसनसावैं॥जोगीपहलैंयहओरोधे॥अ
पांनबायकूंनकिंसाधे॥अबमैंमूलबंधबतलाऊं॥ज्योकाज्यों
साधनदिषलाऊं॥गुदाबामस्थाकातुमजानौं॥गुदाघारबधदे
नौठानौं॥बायेंपांवकीएडीसतीमूलद्वाररोकेकरिहेती॥ऊर
धहीकूंखेंचनकीजे॥सुषदेवकहैंनीकैसुनलीजे॥२७८॥चौपई॥
अरुकबहूंमननांधरै॥आसनयदमकरनकूंकरै॥कपडे
कीइकगेंदबनावै॥गुदामध्यकसबंधलगावै॥योंभीबाय
सधेवाभांती॥जोयेलगारहेदिनअरुराती॥पवनतलेकीऊपरजावै॥

५१ प्रांन अपान सहज मिल जावै ॥ नाद बिंद रल मिल जा दे कै
अ०जो० एक बरस साधै जो कोऊ ॥ जोग मांहि यह बीय रधांन ॥ बूढ़ी
देह पलट हो ज्वांन ॥ जठर अगन बाढ़ै औषि कांय ॥ जो चाहै
सो बहुत षाय ॥ सुन चरनदास कहै सुषदेव ॥ जो गुर पूरा दे
वै भेव ॥ २७९ अथ जलंधर बंध दोहा ॥ मूल बंध तो सूं कहौ गु
ए कहै मब समझाय ॥ बंध जलंधर कहत हूं सुन सरवन क
रि चाय ॥ २८० चौपई तीजा बंध जलंधर जानों ॥ कंठ बास ताको
पहचानों ॥ ग्रीवा लटक चिबुक हियै लावै ॥ कंठ पवन रोकैय
रखावै ॥ हिरदे प्रांन पूरक करि हियै ॥ बंध जलंधर या सूं कहियै ॥
अरध पवन नीचे कूं जाय ॥ अरध पवन ऊरध कूं जाय ॥ उदर म
ध्य लेता हि बिलोय ॥ ब्रह्म रंध्र जु यह पै सोय ॥ इंहि बिधि ब्रह्मपं
थ कूं धावै ॥ सहज सहज मध्य समावै ॥ जरा मरन जहां भै नहिं
आपै ॥ लहै अमरपद होय रहै आपै ॥ चरनदास सुषदेव बता
वै ॥ जो पै बंध उडांन लगावै ॥ २८१ अथ उडांन बंध दोहा ॥ बं
ध उडांन आपी कहा जिभ्या उलट लगाव ॥ कांन आंष मुष
नांक के सुर सब बंध कराव ॥ २८२ इह सु बंध मिहमा अधिक
लागै बजर किबार सात धार की बाट है निकसै नांहि बया
र ॥ २८३ पांचो मुद्रा बंध सब दिय बताय यह देस ॥ सुषदेव कहै
रनजीत सुन और कहूं उपदेस ॥ २८४ इति उडांन बंध अष्टपदी छंद
चौरासी ही आंन जु आसन जोग के ॥ सिध्य पदम तिन मांहि
बडे ही थोक के ॥ बहु नारि न के मांहि जु मों नारी मनी ॥ ति

नमे सुषमन जोन बडी गुरु सुनी ॥ तीन बंध के मोहि मूलकूं जानियें ॥ मुः
द्रो ही मैं बडी षेचरी मानियें ॥ बायन मैं पर धांन प्रांन कूं देषियैं ॥ सुषकुं
भक कूं मांहि केवल बडी षिसे ॥ बानी चारौं मध्य परा ही गाइये ॥ च्या
र अवस्था मांहि तुरिया बडी पाइयें ॥ परम सुन्न को ध्यान परें सूं है परें
याकी सम कोई नांहि ध्यान तिन को धरै ॥ अजपा हीं को जाप बरा
बर औरंगा ॥ सील दया से मीत न कोई देषें ॥ पूजन मैं बडी जांन जु
आतम की करै ॥ ज्ञान समांन न दूंज न सकल बिषया हरै ॥ गुरु साध
न क और नहीं कोई लोक मैं ॥ जोग जुगत सा साधन नहीं को ईओ
ग में ॥ कहें गुरु सुषदेव सुनें रनजीत ही ॥ बडी बडी जो गास भल तु
म कूं जु दी ॥ २८५ ॥ छंद ॥ अमरी करतें बज्री रोके बजरी करतें बाइ
रोके छींक साथ नां करि के नासा लेह जंभाई ॥ जल संजम सूं नम
कूं रोषै संजम नासूं जोती ॥ संजम पूं वन होय थिर काया सेबस
रषै मोती ॥ जिया बिद्या बैमत गभोटे ॥ बूटी होय न काया ॥ संज
म नींद बिंद न हिं ज्रावें ॥ यह सुषदेव बताया ॥ दहनैं स्वर मैं भो
जन कीजै बायें स्वर मैं पानी ॥ दहनें स्वर मैं मूत्र सरीर वै दह न हो
य पुरानी ॥ दहनैं स्वर मैं जल मल त्यागें बायें स्वर मैं लंघी ॥ सब कोस
न सूं सेवन कीजै नारिन की जे संगी ॥ पावक संताप पवन नहीं
कीजै जो तापै तौ नैनां ॥ भोजन गमन षट्टा षावै फटै सो किरै वु
ही मैं नां ॥ २८६ ॥ दोहा ॥ गरमी ही के रोग मैं चंद चलावै बिंद ॥
सीत रोग सूरज चला ससि यर राषे बंद ॥ २८७ ॥ तीनरोजके

५२
ओं० ओं०

याचादिनरा वैसातु ॥ रोगादिबिजैसी करैहोय ॥ जिउआगातं ॥ २८८ ॥ सू
रजरातचलाइ येचौसचलावैचंद ॥ पवनफिरैजुबाबधैस्वा
सचलेजोमंद ॥ २८९ ॥ कांनआंषआरुदांतकेसबहीरोगनजाहि
स्यामबालनहिंसेतहोकैरेजुनीकीदांई ॥ २९० ॥ कईपुरानीबऊ
तहीदिनकूंदहनेराष ॥ बाधेराषेरैनकूं बोलीसाधनभाष ॥ २
९१ ॥ सीतनलगुआपेनहींबिषनहिंब्यापकहोय ॥ बीसबुस
साधनकियेंरहेबिकारनकोय ॥ २९२ ॥ बासग्रहनषाइयेंकाहू
मकैरेअहार ॥ जलबऊतेपीवैनहींसपरसकरैननार ॥ २९३ ॥
तनमनसाधेबचनहींयापनलागनैंदेह ॥ सुषदेवकाहैचरन
दासमुनिआधिकीसाधनराह ॥ २९४ ॥ सबजीवनसुषदीजि
येंसबसैंमीठाबो ॥ आतमपूजाकीजियेंपूजायहीमातोल
॥ २९५ ॥ दयापुहुपचंदननवननधूपदीपदैमन्न ॥ भांतिभांति
नैवेदसोंकरोदेवपरसन्न ॥ २९६ ॥ जोकोईआवैराजसीदेऊ
बडाईताहि ॥ जाकदेषेतामसीकरैनिवनताबाहि ॥ २९७ ॥
जोकोईहोवेंसातसीमिलेंताहितजिमांन ॥ गुष्टीबोलिच
रचाकरोलीजैततमतछांन ॥ २९८ ॥ सबहीकूंपरसन्नकरि
आपरहोपरसन्न ॥ बासलहोहरिधामहीत्योंकहैंसबध
नधन्न ॥ २९९ ॥ राजसतामससातगीदोतरतीनहींमांतिनु ॥
दोवगआतमदेखहैसबकीसहिंयेकंतित ॥ ३०० ॥ सबमें
देषेआपकूंसबकंआपमेमांहि ॥ पावेजीवनमुक्तिकूं
यामेंसंसोनांहि ॥ १ ॥ सबमेंदेषेंआतमांआयननैकाहि

ध्यान ॥ यहीज्ञान ब्रह्मज्ञान है यजु बिज्ञान ॥ ४ ॥ अहंकार मि
टमें ब्रह्म हो परमातम निर्बान ॥ सुष देखा हो कहत के चरद्दा
स हिये आन ४ ॥ जो तैं पूछा सो कहा भेद कहा सब षोल ॥ अरु
तेरे हिये में कछु सुक च षोल कर बोल ॥ ४ ॥ सिषबचन ॥ गुरू
प नां लषि किरपा करी समझाया बहु भांति ॥ जोग भोर तें
गुरू जी हिये में आई सांति ॥ ३०५ ॥ तुम्हरी कहा अस्तुति करूं
मोपै कही न जाय ॥ एती शक्ति न जीभ कूं मिहमां कहे बना
य ॥ ३०६ ॥ किरपा करी अनाथ परि तुम हो दीना नाथ ॥ हाथ प
कोरि मां गं यही मम सिर तुम्हरा हाथ ॥ ३०७ ॥ मो से रंक गरीब
की तुम गा हिय पकड़ी बांहि ॥ मो बूडत राषा मुझै चरनन कं व
लकी छांहि ॥ ८ ॥ आपही तुम किरपा करी मैं कित लगा गो
हि ॥ तुम कृपा के दूंद कहि सकत न शक्ति न मोहि ॥ ९ ॥ ब्यास
पुत्र सुषदेव तुम जग मांही बिष्यात ॥ तुम दरसन दुर्लभ अम
हा ॥ मन नैंनों कू न दिषात ॥ बडे भाग मेरे जो पूरब ले परता
प ॥ किरपा श्री गोपाल की आय मिले तुम आप ॥ ११ ॥ चरन
दास अपनौं कियो दियो परम संतोष ॥ बैठि करूंगो ध्यान
ही अब काहू सो न सोक ॥ १२ ॥ चलत फिरत स्यो आइया
तुम न रिदी मोहि मैं न पांन तन मन नस सभी देषत अर
थो हि ॥ १३ ॥ चाह मिटी सब सुष नारहा न डष का मू
ल ॥ चाहूं तो चाहूं यही तुम चरनन की धूल ॥ १४ ॥ गुरबचन

अ०जो० जोगनिपस्या कीजियै सकल काम न त्याग ॥ ता को फल
मत चाहियो तजि सो दोष अरु राग ॥१५॥ अष्ट सिध जो
पै मिलै नेक न कीजो नेह ॥ धरि हिरदे परमातमा त्यागौ
२ रहियो देह ॥१६॥ जेती जग की बस्त है ता में चित न लाय
सावधान रहियो सदा दियो तो हि समझाय ॥१७॥ बार बा
र तो सूं कहुं स्याम दीजो चित ॥ सिध सुरग फल काम ना
न जिको जो हरि मित ॥१८॥ जो कीजो हरि हित ही रहो चरन
ही दास भक्ति जोग अरु सुम करम नीकी ठौर बास ॥१९
सिष बचन ॥ औसें ही अब करूं गो तुम चरन परता
प ॥ अष्ट सिध सम जो चूक बरनन कीजै आप ॥२०॥ सम
झू तो त्यागू जु है कर रहा वो पहचान ॥ कहा ते बल है न क
हां कौन रहै अस्थान ॥२१॥ गुरबचन सुषदेव कहै बरन
न करुं अष्ट सिध के नांव ॥ लछन गुन सब ही सहित ती
कौ ॥ तोहि समझाव ॥२२॥ अथ अष्ट सिध के नाव चौपई
पिरथम नाम अणिमां सिध कहावे ॥ चाहै तो छोटा होजावे ॥ अ
णसमान छिप जावै सोई ऐसी कला जु पावै कोई ॥ दूजी
महिमां लछन एता ॥ चाहे बडा होय बहु तेता ॥ तीजी ल
घमां वह कहलावे ॥ पुहप तुल्य हलका होजावे ॥ चौथी
गरिमां कहूं बिचारी ॥ चाहे जितनो होवे भारी ॥ पंचवीं
प्रापत सिध कहावे ॥ चित चाहे तित ही हो आवै ॥२३

ज्ञीय राका मगुणधरै ॥ शक्ति पाय चाहै सो करै सतबास
धई सता रम्नी ॥ सबकूं माजा मांहि चुलानी ॥ २३ ॥ दोहा ॥ ब
सीकरन सिध्यां आठवी कहै श्री सुषदे ॥ चाहै जिसकूं ब
सकरै आप बाही करले ॥ २४ ॥ चरनदास सिद्धें कही स
मझ लेह मु नांहि ॥ जो है जन वे राम के उनमें एकै नाहि ॥
१५ ॥ चौपई ॥ जोग किये आठों सिध पावै ॥ कैसे जोगी के चित आ
लगावै जोग किये मन जीता जावै ॥ पलटै जीव ब्रह्म गति
पावै ॥ जोगस्वर चाहै सो करै ॥ सरीर तावै रीती भरै ॥ जोगे
स्वर ईस्वर हो जाई ॥ दिन दिन बाढै कला सवाई ॥ तु जियै
भैया जोग गही करियै ॥ तिरगुन परै ध्यान ही धरियै ॥ चौथे
पद मैं करै निवासा ॥ काहू बिध कारहै न सांसा ॥ जोग क
रै सोई परबीनां ॥ सुषदेव कहै परगट के ह दीनां ॥ २६ ॥ दो
हा ॥ पोथी मांही देषु करि करै जु कोई जोग तन छीजै सि
ध नां भई देही जावै रोग ॥ २७ ॥ देषि देषि गुर सूं करै लेना
ज्ञार कुसंग ॥ सिध होय साधन में काचे तो आवै भंग ॥ २८ ॥
जोग तपस्या मैं बडा पुहचावै हरि पास ॥ जनम मरन बि
पता मिटै रहै न कोई आस ॥ २९ ॥ सिध्यावर्नन ॥ मैं समझ की जा
नी सबै सूझ भई हिये माहि ॥ किरपा करि जो जो कहे
ताकूं बिसरूं नाहि ॥ ३० ॥ ब्यासदेव श्री जनक जै जै जै
श्री सुषदेव ॥ जै जै सह सुकता रहै समझ यो कर हे व

५४
श्री०ग्रा०

छं॰ १ ॥ हियो उलसो आनंद नाए रोंम रोंम भयो चैंन ॥ नाएप बिहर
को नामु नि सुनि तुम्हरे बैंन ॥ ३२ ॥ चौपै ॥ गुर ब्रह्मा गुर बिष्णु गुर
देवन के देव ॥ सर्ब सिध फल दैंन गुरु तुम मुकत करेव ॥ गुर षेवट
तुम होय करो भो सागर पारी ॥ जीव ब्रह्म करि देत हरै तुम ब्याध
मारी ॥ श्री सुषदेव दयाल गुर चरनदास के सीस परि ॥ किरपा कु
रना मानो किये सब ही बिध सों हाथ धरि ॥ ३३ ॥ इति श्री गुरु चे
ले का संबाद नाम छठा गजो ॥ ६ ॥ संपूर्णं समाप्तं ॥ राम राम राम राम ॥
श्री सुषदेव जी सहाय ॥ अथ ज्ञान स्वरोदै श्री चरनदास जी कृ
त लिष्यते ॥ दोहा ॥ नमो नमो सुषदेव जी परणाम करूं अनंत

तुम प्रसाद स्वर भेद कूं ॥ चरनदास बरनंत ॥ १ ॥ परसोतम परमात
मां ॥ पूरन बिस्वा बीस ॥ आदि पुरस अबिचल तुही ॥ तो हि सि

वाकूं सीस॥२॥ कुंडलिया॥ ररंकूं कहत हैं॥ अक्षर सोहं जांन
निह अक्षर स्वासा रहित है॥ ताही कूं मन आंन॥ ताही कूं मन आन
रात दिन सुरत लगावो॥ आप आपा बिचार और नांसी सनि वा
वो॥ चरनदास समझ कहत है आगम निगम की सीष॥ यही बस
न ब्रह्मज्ञान का मानो बिसवा बीस॥३॥ कुंडलिया॥ ररंकूं का
या भई सोहंमों मन होय॥ निह अक्षर संख्या सा भई॥ चरनदा
स भरा जोय॥ चरनदास मन लजोय षैंच मनवां तहा रोषो॥ ह्रस्व आ
दर निह अक्षरा के उबधा नाषो॥ नब दर से एक ही एक में ष
यह सभै तिहारे॥ डाल पात फल फूल मूल सोंस नी निहारे
॥४॥ कुंडलिया॥ स्वासा सें सोहं भयो सोहं तें अंकार॥ अं सूं ररी म
ये॥ साधो करो बिचार॥ साधो करो बिचार उलट घर आपने
आवो॥ घट घट ब्रह्म अनूप सिमट कर तहां समावो॥ चार
बेद का भेद है गीता का है जीव॥ चरनदास लष आप कूं तो
मैं तेरा पीव॥५॥ दोहा॥ सब जोगन को जोग है॥ सब ज्ञानन के
ज्ञांन॥ सब सिध को सिध है॥ तत्त सुरत ध्यांन॥६॥ ब्रह्मज्ञान को
जाप है॥ अजपा सोहं साध॥ परमहंस कोई जानहै॥ ताको
मतो अगाध॥७॥ भेद स्वरोदे सोल है॥ समझै स्वांस उसास
बुरी भली तामें लषे पवन सुरत मन गास॥८॥ सुषदेव गुरु
किरपा करी॥ दियो स्वरोदै ज्ञांन॥ जब सोय हजा नीप
री॥ लाभ न होय के हांन॥९॥ इडा पिंगला सुषमनां॥

नाड़ी तीन बिचार ॥ देह मैं ब्यापैं सब चले लषै धार नौ धा
रा ॥ १० ॥ पिंगल दहनैं अंग है ॥ इड़ा सु बावैं होय ॥ सुषम
न के बीच है ॥ नब सुर चालैं सोय ॥ ११ ॥ जब सुर चाले
पिंगला ॥ तिह मध सूरज बास ॥ इड़ा सु बावैं अंग है ॥ चं
द करत परगास ॥ १२ ॥ सुदे आसतनि की लषे ॥ निर
गम सुगम बिध ॥ औरपा बतत बरन कूं जब होवै
सिध ॥ १३ ॥ सुषदेव कही चरनदास सूं ॥ थिर चर सुर स
रूप है चीन ॥ थिर कारज कूं चंद्रमा ॥ चर कारज कूं
भान ॥ १४ ॥ कृष्णपक्ष जब ही लगे ॥ जाय मिल तहे भा
न ॥ सुकलपक्ष है चंद को ॥ यह निहचै कर जान
१५ ॥ मंगल औ रइत वार दिन ॥ औ सनी चर जा
न ॥ शुभ कारज कूं मिलत है ॥ सूरज के दिन ॥ १६ ॥ न
सोम बार सुकर मलो ॥ दिन ब्रहस्पति कूं देष ॥ चंद
जोग मैं सुफल है ॥ कहैं चरनदास बसेष ॥ १७ ॥ तिथ
और बार बिचार कर ॥ देह मैं बाबो अंग ॥ चरनदास क
है सु जो मिले ॥ शुभ कारज परसंग ॥ १८ ॥ कृष्णपक्ष के
आद ही तीन तिथ तग भान ॥ फिर चंदा फिर भान है
फिर चंदा फिर भान ॥ १९ ॥ सुकल पक्ष के आद ही ॥ ती
न तिथ लग चंद ॥ फिर सूरज फिर चंद है फिर सूर
ज फिर चंद ॥ २० ॥ सूरज की तिथ मे चले ॥ जो सूर्ज परगास

सुषदेही कूं करत हे लाहा लाभ अलाभ २१ सुकलपक्ष चं
द्रचले यडवा लेह निहस्य फल आनंद मंगल करे देही
कूं सुषसार २२ सुकलपक्ष तिथमें चले जोपड़वा कूं आन
हे यूकल सपीडा कछु केदुषके कहान २३ संरजकी
तिथमें चले जोपड़वा कूं चंद्र कूं कलह करे पीडा करे
हानताप केदंद २४ जपूसबाबुं समहै स्वरबाये के
संग जोपूछे सम सिजोगमें गेनीको परसंग २५ नी
चे पीछे दाहने स्वर सूरज को राज जोकोइ पूछे आ
यकर तो समझो शुभ काज २६ दह नो स्वर सुष
चलत हे पूछे बावें आंग सुकलपक्ष नहिं बाहे गे
निरफल परसंग २७ जोकोइ पूछे आयकर बेठ
दाहनी ओर चंद चले सूरज नहीं मनी कारज बिध
कोर २८ जोसूरज में स्वर चले कहे दाहने आय क
हे दाहने आय लगन बार और तिथ मिले काज
कारज होय जाय २९ जोचंद्रा में स्वर चले बाव पूछ
काज तिथ और अक्षर बार मिले शुभ कारज को सा
ज ३० सात पांच नो तीन गनीन पंदह और पचीस
काज बचन अक्षर गिने मानजोगकूं ईस ३१ चार
आठ बारह गिने चोदह सोह्न मीत चंदजोग के
संग हे चरनदास सब जीत ३२ कार्क मे षट लाभ कर

चौरोचरनीरास सूरजसों चारौंमिलत चरकारजपर
गास ३३ मीनमिथनकन्याकही चौथीओरधनमी
न सिखआवकूं सुषमनांसुरलीसुतरनजीत ३४ वृश्चक
सिंघवृषकुंभपुन बायेस्वरके संग चंद्रजोगकूं मिलत
हैं थिरकारजपरसंग ३५ चितआपनेंकों थिरकैरेना
मानआगेंसेन स्वांससूंदेषदिष्टसूं जबपावैस्वरबैन ३६
पांचघडीपांचौंचलें फिरआचरहीबार पांचतत्वचालें
मिलें स्वरविचलेहनिहार ३७ धरतीओरआकास
हे ओरतीसरीयौंन पानीपावकपांचयौं करतस्वांस
मेंगोन ३८ धरतीतोसोहीचलें ओरपीरोरंगदेष
बारहअंगुलस्वासमें सुरतथिरतकरपेष ३९ ऊपरकूं
पावकचलें लालबरनहेमेष चारसुअंगुलस्वांस
में चरनदासओरेष ४० नीचेकूं पानीचलें सेतरं
गहैतास सोलहअंगुलस्वांसमें चरनदासकहैभास
४१ हरोरंगहेबायको तिरछीचालैसोय आठसुअं
गुलस्वांसमें रनजीतमीतकरजोय ४२ स्वरद्वेनों
पूरनचलें बाहरनांपरगास स्यामरंगहैतासको
भाईतत्वआकास ४३ जलपिरथीकेजोगमें जोको
ईपूछेबात ससियरमेंजोस्वरचले कउकारजहो
यजात ४४ पावकओरयांकासपुन बायकेमेजो

होय जोकोइपूछे आयकर सुभकारज नहि होय ४५
जलपिरथीथिरकाजकूं चरकारजकूं नाहि आगनि
वायुचरकाजकूं दहनेस्वरके मांहि ४६ रोगीकीपूछे
कोऊ बैठचंदकीओर धरतीबावेस्वरचले मरैन
हीबिधकार ४७ रोगीकोपरसंगजो बांवेपूछे आन
चरबंधसूरजचले जीवेनावहजान ४८ दहनेस्वर
सूंआयकर सुन्नओरजोजाय जोपूछेपरसंगवह
रोगीनाठहराय ४९ सुन्नओरसूंआयकर पूछेबहते
स्वास यहनिहचैकरजानियो रोगीकोनहिनास ५०
सुन्नओरसूंआयकर पूछेबहतेपछ जेतेकारजजग
तके सुफलहोयसोसच ५१ बहतेस्वरसूंआयकर
जापूछेसुन्नओर जेतेकारजजगतके उलटहोहिंविध
कोर ५२ केबायेंकेदाहनो जोकोईपूरनहोय पूछे
पूरनओरही कारजपूरनसोय ५३ बरसएककोफलच
हे ततमतजानैसोय कालसमैसोसाइलखे बुरेभलोजग
होय ५४ ५ संक्रांयुतपुन्यमेषबिचारै तादिनलगेसुघ
डीनिहारै तबहीसुमेंकरैबिचार चलेकोनसेमतहनिस
सुजोबावेंसरपिरथीहोई तौकोततकहावैसोई देसम
दओरसमौबतावे परजासुखीमेहबरसावे चारएबड
तढोरकूं उपजे नरदेहीकूं मानबडा निपजे जलथ

लेबाएँ सुरमांही धरतीफलैमेहचरमांई आगंन्धमंगल
मूंजगरहे आपतत्तचंदामेंबहे जलधरतीदोनोंशुभभाई
चरनदाससुषदेवबतांई ५५ प तीनतत्तकाकहूंबि
चारा स्वरमैंजाकाभेदनिहारा लौमेषसंक्रायुततब
ही लगतीघुडीबिचारैजबही आगनतत्तस्वरमैंजबचा
ले रोगदोषमेंपरजाहालै कालपडैथोडोमेबरसै देस
मंगाजो पावककरसै बायतत्तचालैससगा जगभैमा
नहोयकाहुदंगा आईकालथोडोबरसै बायतत्तजो
स्वरमैंदरसै ततआकासमुरचालैदोई मेहनबरसैना
नहोई कालेपडैतिनुउपजैनाहीं ततआकासजोहोय
स्वरमांहीं ५६ दो चेतमहीनामधपमें जबहीपडवा
होय सुकलपक्षताद्दिनलोंपातस्वांसमेंजोय ५७ मो
रहींपडवाकहुंलषै पिरथीहोयसुषोन हो यसमेंप
रजासुषी राजासुषीनिदान ५८ नीरचलैजोसुरमें य
हीसमैंकीजीतमेहबरसैपरजासुषी सेबतनीकोमीत
५९ पिरथीपानीसमोजो बहेचंदआसांन रहैनैस
रमैंजोबहे समोसुमध्यमजान ६० औरहीजोसुषमनां
चले रुजहोयउतपात देषनवारोबिनसहै आरका
लपरजात ६१ रुजहोयउतपातपुन पडैकालबिसवा
स मेहनहींपरजादुषी जोहोतत्तआकास दर स्वासमें

आ

पाखकचले पडैकालजबजांन रोगहोयपरजाडुखी घ
टैराजकोमांन ६३ भेकलैमहोयदेसमें बिग्रहफैलै
असु पडैकालपरजाडुखी चलैबायकोतन ६४ संक्रा
यतऔस्वेतकोहीनोंभेदलषायु जगतकाजअबकहै
तहूं चंदस्वरकोन्याय ६५ प बिवाहदानतीरथजो
करै बस्तरभूषनघरपाधरै बांवैस्वरमेंसबकीजै पो
थीपुस्तगजोलिषलीजें जोगअभ्यासऔरकीजेप्रीत औ
षधबुडीकीजेमीत दिक्षामंतरबोवैराज चंदजोग
थिरबैठेराज चंदजोगमेंआस्थिरजानों थिरकाज
सबहीपहचानों करैहवेलीछपरछावै बागबगीचा
गुफाबनावै हाकमजायकोटमेंबरै चंदजोगआ
सनपगधरै चरनदासयुषदेवबतावै चंदजोगथि
रकाजकहावै ६६ दो बांवैस्वरकेकाजुरा सोमैंदिए
बताय दहनेस्वरकेकहतहूं सोनसुनीदेगाय ६७
प जोषांडोकरलीयाचाहै जाकरबैरीऊपरबाहै जु
धबादरनजीतैसोई दहनेस्वरमेंचालैकोई भोजन
करैकरेअस्नाना मैथुनकर्मजोनपरधाना बही
लिषेकीजैबोहारा गजघोडाबाहनहथियारा बिद्या
पढैनईजासाधे मंतरसिद्धध्यानआराधे बैरीभंज
नगवनजोकीजे औरकहूंकोरिनजोदीजै बिनका

५८
स्वरोदै०

क्रूपैजोतूमांगे बिषआर भूतउतारनलापौ चरनदासमुषदे
वबिचारी एचरकर्मभौनकीनारी ६८ दो चरकारजकूं
मौनहै थिरकारजकूंचंद सुषमनचलतननचालिये त
हांहोयकुछदंद ६९ गांवपसानैषेतपुन ईश्वरजधरमीं
त सुषमनचलतनचालिये बरजतहैरनजीत ७० बिन
बावैषिनदाहनै सोईसुषमनजांन ढीललगैकैनांमिले
कैकारजकीहांन ७१ होयकलेसपीडाकछू जोकोई
कहींजाय सुमनचलतनचालिये दीनोंतोहिबताय
७२ जोगकरोसुषमनचलै कैआतमकोध्यान औरकाज
कोईकरै तोकुछआवैहांन ७३ पूरबउत्तरमतचलो बा
येस्वरपरगास हांनहोयबहुरैनहीं आवनकीनहिंआस
७४ दहनैचलतनचालिये दक्षनपक्षमजांन जोरजायु जोनर जाप
बहुरैनहीं तहांहोयकुछहांन ७५ दहनैस्वरमैंजाइये
पूरबउत्तरराज सुषसंपतआनंदकरै सभीहोयशुभका
ज ७६ बायेंस्वरमैंजाइये दक्षनपक्षमदेस सुषआनं
दमंगलकरै जोरजायपरदेस ७७ दहनैमेंतीआयक
र बावेंपूछैकोय जोबावोंस्वरबंधहै सुफलकाजन
हिंहोय ७८ बायेंमेंतीआयकर दहनैपूछैधाय जो
दहनौंस्वरबंधहै कारजअफलबताय ७९ जबस्व
रभीतरकूंचलै कारजपूछैकोय पैजबांधबासूंकहै

मूनसापूरनहोय ८० जबसुरबाहरकूं चलै तबकोईपू
छैतोर वाकूं औसैंभाषियै नहींकारजविधकोर ८१ बा
वीकूरवटसोइयै जलबायेंसरपीव दहनैसुभोजन
करै तौसुषपावैजीव ८२ बायेसुरभोजनकरै दह
नैपीवैनीर दसदिनभूलोयौंकरै आवैरोगसरीर ८
३ दहनैसुरफाडैफिरै बावैंलषकसक्याय जुगताग
औसैंसाधियै दोनोंभेदबताय ८४ चंदचलावैद्यो
सकूं रातचलावैसूर नितसाधनऔसैंकरै होयअमर
भरपूर ८५ जितनौंहींबायोंचलै सोईदहनौंहोय दश
स्वासासुषमनचलै ताहिबिचारोलोय ८६॥ आठपहरदह
नौंचलै॥ बुदहलैनहीजुपोन तीनबरसकायारहै जीव
करैफिरगोन ८७ सोलहपहरचलैजभी स्वासपिंगला
मांहि जुगलबरसकायारहै पाछैरहतानांहि ८८ तीन
रातऔरतीनदिन चलैदाहनौंसास संबतभरका
यारहै पाछैफिरहोयनास ८९ सोलहदिननिसदिनच
लै स्वासभोनकीओर आवज्ञानइकमासकी जीवना
यतबकोर ९० नौभृकुटीसतैस्रुवन पांचतारकाज्ञान
तीनतांककज्ञिभाइके कालभेदयहचान ९१ भेद
गुरूसोपाइये गुरबिनलहैनज्ञान चरनदासयौं
कहतहैं गुरपरखारूपीन ९२ एकमासजोरैनदिन

जीवजयतनदेखो

५९
स्वरोदै

मानुष्यहतेंहोय चरनदासयोंकहतहैं नरजीवैदिनदे
य ९३ नारीजोसुषमेनचले पांचघडीरहराय पांचघ
डीसुषमनबहे तबहीनरमरजाय ९४ नहींचंदनहीं
सूरहै नहींसुषमनतोबाल मुषमेंतोस्वांसाचले घडीचा
रमेंकाल ९५ चारदिनांकेआठदिन बारहकेदिनबी
सऐसैंजोचंदाचले आवजांनबडईस ९६ तीनरतुतीनो
रतीनदिन चालेतहआकाश एकबरसकायारहे फे
रकालबिसवास ९७ दिनकूंतोचंदाचले चलैरात
कूंसूर यहनिहचेकरजानियो प्रांनगावनबऊहर ९
८ एतचलैस्वरचंदमें दिनकूंसूरजबालू एकमहीनों
योंचले छठेमहीनेकाल ९९ जबसाधूऐसीलषे छ
ठेमहीनेकाल आगेहीसाधनकरै बैठगुफातनकाल
१०० ऊपरषैंचआपांनकूं प्रांनअपानमिलाव उनम
करैसमाधकूं ताकूंकालनषाय १०१ पवननुपिवेजवा
लापचै नाभितनैकररहे मेरडंडकूंफोरकै बसैआ
मरपुरजाय १०२ जहांकालपुहचैनहीं जमकीहोय
नत्रास गगनमंडलकूंजायकर करैउनमनीबास
१०३ जहांकालनहिंज्वालहै छूटैसकलसंताप हो
म य उनमनीलीनमन बिसरैआपाआप १०४ तीनों
बंधलगायकै पांचबायकूं साध सुषमनमारग

होय चले देषै षेल अगाध १०५ झाक जाय स्यो सूं मिले जहां हि
य मन लीन महा षेचरी जो लगै जानै जोन प्रवीन १०६ आ
सन पद्म लगाय कर मूल बंध कूं बाध मेरडंड सीधा करै
सुरत गगन कूं बांध १०७ चंद सूर दोऊ सम करे घटी हि
एलगाय षट चक्र कूं बेध कर सुन्न सिषर कूं जाय १०८
इड़ा पिंगला धाध कर सुषमन मैं कर बास परम जोत
झिलमिल तहां पूनै मम बिसवास १०९ जिन साधन
आगै करी ता सूं सब कुछ होय जब चाहै जब ही सभी
काल बचावै सोय ११० तरन अवस्था जोग कर बैठ रहै म
न जीत काल बचावै साध वही अंत समै रन जीत १११ स
दा आप मैं लीन रह करकर जोग अभ्यास आवत देषै का
ल जब गगन मंडल कर बास ११२ सन ईस न ई साध कर श
वै प्रान चढाय पूरे जोगी जानियै ताकूं काल न षाय ११३
पहलै साधन जो किया गगन मंडल को जोन आवत जा
नै काल जब कहा करै अज्ञान ११४ जो साधन कीनो नही
ज्ञान अवस्था मीत आगम देषै काल को कहा सकै वह
जीती ११५ काल जीत हरि सूं मिले सुन्न महल अस्थान आ
गे जिन साधन करी तरन अवस्था जोन ११६ काल अवध
बीते तभी जब बीत सब जाय जोगी प्रान उतारि यै लेह स
माधि जाय ११७ काल जीत तन गमै रहै मो तन बाप पै ताहि
दसै द्वार कूं फोर कर जब चाहै जब जाय ११८ सूरज मंडल

चीरके जोगीत्यागैप्रानसाज जमुक्तसोइलहै पावैपदनिर्बान ११९।
कालपक्षकेमध्यमैं दक्षनहोयजुभांन जोगीबपुनहिंछाडिये राजा
होयफिरआंन १२० राजपायहरिभक्तकरि प्रबलीपहचांन
जोगजुगतपावैबहुर हसरमुक्तनिदांन १२१ उत्तरायनसू
रजलषे सुकलपक्षकेमांहि जोगीकायात्यागियै यामैंसंसोनां
१२२ मुक्तहोयबहुरैनहीं जीवबोजमिटजाय बूंदसमुंदरमिल
रहै दुतियानांठहराय १२३ दक्षनायनसूरजीरहै रहैमांसषट
जांन फिरउत्तरायनजायकर रहैमांसषटमांन १२४ दोनौंसु
रकुंसुधकर स्वांसामैंमनराष भेदस्वरोदैपायकर तबकाहू।
सोंभाष १२५ जोरनऊपरजाइयै दहनैंस्वरपरगास जीतहोय
होरैनहीं करैशत्रुकोनास १२६ दुजैसकोस्वरदाहानौं तेरौद
हनौंहोय जोकोईपहलैंचढै षेतजीतहैसोय १२७ सुषमन
चलतनचालियै जुधकारनसुनमीत सीसुकटावैकैफसे।
दुरजनकीहोयजीत १२८ जोबावैपिरथीचलै चढआवै।
कोईभूप आपुबैठदलपुलिये बातकहतहूंभूप १२९ ज
लपिरथीस्वरमै चलै सुनौंकांनबेबीर सुफलकाजदो
नौंकरैं केधरतीकेनीर १३० यावककेआरआकासतत
बायततजोहोय कछुकाजनहीकीजिये इनमेंबर
जंतोय १३१ दहानोंस्वजबचलतहै कहींजायजोको
य तीनपावैआगेधरैसरजकोदिनहोय बावेस्वरमे
जाइयै बावैपगधरचार बावीडगायहलैधरै होयच

दूको बार ॥१३३॥ दहनैं स्वरमैं जाइये ॥ रहै तौ इ गाध तीन ॥ बा
वैं स्वरमैं चार डग ॥ बादी कर परबीन ॥१३४॥ गर्भवंती के ग
र्भकी ॥ जो कोई पूछै आय ॥ बालक होयकै बालकी ॥ जी
वै कै मरजाय ॥१३५॥ प्रश्न बालक होंनकी ॥ जो कोइ पूछै
तोय ॥ बायें कहियै छोकरी ॥ दहनै बेटा होय ॥१३६॥ दह
नै स्वरके चलतही ॥ जो वह पूछै आय ॥ वा को बावें स्वर
चलै ॥ बालक होय मरजा ॥१३७॥ दहनै स्वरके चलतही जो व
ह पूछै बैंन ॥ वा हू को दहनौ चलै ॥ लरका होय सुखचैन
॥१३८॥ बायें स्वरके चलतही ॥ आय कहै जो कोय बेटी हो
य जीवै नहीं ॥ वा को दहनौ होय ॥१३९॥ बायें स्वरके चल
तही ॥ जो वह पूछै बात ॥ वा हू को बावों चलै ॥ बेटी होय कुस
लात ॥१४०॥ तत आकास के चलतही ॥ कहै गर्भकी आय
होय नपुंसक ही जड ॥ कै सुत वांसे जाय ॥१४१॥ लेन प
रिस्या गर्भकी ॥ जो कोई पूछै आय ॥ आपहि होय जो तास
मैं ॥ सो छगाही गिर जाय ॥१४२॥ खिन बावें खिन दाहनै ॥
दो स्वर सुषम न होय ॥ पूछै तब ऐसो कहौ ॥ बालक
उपजै दोय ॥१४३॥ वायु तत्त के चलतही ॥ जो कोई पूछै
आय कर ॥ याकूं गर्भ कि नांहि ॥ दहनौ बावों स्वर लखै ॥
साधू स्वास के मांहि ॥१४४॥ बंध और जो आय कर ॥ है पूछै
जो कोय ॥ बंध और तो गर्भ है बहते स्वर नहिं होय ॥१४६

६१

स्वरोदै

इडापिंगलासुषमना॥ नाडी कहियें तीन॥ सूरज चंद्र बि
चारकै॥ रहै स्वास लौलीन॥१४७॥ जैसे कछुवा सिमट
कर॥ आपही माहि समाय॥ त्यूं सैं ज्ञानी स्वास में॥ रहै सुरत
लौलाय॥१४८॥ स्वास बाण वै कोउ की॥ आवजा नन लो
य॥ बीच डांयूं स्वास समबै॥ तब ही मत गाहोय॥१४९॥ सरकी
स जार छसे चले॥ रात दिनां जो स्वास॥ बीस सो जी
वै बरस॥ होय आयु न को नास॥१५०॥ अकाल मृत्यु को अ
रै॥ होय कार भुगतै भूत॥ स्वांस जहां बीतै सनी॥ जब आ
वै अमहत॥१५१॥ धारि संजम साधकर॥ स्वास जुगत चला
व॥ अकाल मृत्यु आवै नहीं॥ जीवै पूरी आव॥१५२॥ छू. व
म भोजन की जियै॥ रहियै नाप ऊ सोय॥ जल थोरे सो पी
जियै॥ बकत बोल मत सोय॥१५३॥ कुंडलिया॥ मोह मुक
त चहत हो॥ तजो कांम नां काम॥ मन की इछा मेट
कर॥ भजो निरंजन नाम॥ भजो निरंजन तत देह न आध्या
समिट रहो॥ पंच तन्त को तज आपहु आप में आय समावो॥
जब छूटै फुनि देह जैसे के से रहियो॥ चरनदास यूं ही
मुकत गुरू ने हम सूं कहियो॥१५४॥ दोहा॥ देह मृत्यु है अ
मर॥ पारब्रह्म है सो य॥ आज्ञानी भटकत फिरै॥ लखै सो
ज्ञानी होय॥१५५॥ देह नहीं तू ब्रह्म है॥ आबिनासी बि
हीन॥ नित न्यारे तू देह सूं॥ देह कर्म सब जान॥१५६॥

डोलन बोलन सो घुनो ॥ भछ न कर अहार ॥ उषसुष मे फ़कन रोग
सब ॥ गरमी सीत निहार ॥ १५७ ॥ ज्ञात बुरन कुल देह की ॥
मूरत मूरत नाव ॥ उपजे बिनसे देह सो ॥ पाच तत्त के गांव
१५८ ॥ पाव क पानी बाय हे ॥ धरती और आकास ॥ पं तत्त ॥
के कोट मे आय कियो है बास ॥ १५९ ॥ पांच पचीसो देह सं
गा ॥ गुमती नो है साथ ॥ घटन पाध सो जानिये ॥ करत रहै उ
तपात ॥ १६० ॥ जिभ्या इंद्री नीर की ॥ नम की इंद्री कांन ॥ नासा
इंद्री धीन की ॥ कूर बिचार पहचान ॥ १६१ ॥ तुचा सु इंद्री बायु
की ॥ पख कइ इंद्री नैन ॥ इन कू साधे साध जो ॥ पद पावै सुख चै
न ॥ १६२ ॥ निद्रा संग्राम आलस सकस ॥ भूख प्यास जो होय ॥ चर
न हास पाचो कही ॥ आगन तत संजोय ॥ १६३ ॥ रक्त बिंद कफ
ती सारे ॥ मेद मुत्र कूं जांन ॥ चरन दास परकिर्त ए ॥ पानी
सं पहचान ॥ १६४ ॥ पो मह हाड नाडी कहुं रोम जान औ मा
स ॥ पिरथी की परकिर्त ए ॥ संत मन को नास ॥ १६५ ॥ बल
करनो और धावनो ॥ उठनो आरु संकोच ॥ देह बढे सो
जानिये ॥ बाय तत्त हे सोय ॥ १६६ ॥ काम क्रोध मोह लोभ
भे तत आकास को भाग ॥ न भ का पांचो जानिये ॥ तिन मारे तु
जाग ॥ १६७ ॥ पाच्चु पचीसो एक ही ॥ इनके सकल सुभाव ॥ निबि
कार तत्त ब्रह्म है ॥ आप आप कू याव ॥ १६८ ॥ निराकार निरलि
प्त तू ॥ देह ही जो न आकार ॥ आपने देही मां ममत ॥ यू ही ज्ञा
न तत सार ॥ १६९ ॥ सस्तर छेद सके नही ॥ पावक सके न जार

मरैमिटै सोतू नहीं ॥ गुरुगम भेद निहार ॥१७०॥ जलै कटै का
या यही ॥ बनै मिटै फिर होय ॥ जीव अबिनासी नित्य है ॥
जानै बिरला कोय ॥१७१॥ आंष नाक जिभ्या कर्ण ॥ तुचा जान
और कान ॥ पांचौं इंद्री ज्ञान है ॥ जानै सो नर सुजान ॥१७२॥ गुदा
लिंग मुष तीसरो ॥ हाथ पांव लष लेह ॥ पांचौं इंद्री कर्म है ॥ य
ही बी कहिये देह ॥१७३॥ पृथ्वी काल जे भोर है ॥ मुष जानिये
द्वार ॥ पीरो रंग पहचानिये ॥ पीवन षांन अहार ॥१७४॥ पि
त्ते में पावक रहे ॥ नैन जानिये द्वार ॥ लाल रंग है आग्न को
मोहलो भआहार ॥ जल को बासा भाल है ॥ लिंग जानिये
१७५ द्वार ॥ मैथुन कम मल हार है ॥ रंग सुपेद निहार ॥१७६॥ पव
न नाभ में रहत है ॥ नासा जानि दुवार ॥ हस्यो रंग है बा
यु को गंध सुगंध आहार ॥१७७॥ आकास सीस में बास
है ॥ स्रवन द्वारे जान ॥ शब्द कु शब्द आहार है ॥ ताकुं
स्याम पिछान ॥१७८॥ कास्त सूक्ष्म लिंग है और कहि
यत अस्थूल ॥ सरीर तीन सो जानिये मैं मेरी जड़ मूल ॥१७९॥
चित बुध मन अहंकार जो ॥ अंतस्करन सुचार ॥ ज्ञा
न आगत सों जारिये ॥ कर कर मीत बिचार ॥१८०॥ शब्द स
परस और गंध है ॥ और कहियत रस रूप ॥ ये ह करम
पन मातरा ॥ तू कहियत निह रूप ॥१८१॥ निराकार आद्य
अचल निरबासी तू जीव ॥ निरालंब निरवैर सो ॥ आज
अबिनासी सीव ॥१८२॥ बाद्वै को ठाम को दह है नैजल

परगास ॥ मन हिरदे अस्थान है ॥ परम नाम में बास ॥ १८३ ॥
मूल कंवल दल चार को ॥ लाल पेंषरी रंग ॥ गोरी सुत बा
सो कियो ॥ छ से जाप इकंग ॥ १८४ ॥ कंवल षट दल विष
रे ब्रह्म ॥ नामी तले संभाल ॥ षट सहंसर जाप जपले ॥ ब्र
ह्मा सावित्री नाल ॥ १८५ ॥ दसमें पै षरी कंवल है ॥ नील बर
न सो नाम ॥ बिष्नु लक्ष्मी बासकी नो ॥ षट सहंसर जाप
॥ १८६ ॥ अनाहद चक्र हिरदे रहे ॥ वा दस दल ओर सेत ष
ट सहंसर जो जपले ॥ सो सकत जहां हेत ॥ १८७ ॥ षोडस द
ल को कंवल है कंठ ॥ बास सस सिरूप ॥ जाप सहंसर ज
हां जपे ॥ भेद दल है अति गूप ॥ १८८ ॥ आग्य चक्र दो दल
कंवल ॥ त्रिकुटी धाम अनूप ॥ जाप सहंसर जहां जपे ॥
पावे जोत सरूप ॥ १८९ ॥ दल हजार को कंवल है ॥ गगन
मंडल में बास ॥ जाप सहंसर जहां जपे ॥ तेज पुंज परगा
स ॥ १९० ॥ जो गुरमत कर षोज ले ॥ सुरत निरत कर ध्या
न दस प्रकार अनहद बजे ॥ हो यु जहां लौ लीन ॥ १९१ ॥
कुंडलिया ॥ नाक मूल गुजार सी ॥ तजे घ घरु होय ॥ ती
जे सुर जु संष का ॥ चौथे घंटा सोय ॥ चौथे घंटा सोय
पंचवें ताल जु बाजे ॥ छठे सुमुरली नाद सतवें भेर जु गा
जे ॥ अठवें शहनाई का नाद नफीरी नो ॥ दसवें गरज
जन सिंधसा ॥ चरनदास सुनलो ॥ १९२ ॥ दोहा ॥ दस प्रकार
अनहद धुरे ॥ जित जोगी होय लीन ॥ इंद्री थक मन

ग्रामके ॥ चरनदास कहदीन ॥ १९३ ॥ तीनबंध तो नाहि
बरौदे० का दस बाईकूं जीत ॥ यां नक्षपांन समान है ॥ और
कहि पत उद्यान ॥ १९४ ॥ ब्यान बाय जो रविकारकरा ॥ कूर
म बाई जीत ॥ नागध नंजय देवदत्त ॥ दस बाई रन जीत ॥ १९५
नौ द्वौ दर कूं बंध कर ॥ उत्तम नाडी तीन ॥ इडा पिंगला
सुषमनां ॥ केल करै परवीन ॥ १९६ ॥ कर तै प्रानायाम के
तिर गुण पूतत आनेक ॥ आनहद षकनू के बीच मैं देषे द्रा
ष्टि जो नेन ॥ १९७ ॥ पूरक कुंभक कुरै रेचक पवन ने तता
र ॥ जो मन प्रानायाम करि ॥ सो संयम करै आहार ॥ १९८ ॥ धरती
धूल न गाय कर ॥ दसौं बाय कूं रोक ॥ मूल स्वास प्रान चढाय
करै आमृत रस पुर भोग ॥ १९९ ॥ पांचै घटको भेद ॥ नाडी सं
क चूटाइये ॥ षट चक्कर कूं छेद ॥ २०० ॥ जोग जुगत के कीं
जियै कै आपा को ध्यान ॥ आप आपु बिचारियै ॥ परम
तत्व को ज्ञान ॥ २०१ ॥ सूद्र बैस पस रही रहे ॥ ब्राह्मण और रज
पूत ॥ बूढा बाला तून हीं ॥ चरनदास जो धूत ॥ २०२ ॥ का
या माया जानिये ॥ जी बत्रस हैं मित ॥ काया छूटै सुर
त मिटै ॥ तू पूरमातम मित्र ॥ २०३ ॥ पाप पुन्य आसा तजो ॥
तजो मान और थाप ॥ काया मोह बिकार तज ॥ पजै
सु आप जाप ॥ २०४ ॥ आप भुला तो आपमें ॥ बंधयो आप
ही आप ॥ जा कूं ढूंढत फिरत है ॥ सो तू आपी आप ॥ २०५
इडा पाइडी बि सम सूक र ॥ कैयां न होय निवास ॥ तू तो जीव

नमूर्क है ॥ तजो मुक्त की आस ॥ २०६ ॥ पवन मई आका
सम्ं ॥ आगन बाय संझेय ॥ पावक सूं पानी भयो ॥ पानी
धरती सोय ॥ २०७ ॥ धरती मीठे स्वाद है पानी स्वाद सुनीर ॥ अ
म चर परे स्वाद है ॥ पवन स्वाद समीर ॥ २०८ ॥ पवन मीठा
चर पुरा ॥ खारी पर्म न होय जब ही तत्त्व बिचारिये ॥ पांच
तत्त में को य ॥ २०९ ॥ स्वाद नाप और रंग है ॥ और बड खाल ॥ मा
पांच तत्त को परखय साधु पावत काल ॥ २१० ॥ तेर कों नी
पावक चले ॥ धरती तो चो कोर ॥ सुन सु भाव्र का सब को ॥ पा
नीलो बोगो ल ॥ २११ ॥ आगतत्त गुन तामसी कही रजोगु
न बाय ॥ पिरथी नीर सतोगुनी ॥ भ महे आ स्थिर नाय ॥
१२ ॥ नीर बले जब संग्राम में ॥ रन कय स्वट मीत ॥ बेरी को
सिर काट कर ॥ घर आवे रन जीत ॥ २१३ ॥ पिरथी के पर
गास मैं ॥ जुध करै जा को ॥ पा ॥ दोद लर है बराबरी ॥ हार बा
य मैं होय ॥ २१४ ॥ आगतत में के बुहत ही जुध करत मत
जाव ॥ हार होय जीतै नहीं ॥ और आवे तन घाव ॥ २१५ ॥ त
त्त आकास मैं जो चले ॥ तो कोई रह जाय ॥ रमूमं ढ़ी काया
छूटे ॥ घर दे खै आय ॥ २१६ ॥ जल पिरथी के जोग मैं ॥ गर्भ
मही रहे सो पूत ॥ बायु तत में जो करी ॥ आब रसूत बके सूत
२१७ ॥ पिरथी तत में गर्भ जो ॥ बालक होवे भूप ॥ धन वंत ता
सोई जा नियैं सुंदर होय सरूप ॥ २१८ ॥ जो गन तत जब
पत है ॥ क भी गर्भ रह जाय ॥ गर्भ गिरै मा ता दुखी होय आ

स्वरोदै

ताम रजाय ॥ २१९ ॥ बायूतत्त सुरदाहनैं ॥ करै पुरष उज्जव ब
रोग ॥ ग्रभ रहै जो तास मे ॥ देहि आवै रोग ॥ २२० ॥ आसन
संजम साध कैर ॥ द्रिष्ट स्वांस के मांहि ॥ स्वत मे दयों पाइ
ये ॥ बिन साधे कुछ नांहि ॥ २२१ ॥ आसन पुष्ट लगाय कु
र ॥ एक बरत नित साध ॥ बैठै लेटै डोलतै ॥ स्वांसा ही आरा
ध ॥ २२२ ॥ बा भिनासिका मांहि कर ॥ सोहं सोहं जाप सं
ई अजपा जाप है ॥ छूटै सब और पाप ॥ २२३ ॥ भेद स्वरोदै ब
हुत है ॥ सूछम कह्यो बनाय ॥ ता कूं समझ बिचार क
ले ॥ आप नैं चित मन लाय ॥ २२४ ॥ धरस्वट रै गुरु रवर रवरे ॥ धू
व टरै सुनमीत ॥ बचन स्वरोदै नाट रै ॥ कहै दास रनजी
त ॥ २२५ ॥ सुषदेव गुरु की दया सूं ॥ साध दया सूं ज्ञान ॥ च
रनदास रनजीत नैं ॥ कह्यो स्वरोदै ज्ञान ॥ २२६ ॥ कवित्त ॥ डहरे
मैं मेरो जनम नांव रनजीत तब धारी ॥ मुरली को सुत जा
न जात ढूसर पहचानी ॥ बाल भाव स्या मांहि बकुरदि
ल्ली मैं आयो ॥ रमत मिले सुषदेव नांव चरनदास धर
यो ॥ जोग जुगत हरि भक्ति कर ब्रह्मज्ञान दिढ करा
हो ॥ आतम तत्त बिचार की अजपा मैं मन सन रह्यो ॥
२२७ ॥ इति श्री ज्ञान स्वरोदै श्री चरनदास जी कृत संपूर्ण
समाप्त ॥ अथ श्री सुषदेव जी के दास चरनदास जी कृ
त पंच उपनिषिद भाषा अर्थ बरनन बिहु की प्रथम हंसनाद लि
ख्यते ॥ दोहा ॥ बंदन श्री सुषदेव कूं ॥ चरन कूं हिये मे लाय

छिपके भेद प्रगट किये ॥ परमारथ के दाय ॥१॥ सहसकृत
भाषा करी ताको यह दिष्टांत ॥ बोल षोल सब ही कही स
मझैं छुटै भ्रांत ॥२॥ ज्यों कू रोमु नीरले ॥ बाहर दियो भराय
बिनां जतन कोइ पीसकै ॥ बिरषा वंत अघाय ॥३॥ पोही नी
सुषदेव नै भेजल काटनहार ॥ प्यासा को इन जाइ ये ॥ वे
रूवार मबा ॥४॥ ब्राह्मन मुछन्नी बिसजो कोउ सुद्र कैयो न
होय ॥ वह पवै गाहित करि बडु प्यासा ॥ जो कोइ ॥५॥ कुव
नीर की प्यास जो ॥ काउ ही कूं होय ॥ और सब घजगप्या
स मैं ॥ सहजु मति गहोय ॥६॥ यह जगनी सें जानीये ॥ भग
तिश्र को नीर ॥ निकर जाय प्यासा कोइ ॥ क नी न ला
जे पीय ॥७॥ उनकी प्यास बुझै नहीं ॥ होय न हीहि पै चैन
ग्यान सुधा तजि जात हैं ॥ धोषे को जल लैन ॥८॥ ज्ञान नीर
तिरपति भरो ॥ निह चल बैठे दास ॥ संसारी प्यासे गरो
पूरी भई न आस ॥९॥ सहंत कृत तथा कू पसम ॥ भाषा
नीर निकास ॥ प्याऊ जग्यासी न कूं ॥ तिन की भाजै प्या
स ॥१०॥ अथ पद्धड़ी छंद ॥ बेद ही कीनि पुनि सिष तजु पै
भाषा करी ॥ जो कुछ था वह मांहि सोइ जैसें धरी ॥ सु
निसम के मन मांहि ॥ और करनी करै ॥ आवागवन न मिर
जाय ॥ नहीं हि ही धरै ॥ जग की ब्याधा छूटि मुकति पद पावई
जाग्रत पुहे चैन रसुप न बिसरावई ॥ तिमूरस भी जिजाय उ
जारा होय यहै ॥ सू कै आतमरूप ॥ देत ताषी यहै ॥ उपजै भाति

आनंदरूप रूपजायहै॥ निर्युक्ति निमिलजांन बिज्ञांन क्षा
घायहै॥ जोपै करैबिचार सो गुरसुं लहै वाकी महर
नी गहै॥ और रहगुरसुषदेव प्रतापसुंचितदेगाइयौ॥च
रनहीदासासोहायूसबनसिर नाइया॥ दोहा ११॥ पूजैरिष
मुनिदेवता॥ पूजैरिषि नृप पूजा सबही सिष्ट कौ॥ देषा
हरिकोरूप॥ ११॥ सर्बतूरप्रभुदेहि षिकारिसबकैसी स
निवाया॥ अपनिषिते जोबेदकी॥ प्रगटकहीभाय॥ १२॥
आष्टपदी॥ पिरथमप्रगटकरी छिपेहीभेदकी॥ हरस ना
दसौं हि ताव आमर्बनबेदकी॥ गोतमरिषकरि चाववरि
षीश्वर पैगारे संतसुजांनजुगोवबहुतआदरकिरौ॥ गौ
तमआस्तुति करी बहुत हीप्रीतसुं॥ फिरपूछीयहबा
तजु लघुतारीनसुं॥ प्रमेश्वरयहचानमाहिसमझाइ
यै॥ मुकति होंनकौ पंथ सबै॥ जुबताइयौ॥ होकरिबहुप्र
सनेर षीस्वर बोलीया॥ गौरा आसमहादेवकी चरचा॥
षोलीया॥ सबदेवनकेदेव॥ महादेवहै सही॥ नु य
षिषितै जोबेदकी गौरासुंकही॥ सो मैंतुमसुं कहं प्री
तकेभावसुं॥ तुम हुं नीकैमनं॥ आधिकहीचावसुं
गुप्तमहायहभेदहि ऐमैंराषीरि जोजटमूरिषहोयं वि
स नहीं भाषीए॥ १४॥ दोहा॥ हरिभगता अरु गुरमुषी॥ त
पकरनेकी आस॥ सतसंगी सांचाज नीताहिदेहु चरनै
दास॥ १५॥ आष्टपदी॥ अबकेकहुंसंभालसुर्तिचित्ददैजो

यह तौ आरजकु पायब्रह्मसु नि तौ जी जो ॥ इही सं
सकहि हंस मा बे आरूजा यहै ॥ पूरा सतगुर मिलै तौ भे
द लषायहै ॥ जो कोई याकूं समझि औरकारै ध्यंन न
ही रिध्य सिध्य सुषहो हि जु उपजे सो नहीं ॥ अंत मुक्ति हो है
यनामै पूरमै रहै ॥ बकु रूजन मबरही यु प्रेम आनंद लै
है ॥ आब मैं बरनूं हंस और प्रमहंस ही ॥ जो सम झे सो यु
वृझ जायु स बस सही हंस रूस जो मंतर रतो थि पिछां नै
रो ॥ वु हमें रू यों कहै तिह चै कारि जांनीये ॥ यु हमंत्र सब
मांहि सदा ही भूरि रह्यो ॥ कोटिन मे कोई जांनै धुंनतु सो
ई धरि रह्यो ॥ जैसै काठ मैं आगि तिलो में तेल है तैसै
सब घट मांहि हंसी का मेल है ॥ १६ दोहा ॥ दूध मांहि ज्यौं
घीव है ॥ मिंहदी मांही रंग ॥ कृत न बिना निकसै नहीं
चरनदास सु सोटंग ॥ १७ ॥ जो जांनै भेद कूं ॥ और करै पर
वेस ॥ सो अबिनासी होत है छूटै सकल कलेस ॥ १८ ॥ अ
स्टी ॥ तन मधु वैको जेतनक हू अब जानीये ॥ जो नि
कसै तत सार ॥ बिलोवन ठानीये ॥ पहला चक्कर ज्ञान
ज्ञांन मूल धारे बिषै ॥ जित ही पांव की एड़ी सु चदे र
षे ॥ मूल चक्कर सूं षैचि आपांन चलाइए ॥ दूजे चक्कर पा
स जु आं न फिराइये दह नी वीर सुती न लपेटै ॥ तीजी
रो ॥ तीन चक्कर मांहि गवन फिर कीजी रो ॥ चौथे च
कमांहि ॥ पवन जो लाइयो ॥ बङ्क रूं पाचवे चक्कर

मैंपङ्कुंचाइये॥ षष्टम चक्रमाहिजुजहांचुटाइरो॥ से
त्रुकुटीकेमधतहांठहराइये॥ जोकैंसेकुटीमाहि प्रांन
हींबायुकूं॥ षटचक्करकूं छेद चुटैसबधीयुह्लोऔपा
नबायु चेटिजायवहींजावहीं अस्थान है प्रांनबाय
होयजायसाध कोईजानै है॥ ताके प्रांनहीं बायुत्रकुटीम
धहीं॥ उंकारकरैध्यांनसीसमेंगो षहीं॥ यह तो कंचाध्यां
नजु अधिकअनूपहीं॥ चरनहींदसाहोयमेजुब्रह्मस
पुहीं॥ १९॥ दो॥ तोबुब्रह्मका है नहीं है तो उंकार॥ जो
नै आपनकूंवुही॥ मैंकुंतत्त्व अपार॥ २०॥ [illegible] जोन
हदसबदअपार॥ हरसूंन्य है॥ चेतनि निर्मलघनु
देहभरपूर है॥ ताहि निहिंअजान॥ जोएनिरक मेंहै
प्रमातमातिहिमानवहीं पबूहहै स्थैकेवलके मध्य
ध्यांनसोहुंकरै॥ वाहीकूंअजजांन सुरतमनधरै॥ वि
नाहीजपेंजुजपहोतजुसांचीबातहीं॥ सहुंस इकी
स औरलषसे जहां दिनरातहीं॥ याकोकीयेध्यांनहो
तहै ब्रह्महीं॥ धारेतेजअपार॥ जाहिंसब ब्रमहीं॥ वा
परतलकोइ नाहि जुपैहींजांनीये॥ चंदसूरजओरु
सिष्टकेमांहिपिछांनीये॥ सोवहतेजअपारआप
कोमांनीये॥ निहचै औरयहीसाच जुमनमेंआनी
ये॥ जबलगयाहीभेदकूंजांनाथानहींजीवजआत
म औरहैमभेरहायातहीं॥ जभीअगोचरजुमन

मंदूं ली लख्या ॥ परमातम पमम्महिं सरूप निहचै भया २
१ ॥ दोहा ॥ जोजीव ग्यान सूं मं भया ॥ परमातम ग्यं स
ब्रह्म ॥ वाकी मरखबस्को करै ॥ पाई परैनग मम ॥ २२ ॥ पुं
हचै नंगुवा देस कूं ॥ कोटकेमटहीभांन चरखदास कुं
ईजांन है ॥ ताकूं निमिलूं ग्यांन ॥ २३ ॥ अष्ट पदी ॥ परमजो
तिकूं पायतिसोनहोतहै ॥ जिनमनजीता होय ॥ लगु
याग्रोतहै ॥ जिनमनजीता नांहि विसै ग्यासावूहै
हृदै कंवल दल कांई फिरता रहै ॥ अष्ट पै षरी जांन
जु ग्याठौं अंगाही ग्रही ॥ दिसा है ग्याठ कारै मन भंग
ही ॥ यं षरी पूरब दिसा जबै मन जातहै ॥ तब दया
हिये पुन्य करन की ग्यातहै ॥ ग्यागन्यदिसा पै षरी पै
जब नावै ॥ मूनांकूं घनीं द नों ग्यालस जित ग्या
वै घमां दष्यणाहीं जुदिसा पै षरी परिया जाई ॥ ऊ
पजै बहुत किरोध कठोर रता साज ई ॥ दिसा जुनैरि
त पै षरी पै मंमरंगाही ॥ पायकारनकी वुपजै हिरि
तरंगाही पछम दिसा जु पं षरी परि मन ग्यार है ॥ हैय पुसी
पर फुल्लजु ली लाकूं च है ॥ २४ ॥ दोहा ॥ बायव दिसा जु पै
षरी ॥ जब मंन पुहंचै जाय हलन चलन उपजै हिये ॥ बै
ठे हेठ उठाय ॥ २५ ॥ अष्टपदी ॥ उतर दिसा जु पं षरी परिम
न ग्यावइ षुनकरनें की चाह हिये उपजावई ॥ ईसा

३५। नहिंसायंपूछीपरिमल आवेज भीदोनकर्नेकीचाहैसो
धिकूउपजैतमी॥ हृदेकंवलकेबीचजबेमनजारहे॥
उपजैत्यागबैरागतजनजगकूकहेहैहृदेकंवलकेछेद
बाहरमनफिरतहींआसेपासेज्ञानहोयजाग्रतहीं। हृदेकं
वलकेघेरेकेमध्यजातहीं॥ जबआवतहैसुपनजहां
जहांबहुभांतिहीं॥ ध्यानबराबरिछेदतामेंमनजातहै
होहिसबेगुणलीनवेपति॥ आतहै॥ हृदेकंवलकाछे
डहोतजबन्यारहीं॥ तुरियामेंमनजातजुतृतनमगोर।
हींयोंजीवआतमज्ञानबुननहदलीनहे॥ सोपर
मातमहोयजीवताजायधो॥२५॥ छं॥ हय॥ आजपाहीकेजा
पकूंसिधभयोजबजांन॥ पुहचेयाआस्थांनहीं॥ रहै
नहजाहान।२४॥ यहजोसबसबकुछमेंकहोहिरदै।
जानानाय॥ ताहीकूपहीचांनीऐ॥ चरनदासमदितला
य॥२८॥ अष्टपदी॥ कैसैंअनहदनादै॥ दिऐआस्थानसें य
हजीवआतमसुभैहिरदैकमलध्यानसु॥ दसप्रकारके
नादककेभिन्नभिन्नहीं॥ सोतुपनिषितहीमाहिका
हेसबचिन्हहीं॥ पहलीनोमेंहोयचिडियाजेोंचींकु
लायेकबारकहैलिनसैंनोंमोंइसुरतिला॥ जोसेही
दोबारजुतजीजानीयैंचिन्हहींहोततामहिपहचांनी
यें॥ छुदघंटकातीसरी॥ चौथीसंखज्योंपंचमजोसी

गोंनबजतौबीनसों ॥ छठी बैनेजौंताल मातवीबांसुरीअ
ठवें ॥ शंख मिरदंग नौमैं नगारासरी ॥ नवें बतफीवादसजुद
सवें सिंधहै बादरकी सी गरजन ददददहंवहै ॥ कोर ते
मैंन भ्यासजु नादें सबभुले ॥ जेसें बटाउ चलत न
गरनोमघ मिले ॥ दसवें पुह चे जायनवौं बिसराइया
रहम किया वादेसजहां घर छाइया ॥ ऐसैं ही नौ छाडि
नाददसवां है बादलकी सी गरजन हां मनदे रहै ॥ वा
कूं छोडें नां हिमदारहलीनही ॥ यहीजु अनहद सा
रजामैं परवीन हीं याकी प्रापति करै जो मंननमैं आं
नीयों ॥ गोरखसु सो कहो सोच करि जानी यों ॥ २१ सो हा
चरनदास नें अबकही ॥ जुदी जुदी रस नाद वहीथि
रपतिकूं लहै ॥ जो कोइ साधै साध ॥ ३० अथ पदा पह
लीपरख्याजो मनजु गोअनहद नादकी ॥ सु बरोमा भू ल
उठैजुवा के गात की आरु दूजी जब सुनै नाद सु नो
देचित लावई सब तन अंग नमांहि ॥ आलस सब छा
वई तीजी ॥ अनहद नाद सुनै जि तुहीजु टै ॥ सब अंग
नहियेमांहि ॥ प्रेम पीडा न उठै चौथी सुनै जब ना
वपरख्याया वई ॥ ठब सिर घूंम न लगे आमस लज्यों
साथइ ॥ पंचवी उठै जब नाद सुनें तामें पगे ॥ ताके
मीससुजां नआमी उतरनलगे छठी उठै जब नाद सुर
तिवामैं धरै ॥ कंठसु नी चै उतरअमी पीवन लगे ॥

सतवीं षुलैजब नादबिं नासमझ नसुनैं ॥ अंतजीमं ही होय लषै
सबकेमनें ॥ दूरदूरकेबचनसुनैं कोई कहै ॥ होयपरेकी दिष्ट
छिपैनांकछु नारहै ॥ अठवें पिरह्यागांनपिरापतिजोषुनें ॥ सब
मांहीं सबठौर ॥ नाद अनहद सुनें है सबहीके मांहिबेनां स
मझैं सुनैयहसमझै अरु सुनैं ॥ ताहि नीकैं गुनें ३१ दोहा षु
लैनवींजबनादही ॥ लछनयह पहिचांन ॥ सूछमहौ जि
तितगैवनकरै धरैजोध्यांन ॥ ३२ ॥ कांतहीकीदिष्टसु ॥ चहै
अगोचरहोंनहोयसकूंदीषैनहीं ॥ वहसबदेषैमौन ॥ ३३ ॥
जैसैंसुरसबकूंलषैं उन्हें नदेषैकोय रतनजीतसैं अस्थूलहो
वाहैसूछिमहोय ॥ ३४ ॥ अथपद्य ॥ दसवींषुलैजबनादपरेसुहैं य
रैं परब्रह्म होयजाय ध्यांनताको करै हि ॥ धनींको मन
लीनहोय अनहदसुनें ॥ आप अनाहद होय ॥ बासनांस
बषुनैं पापपुंन्यछुटजांय दोऊ फल नारहै ॥ होय प्रेम आं
नंदकल्यानजुतिरगुननांगहैं होवैबोधसरूप तेजहोय अ
तहै ॥ अंटकारहे नहीं कोयसबैठांस मातहै आजनआ बिना
सीसुषपद्ब्रह्मसत्यहीहोवैआनंदरूप परमजोतहही ॥ निर
विकार निरलेप औरनिरबानहीं ॥ आनंद सबकूंदेत आ
पकूंजानई ॥ याधनींकोनांवजुरंकाररहै सबनामनमें
बडाकि याजु बिचाररहै ॥ याकूंजौसैंमांनै ॥ कि उहजोमैंही
कैरूपनावगुण ॥ जानैकि यहसबवाहीसतं ३५ दोहा ॥ करतेअ
नहद ध्यांनहीं ब्रह्मरूप होजाय ॥ चरनदासयोंकहत हैं ॥ आ

धासबभ्रमिटजाय॥३६॥इतिहंसनादउपनिषदितसंपूर्णं
अथसर्बउपनिषदिदूसरीलिष्यते॥दोहा॥उपनिषदि
तजोदूसरीताकूंकहुंबनाय॥सर्बसारतिहजांनि
ये॥ताहिहदैकूंप्रगटाय॥१॥अष्टपदी॥परजापतिकेसि
ष्यपूछीजोआयकै॥बंधमुकतिकाभेद॥देहुसमझा
यकै॥कासुंकहतहैंबंधमुकतिकासुंकहै॥बिद्याअ
बिद्याभेदकहोकैसेलहैं॥जाग्रतसुपनसषोपतिमो
हिबतइये॥तारुतुरीयाकोभेदसभीसमझाइए॥को
ठपाचकोभेदगुरुबरनकरो॥जुदाजुदासमझायति
मरउबधाहरो॥पहलोआन्नसुंभरा॥दूजोप्रांनसुं
तीजामनसुंभरा॥चौथाबुधरंनसु॥पंचवांआनंद
भरा॥मोहिकहिदीजीये॥इतोचरनहींदासजुकि
रपाकीजीए॥आतमकूंजुअकरताकूंसैकैकहैंकि
नअर्थनसुंजीवजुयाहीकूंठहै॥आरुकहैयाकूंदेह
काजांननहारहै॥देहकासाक्षीकहैसुकोनबिचा
रहै॥रदोहा॥सोसोयहबंधनबंधा॥कहैतसनिरबंध
अंतरजांमीकोकहै॥मोहिबतावोसंध॥३॥आतमहीकूं
क्योंकहैंजीवआतमाभांन॥मायासुकहतहैंइ
रकरेअज्ञान॥४॥अष्टपदी॥परजापतिसबसुनयहबे
कतरहीया॥आगेंहींकासंनसभीप्रगटकिया॥
जीवआतमादेहकूंमांनकैमैंकहै॥तातेपडो॥

त

उप अज्ञांन ॥ सबदुषसुष सहै ॥ आपकूं लाबजांनिकूंठि
गनांजांनई ॥ कबकउबलजानकूं मोटामां नई ॥ आ
पकूंजांनैं बिरधकूं बालक तरनहै ॥ जांनतनारीपुरस
नुमांसतबरनहै देहसंगाहोदेहकरैजुबिहारहै ॥
आयनकूंगयेमूलरहोनबिचारहै ॥ ताकूं बंधन यहीं
सुनैांचितमैंधरै ॥ देहभाव छुटैजायमुकतिहवैजा
वै ॥ जाहीबस्तूंतयजैतनअसिमांनहै ॥ वहीकाबिद्याजां
नयहीअज्ञांनहै ॥ वहीभरमतठिजाय जिसीजु बिचार
वाहीकूं बिद्याजान ॥ वाहीकूं ज्ञांन हैं ॥ ५ ॥ दूहा ॥ चोदह
इंद्रीदेवतामिलजुकरै ब्याहार ॥ चरनदोयीका हहै
है ॥ जाग्रतयहीबिहार ॥ ६ ॥ जीवनुमांतसकरनचो
वारैदेवतसंग ॥ सूछमदेहीमायही ॥ देषैसुपनांरंग ॥ ७ ॥ चो
दहहीसबलीनहोय ॥ जीवआतमांमांहि ॥ यहीसषो
पतिजानीयें ॥ कछबीसमैंनांहि ॥ ८ ॥ अष्टपदी तीन
अवस्थामिटै मिटैजोहंकोरहै ॥ तुरीयाहीरहजायजु
तनअपारहै ॥ परमातमजोपुरसमदानिरलेवहै ॥ के
वलज्ञांनसरूपजुबेसमोमेवहै ॥ अबकोवकीबात
कहूंचितदीजीये ॥ जुदाजुदाबिस्तारसबैसुनिलीजी
२ ये ॥ यला कोठा कहूंअन्नमेंतीभरा ॥ छहंको ठेतिह
मांहिमोईस्थवनधरे ॥ अबमाताकेओसतीनहीं
जांनीयें ॥ लोहूमासतुचाओरमासओरऊन पछचानी

तीनपिताकीबोरसुलायासंगही ॥
बीरजमीजाहिहाडअसबेदनिहारये

ये ॥ प्रानसूं कोष भरा ॥ दसो जहां बायु हे ॥ आगे ले
बीज हद कहे जु रहे समाय हैं ॥ तीजा कोठा जां न धरे
ताहा सुद्ध ही ॥ मन चित अरु अहंकार भरी जहा बुधही
चौथा कोठा देषइ स्त्री का जान नां ॥ तामैं भरो है जां ने
सभी कूं पिछांन ना पंचवां कोठा जां नंद जु आनंद सूं
भरा ॥ जैसे सगरे बृक्ष बीज माहीं धरा ॥ ९ दोहा ॥ पूरे
को ठै जो कहे ॥ अरु कारन कूं देष ॥ जहां सु भी एर
हत है ॥ वा ठौरी कूं पेषि ॥ १० ॥ वा ठौरी कूं जांनीये ॥ ज्योतर
वर का बीज ॥ डाल पात फल फूल हीं ॥ रहे जु वाके
बीज ॥ ११ ॥ ऐसे या कूं समझ करि ॥ रहे जु आनंद
माहि ॥ जां ने दही आनहद भरा पंचवें कोठे मां
हि ॥ १२ ॥ आतम करता जानि जु जां मे बुध रहे ॥ दुष सुष
वाही मांहि सनी आसाधर रै ॥ इच्छा पूरी भये हो तमन
मोद है ॥ जब पूरन हीं होय तब नां दुष होत है ॥ दुष सुष
दोनूं होत जु पाचन के बिसै ॥ सो वे इंद्रीनूं नांन बिनां
इन के कैसे सरवन सूं सुनें सबद बुरे भले को यही ॥ औ
र तुचा सुं जान ॥ सपरस किये ही यही ॥ आंष बसुं लष
होय जु रूपसूं ॥ और जिभ्या सूं होय ॥ जु षट रस सुसादकूं ॥
नांसा सेती होय ॥ बुरी भली गंध लेय ॥ इन से अतयति
होय जु ॥ दुषसुष मे आभे आतम कूं जीव आतमइ

सकारनकहे ॥ सूछम अरु अस्थूल देह संगही रहे ॥ बुरे भले
कृ नेंमनके फलमैं बंधा ॥ बीचही लीयालगाय नहीं धुरसूं फं-
धी ॥ ज्यों कंचनके संग जुरे काजांनीयें ॥ धोले बस्तर साथ
जु मैल पिछांनियें सो धेसें होय दूर सुध हे जात है ॥ आप नें हीं
अगान आमजु मैं तदिषातहे ॥ जीवु आतम इह मां विषफल
नत्याग न करे ॥ आतम हीं रहजाय जीवु तमां रहे ॥ षोटके
मजु त्याग भलेसह हजें करैं ॥ तिनका फल जो होय नहीं
आसा धरें ॥ १४ ॥ दो ॥हा॥ जीव ब्रह्म यों होत है ॥ रहैनका छु-
ल गाय ॥ सूरन दास यों कहत हैं ॥ औसा कियें उपाव ॥ १३ ॥
अ॥ ७ ॥ प॥ दी॥ देहको जां न नहह ता ॥ जेसें मांनई ॥ सूछम अस-
अस्थूल कूं आपनी जांनई ॥ कबहू कहै मेरा सम्भि ॥ आंषु
मुषहाथ है ॥ कनीं बतावें पावकूं है ॥ क म बुध चित आहं
का समझ ये चार है ॥ आरु पांचों हें बाय जु को इं भिहारि
हैं ॥ पंांन अपांन ॥ १४ ॥ समान बियांन उदान है ॥ सात ग
राजस तामस तीनूं जांन हे ॥ बैर प्रीत आरु तीसरी इनकी
दूंद है ॥ चौथा मनोरथ तीनका सब मिलकूं डहे भले
बुरे जो कर्म और मनुआं नी यें सूछम सरीर को मू
लये सब यह चांनीयें ॥ आरु यह सूछम सरीर कां
तमासाथ ज्यो ॥ तातैं नासत सत्य यह बात सो जब आ
तम यह संत हिये मैं आवई ॥ तब सूछम को साच सबे

अरु जावई ॥१४॥ दोहा ॥ सूक्ष्म सरीर अरु आतमा ॥ भिन्न
लषै नहीं कोय ॥ यही जु मन की गांठ है ॥ खुलै मुक्ति ही हो
य ॥१५॥ जो नीं जानन हार ही ॥ सो रती सरी ज्ञान ॥ इन तीनुं कुं
जो लषै ॥ सो साक्षी परधान ॥१६॥ उपजै तीनूं हुई सूं मि
टै एक ता होय ॥ उपजन मरी ष्ठ तीनका जो नै न्यारो सो
य ॥१७॥ आय नेहीं प्रगास मे ॥ आप रहा परगास ॥ सो इसा
ही जो नी यूं ॥ कहे जु निरबंध दूर ॥ चौंटी बूझा आदि
लौं ॥ हिरदै मैं भरपूर ॥१९॥ सब ही हिरदै के मिटै ॥ वही ए क ठ
हराय ॥ ना कछु आया ना गया ॥ ज्यों का त्यों रह जाय ॥२०॥
बंधन मे आवै सही ॥ लीला कारन दयाल ॥ निरबंध का
निरबंध का निरबंध रहे अज अबिनास अकाल ॥२१॥ अं
तरजामी ॥ कै आरष सब घंट रहे समाय ॥ जैसे डोर के बिषे मं
ति मो तिमरण काय ॥२२॥ सब ही के भीतर बसे ॥ सबका
जानन हार ॥ वा ही ते प्रगट भई ॥ नाना बस्त नो पार ॥२३॥ घनें
रूप किरया नी ॥ घने नांव दिष्टान ॥ सूझे ना न प्रगास सूं ॥
न बागुर मे टै भांति ॥२४॥ रूप नांव किरपाल गरी भगा व ने
गया के साथ ॥ याही ते जीव आतमा ॥ कहे लावै यह बात
२५ जैसें कंचन मति का ॥ भाडे किरो संवार ॥ नाव रूप कि
रया भई ॥ देषो दिष्ट निहार ॥२६॥ रूप नांव किरया मिटै
रहै न कछु बिचार ॥ जो था सोई रह गया ॥ यस्मात नमत
तसार ॥२७॥ आतम अरु जीव न तग देह घर रै मे दोय ॥ ताम

७१
७५ बड़ो ठया धूही मैंतत्तमें होय ॥ २५ ॥ तत्वमसीजोयहकहै
ताको यही अरथ ॥ वह तूंही है ज्ञानी ॥ परमतत्व है सत
रुपी ॥ अ ए पदी ॥ अरु वु लेह ज्ञानस रूप ॥ आनंद अनंत है ॥ उ
पजावन सब सिष्ट को जीवन कंद है ॥ बस्त काल अरु
नतीनूं मिटजात है वह इक रस सत सरूप ब्रह्म रहजात
है ॥ कब को जान रहा र मिटे उपजे नहीं ॥ तासूं कहै वा
हि ज्ञान अरथ जानूं तूंही ॥ और कहैं जु अनंत सो यासूं
जानीये ॥ सब भांडे मैं ॥ एक जु माटी पिछांनीये ॥ कन
क के बरतन बहु ॥ तजु सोनां रै कीहै ॥ सब बसन न के मु
हि तु सूत ही देषिये ॥ ऐसें ही आदि अरु अंत ब्रह्म सब
मांहि है ॥ याही कूं कहिये अनंत में दूसरो कछु नांहि है ॥
अरु जो आनंद कहै सम झलीजे ए ही ॥ वाही को अंस पि
छांन जु आनंद हो कही ॥ ऐसें ही मोहि समझायो ॥
गुर सुषदेव नें ॥ चर नहीं दासा होय लषो सा भेव कूं ॥ अ
१ दोहा ॥ चार पुते ष ब्रह्म के ॥ सत आनंद अनंत चौथा
ज्ञु ज्ञानस्वरूप है कहै बेद अरु संत ॥ ३२ ॥ अ ए पदी ॥ स
बैं सम सब ठोर करस भिंत है ॥ तत्वमसी के अर्थ वही तूं
सत्य है ॥ जब तक करिकें ज्ञान न होय प्रबलनी आय न हैं
कूं पाय ॥ जाय सर्ब भर्म हीं ॥ मैं तूं वह अब जाय दूसरी वास
हीं ॥ आप कूं व्यापक जो नें ज्यों सुध अकास ही ॥ अस
जानें निरलर रले प सत और एक ही ॥ जब परमातम

श्री

होयस्रूप नहींरेषहीमायायातेंकहैं॥ भर्म और न्नातम है
सोनमेंसें नउ जाकहु नरहंतहै॥ ज्यों रसरीकोसांपभर
मसोभांनीये॥ समकलषाजबभूठयों मायाजांनीयें॥
साचासोलगैकूठ कूठसच जांनहै॥ मायायुहीसुभाव भ
र्म औसा नहैरसरीकुं काहैसरप जुआपने भर्मसूं॥ औ
सेंहीजड कोहतसनातनब्रह्मकूं॥ ३२॥ कूठजगतदीष ग
तरहै॥ दीषै नांमतबसयहीजुमायाजानीयें॥ येंहीति
मरयहीभर्म॥ ३३॥ गुरसुषदेवप्रतापकहीं॥ चरनहदिरा
सा॥ यहजोअर्थर्बनेंवेदको॥ सरवेंतेपतषितसासि॥ ध
४ ६ स ब य षि सं ार अथ जो उ
षि स घ नो प तीजीअरुजोकुईनापर
बनवेदको रवजोगजिंहेंनाम॥ गुपबहीभेदकी॥
अपनेंसिषसूं कहानुयअनेंजोगसारमेंवाकंजुपावे
ततमें॥ जोगेसुरकूं लाभहोयजाकेकियें॥ पटैपाप
भंजजांहिसुमेरायेलियें॥ निहचैहोवेंमुक्तयुहीतु
जानीयों॥ चौथेपदलहैंबाससाचकरिमानीयों
बडोजोगेस्वरबिस्नुअधिकसपसानहै॥ जाकीमु
यागकुनहींपरवानहै॥ जोगीकरिकें॥ जोरासुजो
तिनिहारई॥ दीपककीसीलोयलषे॥ होयपारही
सोवहब्रह्मबिस्नुसरूपसाबुनकेंमाहिहै॥ घरछोट
मेंभरपूरषालीकोईनांहिहै॥ औसीजोतिकूंकहोउ॥

९२
७१ औरम नलांवुई ॥१ दोहा ॥ दूधपिया जिन कूं चन सूं ॥ अन
कूं मलसुषलैत जन्म षोयली चले ॥ नारिसूं संक रिहैत स
॥ चौपई ॥ जिस घरसूं निकसे जन मन जामें लिपटाता ही
मैं परबसकर नपिर मन किया ॥ वही नारि को रूप जु तासूं
मा कही ॥ लगे भार जाकहत न जु जा पत्रे संग लई ॥ जाही पु
रष सरूप कूं कहते बाप ही पिर लगे पुत्र रष कहत वाही कूं
आपही ॥ कुही पुत्र जोगा में पिता कहावई ॥ सोई पुत्र भया
बड़े भ्राति चावही ॥ जैसैं कूप का रहट लोटरी तै भरे ॥ रीतै कु
ही जौन कारी गप रतरे ॥ याही भरम जो जन सूं जो साहीं रहै
बड़ लोलों कूं तन के मांहि सदा भरमत रहै ॥ आब कहूं वही उपाव ज
गसूं ज्यौं छुटै ॥ आवागवन का फंद सिताबी ही कटै ॥ जासूं भरमैं नां
हि रहै थिर हाय कै ॥ ३ ॥ दोहा ॥ ॐकार बड नांम है ॥ हिरदै ध्यान करै सु
षदेव कहै ॥ चरनदास सूं सब ही ब्याध टरै ॥ ४ ॥ चौपई ॥ ॐकार के
न अक्षर कहि यें तीं है ॥ आकार उकार मकार जांनै पुरवीन है ॥ तीनूं
अक्षर मांहि तीनूं है थोक ही ॥ पहलो अक्षर में जु रहै भूलोक ही ॥ दू
जै अक्षर मांहि जानूं आकास ही ॥ तीजे अक्षर मांहि बैकुंठ निवा
स ही ॥ तीनूं अक्षर मांहि जु तीनूं बेद हैं ॥ रिग बेद जजुर साम अति
भेद जो भेद हैं ॥ तीनूं अक्षर मांहि तिर्क जो देव हैं ॥ ब्रह्मा बिस्नु महेस ब
डे जो भेव हैं ॥ तीन प्रकार की अग्नि ॥ तीन अक्षर मांहि रोकत का
म दाह जान ॥ दीपै बरति हु ही ॥ दूजी अग्र पर चंड ॥ सूरज की जास
ई ॥ तीजी अग्न सब मांहि ॥ जठर युगा सही ॥ तीनूं गुण तिन मांहि ॥

समझजांनौंयही॥रजगुणसतगुण॥औरतमोगुणहैसही॥पदो॥३॥अ
द्धरॐकारकेजिनकाचौथाभाग॥अधमात्राबोलीए॥ऊपरबिंदीलि
ग॥६॥अथ पदी॥जोकोईयाकूंजपै॥समझअरुध्यावहे॥ऊपरकही
जोबस्त॥सबनकूंपायहे॥औदोरकहीमाढेतीनप्रणवकेमांहिहही
औसैंरहतवामांहि॥पुहपमेंगंधज्यौं॥जैसेतिलमेतेल॥दूधमेंघीवत्यौं
जैसेंयांहनमांहिजुकानकाबताईथ॥ऐसेॐकारकूंसबमेपाइये॥वा
हीकोकियेंध्यानप्रमपदकूंलहे॥बेदपुरानमांहिसाषियें॥
हीकहै॥अबप्रणवकाध्यानजुदेऊंबतायके॥सबहीयाकीसं
झकंसमझायके॥हिरदेहीकेमांहिजुकंलपिछानीये॥ऊ
परकूंहेनालनीचेमुषजांनीये॥वाहीकेछिद्रबीचरहतअनू
पहे॥कहेचरनहीदासजुभेदअनूपहे॥७॥दो॥३॥अक्षर ॐ
कारकापहलाहेजुअकार॥ताहिकहेसुंहोतहैहिरदासुध
बिचार॥प॥अष्टपदी॥दूजाउकारकूंवलखिआसेकलीस
मैसनेषुलजायबसेतामेंअली॥तीजाप्रेमकारप्रगटहोनाद॥ ज
हीसुनसुनआनंदहोहिजुप्रमअगाधहीं॥अर्धमात्राबिंदी
सदाथिरजांनीयें॥हलनचलनकछुनांहियहीचितआंनी
ये॥वामेंमनहोयलीन॥जोतिहोयजातहै॥सोथिरमलअ
रसुधबिलोरकीभांतिहै॥सूरजकीसीकिरनमहाउजलवु
ही॥सोईकरैयहध्यान॥पुषपावेसही॥सबमेंजोतिसरूपसदा
भरपूरहै॥निकटनिकटसूंनिकटदूरसुदूरहै॥जाइसक
हीध्यानहदेकियाजायना॥तोकरैमस्तगमांहिहोयपरांडना

९२ सीसमेंजबसिद्धहोयरोकैमोवारहीं॥निकसनदेवैबा॥मक्षा
३५ [illegible]रहीं॥ घ दो हा॥ दोपगरोसीवाधगो॥बीचेंकोरेषारदो
कंअंगुलेहाथकेश्रवनबारा॥१७॥अ ष्ट पदी तरजनीअंगुली
दोऊझानपरदीजीयें॥मधमांसेंदोऊनाकदोरबकी
जीये॥अनांमिकादोऊहाथकीजोरकनिष्टका॥होठनु
कूंबंधकरैंजुनीकुंपुष्टका॥नासाकेदोऊछेदाकुंहीं
जितुभ्यो॥दोऊमेंहनकेबीचचरनदासाकहेंप्र
हचेताहिबुगरसदेहकी॥जानीये॥वाहीकीकीतोमो
रदिष्टकूंगनीयें॥महाकुंभकइहनांम॥इसीबिधसाधि
ये॥ध्यांनकियेंहोयमुक्तियहीओराषियो॥इंद्रियनकेंभा
रगकूंजोबंधकरैबायाबिनांघटमांहिं॥जैसेदीपकाब
रे॥होयघनापरगासइसीजोदेहमें॥इसहीध्यांनप्र॥
तापमिलैजाजहमें॥यावैसुधचेतन्नकियेंइसजो
गही॥कर्मननिकोहोयनासमिटैमनरोगही११दो
हा॥तपस्थितपूरीभई॥नादजोगहीतत॥अगअर्थ
बनबेस्का॥चरनदासकहीसूत्र इ त न नि
त पू नं ओ जो सी घो नु नि त षा
दो हा॥ जोगुरु सिषाचौथीकाहूं॥वामेंअनुतिधान
परज्ञापतिजैसेंकही॥सिषसुनदेवान॥१॥अष्टपदीय
मेंअनुतिराहबवे॥हीज्ञानकी॥कायानलागेदेह॥कु
ठनमुनिध्यांनहीं॥जबआवेमन॥नमाहिंमोहतबमोहैं

पाच नहीं कीआ नहीं हिये मैं रहै ॥ वाकी बिध अब क
हुं सभी सुन लीजीये ॥ बे बिइकाति ही ठौर जु आसन
कीजीये ॥ आसन पदमस्लगायया सुष आसन करे
सीधो राषै मेरदैन नासाध रो ॥ टेक पांवन के सा ष जु हा
थ मिलाइ हो ॥ से बस्वाद न सूंरा क जु म न कूं लाइ ये ॥
परणव ही का जाप जु मन मैं राषीये ॥ इस बिन और
उपाइ सब न फूंनाषीयो ॥ जा कांउ नंग धंनता का करै
आठ पहर संग्राम बिनाषाडे लरै ॥ देह यु ही जा स्थल बडे
घर ठांनीये ॥ ता मैं दीरघ थंत्र एक पहचांनीये ॥ २ ॥ दो ॥
आरन्या मैं नी धार है ॥ छीटे थं महतीन ॥ पांच देवता
तिह बिषे ॥ लहे साधपुरबीन ॥ ३ ॥ यह जो घर मै नेक ही ॥
साइमतुषको देह ॥ कहे गुरु सु षदेव जी ॥ चरनदास सु
नि लेह ॥ ४ ॥ अथ पदी ॥ ये कबडा जो थंन मेर ही उ है सो
इ पीठ का हाड ॥ जा सुंधब मेंड है ॥ अरुवा ही कूं बी च नां
डी सुषमुन भली स्तुब नार न सिर मोर ॥ जो गमिरेली ॥ नौ
दारै सब कातें तिन्है सुह बीनीये ॥ दो श्रवन दो आंष
नली बिध जांनीये ॥ नासा छिद्र दोय जु मुष बकरा क
है ॥ लिंग गुदा दोजां नन कौ कालेष है ॥ तीन जु छोटे थं
भ ॥ तीनूं गुण कहे ॥ सत गुण रज गुण ॥ औ र स तम
गुण ही लहे पांच देवता ॥ कहे जु पांचौं प्राण है ॥ प्रा
ण अपान आ स ॥ ब्यान उदान समान है ॥ औ से मंद

मा

२८
३५

लमांहिहृदेमेंछेदहै॥तामेंसूरजमंडलजोचरनभे
दहै॥ताकीबड़ीहीजोतिकिरणाबजियारहै॥पूराजोमिले
यसुतमांहिनिहारहै॥५॥दो॥हा॥जोतिमझमंडललखै॥हृदेकंव
लमेंहोय॥तामेंदीपकऔरदूका॥दीपेकीसीलोय॥६॥सो
प॥७॥दीपककीसीजोतिमानूंकपरसचलै॥रहैसोपवन
हींठोरमोतिनकीसीरहैसो॥वाहीजोतिकूंजानेबुध
सरूपही॥यहीसमझकैध्यानकरैजुज्ञानतेपुही॥
जोगीकरैजोध्याननयहीहियमांहिहीं॥अंतसमैतन
छूटऊपरकूंजांहिही॥सूरजहीकामंडलजावैबेधही॥सुष
मनमारगजायसीसकूंछेदही॥सूरजमुक्तिकूंमायप
रायपतिहोयही॥कोटनमांहीलहैजुबिरलाकोयही॥
सबजोतिनकीजोतिहै॥ताकूंपायेंहोयपएकहीगोत
हे॥ज्वालसमसंदुरनागीध्यानकरिनासके॥तोदिनभोत
रकालपाठकरनेलगो॥७॥दो॥प्रातकालअरुमध्यमें॥संज्याहीकी
बार॥नुपतिबिततीनसमैं॥पढैबिचारबिचार॥८॥कर्मकटैंजमहींटटैं
चौरासीहटजायदेहीपावैमनुषकी॥पूरागुरमिलजाय॥९॥फिरपावैय
हध्याननहीं॥पीछेकहाजुबोल॥जावैप्रमहीधामकूं॥छूटैसबजकफोल १०
यडामायहध्याननहीं॥मैसमकायातोहि॥परजापतिसिषसुंकहे
बडाजुनिहचैमोहि॥११॥वहयदवीमोकूंमिली॥इसीध्यानप्र
ताय॥जीवनमुक्ताहीरहै॥छूटैआपअरुधाप॥१२॥निहचु
लहोयाध्यानकूं॥करैकोईजोऔर॥जगामछूटैऔपामिटै

पावै वनमें ठौर ॥१३॥ आनंद ही आनंद जहां ॥ अब धन का
ल कुलेस ॥ चरनदास या ध्यांनसूं पावै औसा देस ॥१४॥ ब
हु लोकनमें जन्म धर ॥ पाप मिटान हि मूर चरनदास
इस ध्यांनसूं ॥ सबै होत है दूर ॥१५॥ दूर करन दुख जगत
के ॥ आंनन्द पायन होय ॥ जोगीकूं या ध्यांन सम ॥ औ
रवस्त नहीं कोय ॥१६॥ तय भि मत पोथी यही ॥ भई स
मापति सोह ॥ चरनदास कहै पांच वीं ॥ हित चित दे सुनि
लेह ॥१७॥ इ जो सि व नि त पू नं अथ उ
द य ष पां वीं ष दो त्प ष जा च
बे गे र्व मां तेजबिंदजिहन है समक मुक्ति
होजांहि ॥१॥ अथ षष्टी तेजबिंदके आरथ यु ही हिये
सूधहै ॥ बडे ध्यांनके तेज ही कीयहबूंद है ॥ वसका
हैं यह ध्यांनजु सबसैं कंच है ॥ सबसूं परै तिह रूप सु
धेओरसूं च है ॥ हिरदे ही के मध्य औरसूं दीरघ महा ॥ अ
रु केवल आनंद कि न्हो संसी लहा ॥ आनंद सु कि
तिह मांहि निस अस्थूल है ॥ बहुत सुखि दुख सं दुस
बनका मूल है ॥ बाडा बिनां ॥ परमो मैं दा नहीं जा
त है ॥ वा को तपस्या ध्यांन कठन जो दिखाव है ॥ वा
का देखन डुलभ सुलभ नहीं जावनो ॥ वह तो सुमंद
आ पाव कछु परमांनन्दो ॥ गंपा नी पंडित औरस बै बुध
वा नहीं ॥ पावै आदि न आंत औरमध्य कां नंही केबांधे

ब्रह्म ब्रह्म करै के ध्यान नही ॥ वा ही के हो रूप पावे तब जांनहें ही ॥ र
हो ॥ हा ॥ जीतें यहल आहार ही ॥ इ जैं और किरोध ॥ बहु मन
षों का संग तजे ॥ छोडे प्रीत बिरोध ॥ ३ ॥ अ ॥ टप ॥ दी ॥ परवल इंद्री
जांन सब न कूं बस करै ॥ सीत उस्न दुख सुख मां स्तुति निं
द्या हरै ॥ छोडे ही अहंकार बास तुं आस ही ॥ आप नुं का
रन बस्तर षे नहीं पूस ही ॥ पुरी राखै पे ज्ञ धारना धाय के गु
रन आन गुर सेवा करै जु बिचारि के ॥ सकल मनोरथ का मान
कूं करै छौ नही ॥ सेज्ञ आसी कूंच हियें धारे ता नहीं ॥ एक
जु धारा त्यागै इजा ओ उपाव ही ॥ तौ जा गुर की सिह सुधे
सा सुभाव ही ॥ इन धारे मैं रहत जु लोगो की सुले ॥ लुटे पहु
वह तां हिं सुषा लाही चले ॥ जीवात्म जो हंस कहा वत है
यही ॥ या के हैं अस्थान जु तीन ही सही जाग्रत सुपन सषो
पति पग ट जानीये ॥ तुरीया निज आस्थान गुपत पहचा
नीये ॥ ४ ॥ दो ॥ हा ॥ इन तीनूं सैं बडा है ॥ तुरीकूं नित जांन ॥ च
[illegible]दास ये चन जागत ॥ वाकै नां अस्थांन ॥ ५ ॥ अ ॥ टप ॥ दी ॥ जे
में भूत आकास ये व्यापक हो रहो ॥ [illegible] बड़ दीपन के
माहि जु सुक्ष्म जोर है ॥ वा की सत्ता [illegible] ॥ चेतन ही र
ही ॥ वह ही बडा पद जांन बिस्नु का है सही ॥ वाके नेतर ॥
तीन तूं बेद ही ॥ अरु वा के गुण तीन जु की प्राप्ति बेद ही
है सब का ॥ आधार त्रिलोकी धारई ॥ आप रहे निरधा
र जु अपरम पार ही ॥ है निह रूप । अडोल अषंड अगा

धही॥ है तो निरसंदेह॥ पुह चेन उपाध है॥ कारन सकै
प्रवेस॥ बरण गुरू पुही॥ अरु सब गुण धारी हि सुन्न धि
क अनूं पुही॥ पावे के वलयांन॥ सं आप मे आ पही॥ बा
वन अंधारे मांहि नांव नहीं थपही॥ वह जो निरंजन
द का जे से है नही॥ कठिन पियारा यत होय॥ इस मन दे सेस
ही॥ ६ दो॥ वह नय जै बिनसै नहीं॥ अजआ बिन
सो सोय॥ बि न इस घरि हीं रही रही रहे॥ चरन बस रहे
सोय॥ ७॥ अरु पही॥ वह सब ही है बिराठ पिंड और जीव है मां
ताको तिम॥ होय अंतर ही सावहै॥ ज्ञान से जुदा न जान
निरा वह ज्ञान है॥ वही महा आकास नहीं परमांन है
सब पर वेस जो॥ आतम सथु है॥ आप मे परबु आपपर
मुही तत है॥ जो ज्ञानी जांने झूठ कब पुह चै न दं॥ वह
तो सदा नित जाव कान बिनसे नहीं॥ वाकूं कहा न
हीं जाय जाय जाय का कभी॥ अरु सारे है जापत सी मां
ही सभी॥ और जं का नी गाया॥ जापजायक वही॥ सब
कु बस्त सकूं ज्ञान गुपत परकास सही॥ तु है निरगु
ण निरलिपकु इ गुण नांहि है॥ परे सु परे ज्ञान लेवा
है नै॥ वासूं परें नहीं जो रबि चारा जाय नां॥ कहे च
र तहीं दास कहत॥ वा मांहि ना॥ दोहा॥ वाकूं जो गु
तु है नहीं॥ वाकूं सुपुनन कोय॥ सोवत सुपनां
है नहीं॥ जाग्रत कैसे होय॥ ८॥ अरु पही दोनूं से न्यारा

१६ ज्ञानजाग्रतआरसुपनसूंऔसाकोइनाहिनजांनैंसतंहुं॥ सबकूं
३५ जांनतमूलजुह्मांनौंलायही॥ दीरघञ्चरूपरकासीझौंनेंसबकें
यही॥ जाकूंलोभनहोयआबिद्याहोयनां॥ औजातिमांनबुरा
कुमवासमोकोइनां॥ गरमीजाडाभूषप्यासब्यापैनहीं॥ पुत्र
एक्रोधनमोहनैंकुवामेंकही॥ बाहिनइछ्याहोयनपूरीचाहइ॥
कुलबिद्याअभिमाननउपनकेमांहिहीं॥ मानहींआपमां॥
ननमननमेंलांवई॥ सबसुहोनिरन्तरब्रह्मकूंपांवई॥ तेजबिद
उयनिश्चितसंयूणाहीमूई॥ गुरसुषदेवपूरणपरतापकोदासचर
नदासाकहीं॥ ताहिसुनैंगानराषबिचारहीकरै॥ निहचैहोवे
मुक्तिजगतमेंनांफेरै॥१०॥ दोहा॥ कहींगुरूसुषदेवनें मेरीकछु
नबुध॥ पढोनहींमूरषमहा॥ मोकूंमेकनसुध॥११॥ मेरेहिरदे
केबिषवै॥ भवनकियोगुरआय॥ वेईबीराजतहैसदा॥ मेरेदे
हदिषाय॥१२॥ जबसुंगुरकिरपाकरी॥ दरसनदीनेंमोहि॥ रो
मरोममेंनेरमें॥ चरनदासनहींकोय॥१३॥ जातबरणकुलसन
गया॥ गयादेहअभिमांन॥ आपनेंमुषसुंकहाकहुं॥ जगाहीकूंरेबषांन॥१४॥ रहेगुरूसुषदेवजी॥ मेंमेंगगनसमाय॥ मैंथेतें
तैमेंवहीहै॥ नषसिषरसमाय॥१५॥ इतीश्रीचरनदासजीकृत
पंचकंपनिषितआथरबनबेदकीभाषासंपूरनं॥ अथश्रीच
रनदासजीकृतब्रह्मज्ञांनसागरलिष्यते॥ दोहा॥ जेसैंहैंसुष
देवजी॥ जांनतसबसंसार॥ भगवततपरगटकियो॥ जीवकि
एबडुपार॥१॥ तिनमोपैकिरपाकरी॥ दियोज्ञांनबिज्ञान॥

13

सो सिषतोसूं कहत हूं छूटैं सब अज्ञांन २ सिषतोसूं अबक
हत हूं परमपुरातम ज्ञांन निगुरे कूं नहिं दीजिये जाके त
प की हांन ३ कुं लि मोक्षमुकत मुमसूं हैत है नजोम
काम नां कांम मनकी इछ्यां मेटकार भजो निरंजन नाम
म भनो निरनत न देह न धाम मिटावो पंच तत के तज स
र आपमें आपमावो जब छूटे जूठी देह जैसे के तैसे हिम
या चरनदास यही मुकत गुरू ने हमसूं कहिया ४
हा देहमरे तू है अमर पारब्रह्म है सोय अज्ञानी भ
टकत फिरे लषै सो ज्ञानी होय ५ देह नहीं तू ब्रह्म
है अबिनासी निर्बान नित न्यारे तूं देहसूं देह
में सब जान ६ डोलन बोलन सोवनो भेदीन करन
आहार उषसुषमें कनरोगासब गरमी सीत बिहार ७
जात बरन कुल देहकी सूरत मूरत नांव उपजे बिनसे
देह सो पांच तत को गांव ८ पावक पानी बायु है ध
रती और आकास पांच तत के कोट में आय किये तेंबा
९ सः पांच पचीसों देह संग गुन तीनो है साथ घट उपाध
सो जानिये तत पा १० तामस जो हिंसा करे बचन च
लन बिपरीत आलस और निंदा करे तामस गुन
की रीत ११ डिंभ कपट छल बडु पैबेस बब्याहा के
जूठ बचन जो ठोर है तामस गुन र मान बडाई नां
मनां सिंघ चहे भजरान भोजन नांनां स्वाद के

११
ब्रह्म

रजगुन के कांम १२ मेल तमस रजसी और सुरगध की
बाम आपन कूं ऊंचो गिने और न की कर हांस १
४ दया छिमां आधीनता सीतल हिरदे धाम सत
बचन गुन सात की लछन धरम निहकाम १५ दुर्ष
न काहू कूं करे उष सुष तिक ठन जाय समदिष्टी धी
रज सदा गुन सागत कूं पाय १६ रजमस तामस बटै
तामस सूं बुध नास रजगुन तम गुन छाडु कै कर
सतोगुन बास १७ सत गुन मैं मन थिर करे कर आ
तम सू नेह आतम मिरगुन जानिये गुन इंद्री संग
देह १८ सात गराजस तामसी त्रिगुन तें संसार
ती नयां चको नास ह माया ब्रह्म बिचार १९ मोह
ततउं भयो जित तें तीनों दे जिन के पर आ
तमा आगम अगोचर भेद २० उपजै सो माया स
भी बिनस नैक मैं जाय ब्रह्म माया सूं कहत है
सुष दै सकल बिहाय २१ निराकार औ पर गे चे
ल निरबासी तु जीव निराल मनिरबे रसी आज
अबिनासी सीव २२ जिभ्या इंद्री नासिकी नैन की
इंद्री कांन नासा इंद्री धरन की कर बिचार पहचा
न २३ तुचा सु इंद्री बाय की पांच कइंद्री नेन इन
कूं साधि साधजो पद पावे सुष चैन २४ निद्रा सु गम
अआलकस भूषप्या सजो होय चरनदास पांचो कही

आगनतत्तसूंजोय २५ रक्तबिंदकफतीस२० मेदसु
त्रकूंजांन चरतद्रास परकितैं१ पानीसूंयचांन
२६ चामहाडनाडीकहूं रोंमजांनओरमांस पिर
थीकी परकितैं अंतसमनकोनास२७ बल
करनांओरधावनां उठनांआरूसंकोच देहब
टैसोजानियै बायततहैसोच२८ कांमक्रोध
मोहलोभमै ततआकोसकोभाग तनको
पांचोंजानियै नितन्यारो तूं जा परोंमगमनबाडी प
वनमांसआगनकाआस उचानीरसूंजानियैंआस्थपृथीकाबं
स२९ कफआकासबिंदबायसूं रक्तआगनसूंबूझ मुतरजल
रनजीतअंतिमेदपृथीसूंसूक ३० नींदबोमसपरसपवन
आलसआगनयिछान पासनीरनीतभनि मूषप्रसैंजान
३१ पांचपृचीसोगकही इनकेसकलसुभान निरबिका
रतूंब्रह्महै आपआपकूंपाव ३० निराकारनिरलिप्त तूं
देहीजांनअकार आपनदेहीमांनमत यहीग्यानतसा
र३१ सस्तरछेदसकैनहीं पावकसकैनजार मरैमिटै
सोतूंनही गुरगमभेदनिहार ३२ जलैकटैकायायही
बनैमिटैफिरहोय जींनआबिनासीनिसहे जानैंबिरला
कोय ३३ जरामरनधर्मदेहको भूषप्यासधर्मप्रांन सक
लबिकलमनजानियैं स्वादसुइंद्रीजांन ३४ ओंपनां
कमिभ्याकहूं तुचाजांनओरकांन पंचोंइंद्रीग्यानहै

जाने संतसुज्ञान ३५ ज्ञानेइंद्रनसंजानिये विहचैं नांउहरा
य कहेसुनेचाषेलषे सोसोई मिटजाय ३६ इंद्रीज्ञांनस
कैंनही मनबुधलहेंनताहि ज्ञानदिष्टपहचानिये
वाकूवासंपाम ३७ गुदालिंगमुषतीसरे हाथपाव
लषलेह पांचोइंद्रीकर्महैं यहबीकहतहेविवेक ३८
देहमिटतहेसुपनन्यों सीवरहतहैनित देहकर्मवि
सरायकर आतमसंकररहित ३९ मनजीतेइंद्रीरहे
चितआस्थिरजबहोय आतमसूपरचोरहे राषैसुरत
समोय ४० प्रथ्वीकालजेगरहे मुषजानियेंद्वार पी
रेरंगापहचानि पीवनषानआहार ४१ जलकोवा
साभालहे लिंगजानियेंद्वार मैथुनकर्मआहारहै
रंगसुपेदनिहार ४२ पितमेंपावकरहे नैनजानियें
द्वार लालरंगहैअग्निको मोहलोनआहार ४३ पवन
नाभमेंरहतहै नासाजानिद्वार हरोरंगहै वायु
गंधसुगंधआहार ४४ आकाससीसमेंबासहै सर
वनद्वारेजान शब्दकुशब्दआहारहे तांकूरयाम
पिछांन ४५ कारनसूक्ष्मलिंगहै औरकहिये
तआस्थूलसरीसतीनसानियेमेंमेरीजटमूल ४
जाग्रतकाआस्थूलहें सुपनेलिंगसरीर कारन
जानसषोपतीतुरयासाछीबीर ४७ जाग्रतसुपन
सषोपतीतुरीआवस्थाविचार परापश्यंतीमधमा

बैषरीबानीबिचार ४८ जाग्रत बासा नैंनमें सुपनकंठ म्हसं
न नाभसषोपतहियेमें जामतुरियामनमांन ४९ नाभमुष्य
बानीपरा हिरोपश्यंतीसुष्य कंठमध्यमांजानियें कहुंबै
षरीमुष ५० चित्तबुधमनअहंकारजो अंतकरनसुचार
ग्यानआगमतत्तबिचार ५१ जलसूंमननिहचैकियो भ
योबायसोंचित अहंकारनयोगगनसूंबुधपिरथ्यीसें
मित ५२ शब्दसपरसरसओरगंधहै औकेहियतरसरूप
देहकरमतननमातरा तूंकहियतनिह रूप ५३ शब्दगु
नआकासका सपरसगुनहैबाय पिरथीकागुनगंधहै सो
यहप्रगटदिषाय ५४ रूपअगनकागुनकहुं रसगुनजल
काजांन रनजीतबलावैषोलकर ऐसिबलेपहचांन
५५ सरवनमुषइंद्रीभई ततआकाससूंहोय तुचाहाथ
इंद्रीजुगल बायततसूंहोय ५६ पावकसूंइंद्रीजुगल भए
नैनऔरपांव जलसूंजोइंद्री लिंगरसनांहेनांव ५७ गुदा
नासिकाद्वैभई पिरथीसूंयहचांन चरनदासयोंकह
तहै एककरमएकग्यान ५८ रजसूंसूंइंद्रीभई तामस
सूंततपांच सातकसोंचारैं भई चरनदासयोंकहै साच
५९ तीनौगुनसोंहेपरै सोंआतमकोरूप सोवहहैद्दिष्ट
नआव अगम अगोचर रूप ६० दसइंद्रीततपांचहै
तनमात्रा भीपांच चारौंअंतसकरनहै एचौबीसोंसां
च ६१ पंद्रहकोअस्थूलहै नौकोलिंगसरीर कारमको

तीनासनां तुरियानिर्मूलधीर ६२ जाग्रतमेंचौबीस
हैं सुपनेमेंतैजांन सषोपतमेंसबलीहोय एजोग
जटकमांन ६३ तुरियाइकरस आतमा निरमल
अचलअनाद घटैबढैउपजैनहीं तहांनबाद
बिबाद ६४ घटैबढैउपजेमिटै जटकोयहीसुभा
व सोसबकोतगकररही नानाकियेउपाव ६५
चेतनज्योंकोज्यों सदा सदाअमरिजोयु सबकर्मन
सूंरहितहे आतमऐसोहोय ६६ काहूतेंउपजोनहीं
वातेंभयानकोय वहनमरैमारैनहीं रामकहावेसो
य ६७ जोगजुगतकरषोजले सुरतनिरतकोचीन द
सप्रकारअनहदबजै होयजहांलौलीन ६८ तीन
बंधनौनाटिका दसबाईकूंजांन प्रांविजयपांनस
मायनहै औरकहियतउद्यांन ६९ बीनबाय
औरकिरकारा कूंरमबाईजीत नागधनंजयदे
वदत दसबाईरतजीत ७० नवोंद्वारकूंबंधकर त
तमनाडीतीन इडापिंगलासुषमना केलकरेयरबी
न ७१ करतैंप्रांनायामके पावैआतमभेष आन
वदकनके बीचमें देषेशबदअलेष ७२ पूरककरकुं
नककरे रेंकपवनउतार ऐसैंप्रांनायाम कर सू
छमकरैआहार ७३ धरतीबंधलगायकर दसोंबा
यकूंरोक मस्तगप्रांनचढायकर करैअमरपुरभोग

७४ बांधोमुद्रासाधकर पावैघटकोभेद नाड़ास
क्रचढाइये षटचक्रकूं छेद ७५ नासाध्यानेदि
ष्टभ्रकुटीमें सुरतस्वांसकेमांहि आतमदेषोजात
है यामेंसंसोनांहि ७६ जोगजुगतकेकीजिये कैआ
तमकोध्यांन आपाआपबिचारिये पूरनतत्तकोज्ञा
न ७७ सूद्रबैसुयसरीरहै· ब्राह्मण औररजपूत
बूंढाबालातूनहीं· चरनदास अवधूत ७८ काया
मायाजानिये जीवब्रह्महैभिन्न कारजछूटैसूरत
मिटैतूपरमातमभिन्न ७९ पापपुन्यआसातजो तृ
ष्णामानऔरताप कायामोहबिकार तज जये
सुआनंदपाजाय ८० आपभुलानोंआपमें बंध्योआ
आपुही जोकूंढूंढफिरतहै सोतूंआपहीआप ८
१ इच्छाकुईबिसारकर क्यौंनहोयनिरबास पूरनजीव
नमुक्तकीआस ८२ आपापोजेंआपलष आपआ
पनकूंदेष चरनदासनहींदूजबसहै तूहीपुरषअले
ष ८३ जैसेंकछुवासिमटकर आपहीमांहिसमाय
तैसेंज्ञानीस्वांसमें रहैसुरतलौलाय ८४ सबघटर
मांसोरामहै आदिपुरसबिरहम लषचोरासीजो
नमें एकसमानोंसमय ८५ दिष्टमुष्टआवैनहीं
रूपनदेषोजाय बिनसूरतबिननांवको घटघ
टरह्योसमाय ८६ इच्छाकुईकरदूरआपतुम्ह

८० ब्रह्म व

रहीजावै औरसुद्रतियाकोंनुतासकूंसीसनिवा
वै मालातिलकबनायपूरब औरपंदयोमदोरा ना
मकेलकसूंरहिरनजंगलमयोबोरा चरनदासलषदि
ष्टधरराकब्रह्मभरपूरहै निरषपरषलेनिकटहीक
हनसुननसूंदूरहै ८७ कुंडलीसीयहदिष्टजगतुसब
झूठादरसै मूरषजानैंसत्यनासमूंफिरफिरपरसै चं
दसूरथिरनहीनहीथिरपौनअरपानी तिरदेवाथिर
नहीनहींथिरमायाराणी नवनाथचौरासीसीधजो च
रनदासथिरनारहे ब्रह्मसत्यसर्बरुपहै आतमबिचा
रयोनाजहे ८८ दो० जोमुषसेतीबोलिये औरसु
नियतहेकौन जोआंषसोदेषियै सबहीमायाजा
न ८९ कैसबतनरसरह्यो चेतनजडकेमाहि
मायादरसतहेसबे ब्रह्मदीषतहेनाहि ९० जै
सेतिलमेतेलहे फूलमध्यज्योबास दूधमध्यज्योंघा
तहे लकडीमध्यहुतास ९१ पानुरजंगमचर
आचर सबमेंएकेहोय ज्योमनकोमेंडोरहे बाह
रनांहीकोय ९२ एकडोरमनकागुहे आबरनब
रननिहार आतमतोनिहरूपहै नितआनितलष
विचार ९३ मायायहीसुभावहै नहिंथिरथिरना
य चंचलचपलसुहावनी ज्योंलाज्योगलजाय
९४ परमातमतोनित्यहेताकोआदनअंत १८४

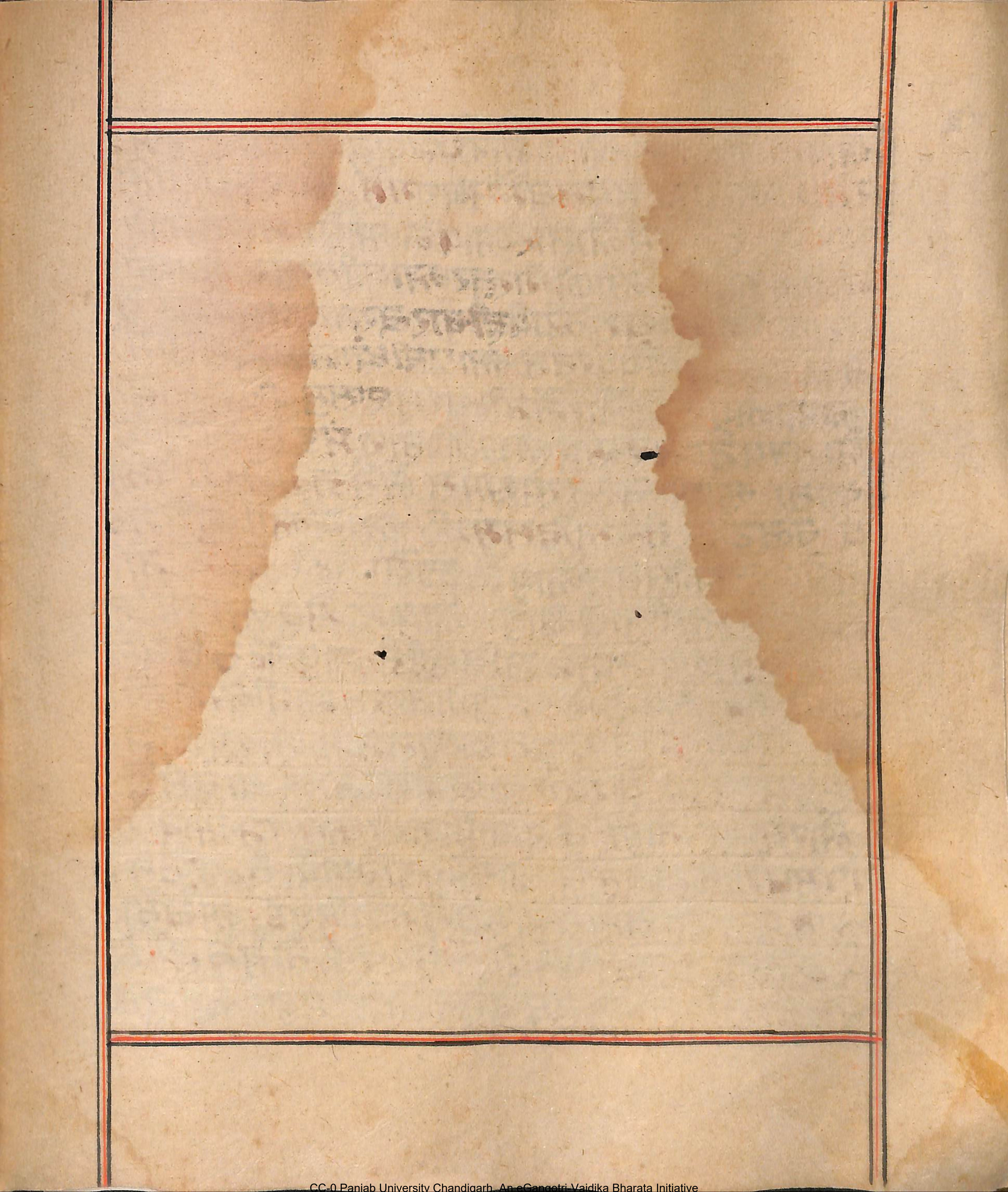
सदा अचल चंचल नहीं ॥ सब गुन रहत अनंत ॥ ९४ ॥ सत चेतन
न आहि है आदि अंत आकार को ॥ सो तू झूठो चीन ॥ ९६ ॥ सूरत
नांत अकार है ॥ जौं भूत न को नांच ॥ मगति अंग को नार है
निकट गये न हिसाच ॥ ९७ ॥ चित्र बरन षाषी सील रौ षोज
किये मिट जाय ॥ दीषे है पर है नहीं ॥ कौतग सो दरसाय ॥ ९
८ ॥ सिष बचन ॥ ब्रह्म बिनां षाली नहीं ॥ धरबे कूं एक पा
व ॥ माया कूं कहां ठौर है ॥ सतगुर मोहि बतावु ॥ ९९ ॥ तिहूं
काल तो ब्रह्म है ॥ अदे अचल अपार ॥ आई माया कहां ते ॥
सतगुर कहो बिचार ॥ १०० ॥ गुरु बचन ॥ आप ब्रह्म माया भ
यो ॥ ज्यों जल पाला होय ॥ पाला गलयां नीर भयो ॥ जोसैं नं
हीं होय ॥ १०१ ॥ झूठी माया संक है ॥ ज्ञानी पंडित लोय ॥ भरम
मूल सा चीलगो । समझे सा च न होय ॥ १०२ ॥ सोने को गह
नें घडे ॥ कहन सुनन कूं दोय ॥ गहनों नासें तो सबै मे
कछु दो नहि होय ॥ १०३ ॥ झूठ सांच दों नांव है ॥ झूठ मिटै
थिर सांच नामिटै सूरत मिटै ॥ मृषन कूं लग आस ॥ १०४
ताकूं माया कहत हैं ॥ सो तूं नें कवि कास ॥ जैसें ही एक पू
रकी नैक नुदी का रष्या ॥ १०४ ॥ जल समान तो ब्रह्म है मा
या लहर समान ॥ लहर सबै वह नार है ॥ लहर कहे अ
सांन ॥ १०६ ॥ षेल षिलौनां षांड के ॥ कीजे लाष पचास ॥
सकल षिलौनां षांड के ॥ भांजन राषे कांउ ॥ बिन बिन
सें भी षांड है ॥ बिनस जांहि जो कांउ ॥ १०७ ॥ मांटी के भांडे न

वे ॥ सूरत औरखबहु नांव ॥ बिगास फूट माटी भई ॥ बासन
कहु किहठांव ॥ १०९ ॥ औसैं ही माया नहीं समझ देख मन
मांहि ॥ जो वैसो ब्रह्म है ॥ रंचक माया नांहि ॥ ११० ॥ इच्छा
मेटै दुइ तजै ॥ ब्रह्म ज्ञान बिज्ञान है ॥ समझ परम पद धाम
१११ ॥ कबित ॥ स्वांस उसांस चलै जप आप ही है जु ॥ आप
उचरै तहीं टारो ॥ भीतर बाहर रहै भरपूर सुं टंटू दका ॥
हां नहि नाहि न्यारो ॥ चरनदास कहै गुर भेद दियो भर्म
दूर भयो जु ऊतौ अति भारो ॥ द्रिष्ट आदिष्ट जु राम कूं
देषत राम भयो पुन देषनहारो ॥ ११२ ॥ दोहा ॥ आप आ
प मैं आप है षेलो बहु बिस्तार ॥ दुतिया तो कुछ नहीं
एक ही एक बिहार ॥ ११३ ॥ कहीं नरायन नाम है कहीं
ब्रह्मा कहीं बेद ॥ कहीं संकर कहीं गोरजा ॥ कहीं अ
भेदा भेद ॥ ११४ ॥ कहीं रिषमुन कहीं देवता ॥ कहीं सि
ध कहीं नाग ॥ आपन कूं आपे षडो ॥ कहूं न ब्रह्म भ्रम मा
प ॥ ११५ ॥ कहीं आसन कहीं तप करै ॥ कहीं संतोषी
कहीं जोग कहीं दुषी कहीं सुष भयो ॥ कहीं रोग
कहीं भोग ॥ ११६ ॥ कहीं नारी कहीं नर भयो ॥ कहीं
बालक कहीं बाल ॥ कहीं दाता कहीं मंगता क
हीं सुषी कंगाल ॥ ११७ ॥ कहीं बिरछ कहीं फल भयो
कहीं फूल कहीं बीज ॥ कहीं मूल साषा भयो ॥ क
हीं मांली कहीं सींच ॥ ११८ ॥ कहीं माल न कहीं मालती

कहीं फुल बगा कहीं हार ॥ कहीं महल बिंडकी भयो ॥ कहीं
दीपक उजियार ॥ ११९ ॥ कहीं बाग कयारी भयो कहीं भंवर गुंभ
जार ॥ कहीं घटा कहीं बीजली ॥ दादर मोर बहार ॥ १२० ॥ क
हीं परबत जंगल भयो ॥ कहीं बारध कहीं बार ॥ कहीं बडवानल अ
गन हो ॥ धारे तेज अपार ॥ १२१ ॥ मानसरोवर भयो ॥ कहीं
मोती कहीं मराल ॥ कहीं सलिता धार कहीं ॥ कहीं मान क
हीं जल ॥ १२२ ॥ कहीं कथा श्रोता कहीं कहीं कीर्तन रूप ॥ क
हीं त्याग बैराग है ॥ कहीं सँत सरूप ॥ १२३ ॥ कहीं पिरथी ॥
कहीं ब्रज हो ॥ कहीं गोपी कहीं ग्वाल ॥ कहीं श्याम करूप हैं
कहीं प्रेमी कहीं ख्याल ॥ १२४ ॥ कहीं कालेंद्री निकट
हो ॥ कहीं वृंदाबन धाम ॥ कहीं कुंज अति सोहनी ॥ क
हीं जुगल लभयो नाम ॥ १२५ ॥ कहीं सुगंध सीतल पवन क
हीं बंसीबट ठाव ॥ कहीं चरन हीं पास हो ॥ बारंबार बलि
जाव ॥ १२६ ॥ कहीं कन्हैया हो पडे राक पांव अत मोर ॥
कहीं मुरली अधरन धरी ॥ बाजत है घन घोर ॥ १२७ ॥
कहीं मुकट कुंडल भयो ॥ अलके कहीं कपोल कहीं
लल चौहैं नैन हीं ॥ नासा मुकत स ढोल ॥ १२८ ॥ कहीं कं
कध की कंठ है ॥ कहीं मुतियन की माल ॥ कहीं
बाजू नौरतन के ॥ नठ वुरम ट नगुय ला ॥ १२९ ॥ क
हीं कर कहीं कर भयो ॥ कहीं पुंहची जहांगीर ॥ र
तन चौक मूंठी भयो ॥ लागी संग अंजीर ॥ १३० ॥ कहीं ब

८
ग्रं

दलोजर्दहैं नामोहोन गयो अंत ॥ कहीं बंधा गाजिंद
है ॥ कहीं सावरो रंग ॥ १३१ ॥ कहीं पैअ न कहीं प्रगभ
यो ॥ कहीं चरन कोमल ॥ कहीं आपही न घूम यो ॥ स
सियर से परगास ॥ १३२ ॥ आप आपमें आय है ॥ आप
आपमें आप ॥ आप आपन मे जप है ॥ आप आप में
जाय ॥ १३३ ॥ अबिनासी सें नहीं नास न कब हूं होय ॥ तन
सरूपी एक है ॥ कभी होय नहीं दोय ॥ १३४ ॥ आप ब्रह्म मूरत भ
यो ज्यो बुदगिल जलमांहि ॥ मूरत बिनसें नां ब्रह्म जल बि
नसत हैं नांहि ॥ १३५ ॥ बुदगिल देषो जल सबै ॥ बुदगिल क
हूं न होय ॥ कहूं बकूं इस जो कहो जल बुदगिल नहीं दोय ॥
१३६ ॥ भयो नैंक मे बुलबुला ॥ नाच कूंद मिट जाय ॥ निर
कारह जाय मो ॥ मूरत नां ठहराय १३७ निरकार आकार
धर ॥ त्रैलोकै इक बार ॥ सुप नौं होय होय मिट गयो ॥ रहो
सार को सार ॥ १३८ ॥ चौपई ॥ आप आपमें खेल मचायो ॥ ज्यों
पानी बुदगिल होय आयो ॥ ऐसे ब्रह्म धरी हैं काया ॥ आ
पही पुरष आपही माया ॥ आप नराय न लछमी भई ॥ नाभ कं
वल औ रआपही दई ॥ आपही धरती आपही पानी ॥ आपही
सद स्वुतुरबि नाना ॥ हो नाराय न बिस्नु कहायो ॥ सेस ना
ग के तले ठायो ॥ तेतीस कोट देवता भयो ॥ रिषमुन कोट अ
ठासी ठयो ॥ चारो जुग आपही भये लोका ॥ पायतुन आ
पही भयो सोगा ॥ आपही फुल सूल और बीरी ॥ आपही पु थि



आपही नारी ॥ १४९ ॥ दोहा ॥ जल थल पावक राम है ॥ रम
रमो सब मांहि ॥ हरि सब मैं सब राम मैं ॥ और दूसर नांहि
१४० ॥ चोपई ॥ दूसर औतार आप के आयो ॥ सेवग साहि
ब आय कहायो ॥ आपही गिरवर आपही तरवर ॥ आपही
हंस आपही सरवर ॥ आपही चार बरन षट दरसन ॥ पू
जै आप आपही परसन ॥ आपही ध्यान आपही प्रेम ॥
आपही जोग भोग और नेमी ॥ चरनदास सुषदेव कहा
यो ॥ आप नै भेद आपही गायो ॥ तारा मंडल आपू अ
कासा ॥ आपही चंद सूरज परगास ॥ जैसें जल तरंग बुदबु
दई ॥ उलट फेर जल मांहि समाई ॥ आप आप सुषन ते
ठायो ॥ आपही सुपन आप के आयो ॥ १४१ ॥ चौपई ॥ तो
कुछ गयो नहीं कुछ आयो ॥ आप नै भेद आपही गा
यो ॥ नां कुछ कटै मिटै नहि छीजै ॥ नां कुछ रचे चले
नहि भीजै ॥ सुष नौ मिट नयौ ग आकारा ॥ नां ती सब ही
लो हि निहार ॥ नहीं सूछम अस्थूल न भारी ॥ रूप रंग न
ही है परे कारी ॥ वार पार कुछ दीषत नाही ॥ कबसूं है
और कबसूं नांही ॥ कहा कहुं कुछ कहत न आवे ॥ गूं
गे सुपनों कहा बतावे ॥ वार पार नहि पायो बूंद ढूंढत
आप भुलायो ॥ कहत कहत में गयो हिराई ॥ सब मो
पै कछु कहो न जाई ॥ १४२ ॥ दोहा ॥ हद कहूं तो है नहीं ॥ बे
हद कहूं तो नांहि ॥ हद बेहद दोनों नहीं ॥ चरनदा

कु

सभी नाहि ॥१४३॥ जग सुपनौं सो है गयो ॥ भयो पेष नमैं गा
व ॥ जब जागो जब मिट गयो ॥ चरदास नहीं नाव ॥१४४॥
॥ छप्पै ॥ तब न चंद नहीं सूर नहीं लक्ष्मी नारायन ॥ नहीं धर
नी नहिं सेस न नभ मैं नारायन तब न रूप नहीं नाव ही ति
गुन [illegible] देवा ॥ तब निब्रह्म नहिं जीव न ॥ हीं साहब नहिं
सेवा ॥ रतन जोत मी तन हीं बेरत ब्रह्म निरगुन सरगुन नौ ऊं
ता ॥ तब न बेद बानी न हीं नहीं ज्ञानी नहिं पंडिता
१४५ ॥ छप्पै ॥ जो सरवन सूं सुनै और मुष सेती भाषै ॥ जो
कुछ देषै नैंन और सोवै और जागै ॥ और स्वाद बे गं-
ध गंध नासा के मांहीं ॥ यह सब कूठे जान तब कहत है
तांही ॥ और चरन उपजै नहीं बिनसै नहीं सदा
एक ऊ ॥ ब्रह्म सत्य सब विरप है सु कूठो इहरसै सु पन प
ऊ ॥१४६॥ दोहा ॥ ब्रह्म बिनां षाली नहीं सरस सम को
ऊ ठौर ॥ सुपनौं सो जग देषियै ॥ सुपन भयो तन मोर ॥१४
७॥ सुभ ब्रह्म है एक सम ॥ जगत दिवाली दीव ॥ ज्योत रं
ग जल मैं उठै ॥ ब्रह्म बीच जीव ॥ और द्वार न जा
को पाइय ॥ पार परै न हैं चीन ॥ औसे सिन्धु मैं स्याव
मैं ॥ जगत जानियैं मीन ॥१४८॥ ब्रह्म बीच ए जीव
सब ॥ फिरत रहत आधीन ॥ जैसे सागर सिंधु
मैं ॥ नांनां रूपी मीन ॥१५०॥ जैसें लहर समुद्र की
उठ [illegible] रहत है मांहि ॥ बिछ्रा बिन भाव नाहि ॥

न

८४
ब्रह्म

होमिटमिटजांहि ॥१५१॥ ज्यौंढोसावगांभी रहै विसइच्छा
बिनहोय ॥ निजसुभाव जग होत है ॥ मिटमिट फिर
फिरहोय ॥१५२॥ धरतीमें लीकट बिचै ॥ उठनहिं आ
वैहाथ ॥ ब्रह्मसत्यजगझूठ है ॥ होहोमिटमिजात ॥१५३॥
जगतब्रह्ममेंयोंदिपै ॥ ज्यौंधरती पर रेष रेषमिटैधरतीर
है ॥ ऐसैंहींजगदेष ॥१५४॥ झूठसांचदोनावहै ॥ झूठमिटै
थिरसांच ॥ ज्यौंलोहापावकमिलो ॥ लोहरहैमिटआंच ॥१५५॥
ज्यौंसोवतसुपनैंउठै ॥ दिष्टपोलजबनाहिं ॥ जगसुपनौं
सोहोमिटै ॥ समझदेषमनमांहि ॥१५६॥ देषनकूंआ
तिनिकटहै ॥ कहबेकूंबऊदूर ॥ एकैब्रह्मअषंडहै ॥
सकलरह्योभरपूर ॥१५७॥ अदैआचअषंडहै ॥ अगमअ
पारअथाह ॥ नहींदूरननिकटहै सतगुरदियोबताय
॥१५८॥ मूलकुतीजबदोऊते ॥ अबनहिंएकनदोय ॥
ओटकटीधोषोमिटो ॥ आपनऊगयोषोय ॥१५९॥
चै ॥ जहांगुरू नहिंसिष्यजहां नहिंसाहिबदासा
जहांगुफानहिंजोगजहां नहिंराग नविवासा जहांन
हिंतपदानजहां नहिंदेवनपूंजा जहां ब्रह्मनहिंजीवज ॥
हांनहिंएकनदूजा ॥ औरचरनदाससमिलमिटगयेसा ॥
ऐचरजऔसोसुक्रिया ॥ कोनसुनैंकासूंकहूं ॥ सोआपु ॥
आपनहिंकुडक्रिया ॥१६०॥ दोहा ॥ अपरमपारअपारहो
आदिंअनादअडोल ॥ पुरषपुरातनब्रह्महै ॥ बिनकाया

बिनबोल॥१६१॥ चौपई॥ अगम अगोचर अजर अनेता॥ अद्वै
रूप आपा भगवंता॥ निरंकार निर्मै निरबाना॥ परमेस्वर
परमातम पुरांना॥ अधं उर्ध नहीं गुसांई॥ नहि बाहर न
हिं मध्य नमांही॥ नहीं जीव नहीं सीव समुहाई॥ सेतस्या
म नहीं है अरु नाई॥ है जैसो तैसो ही राजै॥ आपन मांहि
आप ही गाजै॥ नही नीव्र नहीं माव्र नभा री॥ है अषंड
नहि षंड तकारी॥ है सरबूप सत्य बिग्यानी॥ अमू भेद अ
छेद अपी कसुनी॥ ज्यों का ज्यों जैसे का तैसा १६
२॥ दोहा॥ नीचे नी अंतना उपर ऊपर ऊपर॥ बायें बा
यें हरना॥ दहने दहने रूप॥ १६३॥ नहि नीचे ऊपर
नहीं॥ नहीं दहने नहि बांम॥ मध्य नहीं आकार
नां॥ निराकार नहीं नांम॥ १६४॥ निर्गुन नाम सगुन न
हीं॥ उपजे ना मिट जाय॥ सब कुछ है और कुछ नहीं स
दा बूझ थिर थाय॥ १६५॥ जहां सांच जहां झूठ है॥ नहां झू
ठ जहां सांच॥ झूठ सांच दोनों नहीं॥ तहां कछु सीलन
आंच॥ १६६॥ बंद नहीं मुक्त नहीं॥ पाप पुन्य भी ना
हि॥ जतपत नायर लो नहीं नहीं नहीं नी नांहि॥ १
६७॥ इंद्री नां निग्रह करे॥ मन नहिं जीतू ताहि॥ भूलो ना
चेतू नहीं॥ मैं नहि बोजूं वाहि॥ १६८॥ जोग नहीं जुगता न
हीं॥ नहीं ग्यांन मिहिध्यांन॥ बुध बिचार गुह षे नहीं॥

तहां कुछ लाभ न हान ॥ १६९ ॥ औ न धर्म सो मुक्त नो ॥ ख
रा रक नहि बास घट दरस न चो बरनना ॥ नहीं करम मु
मास ॥ १७० ॥ सिध नहीं साधक नहीं ॥ नहीं तिमर नहिं
भांन सुन्न नहीं बेसुन्न नं ॥ नहीं तत बिज्ञान ॥ १७१ ॥ ध
र्म कर्म और मोहि नां ॥ और नांहीं बैराग ॥ ज्यों का ज्यों सो
भी नहीं ॥ नहीं दुषी अनुराग ॥ १७२ ॥ चौ ॥ ई ॥ ब्रह्म ज्ञान बि
न मिटै न कोई ॥ ब्रह्म ज्ञान बिन मुक्त न होई ॥ औ अज्ञान
पनों नां भोग ॥ ब्रह्म ज्ञान बिन सब ही रोग ॥ कलह
कलप नां मन मे दोष ॥ ब्रह्म ज्ञान बिन नां संतोष ॥
हिमरक्ष बिश्वास बही नागै ॥ ब्रह्मज्ञान में जो तूं जा
गै मतमारग मिल भरम बढावै ॥ पक्षपात लै सब
भरमावै ॥ गुरु बिन ब्रह्म ज्ञान नहिं पावै ॥ गुरु बिन
तत्त्व को नदर सावै ॥ गीता और बेदांत बतावै ॥ स्या
म बेद भी यों ही गावै ॥ ब्रह्म ज्ञान में निहचै आवै ॥ जी
वन्मुक्त सोई कहावै ॥ १७३ ॥ दोहा ॥ तूं नांही सब रामहै ॥
बेद भेद की सीष ॥ एक रमपार भरयो सकल अखंड ब्या
पीक ॥ १७४ ॥ सिध सरूपी ब्रह्म में ॥ ज्यों पाला सब लो
क ॥ पाला गल पानी भये कब्द न बिकुसु लकाय
कै ॥ कई जनम को सूल ॥ चरनदास निर्भै भए ॥ आसा
तज और धू ॥ १७६ ॥ कबित स्वरगहूं न चाहिये जो जों ॥

मनगपहीनकरूं इंद्र्यादि भोगनकूं चित्तसूं उठायोहै॥
रिधहू न चाहिये जो जगत में बडाई चले सिधहू न चाहि
ये सब साधन बिसरायोहै॥ जातहू न चहिये जो कुल
की मरजाद चले च्यार बरनन के यो बेदन में गा
यो है॥ कासूं कहैं मुक्त और बंध तो न सूझे कछ करे
चरनदास आपन लेलायो है॥१७७॥ कबित॥ आदहू
आनंद अंतहू आनंद॥ मध्यहू आनंद जो सै हीजा
नौ॥ बंदहू आनंद मुक्तहू। आनंद आनंद ग्यान ध्या
न पिछानौं॥ लेटेहू आनंद बैठेहू। आनंद डोलत आ
नंद आनंद आनौ॥ चरनदास बिचार सबै कुछ आ
नंद आनंद ब्याउ के उथ्थन ठानौ॥१७८॥ कबित॥ आदहू
चेतन मध्यहू चेतन माया न देषी॥ बस आदेत अषंड अबि
रालें न औ सन हसरे आतरो षी॥ सिध आयाह ओ पा
रबिराजत रूप न रंग नहीं कुछ भेषी॥ चरनदास नहीं
सुष देव नहीं तहां। ना कोई मारग ना कोई भेषी॥१७९॥ क
बित॥ भषत है नहि भषत भोजन पीवत है नहीं पी
वत पानी॥ डोलत है नहि डोलत पैं उसों बोलत हैं नहि
बोलत बानी॥ नानारूप ब्यौहार मे देषत है और रति ह
चै के मध्य कछू नहि आनी॥ चरनदास बतायदियो सु
षदेव नै मैं से रहै ताहि जाम ये सानी॥१८०॥ कबित॥

सेवत है नहि सो व्रत नी दृसो जागत है नहि जाग
रिषाना ॥ जोग करै न करै कुछ साधन ॥ ध्यान करै न करै
कुछ ध्यानी ॥ वचन बिलास करै चरचा न करै चरचा न छिपै
यू बिनानी ॥ चरनदास यै माही यो सुष के बिहे जो सेरं है ताही
जानियै ज्ञानी ॥ १८१ ॥ कवित मंदर क्यों त्यागै और नागै क्यों
गिरवर कूं [illegible] दर जाम कलपै क्यो बावरे ॥ सब साधन बतायो
और चार वेद गायो आपन कूं आप देषु अंतर लौ लावरे ॥ बु
सज्ञान हिए धरो बोलते को खोज करो माया अज्ञान हरे
आया विसरावरे ॥ जे हैज ब आपा धाप ॥ कहा पुन्य कहा पा
प कहै चरनदास तूं निहचल घर आवरे ॥ १८२ ॥ [illegible] ॥ ब्रह्म
ज्ञानी के लछन बर्नते ॥ अथ ज्ञान परिछ्या ॥ निर लेभता ॥ नि
रहकर्म ॥ २ ॥ निरबासीक ॥ ३ ॥ निरबिकार ॥ ४ ॥ अथ विचार प
रिछ्या ॥ निरमोहित ॥ १ ॥ निरबंध ॥ २ ॥ निसंक ॥ ३ ॥ निर्बान ॥ ४ ॥ अ
थ बिबेक परिछ्या ॥ सावधान ॥ १ ॥ सबैगी ॥ २ ॥ सारग्राही ॥ ३ ॥ सं
तोषी ॥ ४ ॥ अथ परमसंतोषी परिछ्या ॥ अजाचीकारि ॥ अ
मानिक ॥ २ ॥ अपछीकु ॥ ३ ॥ अस्थिर ॥ ४ ॥ अथ सहज परि
छ्या ॥ निहप्रपंच ॥ १ ॥ निहतरंग ॥ २ ॥ निरलिप्त ॥ ३ ॥ निहचल
॥ ४ ॥ अथ निर्बैर परिछ्या ॥ सुहृद ॥ १ ॥ सुषदाई ॥ २ ॥ सीतलग्राम
ही ॥ ३ ॥ सुमती ॥ ४ ॥ अथ सुन्न परिछ्या ॥ सीलवंत सुबुधार ॥ २ ॥
सतबादी ॥ ३ ॥ ध्यानसमाधि ॥ ४ ॥ आमैं ए लछन न होय ता कूं

ता

ब्रह्मज्ञानी कहियै ॥ और जामैं लछन नहोय यूं बाचक ज्ञानी
बिदुडा जानियै लछन ज्ञानी न जानियै ॥ दोहा ॥ जनक गुरु सु
षदेवजी ॥ चरनदास सिष होय ॥ आप राम ही राम है ॥ गई दुई स
ब षोय ॥ १८३ ॥ समझै जीवन मुकति होत है भेद तत्त सार ॥ १८४
इति ब्रह्मज्ञानसागर संपूर्ण समाप्तं ॥ श्री सुषदेवजी चरनकं
मलेभ्यो नमः ॥ अथ श्री गुरु ॥ चरनदासजी कृत भक्तिपदार
थ लिष्यते ॥ दोहा ॥ परणम श्री मुनि ब्यासजी ॥ मन महि रदै मैं
आय ॥ भक्तिपदारथ कहत हूं ॥ तुम ही करो सहाय ॥ १ ॥ प्रेम पगा
व नज्ञानदे ॥ जोग जित आवन नहा ॥ चरनदास की बेनती
सुनियौ बारंबार ॥ २ ॥ तुम दाता हम मांगता श्री सुषदेव
दयाल ॥ भक्त दई बाधा गाई ॥ मेटे जग जंजाल ॥ ३ ॥ किसू कौं
मकै थै नहीं ॥ कोऊ न कोडी देह ॥ गुर सुषदेव कृपा करी भ
ई अमाल कर देह ॥ ४ ॥ को है कोई न जानता तीन तीन मैं नाहिं
नांव गुर सुषदेव कृपा करी ॥ पुजन लागे पांव ॥ ५ ॥ सी
मीप लकन देषते ॥ छ, ते नाही छांहि ॥ गुर सुषदेव कृपा
करी ॥ चर नोद कलेज्यांहि ॥ ६ ॥ दूसर के बोल कडू ते ॥ भक्ति
बिना कंगाल ॥ गुर सुषदेव दया करी ॥ हरिधन दियौ
निहाल ॥ ७ ॥ जा धनकूं ठग ना लगे ॥ धाडी सकै न लूट ॥ चो
स र चुराइ सकै नहीं ॥ गांठ गिरै नहिं छूट ॥ ८ ॥ बलिहारी गुर आ
पने ॥ तनमन सदकै जांव ॥ जीव ब्रह्म छिन मैं कियो ॥ पा
ई भूली ठांव ॥ हरिसेवा सोलै बरस गुरसेवा पल चार ॥ तौ

भक्त
८७

भी न ही बरा बुरी बेदो किया बिचार ॥ ९ चौपई ॥ गुर की
सेवा साधू जानै ॥ गुरसेवा कहा मूढ पिछानै ॥ गुरसेवा
सबकूं न पर भारी ॥ समझ करै सोइ नर नारी ॥ गुरसे
वा सों बिघन बिनासै ॥ दुरमत भाजै पातग ।
नासै ॥ गुरसेवा चौरासी छूटै ॥ आवागवन न का डोरे
टै ॥ गुरसेवा जमडंड न लागै ॥ मन ताम रै भक्त मैं जागै
गुरसेवा सों प्रेम प्रकासै ॥ उनमत होय मिटै जग आसै गु
रु सेवा परमातम दरसै ॥ त्रिगुन तजै पाप पद परसै श्री सु
कदेव बतायो सेवा ॥ चरनदास कर गुर की सेवा ॥ १० दो
से गुरकूं जानैं नहीं ॥ पांव न पूजैं धाय ॥ जोग दान जप तप
किये ॥ सभी अफल होजाय ॥ ११ ॥ चौपई ॥ जो साधां नत पती
रथ न्हांता ॥ गुरसेवा बिन निफल जाता ॥ गुरसेवा बिन ब
हु पचि लैहो ॥ फिर फिर जम के पारे जैहो गुरसेवा बि भक्त
ति उपयै हो ॥ जग मैं पसू चालि दीकैहो गुरसेवा बिन कौ
न सारै ॥ भौसागर सूं बाहर डारै ॥ गुरसेवा बिन जटक
हा करहो ॥ कागदी नाव बैठ कर तिरहो ॥ गुरसेवा बिन क
छू न सरहै ॥ मूढा अंधकूप मैं परि है ॥ गुरसेवा बिन घट
अंधियारा कैसे प्रगटै ज्ञान उजियारा ॥ नरक निवा
रन गुर सुषदेवा ॥ चरनदास कर तिनकी सेवा ॥
१२ दोहा ॥ इंद्रीजित निरबैरी ॥ निरमोही निरबं
ध ॥ ऐसे से गुर की सरन सों ॥ मिटैं सकल दुष दंद ॥ १३ चौपई

राग द्वेष दोनौं सें न्यारे ॥ ऐसा गुरु सिष कूं तारे ॥ सांति
भांवु षुध्या जल लाई ॥ तन मन बच न सुषदाई ॥ सिरोल
भ निहभ्रम चित दासी ॥ निरबिकार नौं निरवासी ॥ नि
रमोह त निरबंध निसंका ॥ सावधान निर्बान असं
का ॥ साचवादी और रसं बैरागी ॥ संतो की बानी सतसं
गी ॥ अजाची कजत निरअभिमानी ॥ पक्ष रहत अस्सि
स्सुषबानी ॥ निहतरंग मांही परपंचा ॥ निहकर्मी निरालि
पं जो संचा ॥ सीतलता सुमत सुषदेवा ॥ चरनन कीयो सो
गुरदेवा ॥ १४ ॥ दोहा ॥ सतवादी और सीलवृत सुषदेआ गी
स ॥ निहचल ध्यान न साध मैं ॥ सो गुर विसवैं बीस ॥ १५ ॥ नर
म निवारन हरन ॥ हरकरन संदेह ॥ गुटियां बोले ग्यान की
सो सतगुर कर लेह ॥ १६ ॥ सतगुर के लछन कहे ॥ ताकूं ले प
हचांन ॥ सिरष परष कर दीजिये ॥ तन मन धन और प्रां
न ॥ १७ ॥ ऐसा सतगुर कीजिये ॥ जीवत डारै मार ॥ जनम जनम
की बासना ताकूं देवै जार ॥ १८ ॥ सतगुर के ढिग जायकै सन
मुष षावै चोट ॥ चकमक कूं लै पथरी कडै ॥ सकल जन लावै वोट
१९ ॥ सतगुर मेरा सूरमा करै हूं की चोट ॥ मारैगो लाग्रे मुका
द है ॥ भ्रम का कोट ॥ २० ॥ मुष से ती बोलन पका ॥ सुनै थ
नु कांन ॥ पांवन सों फिर बाधका ॥ सतगुर मारा बां
न ॥ २१ ॥ मैं सिरगा गुरपारधी ॥ शब्द लगायो बांन ॥ चरन द्या स
घायल गिरे ॥ तन मन बींधे प्रांन ॥ २२ ॥ शब्द बांन मे हि मारि

या॥ लगीक लेजेमांहि॥ मारहंसे सुषदे जी॥ बाकी छोबे गु
नांहि॥ २३॥ सतगुर शब्दी तेग है॥ लागत दो कर देह॥ पु
ठ फेर कायर भजै॥ सूरा सनमुख लेह॥ २४॥ सतगुर शब्दी सेल
है॥ सहै हैं धर्मों का साध॥ कायर कयर जो चले॥ तौं जाबै बरबा
द॥ २५॥ सतगुर शब्दी तीर है॥ तन मन कीया छेद॥ बेदरदी
समझै नहीं॥ बिरही पावै भेद॥ २६॥ सतगुर शब्दी लागिया
नावक का सा तीर॥ कसकत है निसरत नहीं॥ होत प्रेम की
पीर॥ २७॥ सतगुर शब्दी बांन है॥ अंग अंग डाला तोड॥ प्रेम
षेत घायल गिरे॥ टांका लगै न जोड॥ २८॥ सतगुर शब्दी
मारिया॥ पूरा आयावार॥ प्रेमी झूझे षेत में॥ लगा नरा
धातार॥ २९॥ कोसी मारी षैचकर॥ लगी वार गई पार॥ जि
नका आपा ना रहा॥ भए सक्स तन्सार॥ ३०॥ सतगुर के मारे मु
ये॥ बज्जर न वयडे आय॥ चौरासी बंध न छूटे॥ हरि पद
पुंहचे जाय॥ ३१॥ सतगुर के बचनों मुये॥ धन्न जिनों को
भाग॥ तिर गुन तैं ऊपर गए॥ जहां दोष नहि राग॥ ३२॥ बचन
लगा गुरदेव का॥ छुटे राज के साज॥ हीरा मोती नार सुत
गज घोडा और बाज॥ बचन लगा गुरज्ञान का॥ रूषे ला
गे भोग॥ इंदर पदवी लौं तज्यै॥ चरन दास सब रोग॥ ३
४॥ सतगुर ढूंढा पाइये॥ नहीं सुहेला होय॥ सिष्य पूरा को
की॥ सानी मांटी जो य॥ ३५॥ जान बरन कुल आसरम॥ मा
न बडाई षोय॥ जब सतगुर के पग लगै॥ सांचा सिष है सोय॥

रूप ॥ चौपई ॥ गुरु के आगे सिष मा थ्या ॥ कहै कपट तज प्रभु सबमें ठो
नाथ्या ॥ मैं आधीन तुम्हारो दासा ॥ आपनें चरन न मैं दीयो बासा
यह तन मन ले भेट चढायो ॥ आपनी इच्छा कुछ न रहायो जो
चाहो सो तुम ही करो ॥ या भांडे मैं जो कुछ भरो ॥ भावै धूप छांह
मैं डारो ॥ भावैं डोबो भावैं तारो ॥ गुन औगुन कछु दुष नहिं मेरी
सब बिध सरन गही प्रभु तेरी ॥ मैं चकई और तुम कियें डोरा मैं जुं
फिरूं स बू तुम्ह रे जोरा ॥ मैं आ बैठा नाव तुम्हारी ॥ आसा न दीसी
करपारी ॥ भवर जाल नगा सूं मोहि काटो ॥ हाथ जोर चरनदासा ॥
ठाढो रूप दोहा ॥ गुरु के आगे जाय कर ॥ जो सिष बोले बोल ॥ क
छू कपट राषै नहीं ॥ आरज करै मन षोल ॥ रूप ॥ यह आपा तुम
कूं दिया ॥ जित जानो तित राष ॥ चरनदास द्वारै परो ॥ भावैं किड
को लाष ॥ ४० ॥ चौपई ॥ रिध सिध फल कछु न चाऊं ॥ जगत काम
तां कूं नहिं लाऊं ॥ और कामना मैं नहिं राषूं ॥ रस तां नांव तुम्हा
भाषूं ॥ राज भोग का मोहि न संसा ॥ इंद्रपद ही लौं नहि आसा ॥ चौ
रासी मैं बहु भ्रमायो ॥ तातैं सरन तिहारी आयो ॥ मुक्ति रूं न की म
न मैं आवै ॥ आवागवन सो जीव डरावै ॥ राम भक्ति की चाह ह
मारे ॥ यातैं पकडे चरन तुम्हारे ॥ प्रेम प्रीत मैं हिरदा भीजै ॥ य
ही दान दाता मोहि दीजै ॥ आपनों कीजै ॥ आपना कीजै हिये
बाही ॥ धरिये सिरपर हाथ गुसांई ॥ चरनदास कूं लेहु उबारे
मैं आंडा तुम सेव न वारे ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ आंडा ज्यौं आगे गिरे ॥ ज
ब गुर लेवै सेइ ॥ करै बराबर आपकी ॥ सिष कूं निरसंदेह ॥ ४२

अपना कर सेव न करैं ॥ तीन भांत गुरदेव ॥ पंजा पंछी कुं जमन ॥ वा
छुवा दिष्ट जु भेव ॥ ४३ ॥ जो वे बिसरैं घरी बी ॥ तौ गंदा हो जाय ॥ चरनदा
स यौं कहत हैं ॥ गुर कों राषरि जाय ॥ ४४ ॥ पिता सों माता सों गुनां ॥ सुत
कूं राषै प्यार ॥ मन से ती सेव न करै ॥ तन सूं छुटा ओरगार ॥ ४५ ॥ जो
देवै दुरसी सबी ॥ हे म्हो लगैं आसीस ॥ सेव न कर समझ्य कि यों ॥
उ न परवा रे सी ॥ ४६ ॥ माता सों हर सों गुना ॥ जिन सैं सौ गुरदेव प्या
र करै भोग न हरै ॥ चरनदास सुषदेव ॥ ४७ ॥ काच भांडे रहे ॥ ज्यों
कुम्हार को नेह ॥ भी तर सें रिछ्या करै ॥ बाहर चोटें देह ॥ ४८ ॥ दि
ष्ट परै गुरदेव जी ॥ देषत करैं निहाल ॥ औरै गत पलटै ज बै
कागा होत मराल ॥ ४९ ॥ दया होय गुरदेव की ॥ ज जैं मांन औ
र मैं त ॥ भोग बास नां सब छुटैं ॥ पावैं अति ही चैं न ॥ ५० ॥ जब
सतगुर किरपा करैं ॥ षोल दिषावैं नैंन ॥ अगाह डादी षन ल
गै दैंह परे की सैंन ॥ पर ॥ अ छ पद वी छ दा ॥ गुर बिन और न जा न
मांन मेरी कहो ॥ चरनदास उपदेस बिचारत ही रहो ॥ बेद रूप गु
र होय कि कक था मुनांवई ॥ पंडत को धर रूप कि अर्थ बतांव
ई ॥ गुर होसे समुहेस तो हि चेतन्न करैं ॥ गुरब्रह्मा गुर बिष्नु
होय षा ली भरैं ॥ कलप बिरछ गुरदेव नो रथ सब सरैं ॥ का
म धें न गुर होय पाय सब षो वई ॥ स सियर सम गुर होय न तप
त सब षो वई ॥ सूरज सम गुर होय तिमर सब लेवई ॥ पार
ब्रह्म गुर होय मुकत पद देवई ॥ गुर ही को कर ध्यान नांव गु
र को लयो ॥ आपा दीजै भेट पुज नगुर ही पयो ॥ समझ श्री

सुषदेवू कह्यो मिह मोकरूं ॥ अस्तुत कहीये नजाय ऊसी
सेचरननधरू ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ हरिरूठे कुछ डर नही ॥ तूंबी
देगुरराय ॥ गुरकोंरोसो सीस पर सबविध करै सहाय
५३ ॥ अथ पदवी छंद ॥ गुरकूं तज हरिसेवकमी नहिं की
जियै ॥ बेमुषकूं नहिं भेरनरकमें दीजियै ॥ गुरनिंद क
नहीं मुक्तमार्ग फिर आवई ॥ चौरासीलष भुगत भ्रम हाउ ष
पावई ॥ प्रथमध्रै मुषसमसे कच्चर मोंपरै ॥ तनकी धार
नधारा नटे कत्रर मैं धरै ॥ गुरकूं राम हीं जानक लसम
जानियैं ॥ गुरनरसिंघ ओतार जु बावन मानियैं ॥ गुरकूं पू
रन ज्ञान सुस्वरूप ही ॥ सबकू छ जान यह बात अनूप ही कू
हरिगुर एकाही जान यह निहचै लाइयै ॥ ऊबधा की का
ब्रोक जु बेग बगाइयै ॥ धरम पिता गुर जान जु डिता राषि
यै ॥ लाज सुकच करिका नदी ठतान चियै ॥ मेरायह हनप
देसहिय मैं धारियो ॥ गुरचरनन मनराष सेवा तन गारि
यो ॥ जो गुर किड कैंलाष तो मुष नहीं मोडियै ॥ गुरसों ने
ह लगाय सबनसूं तोडियै ॥ जो सिष्य सांचा होय तो मुष
पादीजियै ॥ चरनदास की सीष समझ कर लीजियै मो
कूं स्वामी सुषदेव यही समझाइया ॥ बेद पुरानन माहिं जो आयै
ही गाइया ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ गुरस्तुत कहा कहसकै ॥ चरन
दास कहा बुध ॥ नको कीआ नकहत हूं ॥ जो वेदे वै सुष
५५ ॥ भक्तो की अस्तुत कियैं तनमन हियो सिराय ॥ कल

कामैं लरहै नहीं ॥ बुषवज्जल होजाय ॥ ४८ ॥ साधौं की सेव
वा करै ॥ चरनदास चित लाय ॥ जनम मरन [illegible] बंधनक
टैं जगतब्याध छुटजाय ॥ ४९ ॥ चौ ॥ ई ॥ जो सन्तौं की सेवा
करै ॥ जम के फंधे नांहीं पडै ॥ जिन साधौं का दरसन न
देषा ॥ ताका जमसों रहा लेषा ॥ जो भक्तौं कूं सीस निवा
वै ॥ तन छुटे अ बहुष नहिं पावै ॥ जो कोई साधु संगमै
रलै ॥ जठर आग में नांही जलै ॥ जो साधौं की अस्तुति
गाय सुनावै ॥ भगत प्रेम रस चावै ॥ जो भक्तौं सूं प्रीत लगा
वै ॥ वह हरि कूं नित चाहता वै ॥ जो भक्तों की चरन धो
पावै ॥ सहज में अबही परम पद पावै ॥ साध संग तवि
भगत नहिं होती ॥ क्या तप सों और क्या नमौं नी ॥ च
रनदास भगतौं की सरनों ॥ कांई जीवन कांई मरनौ ॥
५० ॥ दोहा ॥ भगत वांन निर्मल दिसा संतोषी निरअ
नषैं बास ॥ मन नौंधा विषै ॥ और न दूजी आस ॥ ५१ ॥ चौपई
दयावांन दीनता गुन पूरे ॥ पैज धार नां बचनौं सूं रे ॥ मुकत
कामना फल नहिं चाहैं ॥ रिध सिध और स्वर्ग लौं ना हैं ॥ हा
न लाभ जिन कै नहि टोटा ॥ बैरी मित्र खरा न षोटा ॥ मा
न अपमान कछू नहि तिन के ॥ दुष सुष एक बराबर जि
न के ॥ तुम मान सुमन का कछु नहिं जांनैं ॥ राव रंक नीय ह
चानैं ॥ कंचन कांच बराबर देषै ॥ जग ब्योहार कछू
नहिं लेषै ॥ हार जीत नहि बाद बिबादा सब व्याप रहै

सम्रक आगाध॥ हर्षसो गाउं जिनके नाहिं कावहाल व चोरा
सीप्यारे सबही हिंसा॥ आकास माव नहिं दूजा॥ सब जीव
न की राखैं पूंजा॥ चरनदास सुषदेव बतावै॥ ऐसे लछ
न साध कहावै॥ छं० दोहा॥ नारद मेरी पदवी बडी॥ इनसों
अधिकाय॥ तीन लोक के सुषरजे॥ लीनै हरि अपना
य॥ छं१॥ अनन्य भक्त तिह का मन जो॥ करै सोई चरनदास
चार मुकत बैकुंठ लो॥ सब सूं रहै निरास॥ छं२॥ प्रभु
अपने मुष सों कहो॥ साधू मेरी देह॥ उनके चरनन
की मुझे॥ प्यारी लागे षेह॥ छं३॥ आठ सिध बैं लैं नहीं
कनक कामिनी नाहि॥ मेरे संग लगे रहैं॥ कभी न
छोडैं बांहि॥ छं४॥ सब तज कर मो को भजे॥ मोही सें
ती प्री॥ मैं वा उनन को करजि वौ॥ यही जु मेरी तीत॥ छं५॥
साध हमारी आतमा॥ सब से प्यारे मोहि॥ नारद तिह
चे कीजिये॥ सांच कहत हूं तोहि॥ छं६॥ जिनके का
रन मैं रचो॥ अद्भुत यह संसार॥ उनही कीइ क्या धरूं॥ है
रि जुग में औतार॥ छं७॥ प्रेमी को रिण यार हूं॥ यही हमा
रे सूल॥ च्यार मुक्ति दई ब्याज में॥ देन सकूं अब मूं
ल॥ सरबस दीनो भक्त कूं॥ देष बमारे नेह॥ निरगु
नसों सरगुन भयो॥ धरी पसू की देह॥ छं८॥ मेरे जन
मो में रहैं॥ मैं भक्तन के मांहि॥ मेरे और मेरे संतके
कछू बी अंतर नांहि॥ छं९॥ साध सोवे जहां सोर हूं

भोजनसंग्रहीजेव जोवृहागावेप्रेमसों मैं कुंताली द्वैव
७१ ममभक्ता जितति तफिरे गावत लागा जाव जहां
तहां रिस्या करूं भक्तावछलमेरानांव ७२ भक्त हेम
रोपगधरें जहां धरूंमें हाथ लारेंलागोही फिरूं कव
ऊं तछोड़ूं साथ ७३ मोकूं बसकियो जो चहे भक्तनकी
करसेव जनमेंहोकारमेमिले करूं वकुं तहींहेव ७४
पृथीपाव नहोतहै सबही तीरथआद चरनदासयों
कहतहैं चरनधोंजबसाध ७५ जिनकीमिहमांप्रभु
करै आपनैमुषसेंभाष तिनकीकौनबराबरी वे
दभरतहैंसाष ७६ जिनकीआसाकरहहै स्वर्गमां
हिसबदेव कबहूं दरसनपायहै चरनकंवलकीसे
व ७७ आपने आपनेलोकमें सभीकरैंनवाह साध
कापाछेउकरगाहनकरैं किसराह ७८ धनधनगारे
धनदेसहै धनपुरपट्टनगांव जहांसाधूजनतउप
जियो ताकेबलबलबलजांव ७९ भगतजुआ
वैजगतमें परमारथकेहेत आपतिरैंतारैंपरा संतेह
नजनकेषेत भौसागरसूंतारकर लेजावैंवकुंठीव
साधूषेवटरामके पारमिलावैंपीव ८१ कामक्रोध
मोहिलोभहत गर्बतजेंजोसाध रामनामहिरदेंधरें
रोमरोमआराध ८२ साधमिहमांकहसकेंको भाआ
धकअपार रसनांदोइहजारसूंसेसकहुंजाविहार ८३

अनन्या भक्ता कारी प्रेम सों ॥ जीत लिए गोबिंद ॥ चरनदास सहो बसकि ए ॥
पूरन परमानंद ॥ ८ ॥ तप कीन्हें रस हजार ह ॥ सतसंगत घडी एक ॥ तौ भी सरबर
ना करै ॥ सुकदेव किया बबेक ॥ चौपाई ॥ सतसंगत महिमा बड भाई ॥ सुमरत
बेद पुरानन गाई ॥ मुक्ति बास सिद्ध ॥ क्या होय ही भेवा ॥ साध संग कूं तरसैं देवा ॥ सा
ध संग कूं नारद जानैं ॥ सो व्है पिछ्लो जनम पिछानैं ॥ देखो संगत की अधि
काई ॥ बाल्मीक और स्यो री गाई ॥ अजामेल सतसंगत तरिया ॥ अनगि
नत पापक किये सब जरिया ॥ सतसंगत बहुपतन उधारे ॥ अधम सरीखे मुक्त
पधारे ॥ जात जुलाहा और रैदासा ॥ संगत साध हुवा परगासा ॥ साधों की
संगत मुक्ताई ॥ चरनदास सुकदेव बताई ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ जब जब हर सनरा
मद्दे ॥ तब मांगूं संत संग ॥ चाहूं पदवी भक्ती की ॥ चढै सु तो धा रंग ॥ ९७ ॥ चौ
पाई ॥ कूबा संग देना सैना ताई ॥ बहुतकानी चभ पउ बचायाई ॥ जैसें गैर गैर
की पानी ॥ सुरसुर मिल भयो गंगा रानी ॥ तैसें कांग लोह कूं तारै ॥ ऐसें सं
गत मिल भया पारै ॥ जैसें पारस लोहा लागा ॥ सो व्है कंचन भया सुभागा
देवलती रथ ब न्हुम गधावै ॥ साध संगत बिन तन गत नहीं पावैं ॥ ढाक पात
पांन की साथा ॥ संगत मिल गयो भूपन हाथा ॥ ज्यों गोबिंद संग गाई कुबरी सु
वा के संग गनका उबरी ॥ हरि भक्ता न मैं हीं जैबासा ॥ जन्म जन्म मांगौ चरन
दासा ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ ऊंची पदवी साध की ॥ महिमा कही न जाय ॥ सुरत रमु
न जगा भूपही देख तर हेलजाय ॥ ९९ ॥ राग सारंग ॥ करो नरहरि भक्तन को
संग ॥ उपबि सरैं सुख होहि घनै ही ॥ तत मत न पलटै अंग ॥ होत नेह को मसि
लो संतन सों ॥ नाम पदारथ मंग ॥ जिन्ह पायें सब पातग नासैं ॥ उपजै ज्ञा
न तरंग ॥ जो व्है याकारैं तेरे पर प्रेम पिलावैं भंग ॥ जाको अमलदार सहोहरि को

९२ भक्त

तैनन आवैरंगा ॥ उनके चरनसरनहीं लागो ॥ सेवा करो तुम म
गा ॥ चरनदास तिनके पापूरसन ॥ आस करत है गंग ॥ ९० ॥ दो
हा ॥ बिन हौं नी हरि करसके ॥ हौं नी देह मिटाय ॥ चरनदास
करे नकही ॥ आपा चोह उठाय ॥ ९१ ॥ चौपई ॥ हरि चित वैसो
साची बाता ॥ औरनसूं नहिं टूटै पाता ॥ जो कुछ चाहा सोई उ
नकरई ॥ अब चाहे सो भीम बसरई ॥ अग्र मांहि सिंतिणधा
सबचावै ॥ घट मैं सिगरे सिंध समावै ॥ पावक राषै पानी मांहीं
जलराषै जहां धरती नांही ॥ गिरवर सागर माहि तिरावै ॥ चा
है हल का काठ डुबावै ॥ सुई के नाके हस्ती काटै ॥ मूल पात
बिन लकडी बाटै ॥ नरकी छाती दूध निकासै ॥ उपजावै
वहषे तआकासै ॥ चाहै गूंगो बेद पढावै ॥ अंधे सौ आवैं षो
लदिषावै ॥ सब लायक समरथ गुसांई ॥ चरनदास सु
षदेव बतांई ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ प्रभु चाहे सोई करै ॥ ताकूं टो
कै कौंन ॥ देषदेष अचरज रहा ॥ चरनदास गह्यो मौन ॥
९४ ॥ चौपई ॥ महल पवन पर रचै मुरारी ॥ आभ के मांहि
करै फुलवारी ॥ चाहे बिन बादल बरसावै ॥ बिन सूरज
दिन कर दिषलावै ॥ षाली भरै भरी नि घटावै ॥ जो चाहै
सोई प्रगटावै ॥ पाथर पानी करै बहावै ॥ छिन मैं सग
रे सिंध सुकावै ॥ चाहै जल का थल कर डारै ॥ राई कूं प
रबत करै भारै ॥ रंकन कूं करै छत्रधारी ॥ चाहे भूप न रहै
हवजारी ॥ जो चाहै सो आपही करै ॥ औरन के सिर कूं धरै

चरनदाससुष देहु जनावै ॥ सांचे गुण आद जो गावै ॥ ८ ॥ दोहा
यह असतुत करतार की ॥ जिन रचिया संसार ॥ अस्तुत को
त गा कर रहा ॥ लीला अगम अपार ॥ ९ ॥ चौपई ॥ उपजा
वै पालै बिनसावै ॥ अगनि गिन चंद सूर दरसावै ॥ कोट
क ब्रह्मांड पलक मैं करै ॥ जब चाहे जब कुछ ना रहै ॥ ज
ब फैलै तरु पात अनेका ॥ जब सिमटै जब एक ही
एका ॥ बट के बीज का बेल निहारा ॥ एक बीज का सकु
ल पसारा ॥ तामें बीज अनंत ही देषा ॥ गिनि तूं कहा लौ
रहा न लेषा ॥ औसे हरि माया बिस्तारा ॥ कहत सुनत दे
षत हूं हारा ॥ अपरम पार पार नहीं पाऊं ॥ अस्तुत कर
तामें सुकचाऊं ॥ समझ समझ मन मैं रह जाऊं ॥ चर
नदास हो सीस निवाऊं ॥ १० ॥ दोहा ॥ लीला सिंधु अगाध
गत ॥ मो पै कही न जाय ॥ चरनदास यों कहत हैं ॥ सोच
त गयो हिराय ॥ ११ ॥ चौपई ॥ कोटक ब्रह्मा अस्तुत करई
बेद कहत प्रभु पर परै ही ॥ कोटक सिध भक्त समाधा
जंत्र पडै नहीं रूप अगाधा ॥ कोटक नारद से जस गावै
गुण अगाध कछु अंत न पावै ॥ कोटक ध्यानी ध्यान
लगावै ॥ हरि कैसो कछु रूप न पावै ॥ कोटक ज्ञानी क
थै गियानो ॥ समझ यवो उन कूं नहिं जाना ॥ कोट
क सारद करै बिचारा ॥ सुन्दर रमु ॥ बुध षक कीज ब
कहा अपारा ॥ सुरि नर मुनि वा भेद न लहिया ॥ सो

च॥ सोच बुझ कब कथ कर हिया॥ निरगुन सरगुन तें क
हा न जावै॥ चरनदास सुषदेव सुनावै॥ ९९॥ दो॥ हा॥ चर
नदास वा रूप कै॥ पटतल दियो न जाय॥ राम सरीखे रा
म हैं॥ और बताऊं काह॥ १००॥ चौ॥ ई॥ वा की अस्तुत क
हा बषानूं॥ जैसा वह जैसा नहिं जानूं॥ बुध बिचार कर हा
रा ज्ञाना॥ अनभय की नांहि पहचाना॥ आद न अंत मध्य
नहिं जाका॥ देह नां बांधं पी(?)ठ न आगा॥ हरा पीत सेत नहि
काला॥ नारी पुरष न बूढ बाला॥ रूप न रंग भिहां नहिं मो
टा॥ नया पुराना बडा न छोटा॥ नांव रूप किरया सों न्यारा
नहिं हलका नहिं कहिं भारा॥ बानी चार परै निरबांना॥
का है बिध वह जाइ न जानां॥ पुहप गंध नाद नें जीनां॥ गुर
सुषदेव सुनाइ जु दीनां॥ १०१ दो॥ हा॥ कौं न लषै कौ कहसकै॥
अचरज अलष अभेव॥ ज्ञान ध्यान पहुंचै नहीं॥ निरबिका
र निरलेव॥ १०२ चौ॥ ई॥ सुनत अचंभ भयो कौ आया॥ जाके
बचन रूप नहिं काया॥ निराकार नहीं नांकारा॥ नहिं अ
डोल नहि डोलन हारा॥ पांच तत्त तिरगुन तैं आगे॥ अ
दुत अचरज ध्यान न लागै॥ नहिं परगट नहिं गुपत ठाऊं
समझन कौं नहि षकथ कजाऊं॥ जैसो॥ आगे मैं कह आ
यो॥ फिर समझ्यो वैसो नहिं पायो॥ जो कुछ कहिया सो ही
नांही॥ सो सब देषा वा के मांही॥ सकल सरब दा कां पहचा
नी॥ चरनदास सुषदेव बषानी॥ १०४ दो॥ हा॥ वा मैं गुन अ

नगिनत हैं ॥ अपरमपार अगाध ॥ देषो परगट ही भए ॥ रूपनं
व्है और नाद ॥ १०५ ॥ चौपई ॥ ब्रह्म बीज का भेद बताऊं ॥ भि
न्न भिन्न परगट दिषलाऊं ॥ जो कोई निराबीज कूं बूझै
ता कूं वह निरा नहीं सूझै ॥ जब समझै तब सब गुण मांही
तामैं डाल मूल फल छांई ॥ जैसे पूरन ब्रह्म पिछानौं
निराकार निर्गुन मत जानौं ॥ वै निरगुन सरगुन तैं न्या
रे ॥ निरगुन सगुन नांव विचारे ॥ अकथ कथा कछु कही पि
यु न जाई ॥ जो भाषूं सो ई मूर षाई ॥ कोई कहो सुनौं म
न आनूं ॥ वैसा नांनि हचै कर जानौं ॥ बडे बडे रिष मुन
यं डहमारै ॥ चरनदास सब षोजत हारे ॥ १०६ ॥ दोहा ॥ व
ही निर्गुन सर्गुन वही ॥ वही दोनों सें न्यार ॥ जो या
सै जानां नहीं ॥ सो भ्चा बारम बार ॥ १०७ ॥ अनंत ड
की लीला अनंत ॥ गुण अनंत बहु भाव ॥ कौतग रू
प अनंत है ॥ चरनदास बल जाव ॥ १०८ ॥ नांव भेद किर
या अनंत ॥ अनंत धरे अवतार ॥ बीस चार तिमे अधि
क ॥ कहै सुषदेव विचार ॥ १०९ ॥ राम कृष्ण पूरन कला
चौबीसो मैं होय ॥ निर्गुन सैं सरगुन वही ॥ मतौ कार
न होय ॥ ११० ॥ चौपई ॥ राग ॥ बिलावल ॥ अलष निरंजन
अगम अपार ॥ एक अनेक भेष बहु कीनैं ॥ सुंदरर
चनां रचौ संचार ॥ निर्गुन हरि सरगुन होय षेला ॥ अ
चरज लीला करि विस्तार ॥ आपनौ चरित आप ही देषै

ऐसो अद्भुत को आधार ॥ रूप बराह प्रकार हिरना-
छि हु ॥ धरती ल्याए ताहि संघार ॥ जग्य पुरष और दत्ता-
त्रेयी ॥ और रस्त्री बड़ीय तिहां बिचार सनत्कुंवार रिषभदे-
व पृथु बर ॥ प्रथम बच कूंरम अवतार ॥ हयग्रीवं और हंस
रूपही ॥ महा बली नर सिंघ ब लधार हरी प्रगट होय गज-
जहि छुटाये ॥ बावन कल सरस गुन सार ॥ मन्वंतर
धन्वंतर प्रगटे ॥ परसराम रामचंद मुरार ॥ पूरन कला
ईसमनि पुरका ॥ कहुं परगट है प्र कंस पछार ॥ बे-
दब्यास और बोध कलकी ॥ ए भए सब चौबीस अव-
तार ॥ जुग जुग मोहि आप प्रगट होय ॥ उद्दलन
संत नरषवार ॥ चरनदास सुखदेव स्याम की ॥ बाको-
गत को वार न पार ॥ १११ ॥ दोहा ॥ एक एक सो आगरे ॥
महिमा कही जाय ॥ अनंतरंगी महल में ॥ आपही बै-
ठे आय ॥ ११२ ॥ चौपई ॥ अनंतरंगी ले महल बनाये ॥ ता मे
आप राम ही आए ॥ नाना रूप गुन न्यारे न्यारे ॥ गिणत सा-
दा मारा आपत हारे ॥ मंदल रूप बजत छबि सोहे ॥ जहां ता-
तु मे राम न मोहे ॥ हरे सेत पीत और लाले ॥ पिस्ताबी ऊदे
और काले ॥ बेलदार लहरा छबि बूटे ॥ बीच मे तारे ॥
और ति कोंटे ॥ बूंद बूंट और गंदे दारे ॥ नाना चित्र रचा-
य संवारे ॥ रंगा रंग बज बिचित्र कारी ॥ कहुं कहुं लो-
मो बुध हारी ॥ दोय आए और पुन चौपाई ॥ बजपा बु

षकै हे न जायु ॥ बबर गोरष सीनां नो ॥ कीटपतं
गधिर चरजा नां ॥ जल मैं मीन बक्र परकारे ॥ चरन
दास सुषदेव बिचारे ॥१३॥ दोहा ॥ थावर जंगम चर अ
चर बहु [illegible] बोली भांति ॥ राजस तामस सात्वी बहु
साधीन बहु कांत ॥१४॥ बानर नर असुरा सुरा ॥ जछ
गण गंध्रप प्रेत ॥ सब ही महल बराबरी सब ही से
ती हेत ॥१५॥ चौपाई ॥ षिडकी नैं नच्यासो बोलैं ॥ मु
ष द्वारे नांनां बिध बोलैं ॥ बहु तभासकी नो नाबा
नी ॥ चतुरकूं उ नेम्नाभोरस्यानी ॥ कहीं नाबोल कू
हीं बोलन आवै ॥ पैस बमहल न षू ह इर सा वै
छाति छाति हरिहीं कूं जानें ॥ भेद न न बुवन मैं
ताहि पिछानें ॥ का या के सर जानी जानैं ॥ दे
षगा आभि रूप बषानैं ॥ देही हूर गी तामैं गा
यो ॥ औ कैरजी वबो लहि बलायो ॥ कायामंद
ल आपरमायो ॥ ताते राम नाम धरवायो ॥ दे
ह संजोष राम कहलायो ॥ चरनदास सुषदे
व बतायो ॥१६॥ दोहा ॥ सूरज ची टी आद दे ॥
लघु दीरघ के मांहि ॥ सब मैं पोई आतमा ॥
बाहर कोई नांहि ॥१७॥ छोटे नाउं मैं करै ॥ छोटा
ही परगास ॥ बडे जु नाउं मैं करै जेता होय तु का
स ॥१८॥ ज्ञानवंत कूं भेदियो ॥ दीपक को दिष्टांत

नोवहसमुजैचावसोंमिटैतिमरओरमांत ॥११९॥ ऐसा
हीहैपिंडमे ॥ जैसैंहीब्रह्मंड ॥ भीतरबाहिरएकरहियो ॥
सातदीपनौषंड ॥१२०॥ चौ० ॥ आपलषैतैवाकूं ॥
पावै ॥ जोपैसतगुरभेदबतावै ॥ ज्ञानदिष्टसैंतीरद
रसावै ॥ आपामिटैब्रह्मठहरावै ॥ ज्ञाताज्ञानज्ञेयजहांनां
ही ॥ ध्याताध्यानध्येहमिटजाई ॥ जबहोएकदूसरोनांसा ॥
बंधमुक्तकेरहैनसांसे ॥ मृतगअवस्थाजीवतआवै ॥ कर्म
रहितअस्थिरगतपावै ॥ तबकोईमिंतरबैरीनांहीं पाप
पुन्यकीपरैनछांई ॥ हरषसोगसमहोजादोऊ ॥ रिछ्याकरै
कमारेकोऊ ॥ कोऊहायमैंजोजनदैजा ॥ कोऊछबीनक
रथोंहींलेजा ॥ दोनोंएकूबराबरथाकै ॥ जगब्योहारकछू
नहिंजाकै हरिबिनऔरइच्छानकोई ॥ तिनकैइच्छा
रहीनदोई ॥ ज्ञानदिसाऐसैंकरगाई ॥ चरनदाससुषदे
वबताई ॥१२१॥ दो० ॥ ज्ञानदिसाआवनकठिन ॥ बि
रलाजानैंकोय ॥ ज्ञानदिसाजबजानिये ॥ जीवतमृतकहो
य ॥१२२॥ चौ० ॥ वाचकज्ञानीबहुतकदेषे ॥ लषबीनी
कोईलेषेलेषे ॥ ज्ञानीबिगरेबिषइच्छाई ॥ कथैएकऔ
रचालैंदोई ॥ बुरेकर्मऔगुणचितलावै ॥ भलेकर्म
गुणसबबिसरावै ॥ बिषैबासनाकेरंगराते ॥ कूठ
कपटछलबलमधमाते ॥ इंद्रीबसमनहाथन
आवै ॥ पापकरनसोनांहिंडरावै ॥ ताकौथैंऔरबाद

बटावै ॥ रहनगाह का भेद न पावै ॥ बुसहत का आरन
भारी ॥ चरनदास सुषदेव बिचारी ॥१२३॥ दोहा ॥ तुलसी
सों लख न लियें ॥ भक्त सहत है ग्यान ॥ ग्यान दिसा ज
ब जोइ है करै आतमा ध्यान ॥१२४॥ भक्ति दिसा अबकु
हं तू ॥ बिसरै आपा आय ॥ चरनदास यों कहत हैं ॥ छूटै
तीनौं ताप ॥१२५॥ अथ पद्धरी छंद ॥ नौंना भक्ति स
भाल आंग जौं जानले ॥ सखन चितवन नौं रपूजा
करै ॥ प्रभु सों प्रीत लगाय सुरन चरनन धरै ॥ होय क
रदास मही भाव साधसंगत रलै ॥ भक्तन की कर सै
व यही मत है भलो ॥ आपा आरपन देवधीरज न रज डि
गेगा हो ॥ छिमा सी लसंतो अघ दया धरैं ॥ यह जो भै नै
कहम बेद का फूल है ॥ जोग ग्यान बैराग सबन का
मूल है ॥ प्रेम भक्ति का तातपात तीनों न मैं ॥ अर्थ
धर्म काम मोक्ष सकल ता मैं बसै ॥ जो राषै मन माहि
बबेक बिचार सों ॥ पावै पद निर्बान बचै नग भार सो
कहै गुरु सुषदेव मया के भाव सों ॥ चरनदास सा हो य
सुनैं बकु चाव सों ॥१२६॥ रागसोरठा ॥ वा गारी भमा सावु
री ॥ साधो नौधा भक्ति करे रे ॥ कलजुग मैं यह बपडा
रथ ॥ गह गह ता हित रोरे ॥ जे जे यासों भए सिरोमन
तिनको नांव सुनाऊं ॥ बटैक या बिस्तार कहूं तो ॥ पा

तैसूं प्रेम गाऊं। जन प्रहलाद तरो सुमरन तैं॥ बंदन सों अक्रू
र। चरन कवल की सेवा सेती॥ लक्ष्मी रहत हजूर। चं
दन चरच तरू प्रथू राजा॥ उतरो भौजल पार॥ बलरा
जा तन अरपन की नौं। सखा रहे हरि धारा। परम दास
हनुमंत बड़ो॥ उत्तम पदवी पाई। सषी सुभाव तरो है
अर्जुन ता की सिफ मा गाई॥ मुक्त भयो है परीक्षत
राजा। सुन भागोत पुरानां॥ श्री सुषदेव मुनी से
ग बकता। कुपे रूप भवा नां। ज्ञान जोग बैराग सब न
सों॥ प्रेम प्रीत है न्यारी। चरनदास ने गुर किरपा सों ह्यां ची
बात बिचारी॥ ९७॥ दोहा॥ नवों अंग के साधि तैं उपजे
प्रेम अनूप॥ रनजीता यौं जानियो सब धर्म का भूप॥
चौपई॥ सब मत अधिक प्रेम बतावै॥ जोग जुग तें
सूं बुड़ा दिषावै॥ प्रेम सूं उपजै बैराग॥ पे मेंहीं सूं उ
पजै मन त्यागा॥ प्रेम भक्ति सूं उपजै ज्ञाना॥ होय चौ
दनों मिटन आज्ञानां॥ दुरलभ प्रेम जु हाथ न आवै
हरि किरपा करि दे तौं पावै॥ प्रेम प्रीत के बस भ
गवानां॥ सकल शास्त्र कि योब षाना॥ किसी न ति
हि रा प्रेम जु जागे॥ नेह रिदरस तरहै जु आगे॥ प्रेम ही
सूं इश्क उपजावै॥ निरगुन सरगुन हे हो हो आवै॥
सकल सिरोमन प्रेम ही जानो। चरनदास हि है चै आनो

१२७ दो प्रेमबराबरजोगना। प्रेमबराबरग्यान। प्रेमभ
क्तिबिनसाधबो सबही थोथाध्यान॥१२८॥ प्रेमछुटा
वैजगतकूं॥ प्रेममिलावैराम॥ प्रेमकरैगत औरही॥ ले
पुहचैहरिधाम॥१२९॥ चौपई॥ वहकरैकागसूंहंसा॥ ए
करहैपियाकासंसा॥ वहजागतबरतकुलषोवै॥ औरबी
जबिरहकाबोवै॥ जोप्रेमरतनकचितआवै॥ वहआग
नसबेनसावै॥ प्रेमलताजबलहरै। मनबिनाजोगहीठ
हरै॥ कोईचतुरषिलारीषेलै॥ वहप्रेमपिलाकेलै धर
पैसीसनराषै॥ सोईप्रेमपियालाचाषै तनमनसंजो
षोगाई॥ वहरहैध्यानलौलाई॥ वहपुहुंचैहरिकेपासा
यौंकहैंचरनहीदासा॥१३०॥ दोहा॥ प्रेमीजनहरिआप
हीआपानिकसेनांहि। गुरसुषदेवदिषाईदई सम
झदेषमनमांहि।१३१॥ हिरदेमांहीप्रेमजो। नैनोंजल
कैआय॥ सोईछकाहरिरसपगा॥ वायगापरसोधाय
थर। गदगदबानीकंठमै॥ आसूटपकैनैन॥ वहतोबि
रहनराममकी॥ तरफतहैदिनरैन॥१३२॥ हायहायहरिक
बमिलै। छातीफाटीजा॥ मोसादिनकबहोयगा॥ द
रसनकरैंअघाय॥१३४॥ बिनदरसनकलनापरै॥ म
नवाधरैनधीर॥ चरनदासकीस्यामबिन॥ कोंनमि
टावैपीर॥१३५॥ पीवबिनातोजीवना॥ जोगमैंभारी
जोनपियामिलैतोजीवना॥ नहींतोछूटैप्रान॥१३६॥

६१

मुषपियारोसूं कैं आधर आवै धरी उदास ॥ आठहु निक
सैं दुष भारी गहर लेह सास १३७ ॥ वह बिरहन बोरी
भई ॥ जानत ना कोई भेद ॥ आमबरे हिय राज रे ॥ नषक
ले जे छेद १३८ ॥ आपु ने बस बूह मों रही ॥ फंसी बि
रहे जाल ॥ चरनदास रोवत रहे ॥ सुमर सुम रगुन
ष्याल १३९ ॥ बातन कूं बिरहा लगो ॥ ज्यों घुन लागो दार ॥
दिन दिन पीरी होत है पिया न बूझै सार १४० ॥ वे नहीं बूझे
सार ही ॥ बिरहन को नह बाह ॥ जब सुध आवै लाल की
चुभत कलेजे मांउ ४१ ॥ या वृ चुड़ोगे को सुत चहो ॥ वह तो
पी की दास ॥ पिय के रंग राती रहै ॥ जग सूं होय उदास १४२ ॥
पापी कर तैं दिन गया ॥ रैन गई पिय ध्यान ॥ बिरहन के संह
जैसु धै ॥ भक्त जोग और ज्ञान १४३ ॥ बिरहन के एकार समबि
न ॥ और न कोई मीत ॥ आठ पहर सागे घरी ॥ पिया मिल
न की चीत १४४ ॥ जाप करै तो पीव को ॥ ध्यान करै तो पी
व पी बिरहन का जी वहै ॥ जो बिरहन का पीवार ४५ ॥ अ
थ चारौं जुग बर्नतें ॥ कुंडलिया ॥ सतजुग सांचा बोलते ॥ प
रमहंस को ध्यान ॥ सत वादी सत राषते ॥ सत नहीं दे ते
जान ॥ सत नहीं देते जान पुन्न जो पै तज देई ॥ निहचै
होती मुकत दरस तै राम सनेही ॥ सुषदेव कही चरनदा
स सूं अब ही सत जुग जान ॥ सत बोलो सत सूं रहो स
त की गाहिये आन १ कुंडलिया ॥ त्रेता में तप साधते ॥ आ

15

मनसंजधार पांचौं इंद्री रोकते ॥ जबु मन जा म्रहार जु
बमन जा त्महार मैं थ्र अजान हद मैं धर ते ॥ कै को पनौ
ही इष्ट ध्यान ताही को करते ॥ आपविसर्जन होय मुक
त लिये कर पाते ॥ चरनदास सुषदेव तपस्या चाल दिषाते
र ॥ कुंडलिया ॥ दायुर पूजा बंदना ॥ प्रेम सहत जो होय ॥ १ ॥
क्हाराजसी मानसी ॥ पूजा कहिये दोय ॥ पूजा कहि
ये दोय जैसी जा के मन भावु ॥ धारै नम आचार कौं तनौं
चित्त डुलावै ॥ हित कर पूजा कीजिये आप कीय ही मे
व ॥ चरनदास निहचै करै ॥ कहिया गुरसुषदेव ३ ॥ कुं
डलिया ॥ कलजुग हरिगुन गाइये ॥ सुण बादही सा
र ॥ भजन न करै मन मगन होय ॥ मेमौ रसु क चति
वार ॥ भे औरसु कचति वार जात कुलगर ब बहा
वे ॥ साजबाज लै संग राम कूं गाय रिझावै ॥ कथा
कीर्तनसौं तिरै ॥ कलजुग ही के मांहि ॥ सुषदेव कहै
चरनदास संतारे गहहग हबांहि ४ ॥ इतिश्री घारोजंग
संपूर्ण ॥ अथ श्री सुषदेव जी के दास चरनदास जी कृ
16 त नाम का अंग बनीते ॥ दोहा ॥ परणाम श्री सुषदेव
कूं ॥ बानी कहूं अगाध ॥ जिह मांगा कै नाम की ॥ स
ब मिल सुनियो साध १ ॥ ज्यो कीत्यौं ही कहत हूं ॥ क
हन सपू मेद ॥ तिहचै आवे नाम की ॥ कहै सब ही
वेद २ ॥ जम ममर न जम डंड के ॥ गर भवास के अस

९८
नकं०

नाम रटैं सब ही छुटैं । जेपको राशी पाप ३ कईबार जो ज
ज्ञ करै जोग करै चित लाय । चरनदास कहै नाम बिन
सबी अफल है जाय ॥ ४ ॥ आठ धात मैं गुन नहीं ॥ जो पा
रस के मांहि । तप तीरथ ब्रत साधनां । राम नाम सम
नांहि ॥ ५ ॥ जैसें जल का सेवनां ॥ औरनो भी का धरम
अन्न बिनां भुस कूटनां ॥ नाम बिना यौं कर्म ॥ ६ ॥ छोडै
सब ही बासनां ॥ होय बैठै निहकाम ॥ चरन कंवल मे
चित धरै सुमरै राम ही राम ॥ ७ ॥ ऐसा हो जब संत होय तब
रीझे करतार । दरसन दे अपना करै ॥ कभी न छोडै अ
लार ॥ ८ ॥ चार वेद किये बासनैं ॥ अर्थ बिचार बिचार
तामैं निकसी नक ही । राम नाम ततसार ॥ ९ ॥ जिन कहि
या सुखदेव कूं । सुनि यां प्रेम प्रीतीत ॥ तिन जग मैं परग
ट किया । नेमी चहिये रीत ॥ १० ॥ ब्रह्महित्या [illegible] ना
र की । बाल कहत्या होय । राम नाम अनेम तबसे ॥ सब
कूं डारे खोय ॥ ११ ॥ हिए आ[illegible]त जगडुप टरै ॥ कंठ आय आ
घ जाय । मुखसों बोलै आय कर । ताकी कौन चलाय ॥ १२ ॥
ऐसा है हरि नाम ही मोहि राम की सों ॥ जा कूं होय बे
परवाही ॥ जो समझे त्यां लों ॥ १३ ॥ बिन समझे या लगन
से ॥ समझ जये हो मुक्ता । चरनदास यों कहत है ॥ जो को
ई जानै जुक्ता ॥ १४ ॥ नाम ही ले जल पीजिये ॥ नाम ही ले
कर षाय ॥ नाम ही ले कर बैठिये ॥ नाम ही ले चल राह

१५ ॥ जबलगजागैरामकूं ॥ तनमनसूंयुंहीचीत चर
नदासयोंकहतहैं ॥ हरिबिनऔरनमीत ॥ १६ ॥ तेरा तो
कोईहैनहीं ॥ मातपितासुनार तातैंसुमरोरामकूं ॥ ए
मनबारमबार ॥ १७ ॥ जिहकारननटकतफिरे ॥ घरघर
करतसलाम ॥ तेरेतोवेहैंनहीं ॥ एमनसुमरोराम जी
वतस्वारथहीलं ॥ मुयेदेहजराय ॥ एमनसुमरोराम
कूं ॥ धोषेकाहिपराय ॥ १८ ॥ हाथीघोड़ेधनघुना ॥ चंद
मुषीबडनार ॥ नामबिनाजमलोकमें ॥ पावेदुषअ
पार ॥ २० ॥ जबलगजीवैरामकहु ॥ रामहीसेतीनेह ॥ जी
वमिलेगेरामममें ॥ पडीरहैगीदेह ॥ २१ ॥ अचरनसाधु
ननामका ॥ भगतजोगकाजीव ॥ जैसेंइधन माय के
मथकरकाढाघीव ॥ २२ ॥ कुंडलिआ ॥ आठमाससुमुषसुं
जपै ॥ सोलहमांसकंठजाप ॥ बतीसमासहिरदेपे ॥
तनमेंरहैनयाप ॥ तनमेंरहेनपापभगतिकाउपजैपो ॥
धा ॥ मनस्थकआवेजहांआपपरबलकहियेजोधा ॥ सु
षदेवकहीचरनदाससूंयुहीभेदतत्सार ॥ बडु
रुनआवेनगमैंताकाकरूंबिचार ॥ २३ ॥ दोहा ॥ पा
चकरसजयनालसूं ॥ रागरगबोलेराम ॥ देहजीवनि
जमनतहे पुंहचेहरिकेधाम ॥ २४ ॥ त्रिकुटीमेंजपरा
मकूं ॥ जहांवजालाहोय ॥ सांसमाहिकेजयेतें ॥ उ
वधारहैनकोय ॥ २५ ॥ गगनमंडलमेंजापकर ॥ जिते

९९ हैदसवांद्वार ॥ चरनदास यों कहत हैं ॥ पूछ चैद रिदै बार ॥
१८ ॥ नासा अग्र गैर जाप करि ॥ दिपै नूर अगाध ॥ बकुत का
ग्र चरन औरखुलै ॥ चरनदास कहै साध ॥ १९ ॥ नाम उ
बाकार मा मसं गगन मांहि ले जाय ॥ जहां होय य प
रगास ही सुषदेव दिया बताय ॥ २० ॥ मन नहीं मन
में जाप कर ॥ दरपन उज्जल होय ॥ दरस न होवै
राम का ॥ तिमर जाय सब षोय ॥ २१ ॥ कूंक कूंक कर सा
म जप छुटै सात और पांच ॥ जासौं मत उह रर है
चरनदास कहै सांच ॥ २२ ॥ सुरत मांहि जो जप करै ॥
तन सूं न्यारा जौंन ॥ मिले सबु ता नंद मैं ॥ गहै रहै
जो मौन ॥ २३ ॥ सकल सरोमन नाम है ॥ सुबुध मं
न के मांहि ॥ आनन्य मन कै वहीं जानियें ॥ सुम
रन भूलै नांहि ॥ २४ ॥ आन धरम मानै नहीं ॥ आन
देव नहीं ध्यान ॥ औसे मन तानी नन्य कौ ॥ कोई
पावै जोन ॥ पतिब्रती वहीं जानियें ॥ आ लोक रे
अंग ॥ पिय आपनें के रंग रते ॥ औरन सूं बेढंग ॥ २
५ ॥ आपनें पिय कूं सेइये ॥ आन न पुरष तज देह ॥ प
घर नेह निवारियें ॥ रहियें आपनें ग्रह ॥ रूप ॥ औ सा
कारी पीव की ॥ रहै पिया के संग ॥ तन मन सें सेवा
करै ॥ और न दूजो रंग ॥ २६ ॥ रंग होय तो पीव को ॥
आन पुरष बिष रूप ॥ काहि बुरी यर धर्म की ॥ आय

तीनजुधूप ३७ आपनैंघरकादुष भला परघर
कासुषछार ऐसैंजानैंकुलबधू सोसतबृतीनार
३८ पतिकीओरनिहारियै औरनसेंकहाकाम
सभैदेवता छोडकर जपियैहरिकानाम ३९ ष
समतुम्हारेरामहै इतव्रितजषमतमार चरन
दासयौंकहततहै यहीधारनाधार ४० यहसिर
निवैतोरामकूं नांहीगिरयोंटूट आनदेवन
हीपरसियै यहतनजावोछूट ४१ पतिबतीकोइ
तगहो बिबचारनअंगयार पतिपावैसुबडभागसै
पावैमुषअपार ४२ जबतूजानैपीवहीवहआप
नैंकरलेह परमधाममेंराषकर बांहपकरसुषदे
ह ४३ यहीसिषायेंदेतहूं धारोहिरदेमांहि ऐसा
पैधाबोइयोताकीबैठोछांहि ४४ सतबादीसतसूं
रहोय सतहीमुषसूंबोल एकओरहरिनामरष
एकओरजगतोल ४५ सभीबिचारेंकहतहूं भ
क्तकरोनिहकाम कोटतपस्यायहीहैमुषसूंकहि
येराम ४६ रामनाममुषसकहो रामनामसुनकां
न रोमरोमहरिकूंरटो ऐसीगाहियेबान ४७ वि
द्यामांहीबादहै तपकेमांहीरिध रामनाममैं
मुक्तहै जोगमांहियोंसिध ४८ तातैंत्योगोआस
ना रोषेरामहीनाम कोटबंधछुटजांहिगे पुह

चे हरि के धाम ॥४८॥ राम नाम मैं सब है ॥ रिद्धि सिद्धि औ
मोक्ष औ सादृश्य संतारिये ॥ चरनदास की यो छ ॥५०॥
नाका कीया सब बना सातद्वीप नौ खंड ॥ चरनदास यों
कहत है ॥ तीनलोक ब्रह्मंड ॥५१॥ मैं तें सब बुध कि
यो ॥ नाना विध सुख दीन ॥ ते वाकूं जानें न हीं ॥ नाइ
न कबहूं लीन ॥५२॥ आब के औसर फिर बनै ना ॥ पाई
मनुषा देह ॥ चरनदास यों कहत है ॥ राम नाम ही लेह
॥५३॥ राग केदारा ॥ वा बिलावल ॥ सुनो साई नाम की
महिमा ॥ मुक्त सदा सिध आगे ॥ बसत है तिह मांहि
मी बालक सो वन को बासी ॥ कियो घोर जिन पाप ॥ भयो
है सब रिष सिरोमन ॥ जपै उलट ही जाप ॥ गन का सी अ
ति महापापी ॥ सो पट आवत कीर ॥ नाम के परताप सेती कि
यो हरि पुर सीर ॥ आजामेल से पतत कासी ॥ वेसा सोर न
की न चट बिवाने गयो सुरपुर ॥ नाम सुत हित लीन ॥ औ
र बहुतै पतत तारे ॥ गिनें का पै जांहि ॥ दान जप तप जो
ग संजम ॥ नाम सम तुल नांहि ॥५४॥ ब्यास नारद से औ
ब्रह्मादिक ॥ रटत जाकूं सेस ॥ गुरु सुखदेव नाम
को ॥ चरनदास कूं उपदेस ॥५४॥ कबित्त ॥ नाम के
प्रताप नंदलाल ममाय नेये प्रभु नाम कूं प्रताप सुत
नरथ को कहा यो है ॥ नाम के प्रताप ॥ पै जरा बी बृह
लाद जू की नाम के प्रताप दौरे हारका सूधायो है ॥

नामकेप्रतापकीनमिहामामोपैकहीजातनाम
केप्रतापसबसंतनसहायोहै॥सोईनामबासजाब
जासलगोचरनदाससोईनामचारबेदबिम
लबिमलगायोहै॥५५॥कबित्त॥नामकेप्रतापसो
रीसुरनतैसरसकोकरीनामकेप्रतापआधम लोक
कूंपठायोहै नामकेप्रतापअजामेलकूंबिवाण
आयेनामकेप्रतापगाजग्राहसूंछुटायोहै नाम
केप्रतापसबदीननकोदुषहरैनामकोप्रतापप्र
सुषदेवजाडिटायोहै सोनामबासजाबजासलगो
चरनदाससोईनामचारबेदबिमलबिमल
गायोहै ५६ दो नामजुगामिहमाकोपिक
मोपैकहीनजाय पांचप्रतआबकहतहूंजा
कूंसुनचितलाय ५७ जोगतपस्यानेमकूंसा
नबिगाडुनपांच जीवतद्वेदेआमनमें मु
येनर्कहेंआंच ५८ कामक्रोधमोहलोभसेऔरपांचवां
गर्ब राजकोरवसुधाबिषै इनबसकीनेसबै ५९ काम
बलीबरननकार्जिनमारेबलवंत जाकोबकसीनारहै
जोहैगुनीमहंत ६० रागसोरठ साधोनारसबलरेनाई
नहींमानैरामदुहाई बांदरज्यौंपकरनचावै हरिजीसूंछे
रछुटावै दयाधर्मसबषोवै जबनैनकाजलनरजोवै

जिन का चित चोरउ टी। तिन का जगत धूधू कीडी। ति
नसब ही सरब सघोख्या। नरसींस पुकार कर रोया। जु
जनम पदारथ खोनें। सम ही का टीका दीनें। दो
नैं मुख सों घाया। फिर फिर कै गर्भ दिषा या। का
म कटक मैं सूरी। बहु संतन के हिये पूरी। बडे
बडे जोधा मारे। बकतन के सूरप छारे। गुरसुख देव
बनावै। बटमारन तोहि दिखावै। चरनदास यह
जानै। तुम छलबल कला पिछानैं। दीपग सो र
ठ। नारी नेह रिसुम नसूषे। रजुता परकामुंड तचु
डत। नैनन कटाक्ष नमो है। राती चूनर चटक मटकाले। नु
पनका जल सांधे। मुडमुसकावै मधुरी बानी। प्यार प्री
त कर बांधे। बकतन को उन जो गछुटाये। बकतन के
तप छीनें। बकतन की उनन का बिगारी अंग बिबेरस
दीनें। बंडवाक रख बकुनां चन चाये। फंदा मे झूलगाये।
या तैं सावधान होर हीयो। मैं तुम कूं समझायो॥ गुर सुखदेव बतावैं सा
धौ मैं न ह चेठगनी जानौ॥ चरनदास कहैं हाथ नाओ वो नी
के बांह पिछानौ॥ ६ ॥ राग सोरठ॥ साधो प्रवियास डरीये। या के
प्रसप्रस के कीये॥ जीवत नरक मैं परिये॥ गोतम घरनी
सुंदर सुन कर॥ इंद्र आसन तज आयो॥ जोगत मू
ई जगत मई जगत मैं जानी॥ नलोक कबक का लगाये

मीं गरिखुबनमें तप कीनों ॥ सुरपत देष डराये ॥ रंभा ने
जहरोस तें जाको ॥ सबही तें असिराये ॥ देषत है ब्रतहर जो हं
ए ॥ नारी देष लुभाये ॥ ताको फल ऐसो ही पायो ॥ भाजन हूं कु
जसमु आये ॥ चरनदास सुषदेव गुरु नें ॥ देउ पद से सब चा
पे ॥ जती सती कोइ हाथ न आये ॥ कामी पकर न चाये
६३ ॥ रागसोरठ ॥ अरे नर परनारी मत तक रे ॥ जिन जिन को
तको क्या पनकी ॥ बकुतन कूं गाई मषरे ॥ दृष्ट आवाको पा
तक टइया ॥ काल आगन की जानों ॥ सिंघ मुखा रै बि
ष कारे को ॥ ऐसें ताहि पिछानों ॥ यांसन नरक पीना
ति दुषदाई ॥ चौरासी भरमावे ॥ जनम जनम कूं दाग ल
गावै ॥ हरि गुरु सुरत छुटावै ॥ जामें फिर फिर मिल माये
वे ॥ देषे तन मन न मेला ॥ चरनदास सुषदेव चितावें ॥ सुम
रो राम सुहेला ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ नरनारी सब चेतियो दी
नो प्रगट दिषाय पुरतिय पर पुरुष हो भोग नरक कूं
प जाय ६५ परनारी के कामनी दोनों बुरी बलाय घर
बाहर की नागज्यो देषें ही षजलाय ६६ चुटका मद
का सब छोड दे देही रूप बिगार देषन कोइ री झे है
नो हे षेल गवार ६७ यही टाल है जतन की ले भैन से
स्तर काम आठ अंग है काम के ता सं रहा निह काम ६८
काम कान में आय कर फिर आवत है नैन बकुरहि ए मै

आपुकर लगैबऊतदुषदैन हई चौ ई व्हहकामबुरार
भाई सबदेवैतनबोराई पचोमैंनाककटावै वह
जूतीमारदिलावै मुहकालगधेचढावै बऊलोगपत
मासेआवै जिउकाज्योंडोलैकूंता सबहीकेमन
सूकता कोईनीकेमुषनहिंबोलै सरमंदाजगमेडो
लै वुहजीवतनरकमंझारी सुनचेतोनरऔर
नारी कामअंधातजदीजै सतसंगनहीकरलीजै कहै
चरनहींदासा हरिजनकनमेंकरबासा ७० दो न
नमननजारैकामही चितकरैडावांडोल धुरमंसार
मसबओयके रहैआपहियाषोल ७१ चौपई य
हदयाछिमांकूंमारै जतसतकूंपकडपछारै सु
चनैमकूंहरकढावै मुषऊपरधूरउडावै अगम्नी
तरमिहमुषोवै पापोंकीमालापोवै वहधीरजन
नांहीराषै वुहमुषसूंझूठीभाषै वहचालचलैवि
परीता करैबिषैभोगकीचीता कामबलीजहां
आवै औरबऊतकऔगुनलावै यहमैनषो
टकापूरा कोईजानैगुरमुषसूरा साधभक्तावु
हीगुनिया जिनकामदुष्टकूंहनिया चेतकाहै
मुषदेवा सबचरनदाससुनलेवा ७२ दो सुन
केजोचितमैंधरै फेरचलैवुहचाल षंडापकडैसी

लका कांमहनैं ततकाल ७३ क्रोध महा चंडाल है जानतहै सब कोय जाके अंग बरनन करूं सुनियो सुरत समोय ७४ रा मैं क्रोध भूत के चरित सुनाऊं भिन्न भिन्न परगट दिषलाऊं क्रोध भूत जब ता पर आवै तन मन की सब सुध बिसरावै नैंन लाल बदन सब कारे रोम रोम सब आये हत्यारे महा चंडाल यौ अति घोरी अति बिपरीत बुध करै औरी अपने हाथ यकूं मारै अपने कपडे आप ही फाडै मुह डे फाग मरोडे हाथा कहै बहकती फूहड बाता हांफे बहुत आप कं गाली जैवंत आवै पट कौ पाली कबहूं सस्तर मारन लागै कबहूं कूआ पडनै भागै भली कहै ताहि नौ गसु नावै बुरै न लेपर ई दच लावै सबल देष सीला हो जावै निबल देष बहु दुंद मचावै या का जातन कारोमन न आवै चरनदास सुषदेव बतावै ७५ दो । जिह घट आवै धम सों करै बकुत ही षार पत षोवै बुध कंहनैं महापुरष कहा नार चौ ई वंह बुध भिष्ट ल करडारै वह मार ही मार पुकारै वह सब तन हिंसा छावै कहीं दया न रहनैं पावै वह गुरसों बोलै बैडा साधें सूं डोलै औंडा वह हरिसूं नेह छुटावै वह नरक मांहि ले जावै वह आतम घाती जानौं वह महा मूढ पहचानों सो टीं की मार दिलौवै क बहूं कै सीस कटावै वह नीच कमी एं कहिये औसे सूं डरता रहिये वह निकट न आवन दीजै औ रहि छिमां कैं काम रलीजै जब छिमां आ

छिमांआपकियाघांतां॥जबसबहीक्रोधहिराना॥कहैंगुरसुषदेववि-
षिलारी॥सुनचरनदासउपगारी॥७७॥दो०॥क्रोधअंगपूरोकियो
कह्यंमोहकोअंग॥जाहिलगेदुषदेघनांकबहूंनछोडैसंग॥७८॥मा
यामोहबिछाइयाजालसंसारसंसार॥आयआयतामैंफसेबहुतपु
रषबहुनार॥७९॥फसेआयकरचावसूंलैमगयानहिंकोय॥चर
नदासयौंकहतहैयहुतायेकहाहोय॥८०॥छूटसकैनहीजालसूंमि
रगाज्यौंउकलाय॥कूदकूदनिकसोचहैज्यौंज्यौंउरझतजाय॥८१॥मो
हसहतसमजानिये॥मषीसमझियुजांन॥लालचलागेजितफसे॥सी-
सधुनैअज्ञांन॥८२॥बंदीषांनौंनवनहै॥सबदिनधंधेजाय॥मोहछुटावै
रांमसूं॥डारैनरकमंजाय॥८३॥लषचौरासीजौंनमैंफिरवहनरमैंजाय॥
कासैंनिकसैकटनसूंकंबहूंअकओसरपाय॥८४॥चौ०॥तिरया
मोहमहाबलदाई॥मोहसंतानसदादुषदाई॥मोहकुटंबऔरमाईबं
धा॥समझैनहींमूढमतअंधा॥देवभूतजिहकारनधावै॥ठगचोरीकर
षोटकमावै॥बस्तरभूषनबाहनमोहा॥सबमिलकियाजीवसूंद्रोहा॥द
रबलालओरहीरामोती॥सबमिलमोहलगावैंगोती॥मोहमहलधर
तीओरगाऊं॥बडामोहजोअपनांनांऊं॥जामैफसेरंकओरराजा॥ति
हकारनधंधादुषसाजा॥परकाजैंबहुतेदुषपाया॥अपनांसबहीभू
लगंवाया॥बडेबडेबेदउठायेसबही॥भूलेध्यानरामकाजपही॥जोते
मोहसूरमांकोई॥मिलैरामकूंसाधूसोई॥होयमुक्तजगबहुरनआ
वै॥चरनदाससुषदेवबतावै॥८५॥दो०॥मोहबडादुषरूपहैताकूंमार
निकास॥प्रीतजगतकीछोडदेजबहोवैनिर्बास॥८६॥जगमांहीऐसैंरहो

ज्योंजिभ्यामुषमांहि घीवृषनोमक्षनकरै तोभीचीकनी
नांहि ८७ जगमांहीजैसैंरहो ज्योंअंबुजसरमांहि र
हैनीरकेआसरे पैनलछूवतनांहि ८८ ऐसाहोय
जुसाधहो लियेरहैबैराग नरकूंकलमैचितधरै जग
मैंरहैनपाग ८९ मोहबलीसबसूंअधिक मिहमां
कहीनजाय जाकोबांधोजगसबै छूटैनाबौ
लाय ९० लोभीनीचबरननकरूं महापापकीघा
न मंतरीजाकाफूठ बकुतनआधरमीजांन ९१ ति
संजाकीजोयहै सोअंधाकरदे घटीबटीसूंभैनु
हीं नहींकालकाभै ९२ डिंभमकरछलमगलजु
रहतलोभकेसंग मुयेनरकलजांहिगे जीवतकरे
नदंग ९३ दैहैधर्मछुटायही आंनंधर्मलेजाय ह
रिगुरतैबेमुषकरै लालचलोभलगाय ९४ चतुदे
सभरमुतफि करहफलयनासाध लोभकाजगठ
उठलगो दोऊपसारैहाथ ९५ चौ ई लोभीभक्त
होयनहींकबही साधपुरानकहतहैसबही लोभी
सतीनहोवैसूरा लोभीदातासंतनपूरा लोभीछिदं
नहोवैसांचा लोभीरहैजगतमैंराचा लोभीरहैद
रबकेमांही तनछूटैपैनिकसैनांही लोभीकरैजीव
कीघाता लोभीकरैकपटकीबाता लोभीपापन
करताडरै लोभीजायकष्टमैंपडै लोभीबेचैजो

पनांसीसा लोभी डहै बिसवेबुसा गुरसुषदेवबतायो
हमकूं सोयहकथाकही मैंतुमकूं चरनदासको
हैलोभनकीजै हरिकेपदपंगजमनदीजै ९६ दो० चौ
टीबादरषाननकूं लोभबकु न उपदीन याकूं तजह
रिकूंभजो चरनदासपरबीन ९७ लोभघटावै
मानकूं करैजगतआधीन बोजघराजिहलके
रै करैबुधकूंहीन ९८ लोभगएतैआवई महाब
लीसंतोष त्यागसत्यकूंसंगले कलहनिवारनसोक
९९ घटआवैसंतोषही कहाचहैजगभोग सुरगआ
दिलोंसुषजिते सबकूंजानैरोग १०० संतोषीनिहचे
लदिसा रहैरामलौलाय आसनऊपरडिढरहै इतवि
तकूंनहीजाय १०१ काहूसैंराषियै काहूबिधकीचाह पर
मसंतोषीह्वजियै रहियेबेपरवाह १०२ चाहजगतकीदासहै
हरिअपनानकरै चरनदासयोंकहतहैं बाधानाहिटरै १०३
चारअंगपूरेकिये कहंगर्बगुनगाय बकुतसिकंडीमारिया सि
रपरछत्रफिराय १०४ अभिमानीचढकरगिरे गयेबासनांमांहि
चौरासीभरमतनए क्योंहीनिकसैंनांहि १०५ अभिमानीमीजेग
ए लूटलिएधनबास निरअभिमानीहोचले पुहचेहरिकेधाम
१०६ चरनदासकहैंआपाथपै गिनैंआपकूंयांच मांनबडाईकार
नैं सहैजगतकीआंच १०७ करैबडाईकारनैं परपंचीछलधूत
अभिमानीफूलोफिरै ज्योंमरघटकाभूत १०८ चौ इ अभिमा

मानीकीमुक्तनहोइ अभिमानीमतआपनीषोई जैसेठग्ग
कडुआभिमानीमांही अभिमानीनीचूहोनांही बिननम्र
न्हापनसुषनहिंपावै आनंदपदकूंकैसेंजावै कूठक
पट अभिमानीषेलै कंचनबतनमाटीमेलै अपलंडि
मनितहीमनमांही विकटसांचकमूंआवैनांही
झूंझूंकरताहीडोलै काहूंतेंसीधानहिंबोलै इनल
छनजीवतडुषपावै नरकमांहितनछूटेजावै चरन
दाससुषदेवबूतावै पूरासोअभिमाननसावै १०७ दो
हा चरनदासयौंकहतहै सुनियौसंतसुजांन मुक्तमूलआ
धीनती नरकमूलअभिमान ११० चौ ६ रूपवंतगरबावैकोइ
मोसमदूसरनआवै धनवंतपागरबावां वहलंबपराहोनी
रानां कहैधनमधमैपरबीनां सबमेरेहीज्योंधीनां
११र कहैकुलअभिमानीसूचा मैंसबजातनमेंऊं
चा वहबिद्यागरबजुनारी करैबाबिबादसोनारी
कौ भूपूपकरैअभिमानां उतआपेहीकूंजानां
सोमगरूरकरैघमसानां गुरमुषदेवाचितावै तोहि
परगटनैंनदिषावै १११ चौ ६ जमबांधयकेर
लेजावै बैबडतेंत्रासदिषावैं जबकहुजायअभ
मिमाना मैरानीकेमुनयहतानां फिडोरैनरककेमांका
री सुनचेतोनरऔरनारी तौमदमछरतजदीजै
साधांकेचरनागहीजे हरिभक्तिकरोचितलाईज

बसकलब्याध छूटजाई॥ करजात बरनकुहर॥ हासतसंगतमैंपूरा॥ जबमुक्तधामकूं पावै॥ फिरयामैं फ्रेनहिंआवै॥ कहैंगुरसुषदेवबेमा तो यहचरनदासमतभ्रमा तो॥२॥ दोहा॥ मनमें लायबिचारकूं॥ दीजैगाबीविकारनाम्हां पनजबमाइहे॥ छूटैसकलबिकार॥३॥ पांचोंउतरेंभूतजब॥ होयहैब्रह्म अरुमंआनंदयदकूंपाय जितहैमुक्तसरूप॥४॥ पाचप्रेतजोयेकहेसतगुरकेयताप॥ सीलअंगमेंबकहतहूं॥ जासूंछूटैपाप

१५॥ अथसीलकाअंगबर्नन॥ दोहा॥ अबमैंगाऊंसीलकूं॥ हो संतसुजान नरनारीसबहीसुनौदैदैचितबुधकान॥१॥ रूपगुनीकुलवंतजो मोरहोवैधनवंत सीलबिनासो नूरनहीं मिलैनरकपडंत॥२॥ सीलबिनाजोतकरैकरैसीलबिनदानजोगजुगतकरैसील बिन सोकाहियैअज्ञान॥३॥ सीलबडोहीजोगहै जोकरजानैकोयसीलबिनातोंचरनदासकबहूंमुकतनहोय॥४॥ सबसुनलहननतेबिषैं सीलननांपाराकै जपतपोतिरफलजाहिंगे चरनहीदासेबबेक॥५॥ पूजासंजमनेमजो जसकरैचितलाय चरनदासकहेंसीलबिनसबहीनाकारयजोय

६ सोई सती सोई सूरमां सोई दाता अधिकाय सील लिये छिसे ही रहै तो निरफल नहीं जाय ७ सील अंग के चोअधिक गनती सो के बीच जा घट सील न आइया सो घट कहिये नीच ८ सील नहय जे घेत में सील न रवि काय जो हो पूरे टेक का लेवै अंग उपजाय ९ सील बिनां नरकों पडै सील बिनां जम डंड सील बिनां भरमत फिरे सात दीप नो षंड १० सील बिनां भटकत फिरै चौरासी के मांहि पहले होवे प्रेत ही यामें संसो नांहि ११ सब तज से वो सील कूं राम नाम लौ लाय जीवत सोभा जगत में मुये मुकत ह होय १२ जा को सील सुभाव है जा की हर बल जाय जा की कीरत जगत में सुनि हो का तुलगाय १३ सील रहे ते सब रहैं जेते है शुभ अंग जो राजा के रहे ते रहे फौज को संग १४ सत गया तो क्या रहा सील गया सब काउ भंवर षेत को से बचे टूट गई जब बाड १५ ज्या न सील न राषिया बिगड गई सब देह अब पछताता क्या करे मुष पर उडिया षे १६ सील गये सो ना घटै या दुनियां के मांहि कूं करन्यो फिड चौ फिरे कहीं बी आदर नांहि १७ सील गये गुर सूं फिरे हरि सूं बे मुष होय चरनदास कहां लौं कहै सरबस डारै षोय १८ धिग जीवन संसार में ता को सील नसाय

जगमेंफिरयफिटहोतहै॥सुयेतं।चरनं।पाय॥१९॥मिस्नके
सेलानांव्राला॥मौरबडोंकेबोल॥पाछेदेवेस्वादेव
चरनदासकहीबोल॥२०॥सीलनिरोगतानीमसा॥औगनडा
लैषोय॥पहलेंकडवाउषलगे॥पाछेगुनसुषहोय॥२१॥लाषयहीउप
देसहै॥एकसीलकूंराष॥जनमसुधारोहरिमिलो॥चरनदासकीसा
ष॥२२॥सीलवंतकेचरनका॥जोचरनोदकलै॥रोगदोषमिटजायसब
रहैनजमकामे॥२३॥औरअंगसोंसीलही॥जघटमाहीहोय॥चरनदा
सयोंकहतहैं॥दुरलभदरसनसोय॥२४॥सीलवंतदरसनबडे॥देषत
पातगजाय॥बचनसुनेमनसुषहै॥षोटादिएसिराय॥२५॥सीलसरो
वरन्हायकर॥करोरामकीसेव॥यासमतीरथऔरना॥कहियागुर
सुषदेव॥२६॥सीलअंगपूरोकियो॥मिहमांअधिकअपार॥दयाअं
गबरननकरूं॥समझेंछुटैबिकार॥२७॥अथदयाकाअंगबरनंते॥दोहा॥
परमारथमेंदयाबडी॥जोघटउपजैआय॥परगटहोनिरबैरता॥क
मिगांठषुलजाय॥१॥थावरजंगमचरअचर॥याजगमेंहोको॥सबहीये
हितराषिये॥सुषदानाहीहो॥२॥भोजनकरोसंभारकर॥पानीपीजेछां
न॥३॥औरैबकृतबिचारले॥जांमेंलगैनकर्म॥यहीतपस्याजानहै॥य
हीदयायहीधर्म॥४॥इकइंद्रीदोयइंद्रीयां॥तीइंद्रीऔरचार॥पंचइंद्री
लौंजीवकी॥हिंसाअकसनिवार॥५॥षावैबसलबिचारके॥बैठेगेर
बिचार॥जोकुछकरैबिचारकर॥किरयायहीअचार॥६॥मनसूं
रकुनिरबैरतामुषसूंमीठीबोल॥तनसूंरिछ्याजीवकी॥चरनदास
कहीबोल॥७॥कडवाबचननबोलिये॥तनसूंकष्टनदेह॥अपना

साजीज्ञानके बनैंतोदुषहरले ८ मुषसूंजीकडवाकेहे
तनसूंदेवैकष्ट यहीजोहिंसाजानिये दयाधर्मजप्रष्ट ९
दसइंद्रीमनगपारखां करिबिचारखैंजांन इनहींसूंसुषदी
जिये चरनदासपहचांन १० कांकूंदुषनहींदीजिये दुर
जनहोकेमीत सुषदाईसबजगतकी गहोदयाकी
रीत ११ कोमलतापरपारता सज्जनताशिरहोस स
बीदयाकेअंगहैं इनतैंपावैमोष १२ दयाज्ञानकुा
मूलहै दयाभक्तकाजीव चरनदाससयौंकहतहै द
याभिलावैपीव १३ दयानहींतोकुछनहीं सबही
थोथीबात बाहरकथनीसोहनी भीतरलागीघा
त १४ छापेतिलकबनायकै मालापहरीहोय
दयाबिनांबषसमवहीसाधरूपनहींहोय १५
दयानआईघटबिषे हीयाबडाकठोर यह नग
रीकैसैंबसें तामेंहिंसाचोर १६ पंडितताईबडातैं
करी दयानराषीजीव छोछिछाछितैंलैलई
डारदियाततघीव १७ तोहियपंडितमें काहावाके
मूरषकैपरबीन लियानेतैमतसूपका चलनीकाम
तलीन १८ दयागहेतैंसबनसैं पापतापदुषदंद मै
सीपरमपुनीतकूं तजैसुमूरषमतिअंध १९ दयाबि
नांनरपसतहै दयाबिनांनरकूप दयाबिनासु
नषतबनैंसबहीपोथागुष्ट २० जनममरनकूटै

नहीं ॥ नां ही कर्म नसांहि ॥ दया बिनां बदला मैरे कौं
रासी मांहि ॥ २१ ॥ काम क्रोध मोह लोभ ॥ गरब क्रोध दिम
जजाय ॥ चरनदास कहैं दया जो घट मैं पुंहचै
आय ॥ २२ ॥ जितने बैरी जीव के तिन मैं रहैं न एक ॥ च
रनदास यो कहत हैं दया जो आवै तेक ॥ २३ ॥ उ
षमा जैं सुष होय घनैं ॥ कोप नाश ह्वै देह ॥ हिंसा रीती होत न
जै ॥ ले वैर आपनी संग ॥ २४ ॥ धन्न दया धन सील कूं ॥ जि
नसैं रीझैं राम ॥ गुरु सुषदेव बताइ दई ॥ सब ही सुधरैं कां
म ॥ २५ ॥ इति दया कौ अंग संपूर्ण ॥ संमाप्तं ॥ राग भैरू ॥
बैठा गुरु सु चलत सैं सुषी होय रहै रैन न आकेला दया
बि मां रष राम सुहाती ॥ बात कहै कउ जी न हिं लाली
बिन जाचे नय दे सत कहीजै ॥ तन की सूं वरे चान ॥
हिं कीजै ॥ मौन गहै पेउ सां बोलै ॥ पलक नमिलै
नैन रहै षोलै ॥ दिष्ट राष नासा के आगे ॥ सत्व न त्या
मी ठाम सुषुम्ना षे ॥ रसनां उलट ॥ जाका सचद्ध ॥ बि
नही बादल ज लव रषा है ॥ पच नसा धुमल कूं ठहे
रावै ॥ कामन न कान का रूप विलसावै ॥ आसन
आडिग सुरत आन हद मैं ॥ अंतर षोल सिलै उमहि
नाते ॥ चरनदास सुषदेव बतावै ॥ ऐसा होय परम
हेत बाहावै ॥ १ ॥ दोहा ॥ जो बोलै तो हरि कथा ॥ मौन
गहै तो ध्यान ॥ चरनदास यह धारना ॥ धारै सो सुजान

वर मायाकी अस्तुति करूं होय रही संसार अद्भुत
लीलाकार रही सो नाहि आगमको पार २ मायासकलय
सारहै तो सोभ बहु कांत जहां लग यह आकार
ही चंचल मिथ्या भ्रांत ४ जैसें सुपना रैंन का सुष
दरपन के मांहि भासें है पर है नहीं जो तरवर कीछां
हि ५ चौ ई यह माया सब कूं मोहे वस होय न कोसा
को है यह बहुत सोह ना लागो सब ही नर नारी कहीं
चमक दमक बहु अच्छा और कहीं रंक कहीं भूपा
और जहां तहां नाषिक तमासे वह भ्रांत भ्रम नहीं नासे
और जहां लग सकल सबाद्या कोई करै सुबाद बिबा
दा और काम क्रोध मोह लोभा और मान बडाई सोभा
और पांचो इंद्री ज्ञानो सब माया रूप पिछानों और
पांच तत्व गुन सीनों सो माया कूं चीन्हो वह भूपकारये
चकलना नें और यह रब कुबानें गुरु सुषदेव बना
वै सब माया षेल दिषावै ६ हा जेतु सुष संसार को
सब ही माया जार तामें दोष अनाथ काध रै एक दरब एक
नार ७ लालच लागे धावसों फिरे आय कर लेय यू फ
से आपसूं आपही गहन नहीं लाया कोय ८ पांचौ इंद्री
सो लषै सो माया आकार वा ही सेती सब भयो जग
लग साकार ९ चौ ई जो माया रूप कान न ता कोई जा
नै साधु संता कहा सुना और देषा सब माया रूप ब

ऐसा आठसिद्धनौ माया जहां जोगी लपटी भुलाया
औरमायाफंधेमांही सकलजीवआयफसजाई चेत
रकमाहिंदुषपावै जमधप्पनचावसहिपावै फिरभु
गतैलषचौरासी वेगारभओंकेबासी वेपसुदेहधर
धावै नहींमुकतिकोनांपावै चरनदासयकहैनर
चेतो तजोमायाहीमंहेतो १० दो उगलबासनांके
तजें मायाकीलवसाथ कर्मछूटेसिदजीवनमुक्त
रूपहोयजाय ११ फांसेनइंद्रीस्वादमे चरनकव
लमेंध्यान परआसाकोईनांरहे तजेनमायाध्यान १
२ सकसैंनाषिकीलानहैं ताहैकंचोध्यान ध्यानमि
लावैपीवकूं पावैपदनिरबांन १३ ध्यातावोहधोरे
मिलेहोयनबिचमैंध्यान तीनोंलोकऊपैबिनालहे
नपदनिरबांन १४ इंद्रियनकेबसमनरहे मनकेब
सरहैबुध वाहोध्यानकैसेल भौसागरहोंबिरूध १५
जितजितइंद्रीजातहै तितमनचलेजात बुधभी
संगहीजातहे यहनिहचेकरबात १६ जितइंद्रीम
नहंगाया रहीकहासंबुध चरनदासयोंकहतहै व
रहेधोतुमसुष १७ इंद्रीमनकेबसकारे मनकरेबु
धबेसा बुधरावैहरिपदजहा लागोध्यानकासंग १८
इंद्रीमनमिलहोतहे बिषैबासनांचाव उपजेऐसेंक
महोजारीमिलऔरताहि १९ न्यारेसारेतत रहै

होतनकछुउपाय जदेराषमनइंद्रियन गुरगमसाधन
साध २० इंद्रियनसोंमनकुदाकर सुरतनिरतकर
सोध उपजैनाबिषबासना चरनदासकरबोध २१ इंद्रि
रोकैतैंसकै औरजतननहिंकोय मनचंचलरुकवा
रहै रसिकसवादीसोय २२ चलेकरैथिरनारहे कोट
जतनकरराष यहजबहीबसहोयगा इंद्रियनकेरसनाष
ष २३ न्यारेन्यारेचहतहैं आपनैआपनेस्वाद इनपांचोंमें
प्रीतहैं कछुनबादबिवाद २४ दुरजनकेफूटेबिना ते
रीहोयनजीत चरनदासबिचारकर औसीगहियै
रीत २५ जुदीजुदीपांचोंषाकहू एकाएकाकाभेद जोकोई
इनकूंबसकरै सबहीछूटैषेद २६ चौपई यहइंद्री
आंषबिचारो सोदेतमहादुष भारो वहरागदेष
उपजावै औरहरषसोगलेआवै सोरूपमांहिफसजा
वै तनमननमैंब्याधउठावै वहदेहऔरकेहाथ्या करै
डारैबहुतजतनाघा वहफंदमांहीं डारैऔरकामके
गनमैंजारै यहलोलैदौरीदौरी करैचितबुधकीगतिकौ
री कोईसाधसूरमांमोडै जगसेतीमैंनातोडै कहैंचरनदास
सुनलीजै कछुयाकाजतनकरीजै २७ दोहा दीपक
तिरयानिहारकर गिरैपतंगज्यौंजाय कछुहाथआवै
नहीं उलटोआपजराय २८ चौ ई तनतनमनसभ

जराया ॥ कछु नौह रु पंथ तआया ॥ औरबिषै बास नांफैला ॥ जबहु
डारामकागैला ॥ तौ मुक्त कहां सों होई ॥ दियाजनम अकारथ षोई ॥ अब क्या
सिरमोरे कोई ॥ घरहीमैं दुरजन सोई ॥ यह दिश सदा की बैरा ॥ मो सुरत बिगाड़ै
तेरी ॥ वह माया मोह लगावै ॥ औरु चौरासी भरमावै ॥ सरसुकं चसुष षो
वै ॥ औरबीज कुबुध का बोवै ॥ यह ठग चोरी की बाली ॥ और जारक
र्म्मगावाली ॥ यह पान पसजीघटावै ॥ जमपुरके त्रास दिषावै ॥ क
हैं गुरु सुषदेवा ॥ पलौंष महाठुबदेवा ॥ र्प दो ॥ औसी इंद्री आंष
की ॥ सो आसनी नहिं होय ॥ गुरसुषदेव बतांवई ॥ चरनदास सुंन
लेय ॥ ३० इरसन कीजे साध का ॥ के गुर का करलोय ॥ जहांतहां ब
स्ल देषियै ॥ दुबधा दुरमत षोय ॥ ३१ ॥ बेरी मितर राकसा एकै रुप कुरु
प ॥ औसी होवै द्रिष्टही ॥ जब ठहरै मन भूप ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ सुनइजे इं
द्री काना ॥ सो गुरु परतापे जाना ॥ जब सुनें काम रस रीता ॥ तब मू
लै पट सुनगीता ॥ मन नृप जैका तरंगा ॥ जब होत ध्यानमैं भंगा ॥ फि
रलो भब चन सुनैं औरे ॥ जब तिष्ट्रां चहूं दिस दौरे ॥ काही दरब
हा घल गाजावै ॥ यौं सोच सोच दुष पावै ॥ कहै ठग चोरी करला
कं ॥ कही गाडा दबाही पाकं ॥ काहू सुनैं जु दोलत बंधा ॥ मन ही म
न रोवै अंधा ॥ यौं तप जै ऋषि की लोभग ॥ जब बढै पाप की गो
ना ॥ कहैं चरनहीं दास बिचारी ॥ सुन चेतो नर औरु नारी ३३
चौपई ॥ फिर सुनैं बडाई कुलकी ॥ जो आपनकी सुनैं बडाई ॥ जब
आसुं है होत न आप कडाई ॥ फिर करन बडाई लागो ॥ सूंताड्यो बूं कर

जागै जब उपजै बहुत अभिमाना औरनैं कहा वैनाम्हा प
रनिंदा बहुत सुहावै नहीं औरबडाई भावै अहंकार बड़ा म
मांही आधीन बिआग तमांही सुनकउपजे तामस अंगा जब
करै बहु तहीदंगा मन क्रोध रूप होजावै उठउठ करमारन धा
वै कभी सुनै मोह केबैंना लगैं हरषसोग उपदैंना जब सुनैं कुं
टंब की नीकी तबकरै खुसी बहु जी की कोई कुटंब मांहि दुषपा
वै सुनरोरो नैंन गंवावै जे पहिरनकौं नबसन हुवा तौ ती रलाग क
रमुवा सुष देवकइ है यह जानों सबकोमन बिकार पिछानों ३४
दो० मन देसुनिये हरिकथा सुनिये हरिजस कांन ताहि बिचा
रजु कीजिये होयनन कल्यांन ३५ चौ० ई उपजै ग्यान भक्ति
औरजोगा सुनसुन उपजै राम बियोगा उपजै प्रेम ओर अनुरा
गमा हा होय उछाहदरस का चाहा सुनसुन उपजै लहन
साधू सुनसुन पावै भेदअगाधू उपजै साध संत की सेवा
गुरमुष होयसुनैं यह मेवा सुनसुन उपजै भै औरलाजा
सोवै सकल संवारनकाजा सुनसुन जती सती होजावै ना
हां हो आभिमांन नसावै सुनसुन छूटै जमकी त्रासा चौ
रासीमें लनबासा सुनसुन चार पदारथ पावै आवागवन
की बीज रावै सुनसुन कागहंस होजो ई चरन द ससु
षदेव बताई ३६ दो० सुनसुन उपजै सुबुधही लगै हरि
कारंग सुनसुन उपजै कबुधही घोटी उठैं तरंग ३७

जैसीइंद्रीकांनकी जाकेजुगलसुजांन कथाकीरतनहीं
सुनौं करकरकोटउपाय ३८ बचनसुनागुरसाधके मम
कूलावोमोर बिषैबासनांसूंनिकस आवैहरिकीओर ३९ स
रवनइंद्रीमैकही दोनौं अंगदिषाय जिभ्याइंद्रीकहतहै चरन
दासचितलाय ४० कुटलजुइंद्रीजीभकी चाहैषटरसस्वाद
याबसहोगानकरै जनमजायबरबाद ४१ चौ ई य
हबकुतचटोरीकहियै साइलैदुरलेरहियै यहचोरीजी
करवावै यहपकउबंधमैद्यावै करैयाहीकारनजारी य
हकरैबकुतहीष्टारी यह अमलषांणासिषलावै औरगाली
मारदिलावै औरबकुतैकष्ट बुलावै होमीतनरकलेजावै
बेलैयाहीकारनजूवा दुनियामैफिटफिटकंवा रयांचौं
जोबसुनाकं रमनामेंसबैदिषाकं यहमहाअंपरबलजा
नौं औरररनजीताहोनानों ४२ दो जिभ्याकेजीतेबिनां
गयेजनमसबहार चरनदासयोंकहतहैं मनजगतमैं
ष्वार ४३ बंसीडारीतालमैं मछरीलागीआय जिभ्याकार
नजीवदियो तडफतडफमरजाय ४४ तजानाजिभ्यास्वा
दकूं वासंगादीनेप्रांन जोकोईऐसोनगतमैं सोअग्यानी
जांन ४५ यासौंलेहरिनामहीं गुणांबादहीभाष जोजो
लेतीसांचही नांहींमुषमैंराष ४६ मीठाबचनउचारि
ये निवतामबसूंबोल हिरदेमांहिबिचारकर जबमुष

बाहर षोल ॥४७॥ बिना स्वाद ही षाइये ॥ राम भजन के हेत ॥ चर
नदास कहैं जन सूरमां ॥ औसे जीतो षेत ॥४८॥ जिन जीता है जीभ
कूं ॥ जिन जीती सब देह ॥ कहै गुरु सुषदेव जी मुक्ति धाम फल
लेह ॥४९॥ रसना जीतै भक्त जो ॥ सो जोगी सो साध ॥ आगम पंथ
वही पग धरै ॥ पहुंचै देस अगाध ॥५०॥ तुचा सु इंद्री काम की
नित ही षेलै दाव ॥ परसु यंद्री असुरा नरा ॥ फसै आय कर चा
व ॥५१॥ चौपई ॥ यह तुचा सु मल माजैं ॥ और सुगल सुरमां आंजैं
यह तेल फुलेल लगावै ॥ और चिकनां गात बनावै ॥ और बस्तर
भूषन पहरै ॥ करै अंजन मंजन न्हाहरै ॥ औरु सथर सब की बिध
ठानैं ॥ सब या सब याही कूं सुष मानै ॥ और फसे आय कर टोअ
अब निकसन के सै हो कं हित गांठ ये च गाह दीन्हां ॥ ओ राक
कनै बांधा ॥ वह समझे नांही आंधा ॥ अब सीस फनै पदता
वो दोऊ चलै नरक जावो ॥ कहैं चरनदास नही जानैं ॥ तुम औ
गन नां पहचानैं ॥ दोहा ॥ तुचा स्वाद सब बस नये फंधे ज
गत के मांहि ॥ जो कोइ निकसे न्च है सो भी निकसे नांहि ॥५३॥
धोषे की हथनी लषी ॥ आयो गज लल चाय ॥ षंदक मांहीं
रुक गयो ॥ सीस धुनै पछताय ॥५४॥ काहू हाथ आयो नहीं ॥
परो फंद मैं जाय ॥ मैंनमहावत बस न येग ॥ सिर मैं अंकुस षा
य ॥५५॥ जंगल में आनंद सो ॥ बहुतै को बल कराय ॥ अब तो
पारिनूप के ॥ पडो बंध में आय ॥५६॥ औसें ही यह नर फंसो ॥ देष
कामनी रूप ॥ जनम गवायो दुष भरो ॥ पडो अविद्या कूप ॥५७॥

करी न हरि की भक्त ही ॥ गुरसेवा लज दीन ॥ सुनी न हरि गुन
कथा ॥ सतसंग सं नहिं कीन ॥ ५५ ॥ फिर ऐसो कब होय गो
पावै मनुषा देह ॥ जातें चौरासी बिषै ॥ आयु किये बन गेह ॥ ५६ ॥ जीते
इंद्री तुचा की ॥ कहिये गुरसुखदेव ॥ ऐसें तप ही कीजिये ॥ चर
नदास सुन लेव ॥ ६० ॥ चौपई ॥ सीत उस्न का दुख नहिं मानैं ॥ कोम
ल सकत एक कर जानैं ॥ तपसूं काया उमर गंवावै ॥ आछे सुगं
धि कटन हिं लावै ॥ आंन तुचा सपरस नहीं करै ॥ काम भोग ते
मे नांजरै ॥ काया ताव न तका रती ठानैं ॥ यही तपस्या मनमें आ
नै ॥ तुचा सु इंद्री जीतै ऐसे ॥ मैं यह भेद बताये जैसे गुरसुखदे
व बताये वैसें बही ॥ चरनदास कर तनतूं तप ही ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ हा
तु चा सु इंद्री बस किये ॥ छूटैं काम कलेस ॥ जत सत सील सं
तोष सूं ॥ लगै न माया लेस ॥ ६२ ॥ तु चा भोग पूरो किये ॥ कह्यो नास
का संग ॥ ता बस आलि सुत जीव दिये ॥ जा को कहूं परसंग ॥ ६
३ ॥ बास आस गुंजत फिरै ॥ बैठो कंवल मंझार ॥ सूरज छिपे
मैं मुंद रगायो ॥ आब सिर दे दे मार ॥ ६४ ॥ कुंजर आये तमसूं ये
जल पीवन के काज ॥ प्यास बुझा करने लेगा ॥ बेल कर
के साज ॥ ६५ ॥ बेल कर तन कंवल नाल हो ॥ लीन्हो ताहि उपाड ॥ ये
र दियो मुख मांहि हीं चाब गयो दे जाड ॥ ६६ ॥ ऐसें हीं एक नरक से
पडे का मुख जाय ॥ चरनदास यो कहत है ॥ चालेजन न मगं वाय ॥
६७ ॥ सुगंध और हरसै नहीं ॥ दुरगंधे नाह रिसाय ॥ ऐसें जी मैं ना
सिका सत भंवरा रहराय ॥ ६८ ॥ समझनकूं उक्का एक है ॥ मूलन.

कौतुक कला सब गुन औगाम इ इंद्री कहि ॥ सो तू मन में राखव ॥ ह
ष्ट ॥ जो इंद्रिय के बस भयो ॥ बांधो नरकैं जाय चौरासी नरभ्रमत
फिरै ॥ भी जो न दुख पाय ॥ ७० ॥ जो इंद्रियन के बस भयो पावै नां
आनंद ॥ बार बार जग मांहि हीं ॥ छूटै नांस नमंद ॥ ७१ ॥ मन कमांहि
चित नां लगै ॥ सब ही बिगडैं काम ॥ जो इंद्रियन के बस भयो
ताकों मिलन राम ॥ ७२ ॥ चरनदास यो कहत है ॥ इंद्री जीत
न ठांन ॥ आप मूं लै हरि कूं मिलै ॥ पावै पद निर्बांन ॥ ७३ ॥ चौ ॥ इं इंद्री
जीतै सो ब्रह्मज्ञानी ॥ इंद्री जीतै सोई ध्यानी ॥ इंद्री जीतै सो हरिदासा ॥ अम
र लोक मैं पावै बासा ॥ इंद्री जीतै सो ईस सिधा ॥ अष्ट कला और पावै रिधा
इंद्री जीतै सोई सूरा ॥ इंद्री जीतै सो जन पूरा ॥ इंद्री जीतै सो सतवंता ॥ इं
द्री जीतैं गुनी महंता ॥ इंद्री जीतै राम रिझावै ॥ इंद्री जीतै सब कुछ पावै ॥ इं
द्री तै सो सिन्यासी ॥ इंद्री जीतै सो निज दासी ॥ इंद्री जीतै सब फल दाय
क इंद्री जीतै सब कछु लायक ॥ इंद्री जीतै छुटे तब देसा ॥ याज्ञ गमै कु
कल गै न लेसा ॥ इंद्री जीतै पर्म सुधारी ॥ निहचे पुंहचै हरि दर
बारा ॥ इंद्री जीतै सो रन जीता ॥ इंद्री जीतै आतम जीता ॥ इंद्री जीतै ध्या
नी लगावै ॥ सो निहचै ईस्वर हो जावै ॥ इंद्री जीत मिलै अपरंता ॥ इं
द्री जीतै जीवन मुक्ता ॥ सुनचरनदास कहै सुषदेवा ॥ इंद्री जीतै
सो गुरदेवा ॥ ७४ ॥ दो ॥ मन इंद्रियन के बस भयो ॥ होय रहो बदं
ग ॥ आपा बिसरे जग रलो ॥ जावै जु नांनां रंग ॥ ७५ ॥ भावै तन सा
किरोध की ॥ हो तजु वाके रूप ॥ काल हर कबहुं उठै ॥ ताके हो
त सरूप ॥ ७६ ॥ लोभ का नांज बनु है ॥ जबी लोभ रंग होय ॥ मोह

पु

म

११२

कोलप नाके तठै मोह बरन हां योग ॥ ७७ ॥ मनहीं खेले खेल सब
नक मनही करै अभिमान ॥ मन हीं यह जग होय रहा ॥ अब सुन मन का
ग्यांन ॥ ७८ ॥ चौ० ॥ कबहूं यह मन होवै गिरही ॥ कबहूं यह मन होवै बिर
होवै ही ॥ कबहूं यह मन नैरोगी ॥ कबहूं यह मन होवै सोगी ॥ कबहूं यह मन नु
होवै नारी ॥ कबहूं यह मन राखे यारी ॥ कबहूं यह मन दो रा डोले
कबहूं यह मन टेढा बोले ॥ कबहूं यह मन कुलकाक चोर ॥ क
बहूं यह मन नकटा बूचा ॥ कबहूं यह मन उदम बांचै ॥ कब
हूं छिमासील घर आवै ॥ कबहूं यह मन होवै दाता ॥
कबहूं करै मूं मसी बाता ॥ चरनदास कहै मन कूं जानै
ऐसी विधि मन कूं पहचानै ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ बरू पीन कु
रंगी भया ॥ बकुत रंग बकुचाव ॥ बकुते मौत संसार मै
करकर घनैं उपाव ॥ ८० ॥ चौ० ॥ यह मन राजा होवै भो
गी ॥ यह मन त्यागी होवै जोगी ॥ यह मन होवै हरि
का भगता ॥ यह मन होवै जो गाजु गंता ॥ यह मन हो
वै बबे की स्वामी ॥ यह मन तपि याजनि या ध्यानी ॥ यह मन वक
रै दया की बातें ॥ यह मन करै जीव की घातें ॥ यह मन जन्नी
वीक्षोर सूरा ॥ यह मन कासी पंडित पूरा ॥ यह मन तीरथ बा
ई पासी ॥ यह मन टुकरात्ती मोरदासी ॥ यह मन होवै देवी
देवा ॥ या मन का कोई लहै न भेवा ॥ यह मन पेमी नेमी
जननही ॥ चरनदास कहै मन कुछ भनही ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ हा
या मन के जानै बिनां ॥ हेतन कब ही साध ॥ जगत बास

नो छूटैं लखैन भेद अगाध ॥ ८२ ॥ मन कूं जो सांत नहीं ॥ करी न
याकी सार ॥ चौरासी छूटी नहीं ॥ तप जाको रसबार ॥ ८३ ॥ चौ० ॥ इ
मन कूं सतसंगत लेजावो ॥ कानौं हरिजस कथा सुनावो ॥
भांति भांति करि गलल चावो ॥ तौं हरि के रंग कैयों न रंगा
वो ॥ तौ याकूं ग्यानी हीं कीजै ॥ जुगति सौं रजा सें मही दीजै
के दीजै हरिध्यानूं ॥ राम भक्ति मैं याकूं सानूं ॥ के कीजै प
हु जोगी पूरा ॥ आह सुनां वो अनहद तूरा ॥ या मन कूं अ
जै बैरागी ॥ याकूं कीजे सरबस त्यागी ॥ जोग रंग उत्तर बुद्धि
रंगलागै ॥ तातैं करम भरम सै भागै ॥ चरनदास सुखदेव
बतावे ॥ मनके रुनकी राह दिखावे ॥ ८४ ॥ दो० ॥ हग ॥ मनतै
आयगांवा दया ॥ ग्यान बुझाया दीव ॥ करम लगा भर
मत फिरो ॥ मिला न आपने पीव ॥ ८५ ॥ बौर दो रसम आ औ हरि
हो परगढा कंगाल ॥ नातर औ गै मूंपया ॥ अंचा बडा
दयाल ॥ ८६ ॥ यां चौड़ंडी स्वाद मैं ॥ भयो बिपट आपा
धीन राजबडाई सब तंभी ॥ डूबो मूदम तहीं
न ॥ ८७ ॥ सरक जाय बिष औरा रही ॥ बऊरन आवे हाप
भजन मां हिठहरै नहीं ॥ जो गहरा पूंबाय ॥ ८८ ॥ मन सि
ह चल आवै नहीं ॥ निकसा निकसि भज आय ॥ चर
नदास यौं कहत है ॥ काहू की न बसाय ॥ ८९ ॥ पचहा
रे हा मीत यौं ॥ बऊत रहे सिरभार ॥ मन परे तन सूं उर ल
गै ॥ लेउ है मंझधार ॥ ९० ॥ यह मन भूत समां न है ॥ दौडै

११३
भक्त

दंतपसार ॥ बांसु गडु चतरै चढै ॥ सबदु लजावै नार ॥ ९१ ॥ योंही
तममें मन धरै ॥ होय जहां लौ लीन ठहरहरहै ॥ फिर नां चलै
सकल बिकल्प होय छीन ॥ ९२ ॥ मन जैसो जानदी जियैं घेर घे
र कर लाव ॥ या मन कूं परचाय कर ध्यान हीं मांहि लगाव ॥ ९३ ॥
२ का याही बिध हमरी सुनियौं चित लगाय ॥ एक नाम मन सूं जपे
चंचलता थक जाय ॥ ९४ ॥ पवन रुकै जब मन थकै और दि
ष्ट ठहराय ॥ ऐसी साधन साधिये ॥ गुरुगम भेद मिलाय ॥ ९५ ॥
इंद्री रोकैं मन रुकै ॥ और जतन बिध एह ॥ चरनदास
यौं कहत हैं ॥ यह साधन कर लेह ॥ ९६ ॥ इंद्रियन कूं मन
बस करै ॥ मन कूं बस करै पौन ॥ अनहद बस कर बाय कूं
अनहद कूं लैलौन ॥ ९७ ॥ याको नांव समाध है ॥ मन ता
मे ठहराय ॥ जनम जनम की बासना ॥ ताकूं दग्ध कराय ॥ ९
८ ॥ इंद्री पलटै मन बिषै ॥ मन पलटै बुध मांहि ॥ बुध पलटै
हरि ध्यान में ॥ फेर होय पलै जाहि ॥ ९९ ॥ दग्ध बासना होय
जब ॥ आवागवन नसाय ॥ कहै गुरु सुषदेवजी ॥ मुक्तरूप
होजाय ॥ १०० ॥ मन के सगरे भेद ही ॥ जाको दियो जिताव
चरनदास अब कहत हैं ॥ झूठ सांच को भाव ॥ १०१ ॥
जो कोइ बोलै झूठ ही ॥ ताकौं लागै पाप ॥ जनम जनम छू
टै नहीं ॥ दुष दें तीनौं ताप ॥ १०२ ॥ चौपई ॥ बोलै झूठ महा
अपराधी ॥ धर्म छुटै उठ लागै बाधी ॥ झूठा सौं से सौं गंद
षाय ॥ झूठा लेवै करम लगाय ॥ झूठा करै बिरानां बुरा

झूठा रहै जगत मैं गिरा ॥ झूठे की परतीत न होई ॥ झूठा बो
लै बेसो कोई ॥ झूठा हरि की भक्ति न पावै ॥ झूठा घोर कुंड मैं
जाय ॥ झूठे कूं लागै जम मार ॥ झूठा चौरासी मैं षार ॥ झूठ बच
न का भारी दोष ॥ झूठे की होय गति नहीं मोष ॥ झूठे कौ नहीं
गुरु न राम ॥ झूठे कूं नांही बिसराम ॥ चरनदास सुषदेव बता
वै ॥ झूठा सो भी नरक कूं जावै ॥ १०३ दोहा ॥ झूठे के मुंह दीजिये
नौ सादर कौ बाप ॥ डरप करै सुक चार है ॥ वह सरमंदा आ
प ॥ १०४ चौपई ॥ झूठे कूं हत्या यज्ञा भी ॥ झूठे कूं ठग चोर पि
छानैं ॥ झूठा कुटल सराबी होय ॥ झूठा कहिये कामी
सोय ॥ झूठे ही कूं जानौं ज्वारी ॥ समझ देष सब ही नर नारी ॥
सकल देव ऊं मैं पाऊं ॥ राक एक कथा बोल दिखाऊं ॥ पंच चो
षोट सब न के राजा ॥ सो मैं कहे चिता बन के काजा ॥ झूठ
पाप की कहिये षान ॥ सो रह कौर पुन्य की हान ॥ सब
ही चोग न झूठे मांही ॥ चरनदास सुषदेव बतावई
१०५ दोहा ॥ सांच बिना साधू नांही ॥ कबहूं न मिलै राम ॥
सांच बिना गत नां लहै ॥ पावै ना निज धाम ॥ १०६ ॥ सत
सत मुष सूं बोलिये ॥ सत ही चलिये चाल ॥ सत ही मन
मे राषिये सत ही रहिये नाल ॥ १०७ ॥ सांचे कूं यह नां ल
गे ॥ सांचे कूं नहीं दाग ॥ सांचे पाप न लागई ॥ सब दुष जा
वैं भाग ॥ १०८ ॥ बडी तपस्या सांच है ॥ बडा बरत है सांच

मतें जामें पाप समी जरै ॥ लगे न गरभ की आंच ॥१०९॥ जा का ब
चन मुडै नहीं ॥ साचे सब ब्योहार ॥ चरनदास तिरलोक मैं
बनी आवै हार ॥११०॥ चौपई ॥ सांचे के मन ही मैं राम ॥ सां
चा करै न छल के काम ॥ सांचा होकर सुमरन कैरै ॥ आ
पति रै आप न लेति रै ॥ सतवादी की पत है सांच ॥ ता कूं
लगै न बिद की आंच ॥ साचें चोर चुराय घो घोडा ॥ परमेसर
ता का रंग मोडा ॥ और चोर चोरी सूं गहा ॥ साच परताप चं
चं मा भया ॥ और सांच प्रताप अनंता ॥ सब ही जानै साधू सं
ता ॥ लाष बात एक ही जोड ॥ सांचा पुरष सबन सिरमोर ॥
आवै सांच परम सुख पावै ॥ चरनदास सुष दे वसु नावै ॥१११॥
दोहा ॥ सांचे की पदवी बडी ॥ दुष्ट साध के मांहि ॥ दोनों अस्तु
त ही करै ॥ निंदक कोई नांहि ॥११२॥ गुर कहै सो कीजियै ॥ करै सो की
जै नांहि ॥ चरनदास की सीष सुन ॥ यही राष मन मांहि ॥११३॥ कथा सु
नी बहु ह्वा किये ॥ तीरथ किए अघाय ॥ गुरमुष के ह्रदे बिनां ॥ जप त
प निरफल जाय ॥११४॥ चौपई ॥ अब गुरमुष के लछन गाऊं ॥ जु
दे जुदे कर सब समझाऊं ॥ इन कूं समझ धरै हिये कोई ॥ पूरा गुर
मुष कहियै सोई ॥ परथम गुर सूं झूठ न बोलै ॥ षोटी षरी करै सब
बोलै ॥ दूजै गुर कूं पैन लगावै ॥ निहचै गुर के चरन मनावै ॥ तीजै अ
ज्ञाकारी जानौं ॥ इन लछन गुरमुषी पिछानौं ॥ जो कोई गुर का लै
वै नाम ॥ ता कूं नित उठ करै परनाम ॥ जीव कूं देषै गुर का बानां ॥ आ

म

कूंजानैगुरुसमानं॥ चरनदाससुषदेवबषानैं गुरभाईगुर मंजानै॥११५ दोहा॥ गुरभाईकूं पूजिये धरिये चरनन सी सं॥ चरनोदककूंफिरलीजिये गुरमनबिसरैबीस॥११६ चौपई॥ जोकहूं गुरकाबस्तरपावै हियेलगायचूंबङ्गि छा वै॥ गुरुदेसकामानसञ्चावै देपरकमाबलबलिजावै काहेदयाकरदरसनदीन्हे॥ मेरेपापतनयेसबछीनें॥ जो ञ्पनेंगुरकोसेवइये देषतपौल्लबऊहरषइये॥ काईसूंड डोतनुकीजे॥ दरसनकरनकरसरबबदीजे॥ फिरठाढे रहेंजोडेहाथा॥ बैठेतबञ्चाज्ञादैंनाथा॥ जो बोलैंसोम नधरिये॥ ञ्पनें औगनसबहीहरिये चरनदाससुषदे वबतावै॥ ऐसागुरमुषरमतिकावै॥११७ दोहा॥ साधना कीनिंद्याबुरी मतकोईकीजेभूलि॥ इनिधामेंदुषपाय हेरहे नरककमेंफूल॥११८ चौपई॥ साधकानिंदकतनमत इषी साधकानिंदकनां हेसुषी॥ सानिंदककालिदीदे य॥ निंदकडालेसरबसषोय॥ साधकानिंदकनरकमंझारे निहचैपावैजमकीमार॥ साधकानिंदकपूरापापी॥ साध कानिंदकइहैञ्पापी॥ मूरषहोयसुनिंद्याकरै॥ साध संतकूंऔगुनधरै॥ साधकानिंदकस्वानसमान॥ सा धकानिंदकसूबरजान॥ साधरामकीकहि येदेह निंदककेमुषमांहींषेह॥ चरनदासनिंद्यानजिदीजे

भक्तौंकी अस्तुति कीजै ॥ ११ ॥ दोहा ॥ साधों की अस्तुति कि
यै हरिकी अस्तुति होय ॥ कुंडलिया ॥ भक्ति डिबन मूं का
है ॥ नातांहीयर संग ॥ सुषदेव किरपा अब कर सौ ॥ मोह छु
टावन अंग ॥ मोह छुटावन अंग कोई हि.ये मांहीं ॥ भा
रै ॥ कुटंबजाल सूं छूट लगै हरिचरनन नारै ॥ चरनदा
स यौं कहत हैं अपने मन बैराग ॥ जागत नींद ही सुं सुले चो
पे पद मैं नाग ॥ १ ॥ दोहा ॥ गुरु पूज जगत छोडिये ॥ औ सागर के
दं ॥ साधों की संगत करे ॥ तजो जात कुल बंध ॥ बंध नार
सुत कुटंब सब ॥ जम की फांसी जांन ॥ तौ हि छुटावैं रा
मसूं ॥ इनका कहा न मांन रषे चपक उ कोइ राषि है ॥ जहर
मोहि का जाल ॥ जीव तडुष बहु नांत के ॥ मुये नरक तत काल ॥ ८ ॥ या या
नी कूं रे गल्त गे ॥ सकल कुटंब परवार ॥ तिन मैं दो बलवंत हैं ॥ ऐक दर
ब ऐक नार ॥ प ॥ नार किये डुष बहुत हैं ॥ बंधन बंधे अनेक जो सुष चा
है जीव का ॥ तिरया कूं मत पेष छब मांहि डुष तीन हैं ॥ यह तूं निहचै जां
न ॥ आवत डुष राषत डुषी ॥ जात प्रान की हांन ॥ ७ ॥ तातैं इनकी प्रीत मन
उरै तमी निरवार ॥ ए दुरजन डुष रूप हैं ॥ औसो करो बिचार ॥ ८ ॥
जो कोइ इनमैं पगे तिनसूं छूटै रांम ॥ चरनदास यौं कहत हैं ॥ कौं
पावै हरिधाम ॥ ९ ॥ हेर फेर धन के कारन ॥ बीतै पहर के रात ॥
तीन पहर निस के रहै ॥ षोवै नारी साथ ॥ १० ॥ नारी के फैला व
कौं ॥ दावै औरन छोर ॥ दरब माहि निस्तार है ॥ चाहै लाष करोर

११ ॥ दरब जोड मरजाय पुड़ाब ॥ हाथ बैठे जहां नाग ॥ नारी मैं जो
चित रहै ॥ कहे कूं करकाग ॥ १२ ॥ ऐसे ही भरमत फिरै लष
चौरासी देह ॥ कनक कामनी को तजै ॥ जब लग नां
हीं नेह ॥ १३ ॥ मूरख त्याग न कर सकै ॥ ज्ञानवंत तज देह ॥
वो काय ग्रह लमग ओर रहै ॥ काहीं न साजे ग्रेह ॥ १४ ॥ जो कोई छो
डै कुटंबकूं ॥ ऐसी कर पहचांन ॥ जैसे छूटे बंद सूं ॥ जम
जौरा सूं जांन ॥ १५ ॥ जीवत जम तो कुटब है ॥ घेर घेर दुष दैं
ह ॥ ऐसी मनषा देहकूं ॥ लूटैं ही नित लैंह ॥ १६ ॥ कै ठग
सबकूं जानियै ॥ कै धाडी कै चोर ॥ चरनदास कहै देषते ॥ लू
टत हैं निस भोर ॥ १७ ॥ बाहर कलकल करत हैं ॥ भीतर लाव
ही लाव ॥ ऐसैं बांधो बच कर ॥ छुटे हाथ न हि पाव ॥ १८ ॥ लाज
तौ षगल मैं पडा ॥ ममता बेडी पाय ॥ रसरी मूरख नेह की ॥ ली
न्हे हाथ बंधाय ॥ १९ ॥ डार दियो अज्ञान मैं ॥ परे परे बिलला
य ॥ निकसन कूं जब ही चहै ॥ कुतका मोहि लगाय ॥ २० ॥
रषवारे जहां यां बहैं ॥ छडियन के रस जान ॥ तब ही देह मु
लाय कै ॥ नो बुच्छ उपजै ज्ञान ॥ २१ ॥ कुटंब और इन्द्रयां च
को ॥ एक मतो ही जांन ॥ प्रानी कूं जग मे फसा ॥ चहै प्रांन
और पान ॥ २२ ॥ सब स्वारथ ही लगे ॥ इस कास गान को
य ॥ जो सिर मारै धरन पै ॥ कलप कलप कर रोय ॥ २३ ॥ मात
पिता सुत नार की ॥ इनकी उलटी रीस ॥ जा मैं देह फसी

यकै ॥ करकै प्रीत ही प्रीत न ॥ २४ ॥ जसैं बधक बिछाय कै
जारमांहि कण डारे ॥ प्रीत करै पंछी गहे ॥ पाछै करै तु घार र
प ॥ जैसैं ठग बहु प्यार कर ॥ बोलाय नहीं देह यह लैं लाड़ बा
य कै ॥ पाछै सरबस लेह ॥ २५ ॥ हित सूं हरन बुलाय कार ॥ गो
ला मारे गात ॥ चरनदास यों कहत है ॥ ऐसैं इनकूं जान
जल मैं बंसी डारिया ॥ आटकायो जहां मांस ॥ मछरी जानैं
हित कियो ॥ लषो न आपनौं नांस ॥ २६ ॥ श्री इय हगातनो
लषी ॥ पड़ो कुमत के धुंध ॥ ज्यौं कीट्यौं सूझी नहीं ॥ कियो मोह
ह नें आंध ॥ २७ ॥ सब ठग यह देषी नहीं ॥ कपट हेत नहीं जात
इन ही मैं मिल कर चलो ॥ समझो नां अज्ञान ॥ २८ ॥ अब इन
के छल कहत हूं ॥ समझै हे पुत्र दास ॥ जानैं नां कोई रहै ॥ क
है चरन ही दास ॥ २९ ॥ चौपई ॥ अब इन के छल कहत समझाऊं ॥
भिन्न भिन्न परगट दिषलाऊं ॥ पिता कहे तुम पुत्र हमा
रे ॥ बहुत भरोसे मोहि तुम्हारे ॥ अब तुम ऐसी बिद्या प
ढो ॥ आपनें कुल में ऊंचे चढ़ो ॥ सतसंगत में कभूं न जइये
आप नै घर में चित लगइये ॥ हम हतो हैं उ निधाके कूं ते
जात बरन में होहु सपूते ॥ किरत करो पालो सुत बाम ॥ क
या कीरतन सूं क्या काम ॥ अब तुम ओर हमारी हूजे ॥
हम नैं कियो सो तुम हूं कीजै ॥ ऐसी बुध बडाई दीन्ही
न्हीं ॥ इन हूं हिरदे मैं धर लीन्ही ॥ चरनदास कहै है देषेग
प्यार ॥ मुयैं नरक जीव ही षार ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ पिता बुध ऐसे

मीठई॥ रहिये कुटंब मंझार॥ जो कुछ है सो जगत में॥ धन संपत औरनार॥ ३३॥ हरि की राह भुलाय कर॥ दीन्हों कुटंब चित लाय॥ तातें दुष जग में घने॥ चौरासी भरमाय॥ ३४॥ चौपई॥ अब सुन माता हूं की बातें॥ आप न जानि सिषावें बातें॥ दरब कमाइ पूरी कीजै॥ ला माता की गोदी दीजै॥ करै कमाई सो ई सपूता॥ नाहीं तो वह पूत कपूता॥ नारी कूं भूषन पहरावो॥ सुत पुत्री के ब्याह रचावो॥ पूजो पित्र देवी देवा॥ सकल कुटंब की कीजै सेवा॥ अपनैं कुल कूं ज्योत जिमावो॥ तातें बहुत बडाई पावो॥ बहु बिधि स्वारथ ही सिषलावें॥ परमारथ की राह भुलावें॥ बारबार जग में उरझावें॥ वैसें ही नित ही चली आवें॥ जित का तित घंड्ड रषत्तीन्ही॥ चरनदास कहैं ज्ञान दीन्हा॥ ३५॥ दो॰॥ माता हू नैं प्यार कर॥ बहुत दिया सिर मार॥ यह ही जुनी कै धारियो॥ महत दरब सुत नार॥ ३६॥ चौपई॥ अब नारी की गत सुन लीजै॥ ता मैं चित कबहूं नां दीजै॥ छल बल कर बस अपनैं राषै॥ मधुर बचन रस सनें जु भाषै॥ कहैं कि सिर के छत्र हमारे॥ हम तो लागी सरन तुम्हारी॥ तुम तो बहुतै लगो पियारे॥ मोकूं तज मत कहू जो न्यारे॥ ऐसें कह कह बांधा चाहै॥ आगें अंग कां मन के बाहै॥ बस्तर भूषन देह सिंगारै॥ नांनां बिध कर रूप संवारै॥ करै कटाछ बहुत ही मारै॥ बस कर नैं कूटें नांडारै॥ काजल भरी आंषसों जो है॥ अंग बिसैर सदे देमो है॥ स्यासूं निकसन कैसें पावे॥ चरनदास सुषदेव सुनावे॥ ३७॥ दो॰॥ तिरिया ही के जाल मैं॥ आ

पफसेकोय ॥ मडफतडफकांईरहै ॥ निकससकैनाहीसोय ॥ ३८ ॥ चौ ॥ ह्
सुतपुत्रीबनितासोंजानौं ॥ समधानैंवासूंपहचानौं ॥ औरबंधेबहुतैंबं
धवार ॥ नाईबांमनबहूपरवार ॥ सेदमसाणिदेबीमत ॥ गिरहनलनर
लगैअकुत ॥ चौपऊहोईलागैसौंन ॥ तिरयाकारनसाजैभौंन ॥ औ
रैबहुतबषेडुजांनं ॥ नारीसेतीहीपहचानं ॥ महाअपरबल डुषनिंहमां
हीं ॥ मरकैचौरासीमैंजांई ॥ तातैंहूजैबेगउदास ॥ समझतजोतिरयाकी
आस ॥ श्रीसुषदेवकहैंचरनदासा ॥ सभीकुटंबहैनरकनिवासा ॥ ३९ ॥
दो ॥ सुतकीबोलीतोतली ॥ करैचौचलेचाव ॥ मनमोहैबांधैघनौं ॥ कूटन
कोनउपाव ॥ ४० ॥ हसगोदीमैंआयकर ॥ बहुतबढावैनेह ॥ तामैंघंनौं
कालडुषदेह ॥ ४१ ॥ मोहलगामरजायजब ॥ तनमनलागैआग ॥ चरन
दासयोंकहतहैं ॥ सुषचाहेतोत्याग ॥ ४२ ॥ तिंहकारनचिंतालगै ॥ जबल
गघटमैंप्रांन ॥ हरिगुरहियेनआवई ॥ यहीजुपूरीहांन ॥ ४३ ॥ तनछूटैंसु
नमैंरहै ॥ एनरतेरीआस ॥ जमजुसकरकोलहै ॥ मुयेनरकहीजास ॥ ४४ ॥
चौ ॥ ई कुटंबबंधनसैंकरजानौं ॥ फांसीसारतिनकूंपहचानौं ॥ तोकूं
डारैंनरकमंझारा ॥ तातैंहोहुसबनसैंन्यारा ॥ बजातकडरजहैंघाव
मांहीं ॥ तूउनकूंजानतहैनांहीं ॥ हैंबैरीतूजानतमीता ॥ सुपनैंहूंइ
नकीनहीचीता ॥ कामक्रोधलोभअरमोहा ॥ सबहीराषै
तोसूंद्रोहा ॥ जिनसैंगरबमछुरता नारी ॥ जगतबडाईजिनकी
नारी ॥ आपापालियैसदाहीरहै ॥ टेटेबचनकूठबहुकहे ॥ इनके
संगघनेंहीडुष्टी ॥ तेरेतनमैंरहैंबहुदिष्टी ॥ नितहीकरेंअकारज
तेरा ॥ चरनदासकहैंइहिबिधघेरा ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ बडबैरी ॥ छव

मैंबसैंतू नहीं जीतनकोय॥ निसदिन घेरैंहीरहे॥ छूटकारा न
हीं होय॥ ४६॥ चौपई॥ जोक कुं निकस बाहरै आवै॥ औवै बिरक
त का रूप बनावै॥ कुटंब छोड उपजै बैरागा॥ जागत रहा चरनौ
मैं लागा॥ कछ्छ ग्रास नां मन मैं धसी॥ नबही लोक बडाई हसी॥
पुष्ट भयो आया अभिमान॥ सहजैं आया मोह ग्यान॥ सबही सं
गी लिये बुलाय॥ याबिरकत कूं घेरै आय॥ ताकूं बांध मुरंड कीं
हां॥ फेर कुटंब के मांही दीन्हां॥ कुटंब मिंत्र गाढा कर बां
धा॥ बडी बडी आषों मैं सा बांधा॥ चरनदास कहै घर मैं
आया॥ घर के हर जन वाहि बंधाया॥ ४७॥ दोहा॥ कुनबे मैं सै
निकस कर॥ फिर कुनबे मैं जाय॥ तिह चेतन रकी होयगा
दुनियां मैं दुष पाय॥ ४८॥ चौपई॥ एक तपा बन मैं जा रहा॥
सीत उस्न पावस सिर सहा॥ सूकि पातो किया अहार
छूटे सबही जग ब्यौहारा॥ रहे ध्यान मैं निसदिन लागा॥
हरि के चरन कंवल मैं पागा॥ तिह मां सु नरराजा तहां आ
या॥ देषत कं मां सीस निवाया॥ हाथ जोर ठाढो फिर भ
यो॥ तपसी मुष न आबे ठतर क दौ ठाढें भये बार बहुत भ
ई॥ जब राजा ने मन मैं कही॥ यह तपसी है बहु अभि
मानी॥ मो आवन मिहमां नहीं जानी॥ ऐसी क हम
न मांही बैठे॥ आपही आप भूप वह बैठा॥ ४९॥ दोहा॥
जो हरि के रंग मैं रंगे॥ भूपन सों क्या काम॥ चरनदा
स कुछ मैं नहीं॥ नाकु छ चाहि ये दाम॥ ५०॥ चौपई॥ तपसी

म.क्रं०
८

कछू न सुष सूं भाषा ॥ राजा उठ चट मारग लागा ॥ कोध मन राम हु
लन मैं आया ॥ छोटा मदन मै मता उपाया ॥ पातुर नैज वाहि ष
नमाऊं ॥ भेद मूह सांच को पाऊं ॥ जबही पातुर लई बुलाई ॥ ए
बातें वाकूं समझाई ॥ कहै पातुर श्री आज्ञा दीजे ॥ देषत मन
मारा का लीजे ॥ आपस ले पातुर घर आई ॥ प्रथम लौंडी एक
पठाई ॥ वा तपसी का लाव वोने ब कौंन वस्त सूं वाको हेत ॥ क
हा सु भोजन करै आहार ॥ छूटे मजन सूं कौंनी बारा ॥ वा
दी गई भेद सो लाई ॥ पातुर कूं सब बात सुनाई ॥ ५१ दोहा
झाडे जा मुख छाय कर ॥ फिरत लावु मै न्हाय ॥ चरनदास
फल पात झो गिरे पडे हीं षाय ॥ ५२ चौपई ॥ पातुर सुन मन
मैं डरपाई ॥ कैसैं वाकूं बस करूं जाई ॥ बिन बस किये नृप न हिरी
झै ॥ काढ नगर सूं बहुत षीजै ॥ तातैं मकर ये च कछु कीजै ॥ तपसी की
मन करमै लीजै ॥ नौ कहूं इ दूजा नैक रूप उये ॥ छल बल कर वा म
दन जगाइये ॥ यह बिचार पातुर जब कीयो ॥ नांनां बिध भोजन कर ली
यो ॥ गई जहां तपसी अस्थांना ॥ वह तो करत हुतो हर ध्यांन ॥ बैठ रही
धीरज उर धार ॥ जब लग उठे ध्यान निरवार ॥ उठे ध्यांन सैं आंषें षो
ली ॥ कर डंडोत नार यो बोली ॥ पुत्र नांह मेरे घर मांही ॥ जिस कार
न दरसन कूं आई ॥ ५३ चौपई ॥ यह कह भोजन आगै राषा ॥ तप
सी भोजन लियान चाषा ॥ वा दिन तो यौं ही उठ आई ॥ अंगली दिन
गै रन हि याई ॥ दूजै दिन गई बहुत संवारा ॥ न्हा कर आये ये उह
बारा ॥ कहा क भोजन हमरा कीजै ॥ हमरै नैनन कूं सुष दीजै ॥ त

पसी कहै मन चित हुलाऊं॥ सूके पाते औरफल खाऊं॥ पातुर
कहे हरस सूं आई॥ तुम तो दयावंत सुषदाई॥ यही मांन मेरा तु
म राषो॥ बहुत नहीं अंगुली भर चाषो॥ कहि कहि बचन ब्रागहि
पिंघलाया॥ अंगुली भर भोजन चटवाया॥ चाट अंगुरी तन चार
त रह्या॥ चरनदास कहैं मन बहाया॥ ५४ दो॰ हा॥ पातुर ने कर जो
र कर॥ बहुत रूप बचन सुनाय॥ एक बार औ रली जिये॥ इंद्री जि
तरिष राय॥ ५५ चौपई॥ फिर भोरी अंगुली भर लीन्हां॥ बहुरूं मु
ष के मांही दीन्हां॥ अंगुली टिकन न काम कर आई॥ घर आ क
र बहुत ही हुलसाई॥ सिर कंधे दिनां चार हरगई॥ तत नहीं गई॥
यही मन आई॥ पातुर चतुर टील सूं आई॥ तपसी कही कहा
तुम रही॥ जब ही पातुर प्रीत पिछानी॥ आयनी कलापै ठवा
वादि वपिंजन कछ नलाई॥ बहु बिध भोजन बात सुनाई॥
घर ठाकुर सेवा चित लाऊं॥ नांनां बिध के भोग लगाऊं॥ ले आज्ञा
निज भवन पधारी॥ चरनदास कहैं छल कियो नारी॥ ५६ दो॰ हा॥ त
पसी कूं जीतन कियो॥ टेक बांध कर बाद॥ हो रैही रैं लाय कूं याजि
या जिभ्या के स्वाद॥ ५७ नांनां बिध के स्वाद कर॥ ले गई वाही पास
कहो क यह परसाद है॥ लाजै कोई गिरास॥ ५८ चौपई॥ ठाकुर
को परसाद जु लीजै॥ याकूं नांही कबहूं न कीजै॥ नांही कियो होय
अपराध॥ तुम तो कहियो पूरे साध॥ कछूक पातुर बचन सुनायो॥
कछूक तपसी के मन आयो॥ डारो हाथ थाल के मांही॥ ज्यौं ज्यौं बात
सराहत जाई॥ पातुर कहो सदा ले आऊं॥ जो जो ठाकुर भोग लगा

मक कं ॥ या मै कछू दोष न हीं लागै ॥ तन मन काम सब याते गमो गै
वाकूं बस कर कै घर आई ॥ सषियन कूं यह कथा सुनाई ॥
ग कामदेव की सो दूषा कं ॥ तपसी बंद कर दिष लाऊं ॥ पटी
वो हा ॥ रस न स्वाद ही बस कियो ॥ मन मैं जीत न बाव ॥ का
दी आप बांदी कमूं ॥ पुहचायो परसाद ॥ चौपई ॥ काबहूं षा
तपसी दिग ज्ञावे ॥ नाना बिध के भोजन षावै ॥ काबहूं नेजे
बांदी हाथा ॥ कहियो कूट नहीं मो हित नाथा ॥ वह ज्ञा तैं म
म सेवा कारै ॥ यह तो भजन तपस्या हरै ॥ एक दिनां पातु र
ग फांई ॥ हाथ जोर यों भाषत भई ॥ कन्ही का मेरे में वन प
पधारो ॥ करो पवित्र हर जूठ न डारो ॥ लान तपसी बहु बात
बनाई ॥ पे तपसी को मन नहीं भाई ॥ फांई रहीं रो नां सो
की तैं ॥ तपसी को मन न बस कर लीनौं ॥ हजे रस को कि
ला विषाई ॥ मोह बढो और भ्रो षल जाई ॥ तोर म यों फिर
बात सुनाई ॥ बल बल कर घर रही ले आई ॥ चरन वा
स कहै तपसी नहिं जानी ॥ आज कछू ठगनी ना यह चानी ॥
दोहो ॥ घर मैं लाब कु सुष दियो ॥ दिना आठ ही राष ॥ त
पसी कूं वा बस भयो ॥ यां चन सूं रस चाष ॥ चौपई ॥ इंडी बस
पातुर घर आया ॥ आप नें तप का तेज घटाया ॥ सिम राम
न नया फूर कछू फूटा ॥ लागा ध्यान राम का छूटा ॥ देषो
घर के बैरी कीया ॥ पकड बांध और रै कर दीया ॥ फिर
पातुर राजा पे गई ॥ तपसी ठगन बात सब कही ॥ नेक बैक

षिकहसमकाई ॥ जबराजाकूंहांसीआई ॥ योंहीकहीबेगले
आवो ॥ वाकीसूरतहमैंदिषावो ॥ किरपातुरउलटीहीआई
तपसीकूंइकबातसुनाई ॥ राजादरसनकरनबुलावै ॥ उ
तसेतीषांनेंकूंआवै ॥ वाकूंचलकरदरसनदीजै ॥ किरपा
प्यारबहुतहीकीजै ॥ हमतोउनकेसदाकहावैं ॥ नितउ
ठकरमुजरेकूंजावैं ॥ कोतोअपनांघरहीजानों ॥ उठियेच
लियेसुकचनमानों ॥ ६३ ॥ चौपई ॥ यौंकेतपसीआगेबाला
ऐसेंराजदुवारेंचाला ॥ जाराजाकूंदईआसीसा ॥ राजावैठेंआ
योसीसा ॥ हसकरकहीजुकिस्याकीनूं ॥ यहनारीअपनी
करलीन्हीं ॥ घरबैठेहमदरसनपाये ॥ वेधनहैंजोतुमकूंलय
ये ॥ तपसीकहीधन्नतुराजा ॥ बहुतनकेसारतहोकाजा
तुम्हरोतेनदेषहमचीन्हीं ॥ तुमहूंतपस्याआगीकीन्ही ॥ बि
नातपस्याराजनपावै ॥ बेदपुरानबनमेंयौंगावैं ॥ हमहूंदर
सतुम्हरेपाये ॥ तपसीकहयौंबचनसुनाये ॥ भूपनैंब
डाअचंभाचीन्हां ॥ बहुतदरबपगतुरकूंदीन्हां ॥ फिरराजा
तपसीसूंबोला ॥ षोटकियेकासबहीषोला ॥ एकदिनांह
मतुमदिगआये ॥ बनमेंतुम्हदरसनपाये ॥ [illegible] ॥ हूंब्रा
टारहाबहुतीबारा ॥ नांतुमबोलेनैंनउघारा ॥ आजदयो
मअैसाहरिकीन्हां ॥ [illegible]ईआतुमदरसनदीन्हां ॥ यहसुन
तपसीसोचबिचारा ॥ जबहीपातुरसूंभयान्यारा ॥ बेगहीं
उठजंगलकूंगाया ॥ चरनदासकेहेरमतांभया ॥ ६४ ॥ दोहा ॥

जो इंद्रियन के बस न है। यही हाल हो य जाय। करै हाय दुष
हाय ६५ ॥ चौपई ॥ पांचो चोर महा दुष दाई ॥ सोया जग मैं
देह फसाई ॥ तन मन कूं बकुआ धलगावैं ॥ का पकवा चक्र
पाप चढावैं ॥ करमलगा बकुतै नरमावैं ॥ जम के दुष पान त्रास ष्टि
वावैं ॥ फिर चौरासी मां छिफिरावैं ॥ उठ आगन मैं ताक्षित पावैं ॥ ज
नम मरन जारी दुष देवैं ॥ मन घ देह का सरबस लेवैं ॥ तीन लोक
मैं डोले ह्याला ॥ सुरग मरत बकुरं पाताला ॥ कैसें मुकत धाम कूं
पावैं ॥ जो इंद्रियन के बस हो जावैं छूटै जब गुर किरपा करैं ॥ च
रनदास के सिर कर धरैं ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ स्वारथ ही के सब सगे कु
टंब मित्र कुल गोत्त ॥ परमारथ समझें नहीं ॥ जो दयाल
गुर होत ॥ ६७ ॥ परमारथ मैं दुष मिटै ॥ काल हु काल पवां
जाय ॥ स्वारथ मांही सुष नहीं ॥ तामैं चित न लाय ॥ ६८ ॥
स्वारथ मैं चिंता घनी ॥ जो क्यां करि हो गोहि ॥ बिना हा
॥ की चिंता मैं जीवित जरि है देह ॥ ६९ ॥ चिंता घट मैं
नागनी ता को सुष है सोय ॥ निस दिन पावै जात है जा
ग सके नहीं कोय ॥ ७० ॥ नाघर चिंता नागनी ॥ जा मु
ष जपन नहीं होय ॥ जो दुक आवै याद बी ॥ तंही जाय
फिर षोय ॥ ७१ ॥ चिंता ही सूं लगत है ॥ चरनदास नरस्वा
॥ तही ध्यान हरि चरनन को ॥ कैसे ही सब लाग ॥ ७
२ ॥ नागत बास नां के विषै ॥ घर चिंता को जांन ॥ अगत की
आसा छोड कर ॥ हरि सुमर नहीं ध नां ॥ ७३ ॥ आसा न ।

च

दूमैंलैसदाम नोर घनीर ॥ परमारघ उपजै ॥ हे मन
नहीपकडैधीर ॥ ७४ ॥ धीरबिनांनहिंध्यान है ॥ थिरचल
जयनहीं होय ॥ जोचाहहरिभक्तकूं गतबांसनांषोय ॥ ७५ ॥ अ
नबलगजगसोंप्रीत है ॥ तबलगदुष्य अपार ॥ जो मारीचिं
तघनी ॥ मंबनपिछानोंद्वार ॥ ७६ ॥ जगासूंछूटबाहरय
है ॥ तसीसमैंसबचैन ॥ जयजैं आनंदपुरमहीं ॥ तहां कुछ
लैंनदेंन ॥ ७७ ॥ रहैंराषकहहरिभक्तकहीं ॥ बाधासबछुटजां
हि ॥ जबबैराम आपनेंकरै ॥ बेगहीयकडैबांहि ॥ ७८ ॥ चौ
॥ तातैंसुनमनमेरेमीत जगातछूटन कीरषोचीत ॥ ऐसा
औसरफिरनहिंपावौ कहोमनषादेहगंवावो ॥ संगीते
रनांधनधाम ॥ तूक्यायचैमूढबेकाम ॥ पिछलीगईकामकूं
रोय ॥ आगैरहीयौंहीमतषोय ॥ इकइकघडीअमोलकजी
न ॥ चेतचेतमतहोअचेतान ॥ अपनेंघरकाकरोसंभा
ल ॥ ललकारतआवतहैकाल ॥ यातैंकीजैयहीबिचार ॥
दूरसिदोसीजगजंजार ॥ सुषदेइनकाहीहै चरनहीदास ॥
हरिकेचरनकांवलकरबास ॥ ७९ ॥ दो ॥ यामैंढीलनकी
जियै ॥ यहबिचारमानआंन ॥ चरनदासयौंकहतहैं ॥ यहगो
यहमैंदांन ॥ ८० ॥ आवबदायौकहजातहै ॥ ज्यौंतरवकीछों
हि ॥ चेतस्तिाबीमनकमैं ॥ तजौअज्ञातकीवांहि ॥ ८१ ॥ तूनहीप
कडेजगतनें ॥ तैंहीयकडोआप ॥ ज्यौंनलनीकोसूवटा
धोषेपकडेजाय ॥ ८२ ॥ चौपई जेसेंबांदरआपहीफसिया

१२१
भक्त

समझबानमनमांहीहसिया मूठचरणोंकीजोवहतजता
तौकाहैकूफसाजुरहता ज्योंकांटेंसूंमछीलागी आपही
आईचलीअभागी सरवरभेंतरवहीकोई अजादेवगि
रीवांमांही जैसेंपंछीजालमंजारा आपहीआयफसाब
जमारा पंदकमेंहाथी आयरिया लैग्रायाकेआपहीतिन
रिया बाजतबीनमिरगाचलआया पकडकोंनचं
चलकूंलाया योंहीतुमअपनीगतजानो आपही
बंधेयहीपहचानो असेंजानेंतूंनहींपकडा चरन
दासकहैंनांहीजकडा ८३दो छोडजगतकीबास
नायहीजुहुटनतुयावु एमनअैसीधारियै अबहीनी
कोदावु ८४ अबकेंचूंकेचूकहै फिरपछतावोहोय
जोतुमजगतनछोडुहो जनमआवगोघोयुप्प जग
मांहीन्यारेरहो लगेरहोहरिध्यान फिरपीपरदेहीरहे
परमेस्वरमेंध्यान ८६ ज्योंतिरयापीहरबसे सुरतीयिया
केमांहि अैसेंजनजगमेंरहैं हरिकूंभूलेंनांहि ८७ ज्यों
किरयनबुझस्रामहीगाउजिमीकेनीच सदावाहि
तकतोरहै सुरतरहेताबीच ८८ तनछूटेंहोस
रपहीजाबैठैवाठौर जहांआसजहांबासहेक
हनेमरमें और ८९ चितरहैगोबिंदकोबिषे जग
मैंसहजसुभाय तनछूटैंहरिकूंमिले चरनकंवल
लिपटाय ९० जगत्यागोबैरालैनिहपेमनकोला

आठपहरसाठौंघडी सुमरनसुरतलगाव ९१ सबसूं रहु
निरबैरता गहैदीनताधांन अंतमुक्तपदपायहै जगमें अ
होयनहांन ९२ चरनदासयौंकहतहैं बडीदीनताजां
न औरनकीतौकाचलै लौमायाबान ९३ दयानिवनता
छिमांसीलसंतोष इनकूंलेसुमरनकरै निहचैंपावैमोष ९
४ एसबलछनराममें परगटदीषैमोहि जोएआवैंतुकबि
षैं प्यारकरैहरितोहि ९५ हरिसूंप्रीतलगायकै सबसूंलेह
नठाय रहैसदाइकरामहीं औरसकल मिटजाय ९६ मि
टतेसूंकरनेह झूठेकूंतजदीजियै सांचेमैंकरएहे ९७ सां
चाहरिकानामहै झूठायहसंसार सुषदेवककहैंचरनदास
हो सुमरनकरोबिचार ९८ दसइंद्रियनकूंषैंचकर औ मे
अमरफलचाष सहजहीसुमरनहोतहै तामैंमनकूंराष
९९ मानसरोवरदेहमें मुक्ताहलजोस्वांस चुगियेहंसस
रूपहो षुलैंकरमकीगांस १०० अजपाकोयहीअरथहै बिं
नांजपैंहीहोत कछवाकीज्यौंसिमरवकार तहांलगावोगो
त १०१ आवतहीकूंदेषिये जातेकूंनुनिहार औसैंसुरतलगा
इये चरनदासहियेधार १०२ सकारेतनसींचियै हकारेसु
षहोय औसेंसुमरनसतकों जानैंबिरलाकोय १०३ नामहीं
सेतीउठतहे फिरतामांहिसमाय याकोभेदअपारहैं स
तगुरदहबताय १०४ नाभिनासिकामांहिकर घालहिं
डोलाफूल उपजैअतिआनंदही रहैमउषकामूल १०५

बहुसिंधकीलहररहै तामैंन्हां नसंजोय कलमलसब
छुटजांहिगे पातिग रहैनकोय १०६ अठसठतीर
थविषैं बाहरकौं भटकाव चरनदास यौंकहत हैं
उलटाहीघर आव १०७ स्वांसासं नतविचार कर
तहां करो बिसराम जातैं हरिहीहरिकहो आवत
कहियै स्वास १०८ स्वासालेवैनामबि सोजीवनधि
ककार स्वासस्वासमैरामजप यहीधार तो धार १०९ व
उलटयलटजपयामहीं टेढासीधाहोय याकाफलनु
हींजायगा कैसैंहीलोकोय ११० षातैपीतैं मिलै बैठैं
चलतैंसोय सदापवित्रनामहै करैनजलातोय १११ नीच
नकूंऊंचाकरै कंचनकूंकरैदेव देवनकूंहरिहीक
रै रहैनदूजाभेव भरमतभरमतआइयौ पाईमन
षादेह ऐसा ओसरफिरकहां नामसिताबीलेह ११३
कैघरमैंकैबाहरै जोचितआवैनांव दोनौंहैंहिवरब
री कैजंगलकैगांव ११४ करैतयस्या नामबिन जोग
जग्यओरदांन चरनदास यौंकहतहैं सबहीथोथे
जांन ११५ औषधिकीकथा नामहैं सबकरमीकाजीव
अष्टादस और चारका मथकरकाढाघीव ११६ चारौंजु
गमैंदेषले जिनजपियाजिननाव टेकपकड आगेधसे
पडानयीछैपाव ११७ जैसीभातउनकीभई गावतसाधपु
रान वैसीतेरीहोयगी यहनिहचैकारजांन ११८ उपधंध

कूंछाडकर कलहकलपनांत्यागा सुषदेषकही चरनदा
सकूं रामसनन मैंलागा ११८ हरिकेगुनमाला करे रस
नांऊंयरलाव कीयाकी यादेकर ताहिसरा हंतजाव ११९
देषदेषदेषतरहो अस्तुतेमुषसों भाष ह्वाकी चतुराई
सबै लेकरमनमेंराष १२१ वैसा हो सारंज नां वैसा छी
पी नोहि वैसा कारीगरनहीं याइनिर्यांकेमांहि १२२
अनबन अबब अचर जकिये अद्भुत अधिकअपार ज
लथलपवन अकासमैं देषे दिष्टउघार १२३ सिष्ट बा
गमालीरची वांतिभांतिगुलजार फूलीरीजसिरचीजियै ए
हो निरषबहार २४ कबहूंजगपरगटकरे कबहूंकरैलु
लोय नांनाविधबाजीकरै आपरहतहैगोय १२५ बाजी
गरबाजीरची सबगातपूरनसाज किपेतमासेबऊतही
तोहिदिषावनकाज १२६ देषहोययरसन्नही तूत्याकोगु
णमांन चरनदासजोबुधहै अधिकसुषउताजांन १
२७ बऊतप्यारतोपैकरै तूनहीजानतसार ताहिभुला
यैंहीफिरै नैंकनकरैसंभार १२८ रामबिसारोआदि
सूं लियोवरबचौरनार याहीतैंभरमताफिरो तनधर
बारमबार १२९ गईसुगाई अबा राषेलेएहोमूआयुग
न नितकेवलहरिकूंरटो सीषगुरकीमान १३० सेर
वनमैंनहीं बोइये जेनमयदारय पाव चरनदास
हेजागिये आलसकूं कलगांवाय १३१ सोवनहींमें

१२३

भक्ति

ह्यानहै जागाबमैंबहुलाभ बुधउज्वलहीहोतहै मु
षपरचढैनुश्राब १३२ दिनकूंहरिसुमरनकरो रैनजाग
करध्यान भूषरावभोजकरो तजसोवनकीबान १३३
चारपहरनहींजागसे आधीरातपूंजाग भजनकरोजाय
हीकरो भजनकरनकूंलाग १३४ जोनहिंमरधाहोयहै
र पिछलेपहरेचेत उठबैठारटनारटो प्रभुसूलो
बोहेत १३५ जागौपिछलेपहर ताकेमुंहमेंधूलमु
ना
मरैनाकरतारकूं सभीगांवावैमूल १३६ जागै नापि
छपहर करैनआतमध्यान तेनरनरकैजाय बहुत
सहैंजायमे बहुतसहैजमसांन १३७ जागौनापिछ
लेपहर करैनगुमितजाय पुहफाटैसोवरत है ताकूंला
गैंपाप १३८ पिछलेपहरेजागकर भजनकरैचितला
य चरनदासवाजीवकी निहचैगतहोजाय १३९
पिछलेपहरेजागकर भरननरइहतपीव बिसैजग
तकीआरहै अमरहोयकरजीव १४० जममघु
हैमरनांछुटै आवागवननछुटजाय एकपहरकी
रातसूं बैठाहोगुनगाय १४१ पहलेपहरेसबजगो दू
जै भोगीमांन १४२ मरजादाकीयहकाही बिरकत
क्यापरवान आठपहरसाठोंघडी जगोंहरिकेध्यान
१४२ नोवलेईबिरहीरामके जिनकूंकोसीनींद सस्तर
लागानेहका गयाहियेकूंबीध १४४ तिनसेजगास

हजैछुटा कहारंककहा भूप चलेगये घरछोडके धराबि
रक्त कारूप १४५ जिनकोमनबिरक्त सदा रहोजहां
चितहोय घरबाहरदोऊं एकसा डारीदुखधा षोय १४
६ सोयेहैं संसारसूं जागेहरिकी ओर तिनकूं इकरसहैस
दा नहीं सांझ नहीं भोर १४७ उनकूं नींद न आवई रा
मभिलनकी चीत सोवैं नांसुषसेजपै उनके हरि सों
मीत १४८ कैसो वैं हरिसूं मिलेजिनके चांचे भाग के
सोवैंहरित्यागके रहे जगतसूं लाग १४९ सोवनजागन
भेदकी कोईक जानतबात साधूजनजागत
तहां जहांसबनकीरात १५० जो जागे हरि भक्त में
सोई गुतरे पार जो जागे संसार में सोसागर में षार १
५१ कैजागतजोगी भरा कै जागा बसकाम कैजा
गाजगटहलमैं लागरहा धनधाम १५२ जैसें जनमगवा
दिया महामूढअग्यांन चौरासी मैं फिरचले मनका
कहा जुमांन १५३ सतगुरसरनैं आयकैर कहानमानैं
एक तेनरबहुदुखपायहैं तिनकूं सुषनहीं तेक १५४
सतगुर चरनैं आलागो कियानहरिकाषोज सो घरकूं कू
रसैंकरा और जंगलकारोक १५५ पेट भरे भरसोइयो ते
नरपसूसमांन परनारी कैआपनी तिनका नांहीं ग्यांन १
५६ जैसा तैसा षायकर पेट भरे भरलेह पडकरसोवै
भोरलौं सो सूंकरकी देह १५७ हरिचरचा बिनबके

बक्त चरमेसुखकरकोभूस चरनदास कहेसहसाफलो कायधूक
हीधूम १५८ जोपावैमोक्षचिरै करैनहींपहचांन पीठलदे
हरिनांजप ताकूंपरहीजान १५९ शेकज्ञानवादेहकूंताकूंन
हीबिचार फिरैबिनामरजादही बकताकरैव्यहार १६०
बकताकियैंब्यहारही मैलीरहेजुबुध हरिकेनिर्मलनाव
की कैसैंआवैसुध १६१ छूछमभोजनखाइयै रहियैंनां
पडसोय ऐसीममनषादेहकूं मनकाबिनामतखोय १६२
जतनमचूलोहीजातहै ज्यौंकरामैंलाव दौरतमगाकीछां
हिको नेकनहीठहराव १६३ समकसिंताबीनकले
नैकनढीललगाव आपाहरिकूंदेचुको याकोयही
उपाव १६४ जगकाकहानमानियैं सतगुरसैंमनबुध
ताकूंहियेमेराखियै कारोसिंताबीसुध १६५ गुरसेतीस
तगुरबडे परमेस्वरकेरूप मुक्तकांनिपुंहचायदे जग
तछूटावैंधूप १६६ कु लि पहलागुदाईकरू दूजे
माईजांन तीजागूरूबिलावडी चौथापितापिछांन
चौथापितापिछांनयं चवैपाधाजोनौं कांनफूकागुरु
छतातासपूजादेमानौं सतवांसतगुरजांनियै जगसूं
करैउदास मुक्तधाम सोई देतहे कहैचरनहीदास
१६७ दो गुरमिलतें ऐसैंकहे कावेलावमोहिदेह
सतगुरमिल ऐसेंकहे नावधनीकाले १६८ कानपूं
कागुरजगतका राममिलावनऔर सोसतगुरकूंजानियै

मुक्तिदिखावन और १६९ गलियांशुरफिरतहैं घरघर कं भ
ठीदेत औरकाजजनकूं नहीं दरबकमावनहेत १७०
सतगुरु तुम्हा देतहैं भक्तरामकी लौ पहलेहमकूं भेट
ही सीस आपनां दे १७१ सोसतगुरसुषदेवहै मम जि
ये मैं रहे तिनकेसरनें तिनकेसरनें आवमन चर
नदास कहें गाय १७२ यहसंसारोतुपदेमही मैं आ
पनकूं कीन मोमनकूं आपाघ नां कही होय आधीन
१७३ सतगुरसूंमंगूं यही मोहिगरीबीदेह दूरबडुपनकी
जियै नाम्हीही कर लेह १७४ जनकपरमगुरदेवजी सु
नसतगुरसुषदेव यही अरजमैं करतहूं मोहिसाधक
रलेव १७५ चारोंजुगके भक्तजन तुमहोसुषकेधाम चर
नहीदासरहोयकै तुम्हैं करूं परनाम १७६ आदिपुर
सकिरपाकरी सबऔगुन छुटजांहि साधहोयलचरन
मिलें चरनकंवलकी छांहि १७७ तुमरी शक्ति अपार है
लीला कोन हि अंत चरनदाससोकहतहै औसेंतुम भ
भगवावंत १७८ रच्यो आपमैं जगति रूपना
रायनकीनों दूजैलछमीभईबहुरयानीरंगभीनौं
नाभकंवकंवलफिरभयोजहांब्रह्माजीउपजे बि
धकी त्रिकुटीमांहितहांसंकरजीनिपजे चारबेद अ
र बिष्णु कै सकालजगतछिनमैं कियो निराकार
आकारसो चरनदासनिंहमन दियो १७९ क ते

वही तो अडिगाराम चौथे पद बास जो को वही तो अडि
गाराम मथुरा में आयो है वही तो अडिगाराम जोगी ना
को ध्यान धरै वही तो अडिगाराम सीता पति पायो है व
ही तो अडिगाराम सब गांव बन में रह्यो वही तो अडिगा
राम संतन सहायो है वही तो अडिगाराम चरनदास जा
को वही तो अडिगाराम काघा पाघी जे पायो है १४६ क
न माया नर्म फंद देष साधन को संग पेष समझ को पह
र नैष कूं चेतन नता वरे मन कूं बस्बाव ज्ञान एक गा
की सबै जान नाद कैंग है ते तू अनंद दव जा वरे उ
लट पलट का या बीज चारे पार हरनी च षेसी विध
मेरयै समीर कूं चढावरे कहैं चरनदास गगन मधे करे
बासा जहां नहीं सीत न उसन नि मैं पद पावरे १४७ दो दुरजो
धन राव नगाड़े और जादौं परवार चरनदास थिर को नहीं
हो पुमिटे संसार १४८ क त भोगरस बिहानों जात ट
रै गी दुपहरी सी समझ कै बिचार देष चलीं आ बेरा न
है मंवत है सुचान काल तेरे पर तकर होंछि न पल की
षबर नांहि करै आयु घात है दारा सुत संपत सब सुपने
को सुष भयो जानौं गोन दीजब छूट जाय पगात है कहे
चरनदास अब तजै क्यों न बिषै बास पानी मैं नाव जैसे
मैं आव चली जात है १४९ बि कुमारा संभाज
और लाज घार्टे कर्मन सों चौरासी के पास न समूंद

क्यों न लजरे साधन के संग बैठ धर्म हूं की ना चलेट
गुरहूं को ज्ञान राष पेमू नक मजरे छूटें ज नारी
जम दैवें दुष भारी डारें नरक कूं मेझारी आवागमन
क्यों न लजरे कहै चरनदास अब बन जे कोन बिषेबा
स रम के संवारे तू राम राम भजरे १५० बि भूल
रहो जग मैं जटता बस दारा सुत मित पीत बढावै छूटन
सूं मन बाट रहो ग्रह बीचु सो अंत समै कोइ पास न जा
वै आं नगा हैं जम जाम तेरे सब ही मिल प्रीत मराम बत
तावै चरनदास कहै चेतौ नर पूरष राम बिना कोई का
म न आवै १५१ बि धावै नर्म देवन कूं कोई संग सापी
नांहि नीर परैं ते रहै परस ता है चं ड की मूत औरली
तलला कू प नै क्यौं न राम नाम कटै जम बेडा है ऐसें
और बूराही पाषंड पूजा सनी करें लगी है ब ही रकि हूं नै
नरन हेरा है चरनदास कूं सब संतन को चेरे कहैं ऐ
सो जग अंधा जो नरकर मो नै घेरा है १५२ दो जतर
टौं ना मूंड हलावत और की मिया झूठ चरनदास क
हैं सब भगा हो यह जगाली ना तूट १५३ बि भूतन कूं से
वैं सो भूत न मैं जांइ मीलै जाइ कू सेवैं सो चमारता की मा
ई सूं देवतौं कूं सेवै तो देबतौ का बाहन होय औ बदी
कूं सेवैं ते मिलपुरा बराई सूं की मिया कूं सेवै तो षराब
होय उ बिया मैं औसें धन बोवै जो सुना वैं नाहि भाईसूं

कहैंचरनदासहमइतनौंकूंमानैंनांहि देषमभजीव्हा
उद्यिाम्रनलोगकन्हाईसूं १५४ ३ या पारमारा नामरैग
धकहोयनलेल केतपचपचमराा सिरमैंभ हीमेल सि
रमैंभिष्टामेलमटककरजन्मासिरायो जबीबूंटीकफि
रै कहींकुछहाथन आयो बौरेहरिकौं नभजेकाहेकूंज
नमगंवायो चरनदासकीभियांजूठीमोकूंगुरसुषदेवेसु
नायो १५५ २ सातपांचकीसेवतजोलग्राकासूं साधन
कीकरसेवमुडोमत भेषसूं भेषीमांहिच्यलेषयहीतूं
जानियों चरनदासकीसीषनिहचैकरमानियो १५६
दो आपभजनकरैंनहीं औरैंमनैंकरैं चरनदासक
हैवेदुष्ट नरमभरमनरकपडैं १५७ औरनकूंउपदे
सकरै भजनकरैनिहकाम चरनदासकहैवैसाधजन
पुहचैहरिकेधाम १५८ सुन्नसहरहमबसतहैं अनहद
हैकुलदेव अजपागोतविचारले चरनदासयहीभेव १
५९ भक्तिपदारथउदैसूं होयसभीकल्यान पटैसुनैंसेव
नकरैपावैंपदनिरबांन भक्तपदारथमेंकही कछु
इकभेदबषान जोकोईसमझैप्रीतसूं छूटैजमडंडमुं
न १६० पाठकरैमननमेंधरैं बहुरंकरैबिचार कहें
गुरूसुषदेवजी उतरैंभौजलपार १६१ जैजैश्रीसुषदे
वजी तुम्हेंकरूंपरनाम तुमप्रसादयोपोथीकही भएजू
पूरनकाम १६२ हिरदैमेंसीतलभिऊपे नयतनगईम

सबहर॥ शाबाजीकेकहेतैं॥ कायरमनभयोसूरं खेदन
चरवैपुहपरधर॥ बरकरैपरनाम॥ कथाबाचसबहीसुनै
कहायुरकहाबाम॥१६४॥ कहैसुनैजोप्रेमसूं बाकूं रषैया
द॥ चरनदासयौंकहतहैं बनिहैपूरसाधाद॥ इतिश्रीचरन
दासजीकृत भक्तिपदारथसंपूर्णसमाप्तं॥ अथश्रीमहाराजसा-
हिश्रीचैसुषदेवजीकेदासचरनदासजीकृत मनबिरक्तक
रनगुटकासारलिष्यते॥ दोहा॥ नमोनमोश्रीव्यासजी सत-
गुरपरमदयाल ध्यानकियेआसानमैं लागैनजगतबयाल
१ अथपचीसीछंद नमोनमोसुषदेवतुमहो परमा
रमहैं तुमकिरपासेंआयमिलेघनस्यामहैं तुमरी
दयासेंहोयजुपूरनजोगहैं तनचौरासीधारकटैभ-
यैमनरोगहै तुमकिरपासूंज्ञानयहारयपांवई
तयजैसारबिचारअसारछुटावई तुमरीदयासूंहोय
भक्तिनिसभोरहै हियेसेतेउरमाठज्जुप्रेमहलोरहै
तुमकिरपाबैरागहूरलगाआंवई सकलबासनांछुट
परमपदपांवई सबगुनदायकलायकपरमयुदा-
लहो ममहिरदेमेंआयकेरमबतीकहै सोमैंकछु
नहिहोयजुतुमबिननाथजू अरजकरैरनजीतसु-
नौगुरदेवाजी सोमुषसेतीभाषकहैसबभेवजी २ दो
अबमैभाषाकहतहूं तुमहीकरोसहाय ज्योंकी
त्योंमुषसूंनिकस पूरीहीहोजाय ३ सुनिपोथाबांसं

तन रहनगहनकीचाल जोकाईलेहिरदेधरै होवैसुरसनिहाल
४ चरनदासकहतहूं परमारथकेकाज जोअंगाश्रीभागोतमै
साधहोनकेसाज ५ गुरसुषदेवपरतापसूंवकृं बिचाबबेक द
त्तात्रेयीतैकीयो· चौवीसोंगुरदेष ६ कुं लि पिरथीपव
नअकासहै नीरअगानससिभांन कपोतअजगरल
षोऔसिंधकूंजान औरसिंधकूंजानयतंगामंवुरएकहियै ८
मांषीहाथीमगामीनपिंगलालहियै चीलबालककन्याकहूं
तीरबनावनहार सांपमाकरीभंगाजोचौबीसोंउरधार ७ दा
भिन्नभिन्नसबकहतहूं जुदेजुदेबिस्तार ताकूंसुनकरचेति
यो चरनदासनरनार ८ अ प वी द दत्तात्रेईकीबात
सकलसबगायहूं बीसचारगुरकियेताहिसमझाय जि
सकारनजिसहेतजुउन जैसीकरी जोजोसिद्धपालषुसम
झहिरदेधरी जासूं भजेमन रोगजगतयाध्यानसी उपजैजोपरम
संतोषछिमांहिये आबसी परमभयेआनंदपरमयदपा
इसा जीवनमुक्ताहोयकिबाहउठाइयासाई काहूंसब
साधसबैसुनलीजियें सुषदेवपरीछतसूंकहो सांचयलीजि
ये दत्तात्रेवअौतारश्रीभागवानके राजाजदसोंबोलब
चनभाषतभये हमनेगुरचौबीसकरैसंसारमें तिनकोध्या
नबिचारकरूं निरधारमें पहलेगुरकीसरनगाहीबकुपी
तसूं उनदीनोंउपदेसमंत्रजोरीतसूं ८ दो सतगुरने
किरपाकरा धरोहोयममसीस यहीकिहीसुमरनकरो धा

नकरेजाहस्रम १० अ प व्री द कायाकी नतदेषय
हीमननमैंधुरे व्यापोरोन आवतेंमतपकोकरे गह
विरक्तकीरीत तजीमहकोंतजो रामभक्तिकोचावहमारेम
नरचो जगसूंरहं वहुसबासहरियदजप छूट छूट
नावैध्यानमनलातिहा बालकगालीदैहकोईबेल
जहीं सिरपैडारेषेहसोईबेका जही हसहसतालीयीट
जुहमरेसंगालगों मेंझुचलूंतवकायतोवे आगैनगैनातै
निसदिन क्रोध आपदैमनधरु हरिसुमरनजायोभूलजग
तमैंयौंफिरु जबसिक्षागुरकियेचौबीसो वेदही तिन
सूंसाषीचालसभीनरमैंधरी चरनहीदासाहोयसरन
आनंदभरी ११ हा पहलैगुरपिरथीकिया तीवसीष
लईतास गिरवरतरवरमहीजो नयो चरनकोदास १
२ अ प व्री द पहलैंपिरथीगुरुंहमारेजानियै
तातैंलईमततीवसं चहियेआनियें यरथम परबतए
कमहीकपरलषी जाकेतिकरैजायजुचढबैठसिषाको
ई कपरचढजायकोई आपेतलै जलबरषैंनाहैं परबत
सूंनालहै बापरबतकीसीषबुधमैमानिया देहलोभादि
या त्यागजुथिरता आनिया क्रोधदियोबिसरायसेतामस
डारई कोककहेदुरबचनकोकवयोंनमारई क्रोधलोभ
जोहोयकरैमनभंगहै कैसेंसुमरनहोयलगैहरिरंगहैं क्रो
धलोभछुटजाययहरनअगाधहै परबतकीसमहोयजुमि

हचलसाधहै बिरछकहूं अबजनमजाकीमतपाइया कहै
चरनदासजुचितलगाइया १३ दो तरवरनैं कायाधरी प
रमारथकेहेत कोचबैठेछाहिमैं कोऊकारलेत १४ अ
प श्री द दूजेदेखेबरछधरनतउपजले उनहूंकीनईसीखगाये व
नकेतले मनबहूतायहबातजुपरस्वारजनकहूं याप्रानीके
काजनहीकरतोफिर जबआईयहरी तलछाकीदिष्
मैं मेलीन्हीसोईधारभलीबिधसिरमैं कोईबैठैछाहिकोईउ
रीहहैं कोईलेफलफूलबिरछाकाकछुनानहैं परस्वारथकेकाजबिरछ
देहीधरी सकलजीवओसांहियहीमनसांकरी जोबिरकतसोका
जकोईअपनैंकहै वाकोंनांटैनांहिसभीसिरपरसहै काहूंको
कछुकाजकायासोजोसरै यहसिद्यभलीभांतिबिरछकामनध
रै तीजैंसिद्याओरसहीकीधारिया चरनदीदासहोयअहंकूं
मारिया १५ दो कोईषोदैनीवकूं कोईषोदैकूंप औरइकार
जकिते औसोधरोसरूंप १६ अ प श्री द काहूंकूंवहभलोबु
रोकहूंनाकहैं औसैंबिरकतरहैंसभीदुषसुषसहै हरिसुमरनमैंम
गनसदाआनंदरहै भलोबुरोनहीमांगनएकताडिटगहै इजैगु
रकियापवनसीषलईतामकी दोषनांतियहचांनहियेधरीता
सकी इकदिनबागकेमांहिसहजहीमैंगयो देषनकाषगोफूं
लजायठाढोभयो पुहपनसूंलगापवनबासमोहिआइया ज
बहीकीनैंज्ञानप्रानसबपाइया वहतोअतिहीसुगंधहरषम
यपजावई फिरआईदुरगंधबहुतअनपावई गंधदीसेसमान…

पवनआपगंधेभई फुनआईबिनगंधसुधनिर्मलवही वाकोदे
षसु भावयहीमनआइया चरनहीदासाहोय ब्रंगावयजाइया १७
दो एकदिनांइस्याकरी भिछ्यामांगीजाय अपनीसरधातनदियो
भोजनकरमें लाय १८ अवाकी अस्तुतनांहिकछुमुषतैकही फिरआयो
दूजेघारनहीभिछ्यादई जाकीनिंद्यानाहिकछूनउचारीया अस्तुतनि
द्यात्यागयहीसुबिचारिया जिनकछुदीयोनांहिनही ओगनधरे
जोकछु पहलै आयोसोई भोजनकरे जोकछुं अपनैकाजगयोस
लीठांवहीं गिरहनकीनोंनांहि रागनहीलावई जोगयो भोडीठेरब
रेनहींजानियां आतमरूपसंभारनहांमन आनियो सबहीसूं निर
लेपसबनकेमांहिहूं सहजभंवनमें आयसहजकहीजायहूं पंक्ष
धूजोपायताहिभोजनकियो संतोकर परिनामबेष्योंहीरह्यो
जिभ्यालोहींजानस्वादभोजनसभी इकसमसबहीहोयउदर
मैंजाजभी नबआयोसंतोषकलनांसबगाई चरनदासाभयो हीं
जभीपहमतलई १९ दो तीजैगुर आकासवूं कीनौंसमझस
भार जाकीमतकेनेतही पायोब्रह्मबिचार २० अ प वी दे
तामैंबरसैमेह और आंधी चलै बिजलीचमकवामांहि और पावक
कजले सदारहै निरलेप और निरबैररहै सबहीजगवामांहि
आपनिरलंभहै पवनलैवैनांहि आवजारैनही ताहिनभिजवै
नीरमरैमारेनहीं लघुदीरघनहींहोयपुरषनहीनारहै नहीसूद
मनहीभारवारनहीपारहै शब्दउठैबहुभांतबहीजो अबोलहै
उतपतपरलैमांहिसदाजो अडोलहै यह मनब्रह्मआकासदेषा

विद्यंतहैं निरमहियेकी आसरायेसब भूलहै माडेक नके होय
चांदीके देषिया—कांसीपीतलके होय मांटीके पेषिया सबमांही
आकासएकहीजानिया ऐसे घटघटमैं ब्रह्म सकल पहचानि
या थिरचरही के मांहि जुपावब्रह्म गामैं न्यारा और सबबीच भ
लीबिधरातैं जोबरतन गये फूटरहे आकासहू ऐसेंहीका
या बिनसरहै निततब्रह्म सजू नित्य अमितयबिचारज मी निह चै
६ पायो आतमज्ञान सबै दुषधागई कांकाहूसेबैरनकाहूसेंप्री
तहै ताकाहूदुषदेंदु नहीं सुषरीतहैं काहूसें नहीं द्वेष नका
हूसंगालगू का हूकीसरन तजांचन काहूसें मगू कहैश्रीसु
षदेव सुबबेकबिचारसों दत्तात्रेइक हे ऐसैंजु गुरु जसों
यह सिद्धा आकासमूंलीनी जानिकै चरनहीदास भयो य
हीमत मानिकै २१ दो चौवीसगुरु कियो भीरही जोकोसु
नपरसंग आपमहारजलरहे मिलजावैं रंग २२ अ य
सबबी व जलज्यों निरमलहोय सदाबिरक्त तद्रूही तजेन सीतल
अंगावसैंनित हीमहीगिरहीसंगजो चलेवाटकाबहूकहीं मगन
सूंन्यारा रहे लेपलगे नहीं ऐसो रषैविचारजैसेंबरषा समैं ज
नमैलाहीयजुगहला आपहीमाडेमैंसुषहोयत्यों नहीपायही
समज्योंयो चितमाहिसंगतकोगुनयहै निरमलनीरसुभा
वसदावनेलरहे संसारीके संगासों अबमनपिरणायो तबग
रायननरूपध्यान आनंदललयो कछुमैलमनमांतिकमैबा
पैनहीं जलऔरसाधू मांजिएकजाओ नहीं जो कूंचीलकहूं

होय सो जल सूं धोइये वाकूं कीजै सुध मैल सब षोइये साधू सीत संतो
सु गुन परम सुषदीजैयें ऐसा होय ता मुष तें उचारै श्रोता के सब पा
प ताप व्याधि हरै तातें ही उपदेस भगत का कीजिये नीच के चम
त देष बिरछ ज्यों सींचिये मीठे सीतल नीर को यह गुन लीजिये मी
ठा सब सूं बोल यस सुष दीजिये गुर सुषदेव परताप सूं जल गुन
गाइया चरनदास होय निरमता आइया २३ दो॰ पंचम गुर
किया आगन कूं समझ निहार निहार उत्तम मध्यम जार दे रा
षे कछु न बिचार २४ अ॰ प॰ वी॰ द॰ ब्राह्मण इक करै होम सू
इ औपै करै दोऊ पवित्र न करै जुगल को अघ हरै ऐसैं साधू
लोय जहां भोजन करै वाकूं पावन करै पाप सब ही हरै फिर ही सेवा
करैं आस रै सीधूरे बिरकत भोजन न किये पाप निह चै जरैं धांन
हमारो षांय जु सौंज न काची सूपूरे पावन जांहि और बाधा सभी
साधू जन जो होय आगन कैं तान ही सब का पाप करै छार जु वा की
कां तही सदा गुप्त ही रहै प्रगट किये ही होत है ५ ऐसैं साधू भेद छि
पावै जो तहै षष्टम गुन कियो चंद सदा इक सम रहै कला घटै
और बढैं मावस अमावस रहै पुनौं को सब होय कला भर पूर ही
चांदन सब जग मांहि बिराजत नूर ही ससि मंडल इक भांति है
मांही बढै यौं ही आतम रूप चरनदास रटै २५ दो॰ उतपत
परलै देह कूं घटै बढै दुष होय आतम इक रस जानिये अ
बिनासी है सोय २६ अ॰ प॰ वी॰ द॰ तातें कियो है बिचार यह
काया धार है जनम मरन ही होय कला के ज्यों यह है परमातम

इकाशीतिसदाहीजाभिये घटेबैठेवहनांहियोमनमें आति
यें काया छोटीहोयबडीपुंनहोतहै कबहूंहेमवनमण नकूं न
रवैवहे आतमहीतितजं नजुकायामेंरहै वहीसदाइकसां
तिकोईजानीलहै तातेश्रीभगवांनकोंसबठांयेषवैं मनमां
हीगाहरखयफिरतहूं भेषकै सतवैगुरकियोसूरजुसिष्यादेलई
आठमहीवेंकिरनकूंरसोषतवही बाभ्यांसबहू आपपेरवर
षाकरै वजलकोकछुमोह नहीमनमेंधरै औसैसाधूहोय
कुछकोई देतहै वाकूं आछीभांतिसोईबहलेतहैं मोहन
काबहूकरैजुकोईकुछचहै परनहीदासाजानसो ईइं
गतरहै २७दो लेसैंकुछहरषैनहीं देतैंडमनहीहोय
औसैथिरलोभीरहै चरनदासहैसोय २८ अ प वी द हूजै
ति जोप्रतिबिंबसूरको देषियै जल भाडेकेमाहि सबनऔरेषियै घे
नकैदेषोवाहिसूरतोएकहै घटघटमेंप्रतिबिंबबिचार आप
नेकहै भांकाहूंसोबैरप्रीतहूं नाकरै सूरजएकनिहार स
कलघटछबिधरै औसैहीनिरमोहसदा निरलेपहै वाकूं
साधूजांन सो औसीबिधरहै अठवैंकियोकपोतगुरूमें
बिचारकै निरमोहतमनभयो तजीप्रानिहारकै उठीए
कमनमांहि नारीसुतकीजियै जगमेंहोप्रभिचंतबकत
सुषलीजियै सहजबागकेमांह जायठाटोभयो बचपेएक
पोतकपोतनपालयो ताऊपरबनमोह आपनोंसाजियो
बहुतप्रीतसुषमांनसकालदुषभाजियो २९ दो करबिचु

रमननमैंधरी॥धन्नलोगसुषहोय॥इमसमांभयाजगतमैं॥श्रोर
नहीषेकोय॥३०॥ अथ पदवीछंद॥भयोकपोतनगामंश्रंडदे
वादियो॥प्रीतसूंसेवननकियोफूटचेसुतभये॥केतकदोसमभां
हिपंषनिकसेसभी॥उडकेंबैठनलगेडारकपोतकपोतनी॥ह
मरेश्रतिबडभागयहसुषदीनोंधनी॥एकरहैघरमांहिजुरि
स्याधारनें॥इजोबनमेंजायजीवकाकारनें॥बनसौचोगालाय
बचनमुषडारई॥बातैंउनकीछुधासकलनिरवारई॥जब
मसुफलमनजांनरैदिनयोंरहै॥बसुधामैंकछूसोचनहिं
यमांहीलहैं॥इकदिनकहोकपोतकपोतनसांपही॥एब
चाश्रबबडेभयेसबगातही॥एमोरहैंग्रहमांहिदोऊहम
बनचलें॥चोगालावैंबछन॥करैंभोजनभलें॥होकरचि
रसंदेहदोऊंबनकूंचले॥कहैंचरनदीदासचुगनलागेभ
ले॥३१॥दोहा॥पापीबधकजुश्राइया॥दीनोंजारपिछो
य॥पकरनकीमनमेंकरी॥बैठोघातलगाय॥३२॥श्र
थ पदवीछंद॥दोऊगयेबन॥मांहिबधइकश्राइया॥उनबछ
नकूं॥देषकैजारबिछाइया॥तापरकणकाडार॥श्रापरोहि
परहो॥बछनचोगादेषभेदकछुनांलहो॥इहिकणकारणभांति
पिताबनकूंरमैं॥सोपायोइहिठांव॥चुगैंक्योंनांहमैं॥दोऊउत
रेजहांजबैमुषडारिया॥तबउनबधकजारकोफंदामारिया॥श्रा
यकपोतनिजबीशब्दनांहीसुनैं॥घरमैंपायेनांहिसीसतबधुनैं॥
बच्चानकारनतनहूकियोहंकाररहो॥बैठोपिंजरमांहिउब

चतनि हरिकै ॥ देषकपोतन जारमैं यह मन आनियौ ॥ अप
नीजी वन न ॥ अफल जगतमैं जानियौ ॥ तनमैं अतिदुष पायक
लया बांबहुत करी ॥ कहैं चरन ही दास धुरी आसा धरी ३३ ॥
हा ॥ जारमांहि मोसुत फासे ॥ जाय परूं प्राठौर ॥ बिकल होय चा
ली जबै ॥ कियो बिचार सबै और ३४ ॥ अथ पद्धरी छंद ॥ मो हयक
द बसहोय जारमांही परी ॥ व्रा हूं कूं गहे बधक पिंजरमांही
धरी ॥ आयो बहुर कपोत लषे सुत बाल हूं ॥ इन बिन कैसे
जिऊं मरूं बेहाल हूं ॥ परो जारके मांहि बंधन दुषमानकै
चारौं गहलै चलो बधक सुषजानकै ॥ राजा मोम नक तीजु
सुत दाराकां सूं ॥ निरषलई यह सीष बहुरनहीं चितधरूं ॥ ता
कोकी न्हों ॥ गुरू यह कौतग देषकै ॥ हरि सुमरनमैं पगौर हूं
जु बसेषकै ॥ मोह मम हाऊं षरूप सकल बिसराइया ॥ लियें र हूं
बैराग परमपद पाइया ॥ सदा रहूं थिर बंध दुंद सब भाजिया
चरनकंवल को ध्यान हिये मे साजिया ॥ तहां ब सूं निस भो
र अंत नांहीं बहूं ॥ चरन हीं दास होय कि निज आनंद लहूं ३५
दोहा ॥ नौं मां गुर अजगर कियो ॥ लियो परम संतोष ॥ पालधु टि
करगही ॥ रहूं रागनहीं दोष ३६ ॥ अथ पद्धरी छंद ॥ जिंह कारन
गुरु कियो कहूं कारन सभी ॥ जासूं रहो डिठ बैठ आयो धीरज त
भी ॥ आगै भिछ्याकाज ध्यान तबोल ॥ कोऊ तो भी षको कहु
र बोलता ॥ कैका हूं भोजन दियो मगन होतो तहां ॥ जो काहू नो
ही दियो ॥ क्रोध करतो जहां ॥ अजगर को दिन लषे जहां तत

पतहूं वो ॥ विसदिन काई रहो कहूं मांहि गायो ॥ आय अघा न कौ मि
रगासी गवा मुष घसै ॥ चौ पाये यौ आय ता मुष मैं धसैं ॥ जो वृह
जागत होय तन्हें मुष सों गहै ॥ तिन कूं भोजन करै उदर यौं ही
भरै ॥ प्रालब्ध जो है सोई आर है ॥ परो रहै वाही ठौर सही उष सु
ष सहै ॥ वाकी लीन्ही रह न बहुत सुष पाइया ॥ चरन ही दासा हो
य अधीरंग वाइया ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ जब सूं पर आया तजी ॥ गिरही वा
रन बांव ॥ लगो रहूं हरि ध्यान मैं ॥ सहज मिलै सो षाव ॥ ३८ ॥ अष्ठ
पदी छंद ॥ मन राषूं प्रभु ध्यान सदा आनंद मैं ॥ ज्ञान दिसा अब मन
ई रहो नहीं उदर मैं ॥ जाचक घर घर फिरैं न भिक्षा पावई ॥ साध
न कूं बन मांहि भोजन हरि पावई ॥ जब भई ऐसी सम निहचै
ल बुध आइया ॥ जहां लग जीभ सवाद सभी जुग वाइया ॥ स्वादी
रबि न स्वाद जो भोजन आवई ॥ सबही कहं अंगीकार सुष कव
सू पावई ॥ सूंके गीले होय जु भूनौं काचु ॥ तो कूं फेर न नाहि सभी
ले कर न चु ॥ जो कछु आवै नांहि काई बैठोर हूं ॥ प्रालब्ध ही जान
बुरो भलो नांगिनूं ॥ मैं काल बिकल नहीं होय न आसा कछु काहूं
नारायन के ध्यान रहूं लागो उहीं ॥ अजगर की सी बिरत निरी मेरे
ही रही ॥ चरनदास होय भक्त डिढ करा ही ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ दस सै गुर
किये सिंध कूं ॥ कहूं सोई परसंग ॥ लीन्हें सम भक्त विचार कै जा के
तीनों अंग ॥ ४० ॥ अष्ठपदी छंद ॥ षारी नीर सुभाव सदा इक र
स वही ॥ मीठी मलिता बहुत चली आवें बही ॥ मिलत नांहि फि
रै सुभाव तास को जानियें ॥ ऐसै बिरक्त रहै जगत मैं मानियें

बहुतैं होयगां भीरचाहतनहीं यावई ॥ ऐसा साधू जो नराम भ
नभावई ॥ बरषा रत की नदी सैब हुआ आदसूं ॥ घटै बढै वह न्नां
आ हिं रहै मरजादसूं ॥ एकादस जोय तेगा कह्यौ मैं सुनाय कौं ॥ दैष देव
की जोत गिरो है आयकै ॥ दीन्हौ आप जराय यह पथ कहुं नां
लगो ॥ समझ कामनी रूप सूं मै दूरी भगो ॥ ज्ञान जाय ओर नरक
परै इस रीतसों ॥ सुंदर रूप निहार कै रोमत प्रीतकों ॥ ४१ दो
हा ॥ फूल फूल पर बैठकै ॥ उदर भरे तिस नाल ॥ सो भंव
रगुर बारह लई जुवा की चाल ॥ ४२ ॥ छपय दवी छंद ॥ छिध्या
कारन मांग न घरघर जात हो ॥ को ऊ देते आंन को ऊं जुरि
सात हो ॥ तातैं सिक्ष्या भंवर कीय हम र मैं लही ॥ सूं दूम सब ही
पुहप सौं न न रस ना गा ही ॥ तबमैं कियो बिचार हूं के बोले मते ॥ दे
न हार कूं दुष्ष बहुत ही होतहै ॥ नैंक नैं कहीं लैं ऊं बहुत घर जा
य कौं ॥ उदर पूरनां करूं जु आ नंद पाय कै ॥ जित ना होय अ
हारसाई अब लेत हूं ॥ बासी नैंक न राष न का हूं देत हूं ॥ अ
लि सुत की यही रीत न भूष भरषावई ॥ और दिनां के काज न नैं
क बचावई ॥ फूल न को रस चाट नहीं उन सूं बंधे ॥ ऐसें बिरक्त
त रूप जगत मैं नांय फंधे ॥ पर नहीं दासा होय सा गामन राषई
रजा सूं इहि भांत रिषी सुर भाषई ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ देष दिसा मा
षी न की ॥ तजो सकल सनेह ॥ मिट हुवै बधा नि मैं हुये ॥ हुये
भई सुषाली देह ॥ ४४ ॥ छपय दवी छंद ॥ तेरस म हत की मांषी
ता हि पिछानियां ॥ सब बिरकत न को भी बेड़ कठो आनियां ॥ जब

हुतो भयो पूरको हूं नैं तोरियो ॥ सब रस लीनौं काटकें वाहि मरोरि
यो ॥ बहुत भयो बनकष्ट जु वैं भाग्यो फिरी ॥ बहुत मुई तिह ठौर ब
हुत सिसकै गिरी ॥ तातैं मांषी गुरू हिये मांही धरो ॥ कोई जगत की
वस्त को संग्रह ना करो ॥ चौथ वै हाथी जांन काम वस होय कें
आपा आप बंधाय ॥ जन मद्ध यो षोयकें ॥ इक राज भयो तो हुतो
जंगल क बीच हीं ॥ अतिबलवंत सब सेष कोऊ या सम नहीं
वाहि गह सकी और कोई नहीं जात हो ॥ मनमष पसुं जीया जौं नक हाथ
हू बात हो ॥ वाकी आई बात जु राजा पे चली ॥ इक कुंजर बन मां
हि रहत है अतिबली ॥ नूपत अग्या दई पकर वा लीजियैं ॥ जा मैं
आवैं हाथ जतन सोई कीजियैं ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ पीलवान अरु ज्ञाल ई
षोदी बड़ करि जाय ॥ वर न दास जहां छल कियो ॥ दीनी घात न
बिछाय ॥ ४६ ॥ छप्पय छंद ॥ भगल की हथनी बनाय सं
वारी सुघस ॥ षट करि कर पर धरा घरी करी सुघ सूं ॥ जल पीवन
के काज जु हस्ती आयौ ॥ वा हथनी को देषकें अधिक लुभा
इया ॥ जब हथनी की ओर चलो मत ही नहीं ॥ सपरस इछ्या धार परे
षंदक माहीं ॥ निकसन कैसैं होय बहुत लंघन करे ॥ अति दुर
बल तब भयो सकल पराक्रम हरे ॥ तब वा पर चढि बैठो महाव
त आयकें ॥ बाहर लायो काट जु ताहि सधायकें ॥ फिर राजा के
पास षड़ो कियो लायकें ॥ अंकुस सिर के मांहि जु बेड़ी पायकें
सीस धुन नैं पछतायवैं आनंद कित गयो ॥ जो सुष बन के मांहि
स भी सुपनो भयो ॥ सदा हुतो निरबंध ॥ आय बंधन बंध परो है घर

रहीदासकामफंधेफंधो ॥४७॥ दोहा ॥ सपरसकीइछ्या कियै ॥ भया
जु औसा हाल ॥ पसु पंछी नरनारही ॥ फसे काम के जाल ॥४८॥ अथ छप
दवीछंद ॥ भीषतदरसनदेवजुसाधूजनकभी ॥ कामिनऔरनि
हारकरैसपरसतभी ॥ हस्तीकैसोहालवहसाधूहोयहै सुमरन
ग्यानऔरध्यानजुसबहीषोयहै ॥ जोकहै हमहैसाधजुकोई
भारजा ॥ चूंबेहमरेचरनतासूंहोयहैकहा ॥ चरननचूंबेआ
यहाथधरैपाययै ॥ साधूमनचलजायसपरससुषपाय ॥ वांकी
सुषउरधारकरैइककामनी ॥ वातैंपुत्रकलत्रबकुतहीजाम
नी ॥ बनमैंतपऔरजोगजुकरतोनिसदिनां ॥ सोबसबहीगयो
मूलनहींसुषइकछिनां ॥ तातैंहस्तीगुरुहियेमैंधारिया ॥ काठकी
पुतलीहोयकैकामउमैंरची ॥ चरनहीदासाहोयसोबीदेषनत
जी ॥४९॥ दोहा ॥ पइंबैगुरकियोमृगकूं ॥ ताकीगतसुनलेह ॥ औग
णहींकूंछोडकर ॥ गुणहींमैंचितदेह ॥५०॥ अथछपदवीछंद मृग
देषोबनमांहि ॥ ताकीमतआंनियां जीवहियांतेहठौरसोईह
मजांनियां ॥ बधकबजाईबीनगानवनलगो ॥ सरवनसुनवह
हिरनरीकआयो भगो ॥ पुंहचेपारधापासबांनतनमारिया ॥ ता
हिनरागकोचावसकलनिरवारिया ॥ जोबिरकतसुनैंरागजुर
ससिंगारको ॥ ऐसाहीहोवैषारनरकमैंजायसो ॥ सुनियैंगुनगो
पालचरितकरतारको ॥ जासूंदुषछुटजायसकलमायाजार
को ॥ तासूंतुयजैग्यानध्यानदिढकरगहै ॥ पावैपदनिरबांनजउ
हांसुषसूंरहै ॥ निहचैहीतूंजांनजुमैंनैयहकही ॥ चंचलनाग

ईछुटजुबुधनिहचलभई॥ताभांरीरीरागभंाचबिसराइया।च
रनहींदासाहोयचरनचितलाइया॥प१दो॥हा॥कहुसोलछैंमीन
की॥बुरेजीभकेस्वाद॥जोकोईयामेंफसेलगैबहुतसठबाद
॥पर॥अष्टपदवीछंद॥सोलवैंगुरसुतमीनजुऐसैंदेषिया॥वामछी
कोएकबधकऔरेषिया॥पेरोमांसलगायजुबंसीसायहीज
लमैंदीछुटकायडोरगहिहाथयही॥जिभ्यास्वादकोजमीनवहषाइ
या॥गईउदरकेमांहिहियेअटकाडूया॥तीक्षनकांटालोह॥
हियेकूंफारिया।ताहीछिनवहमीनप्रानतजडारिया॥तातैंम
छीगुरुहियेमांहींकरो॥जिभ्याकोकछुस्वादनहीमनमैंधरो॥जो
बिरकतकोंस्वादजीभकोचाहियैं॥बहुतभांतउषहोयनहीं
सुषपाइयैं॥जिभ्यास्वादकेकाजग्रहीघरजायहै॥आछोभोजनपा
यरुचसोंषायहै॥भौंडोभोजनहोयतोनांकचढावई॥हरिसु
मरनकूंत्यागकेजितततितजावई॥पद॥अष्टपदवीछंद॥तातैं
साधूलोयनहींघरघरफिरै॥जिभ्याकोकछुस्वादनहींचितमैं
धरै॥ऐसोभोजनषालयैज्यौंओषदी।सबहीरोगनसांहिरागन
संहिरहैकायासुधी॥चीकनभोजनषानींदबहुआवई॥ध्यान
भजनकीरीतसकलबिसरावई॥सबइंद्रीयनकेमांहिजुजिभ्या
बसकरै॥जोआवैसोईषायकभूंभूषोरहै।जोजिभ्याबसहोयतो
इंद्रीबसबसबै॥जोरसनांबसनांहितोसबपरबलतबै॥चीकनभो
जनषायतोइंद्रीसबजहह॥पतिहीहैबलवंतकरैऔगुनत
ता।षटरसहीकेस्वादसूंनारीबसभये॥जगमांहीदुषपायसु

ऐसैं नर कौ गायै ॥ मनमैं देष बिचार गुरू किये भर्तृहरि ॥ नासूं लीनी सीष इ
ही भई छीन ह्वै सबही स्वाद भुलाय सरन हरि की लई ॥ चरन न
हीं दासा होय सुरत निर्मल भई ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ सतगुरु कीनी पिं
गला लीनौं जासूं संत ॥ आसा तज निर्मल भयो लगो रहूं हरि
ध्यान ॥ ५५ ॥ अथ पद्धरी छंद ॥ गुरु हूं सत्तर हो जान हमारो पिंगला प
र आसा दई छाडुर ह्वै आनंदमला इक दिना राजा जनकब
देही के नगर गयो अचानक लषो पिंगला को बार पिंगला उठ
परभात भली बिध न्हाइया ॥ नृप नबसर यह सुगंध लगाइया घ
र के द्वारे बैठ जु बाट निहारई ॥ को ऊ देब ऊद रब सुख्यांपगाध
रई मारग मैं नर देष यही आसा करे ॥ आवत जानैं ताहि षुसी हिये
मैं धरैं ॥ जब वह आये नांहि दुषी मन मैं भई ॥ कब हू आस नि
रास ऐसैं ही निस आई ॥ ऐसै सब दिन बीत गयो इंहि भांत ही
मन मैं भई मलीन आई पुन रात ही ॥ काया आलस धार जु घु
र भीतर गई ॥ पलंग पै बैठी जाय जहां भली सेज ही ॥ बिछौ बिछौ
नां सेत फूल ता पर धरे ॥ लेटी तहां मग जोय मैं न निंद्रा भरे ॥ कबहू
उठ जा द्वार कभूं जा भीतरैं ॥ कहैं चरन ही दास नींद नाहीं परै ॥ ५६ ॥
दोहा ॥ आसा की डोरी बंधी ॥ छिन घर मैं छिन द्वार ॥ थिरता नासंतो
ष बिन दुषी पिंगला नार ॥ ५७ ॥ अथ पद्धरी छंद ॥ ऐसैं आधी रात
गई जब बीत कै ॥ कोई आयो नांहि सु कांक छपी तकै ॥ पिंगला
उपजो ज्ञान हिये परगास ही ॥ उदै भयो संतोष लोभ गयो नास ॥
ही बरष सहंस दस मांहि जु तप को ऊ करै ॥ हिरदै निर्मल होय

सभीकलमलहरै ॥ जैसे ज्ञानउजास पिंगलाको भयो ॥ तबच
नहिरदेमांहिबचन जैसैं कह्यो ॥ हीनह्मारेनागजनभयोहां
गयो ॥ मनबरूवसोकामक्रोधलोभैछूपो ॥ तातैजबकाञ्जा
पहियेमैं चाहिया ॥ परमातमभगवांनसूंप्रीतनलाइया ॥ सबबिध
पूरनकामसकलभगजोतहै ॥ सबहीकूंनितदेतयांनचोरयांन
ई ॥ बरनहीदासाहोयसोश्रीहजानंदई ॥ ५ ॥ दोहा ॥ लषचौरासीजो
नमैं ॥ सबकूंभोजनदे ॥ सदावुहीपालनकरै ॥ आपदैनांबन
ले ॥ ५ ॥ अथछप्पयपदीछंद ॥ मनषसरूपजोदेयएकादिनमांनको ॥ इ
जेदिनबडजतघटांहेमांनको ॥ नारायनसोभगतिजुभगाकोसु
षचहै ॥ जैसोवाकूंदेयसदाइकरसरहै ॥ जाकेलीन्हेनामस
कलपातगनसैं ॥ कथाजुवनकोसुनैंहियेआनंदलसैं ॥ जैसो
हरिबिसरायमनुषकूंचहिया ॥ बिरथाजनममांवायकैसुषनहीपा
इया ॥ कायाहेइकग्रेहहाडऔरमांसको ॥ नाडीगुनसेंबांधर
षोहैतासको ॥ चामऔरलोहू ॥ पीबतहांनेंधारहै ॥ सदाबहत
हारहतयहीजुबिचारहै ॥ मिष्टामूतजुहोयसाग्रेहकेमांहिहीं ॥
जैसेघरसूंलोगमुदितमनचांहिई ॥ जैसैंबिरथावा आवसकल
जुगंवाइया ॥ हरिकेचरननदासनहींजुकहाइया ॥ ६ ॥ दोहा ॥ अं
बतरमैंजैसीउठीकरूंभक्तिचितलाय ॥ चरनकंवलमैंमनधरूं
जगसूंनेहउठाय ॥ १ ॥ अथछप्पदीछंद ॥ अबकरूंभक्तिउपाव
जुहरिमिनभाइया ॥ तासूंलेहूंरिजायपरमगुनगाइया ॥ जैसेंल
छमीसेवकरीमनलायकै ॥ कीन्हेंमहापरसनआपीपतधायकै

ऐसैं मन भागवान सूं आप मैं लाइ ह्या। पाऊं पुरष निधां नपूत को भा
यहूं। लक्ष्मी करी जो भक्त पुरातन में कहे॥ नारायन दई ठोर सदा
हियेमें रहे॥ मैहूं ऐसी भक्त करूं अति प्रेम सूं॥ करूं महा परस
न अधि कही नैम सूं॥ आजके दिनसें आस मनुष की त्यागकें। रा
घूंस नूं की चाह चरन ही लागकें॥ जो कछु हरि मोहि देय सोई निर
दोष है॥ करूं भजन भगवंत तास सूं मोष है। मन षरूप कहा व सनु
आसा को जिये॥ बहुत कांई लोंहे तन हालों जीजियै। छ। दो। ता
घमें काम न आवई मुयें न संगी कोय। चरनदास यौं कहत हैं॥ ए
संसारी लोय॥ छ॥ अथ एयदवी कंद॥ जब यह मृत्तगाहे य नहीं कु
कलेत हैं॥ हरिजुस दा ही संग सभा सुध लेत है॥ मन अब आय नी
नां हि जुरि कृपा कर सकै॥ औरन को कहा देय मूरख यौं ही तकै
पिंगला का हो यह ज्ञान मुझे कैसो आइया॥ नीके कान न मांहि
नचि नल गाइ या। तीरथ बरत न साध को दरस दे षिया॥ इंद्रि
या बुरे कर्म की चाल बसे षिया॥ परमेश्वर की क्या सूं यह यह
चानिये॥ और बात कछू नाहि हियेमें आनिये॥ जो कोई कहे
आज कालू धन नांल हो॥ कोई आयो नांहि मान ता हैं भयो॥ आ
गै हूं बहुत दौ सकोई नही आइया॥ कीन्हें लंघन बहुत लदरब
न ही पाइया॥ ज्ञान कमूं नहीं भयो आज नत नकी॥ और भाग ब
डे मोहि भये। प्रगट अनी कहे गुरु सुषदे बजु। अनतीजा बिया
वताउं बुको दरस सूं। भम तभूलो नियां। छ४। दो। ना। पिंगला आई
घर विषे॥ कोउ मन षकी आस। सुषी होय सो बनलगी। जब वे

हमईतिरास ॥६५॥ अथ षटपदवी छंद ॥ मनमैंकियोसंतोषसकलदुषमिट
गये ॥ छोडीजगकीआसहियेआनंदछये ॥ योंकहैदत्तातेयगुरु
जासोयहही ॥ ताकीमैंलईसीषसोईदिढकरगही ॥ गिरहीदारनजा
वनमांगनूंकुछकहूं ताते सुषी ॥ औरसांतमनवाबैठोरहूं ॥ उद्दम
करूं कछु नांहि आस नांत्यागकै ॥ आनंदतनमनमांहिबढत
अनुरागकै ॥ मनषटपीत्रहीहोयरहैआसालियै ॥ कामक्रोधऔ
रलोभमोहउतपतकियै ॥ जोआसामनआयकभूषहनांनई
क्रोधभयोउतपत यहीमनसांठई ॥ काहूतैंइकबस्तकभूंजुमं
गाइया ॥ वातैंकीन्हौंबैरअधिकरिसआनियां ॥ नारायनकेध्यान
सुरतनहींआनियां ॥ यहसिक्षालईमांनपिंगलासैंतभी ॥ जगकीछो
डीआसभयेकारजसभी ॥६६॥ दोहा ॥ अठारहैंगुरकियो चीलकूं मि
टोसकलसंदेह ॥ रहूंअकेलोसंगतज ॥ करूंनकुछसंग्रेह ॥६७॥ अथ
षटपदवीछंद ॥ जबग्रहसेतीनिकसबैरागीहमभये ॥ तबहमरेमन
मांहिजुयेकारजछये ॥ दोभोजनसंगाहोंहिएकजलपीजियै ॥ दूजे
भोजनमांहिधांनकोलीजियै ॥ इकचादरकोपीनदोयहूंचाहियै
॥ तातैंओटनन्हानकी ॥ जुगतबनाइयै ॥ करकैजबअस्नानध्यान
करनैंलगो ॥ मनमैंचिंताकोऊंकोपीनहिलेभगो ॥ समकोमहमनमां
हिबढतअंधकारहैं ॥ अंतमहाढुषहोयमोहतरभारसैं ॥ कौंचीप
दवीपायबहुरनीचैंपरै ॥ जबहुहसयपतजाघनौंमनमैंकरै जो।
कोईएकतरहैअकेलोहीसहै ॥ ताहितदरकछुनांहीरहै ॥ इसबि
सधौजोसाध ॥ साधिकछुषलहतहै ॥ आपअकेलोरहैपरमसुषसहत ॥

सहै ॥ सकलबिकलबिसरायजु ॥ आनंदयावई ॥ चरनहीदा
सा होयके बोझबुगावई ॥ ६९ ॥ उडती देषी चीलकूं ॥ पंजे मांही
मांस ॥ बहु पंछी घेरै फिरैं ॥ लेन न देवै सूंस ॥ ६९ ॥ अथ पद वीछं
द ॥ पंछी सभी जु मांहि मांसकूं देषकै ॥ वाकूं मारें चोंच लोभ बसेषकै ॥ जु
कोई नोचे पंष कोई मस्तग भन्नै बहु दुष पावै बहुत समझ मू
डीकनै ॥ मैं काहू से बैर प्रीत नहीं मानियां ॥ या मन हू नके काज क
छ ही जानिया ॥ मांस दिये छुटकाय जु देयं छी नये ॥ वा मछनके
पास सभी दौरे गये ॥ वह बैठी मन मुदितजु पंष पसारकै ॥ दीन्हों
दुष बिसरायजु बाधा टारकै ॥ वादिन तै लई सीषजु संयू हू नाक
हू ॥ कछू नराषूं पास नगन तन मैं फिरूं ॥ जहां चाहूं तहां जा
वूं मैंज आनंदमै काहू मन न चिंता नांहि छुटो सब बंधतैं ॥ काहूं बस्तन सो
च कोई ले जायगो ॥ चरनहीं दासा होय ध्यान हरि पायको ॥ ७० ॥ दो ॥ बालक
का गुरु उन्नीसवों ॥ ताको लियेसु धाय ॥ नही मान अपमान हैं ॥ लोभ व कछू
उपाव ॥ ७१ ॥ अथ पद वीछंद ॥ बालक मांही नहीं मान अपमान हूं ॥ लोभ
जुवामें नांहि रहै अनजान हूं ॥ मारै कोई वाहि रोस वह नाकरै ॥ करै जु
फिर वंह प्यार बालक हंस हंस परै ॥ निंदा अस्तुति दोय कभी नहि धार
ई ॥ बैर प्रीत को अंग कछु न बिचारई ॥ जो मणि बहुतै मोल की वासूं ली जि
ये ॥ षेल षिलौनां फूलकूं पटू दीजिये ॥ मणिको लोभ न रकत न कछू नहिं भा
षई ॥ चित्तको अपने षेलमां ही राषई ॥ जो कोई नाचे यकाविये सूं लपाई
बालक और वा नारकूं काम न जागई ॥ नगन जु बालक फिरतासर मन
ही आवई ॥ ज्यौ भावै त्यौं रहै कोई न चलावई ॥ किरया कर्म और सुक

चकछु याके नहीं ॥ ठाकुर और चरनदास कछू जातें नहीं ॥ ७२ ॥ दो० ॥
बोले रतना बेवजी ॥ राजा सुं यह बैन ॥ इक दिन बालक कौ सबे देषी
आप तें नैन ॥ ७३ ॥ अथ पद वौ बंद ॥ मा षेंदमा ते रा बालक गत देषके
वाके लियेसु भावस भी जु बिसेषन्ते ॥ जो किन्हूं हंससूं प्रीत बहुत
आदर कियो ॥ काहू नें गारी काट बहुत तजि डको दीयो ॥ दोनों
एक समान और नहीं ब्यापई ॥ वेद्रं सहज नसु भाव उठं फिर
आपई ॥ जो किन्हूं भोजन दियो चाट षांइ लियो ॥ काहू नें को
वरपय पान ता मैं पियो ॥ आठ ही धातको तो नष्पास बही कियो
कै सो ही बसतर दे हु छाड जित ही दियो ॥ ज्यों बालक निज षेल में आनंद
सूं रहै त्यों परमातम संग कछु दुष रूं न भे ॥ तुरियापद निर्बेभात सम ही क
हूं ॥ ताकी गोदी मांहि सदा सुषसूं रहै ॥ चरनहीं दासा होय के गर्ब न सा
इया ॥ छोटापन के अंग सभे तब आइया ॥ ७४ दो० ॥ कन्या गुर कियो बीस
मों ॥ बिचार समझ कर देष ॥ रजं अके लो तभी सं या योय ही बबेक ॥ ७५
अथ पद वौ बंद ॥ पुनत बीसमों ज्ञान गुरुं कन्या कियो ॥ ताको मत अनु
रगा हिये मांही लियो ॥ इक नारी के मांही एक दिन हम गये ॥ इक य
ह चारी के ग्रेह जाय ठाटे भये ॥ स्पा नी कन्या ता सजु घर मांही हुती ॥ मा
ता पिता किसी काज गाम न की तौ तभी ॥ कर रनसगाई आय गाबै ठे तहीं
या कन्या की करैं सगाई आज ही ॥ कन्या की तौं सोच यही कैसें करूं
माता पिता कही गये अबकें लौं ही हूं ॥ ऐ है मात और पिता चिंत मत
भै करैं ॥ भोजन कूं वा छो ना छिजु हम आगे धरैं ॥ कन्या कर कर सो
च यह बचन उचारिया ॥ मात पिता गये न्हां न अभी पाधारिया ॥

आवौबैठेबाटरसोईषाइयै॥भोजनहीतसंवारंकहूंनहीजाइयै॥वा
केग्रेहकबहूंनांहिध्यानथोरेहूतेकुटनलागीताहिसोईअपनेम
ते॥चूरीहाथकेमांहिबहुतषरकनलगी॥फिरसमझीमनमांहिसोच
मांहींपाती॥७६॥अपदचीकैर॥योंसमकैंएलोगकहूंयहमैंनहीं॥भोजन
कारनधांनजुकूटतहैअभी॥चूरीडारीफोरहोयंतहांराषिया॥तक
नघरकोगयोराहुहीनाषिया॥दूजीदईबिगसायएकहीरहगई॥ज
बघरकानहीहोयकुटततिनिकैंभई॥वादिनकन्यागुरूंजुहमनैंचितधरा
साध॥अकेलारहैसदाआनंदभरा॥धर्मसालातेंनिकसासिष्यकोसा
थले॥कबहूंउतयजेजोधसिष्यनाबैंयहे॥आपनहींलियोबहुतहमै
धारोहियो॥गुरकूंचहियैटहलसिष्यरूठैंगयो॥गुरूकहैकुछओर
सिष्यओरैकहै॥झगडेंआपसमांहिप्रीतथिरतारहै॥दोनोमैंकलक
लहोयसांतनहीआवई॥पखपंछीनरनारसंगनहीलीजियै॥दूजे
हीकोसाथसगीतजदीजियै॥छूटैसकलकलेसध्यानलागैभलो॥चर
हीदासाहोयरहैहरिसोंमिलो॥७७॥दो॥गुरकीन्होंइकीसवौं॥तोहि
तीरगरजांन॥चरनदासयोंकहतहैं॥वासूंसीषोध्यांन॥७८॥अपदची
वै॥पुनइकीसवौंगुरूतीरगरहमकियेग॥तातैंध्यानकोभेदसीष
हियेमैलियो॥इकदिननगरीमांहितीरगरहाटमैं॥ठोढेभयेमैंजायचल
तहीबाटमैं॥वहतोबनावततीरआपनीजानमैं॥ओरकछूसुधनां
हिंयगोवाध्यानमैं॥वाहीकेआगेहोयभूपइकआइया॥हस्तीओरद
लसाथनिसांनबजाइया॥भयामहूरंतताकमनुयतहांआयकै॥
भूपगयोइसराहबूझोमुसुनायकै॥वहजोसाजनतीरयहीजत

रहियो ॥ हमतो जानौं नांहि न हींद रसन कियो । भायत दत्ता त्रे वूझु हम
सूं कह्यौ ॥ राजा संग बकुनीर शाह दुद कुभयो । बकत कटक ले साथ
जु भूप सिधारिया ॥ तेकाहे नहीं सुनौं दिष्ट निहारिया ॥ उनयौं उत्तर
दियो तीर के ध्यान ही सुरत रही तिंह मांहिं या तै नहीं जानई ॥ वाकूं
कीनौं गुरु हिये में धारके ॥ मन हरि चरनन पास रखू थिर धार के ॥ दिष्ट
मांना और बुध जहां जुल गाइया ॥ ऐसे सो कहिये ध्यान न बिंरलै काहूं
पाइया ॥ ७५ ॥ दो० ॥ ध्यान करै दृग मूंद कर ॥ जो कोई नर नार ॥ घटु कासु
नयल वैं षुलै ॥ मन चलै बारम्बार ॥ ८० ॥ अथ पद्दी छंद ॥ वह न हीं क
कहियत ध्यान जु षुल जात है ॥ जिह चल लागै ध्यान जु पूरी बात है
ध्यान ध्यान कैबी च ध्यान ध्येह मांहि है ॥ तीनौं एक ही होंहि बिघन
कछू नांहि है ॥ मन हरि चरनन पास का याकी सुध नहीं ॥ भूष प्यास कौ
कूनो हि ध्यां न लागत जहीं ॥ मन गयो और ठौर ध्यान जो लाइये ॥ सो वह डि
गडि जाय न थिरता पाइये ॥ जब नारायन साथ मगन मन के गयो ॥ सब
कारज गयो भूलक छू सुध नारहो ॥ जैसें भायत लो य समाधी पुरष कूं ॥ दि
न वीतैं दस बीस रहै सुध बुध कछू ॥ कहियै यही समाध वास नांस बैठ रै
कोटि मध्य एक ध्यान ऐसो धरै ॥ सो ईश्वर न को दास सोई जोगीस है ॥ सो
ई साधक सोई सिध बुधि बिसबीस है ॥ ८१ ॥ दो० ॥ ध्यान लगीय कै ॥ र
है राम लौ लाय ॥ आपा बिसरै हरि मिलै ॥ बकुर न उपज्जै आय ॥ ८२ ॥ अ
थ पद्दी छंद ॥ तन की सुध बिसराय कछू सुध नार है ॥ या बिध सों जो क
रै ध्यान ता कूं कहि है ॥ हल चल ध्यान जो करै सो हरि सूं नां मिलै ॥ अफ
ल ध्यान सोई होय जुमबहि नाहि न चलै ॥ तीरबनावन हार गुरु है

इमतैंकियो ॥ तातैं पहरत देसहि येमांहीलियो ॥ जैसेंमनकूं साधप्रभुचरनन
नधरै ॥ काईरहै चितलायजु इतउतनांफिरै ॥ बाईसवों गुरसाप हैमारोजा
नियै ॥ गतैलीहीसीषयहीयहचाबियै ॥ सदा अकेलोरहै कबहूं घरबा
नाकरै ॥ रैनअहोक हूं होयकांईव हु बसरहै ॥ वाकी देषीर हनकुम
नमैं लाइया ॥ सदारहे निरबंधन मंदल छाइया ॥ उपजै मोह न लो
भलगै नीहीदमाहिं ॥ चरनहींदासा भयो दोषनहींराषहैं ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ बं
धाजुपानीगादला ॥ चलता निर्मलहोय ॥ दोनोंरीतबिचारकै भली
होयसोलोय ॥ ८४ ॥ तेईसवोंगुरमकारीकियो ॥ उगालती मुषजाय
जैसेंजगपरवासका ॥ पुनलेआप लुकाय ॥ ८५ ॥ अथ पदवी छंद तै
ईसभास ॥ वोंगुरज्ञानहमारोमाकरी ॥ आपसूं काढैतारहै वामैंधरा फि
र वहतारसमेट उदरमें लेधरै ॥ योंहरिलीलाजानयह कौतगसोक
रै ॥ बसुधाकूं उपजायकैरैयाबाजसी ॥ फिरसबलेइमिलाय आप
मांहीतसी ॥ जैसें मकरी तार सूं ॥ जालबनाइया ॥ फिर आपवाबी
चमैंसहसमाइया ॥ जबचाहैंफसैसुगंहीउबरै ॥ साधैदता
त्रैयमुकतजोचाहियै ॥ हरिउतपतछैकरमकीसरनैं आइयो ॥ ज
नममरनभैमांन ॥ भगतमैंपाइये ॥ जगकेजालसूं छूटबेगाही
लीजे त्यागबैरागचरनहींदासहोय ॥ हरिजसहाहिगुनगायतजो
जगबासहो ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ संगीमिल संगीभवैं ॥ मुनैकुं तोयहतोबैं
न ॥ अबमनआईसबही ॥ देषा आपनैंनैन ॥ ८७ ॥ अथ पदवी छंद
चौबीसवांगुरकियेजुसंगीनांनकौ ॥ वासोनिहचैमंड ॥ हियेमें आंन
कैसुनैकुतीयहवातजुकोईहरिभजै ॥ निसदिनमनलायकै

पृभुसेवासजे । सोनारायनरुप आपकेजातहै ॥ यामेसंसोनांहिसां
चयहबातहै ॥ मनठहरतकाहुतीयहबातसुहावनी ॥ सेवगजो
कोईहोयसोकोहोवैधनी । रंगीकोहमलषोकीट इक आंन
कै ॥ राषोउनग्रहमांहि आपनेजांनकै ॥ आपनबाहरबेठतां
हासानमुषकियो ॥ केतकदोसनमांहिवहरंगीकरलियो ॥ रु
पभिरंगीदेषभिरंगीहीभयो ॥ तातें रंगीगुरुहमारेमनकयो
जैसोकरैकोइध्यानसोवासमहोतहै ॥ नहीरहैचरनदासर
हैबहुजोतहै ॥ ८८ ॥ दो हा ॥ चौबीसोंपूरेकिये ॥ समझसमझकरदे
ष ॥ बिरकतहोयजगमेरहूं ॥ लगैनमायारेष ॥ ८९ ॥ फिरआपवी
कापलषी ॥ रहीनजासूंप्रीत ॥ थकेजुइडीस्वांदही ॥ सबजगाई
सबरीत ॥ ९० ॥ अष्टपदीछंद ॥ आयेदसवेंगुरुइककहेतहैं ॥ पहलेंमो
कूंहोतोअधिकसनेहमैं ॥ देषोछिनछिनदेहछीनहोयजातही
नित्तउठसुषकेकाजनमलाकछुबातही ॥ बहुतचावकरआपमें
लीभोजनकियो ॥ दूजेदिनवाहीभांतिघनेंहीदुषदियो ॥ इकदिन
बस्तरबिमलबनायिलाकै ॥ फिरबस्तरकेकाजफिरूदुषपाय
कै ॥ जितनोंकियोउपावकायासुषकाजही ॥ इकदिनएकउपा
वदुसुषकोधारिया ॥ दूजेदिनवहीदुषबहुतबिसारिया ॥ औरल
षीइकबातयहकायाआपनी ॥ अपनहोवैनांहिबिचारीहीघ
नी ॥ मूरषजानैंनांहिसुयाहीभेदकूं ॥ होवैंनाचूरनदासमहैब
हुषेदकूं ॥ ९१ ॥ दो हा ॥ बालपनेंऔरतरनमें ॥ औरबुढापेमांहि
तीनोंपनमेदेहयह ॥ कबहूअपनीनांहि ॥ ९२ ॥ अष्टपदीछंद

बालकपंनमैंह[illegible]ताप औरमायकै ॥ तरनांयेमेंपक सेंडिया कर
जायकै ॥ विरध अवस्थामांहिपुत्र केहा यही पुंनजनम
ताहोय आगनजारैतहीं ॥ जोयोंहीरहजायपसू आदिकनमें
देहन अपनीहोयज्ञानमांहीलषै ॥ ज्ञादिनतेसुषकाजनहीं
गर्भधारिया ॥ पालधजो आयुउदरमें डारिया ॥ काया तें इकतकाज
नमोपुनहोनहै ॥ हरिकीप्रापतहोयजुसोवतहोनहै ॥ मनतगजब
हीहोययहकाया नारहै ॥ भारवैसेंग्रहजीवकाया लहै ॥ जबही
आवैकालनहीठहरायगो ॥ घरचैजोबहुदरबनछिनरहजा
यगो ॥ जबहीसमझोज्ञानदेहकोजीयमैं ॥ भयोबिरक्त बिचार
आपनैहीयतें ॥ लईसीषचौबीसदेहहितत्यागकै ॥ कीनैंहरि
कोध्यानबहुतअनुरागकै ॥ दत्तात्रेन एवपनकेसब [illegible]वाय
सों ॥ पुनतीरथनकोगयेभगतकेभावसों ॥ राजासुनयहज्ञानहि
येमेंधारिया ॥ हरिसेंसुरतलगायसकलडवटारिया ॥ चरनन ही
दासाहोयपरमसुषहीलियो ॥ तनकूजमें रावजुमनहरिकूं
दियो ॥ २ ॥ दोहा दत्तात्रेवनेकहे जोरराजासूबेन ॥ सोमैभा
षामैंकियेसमझोयाह्वोचैन ॥ ग्रंथ ॥ अथपदवी[illegible]द चौबीसां
केमांहिविचारकियेसब हरमैं [illegible]नही [illegible] उत
हीकेपरताप चौबीसोंसमझही ॥ आईघटकेमांहिजुउतह्वल
बुधही ॥ चौबीसोंतनधारजु ॥ अंगबताइया ॥ जासूझयोकु
ल्यानअगाधिकसुषयाइया ॥ जैसेहैंगुरदेवुयहतनिहचैजानि
ये ॥ सकलबिकसबछोडगुरु हीमानिये गुरहीकेपरसादमें

लैनारायनां ॥ जनममरनबंधछूटहोय पारायनां समरथश्रीगुरदेव
सीसपरराषियै ॥ भौसागरकी ब्याधसकलहीनाषियैं ॥ कहैमुनीसुष
सुषदेव चरनहींदंसकूं ॥ वहीनुपावैं चौथैपरमाभिवासकूं ॥ ८५ दोहा
गुरसमांनातिहूंलोकमैं ॥ औरनदूजैकोय ॥ नावलियैपातत
नसैं ॥ ध्यानकियैंहरिहोय ॥ ८६ ॥ गुरस्वामीकेपरतापसूं ॥ मिटैजगतकी
ब्याध ॥ रागदोषदुष नारहैं ॥ उपजैप्रेमअगाध ॥ ८७ ॥ गुरकेध्यानमैं
धरो ॥ चितबुधमनअहंकार ॥ जबकुछआपानांरहैं ॥ उतरैंसंबहीभा
न र ॥ ८८ ॥ मोंक्षिमुकतकेकरनकूं ॥ कीनौंगुरकासार ॥ पढैसुनैचितमै
धरै ॥ भौसागरहोयपार ॥ ८९ ॥ इतिश्रीचरनदासजीकृतभक्तबिर
तकरनगुरकासारसंपूर्णं ॥ ०॥ अथश्रीमहाराजचरनदासजीकृत
20 जोगसंदेहसागरलिषतेदोहा ॥ अर्थबतावोपंडता ॥ ज्ञानीगुनीमंहत ॥ जोतुम
पूरेसाधहो ॥ भक्ताहरिकेसंत ॥ १ ॥ चरनदासपूछैअर्थ ॥ भेदीहोयकं
हो ॥ समझौतोचरचाकरो ॥ नांहींमौंनगहो ॥ २ ॥ चौपई ॥ ब्रह्मंडसोंपंडै
सोंठैं ॥ ठौरठौर घटमैंयहचाठौं ॥ सातसमंदरघटमैंकहां ॥ कहुवारहे
बताबो जहां ॥ सेसनागकिहठौरबिराजै ॥ रूपबराहकौनठाबि
छाजि ॥ कहांचारकायामैंषांन ॥ षटचक्ररकूं जोतुमजानौं ॥
नावसहतसबभेदबषानों ॥ नावकुंडलीकापरवान ॥ कैसें
जागैंकहोबषांन ॥ सहजसहजवहकहांसमावै ॥ जेभीहोसोभेद
बतावै ॥ चरनदासकागुरसुषदेव ॥ सोतोजानैंसबहीभेव ॥ ३
दोहा ॥ कहांजुबासापवनकोमनकौंनीअसथांन ॥ कहांहियु
कीआषरैं ॥ कैसैंकरैंपिछांनै ॥ ४ ॥ चौपई ॥ प्रानपुरषअंतरगतकैसैं

संदेह० क्योकर भेद बतावो जैसे । इडा पिंगला सुषमन नारी । कैसे यंत्र लटै बा
री बारी ॥ आठ प्रकार के कुंभक जानैं । सो जुगत मोमे रे मन मानैं ॥ चा
र अवस्था चार सरीरा ॥ बानी चार नांव कहौ बीरा ॥ केस प्रकार अ
अ जपा का जाप ॥ कैसे गुल संसा को नाप ॥ कौं आवे और क्यों वह जा
य ॥ काया छतीवी करो लषाय ॥ परा पंड तीम ध्य मां कहा ॥ कहा
ये परी दे कूं बता । चरनदास का गुर सुषदेव । सो तो जानैं सब ही भे
व ॥ पदे ॥ दोहा ॥ पद तीनौं बकुं बिंद को । सुष बाजा यत भेद बावन
अक्षर देह मैं ॥ पुहप दीप कहां सेत ॥ ६ ॥ चौपई ॥ कहां छंकीस काया
मैं लोक ॥ इंद्र कहां करे नित भोग ॥ ब्रह्मादिक सो कहां तिर देवा
का बिधन तब कौ या वे भेवा ॥ षोडस चंद कहां बरगासा ॥ बाह रसूर
ज का कित बासा ॥ तारा मंडल कैसे दरसे ॥ त्रिकुटी संजम कैसे प
रसैं ॥ तिरबैनी कूं कैसे पावे । ररंकार कहां गहुज गावै ॥ बरनौं माया
सकल संसारा जाका कैसे कीजे ध्यान ॥ कौन दिसा और को अस्था
न ॥ चरनदास का गुर सुषदेव । सो तो जानैं सब ही भेव ॥ ७ ॥ दोहा ॥
निराम सुरग मंद्र कहा ॥ स्वास उसांस बतावो । काया मैं बिष कहां है
मे बिंद कुं उदर सावो ॥ ८ ॥ चौपई ॥ जीव ब्रह्म मैं केता बीच कौन कौ
न काया मैं नीच ॥ इंद्र तकुंड कौन अस्थान ॥ बंकनाल की कहो
पहचान ॥ ब्रह्म रंध्र का भेद लषावो ॥ कामधेन का बरन बतावो ॥ मा
नसरोवर ताल बता ॥ तामैं हंसा कैसे न्हाय ॥ बिनां सीप कहां उप
जै मोती ॥ बिना घी वक हां जग मगा जोती ॥ बिन सूरज कहा नित
ही धूप ॥ भंवरगुफा का कैसा रूप ॥ सुन्न सिषर का कौ धरबारा

कै षिडकी चौरकहा अकारा ॥ चरनदास का गुर सुषदेव ॥ सो तो
जानैं सब ही भेव ॥ ८ ॥ दो ॥ कहा दसों दिगपाल है ॥ कहां इंडिल
के देव ॥ आहार बास पंच तत्त्व को ॥ बरन बतावो भेव ॥ १० ॥ चौपाई ॥ का ८
सी औ मेरु रा है दोय ॥ कहां देह मैं कहियै सोय ॥ अठसठ तीरथ घ
र मैं ज्यों कर ॥ सब का गुर युह कर है क्यों कर ॥ कहां बंध लागै उड्डी
न ॥ कहां पाट का कूंची ताला ॥ द्वादस कला कौं नमत वाला ॥ कंठ कूं
प रत्न रहा है कौं न नैजू कहा बतावो जौन ॥ पनिहारी कहा कैसें भ
रै ॥ घटिया कहां कहा भर धरै ॥ कै प्रकार इंद्र तका स्वाद कौं नठौ
रसों अनहद नाद ॥ अग्र उर कैसैं कर पावै ॥ मकरतार का भेद ॥
बतावै ॥ चरनदास का गुर सुषदेव ॥ सो तो जानै सब ही भेव ॥ ११ ॥ दो ॥
घंट ताल का लंब का बोल ॥ वार वारा कौन है ॥ इन्है बतावो षोल ॥ १२ ॥ चौ
पई ॥ कौं न कंवल पर गुरू बिराजै ॥ कै प्रकार अनहद धन बाजै कैवा नी
है अनहद तूरा ॥ जानैं गा कोई साधू पूरा ॥ तेज पुंज कै जोजन आगे ॥
अमरलोक कब सूंक न लागै ॥ तीन सुन्न कहां चौथा सुन्न ॥ जित ही भूले
पट औ रासुन्न ॥ कै कहियै काया के द्वारे ॥ भिन्न भिन्न कहु मेरे प्यारे ॥
बहत्तर हजार आठसै चौंसठ नारी ॥ इनका भेद बकुते है भा
री ॥ बहत्तर कोठे कहां कहां ॥ नांव बतावो जहां तहां ॥ चरनदास
का गुर सुषदेव ॥ सो तो जानैं सब ही भेव ॥ १३ ॥ दो ॥ सात दीप नौ षंड
को भिन्न भिन्न कहु भेद ॥ काया मैं किं हठौर है ॥ कहं नाव कि है त
१४ ॥ चौपई ॥ चौरासी बाई का नांव ॥ कहा कहां है कौं सी ठांव ॥ जल का
को ठा कौं षरहै य ॥ कहां अग्र का कहियै सोय ॥ ब्रह्म ज्वा कहु कैसें

संदहं०

जगैं किस आसन सैं निद्रा ॥ न मुद्रा भगै किस आसन सैं बीर
जजीतै ॥ इस मुद्रा कै सैं कर [illegible] जीतै ॥ नाद रूप मुद्रा काजो व तीन
बंधका नाव बषांन ॥ चौरासी [illegible] आसन का नांव ॥ और ब ता-
वो मनके पाव । स्वग मुत्य और कहा यताल । कहा सत्य और कहा
तिताल । चरनदास का गुर सुषदेव । सो तो जानै मे बाही भेव ॥ ११ ॥ दो
कै प्रकार का जोग है कै प्रका की भक्ता । पांच भूमिका ज्ञान की ॥ स्या
त कला का अर्थ ॥ १२ ॥ चौपई ॥ कौं नगरी का राज करै ॥ जो जीवें औ
र कौ न मैं ॥ पेट बा किसका हैं जांन ॥ पूजा बडी ताहि पहचान सब
मैं बडा कौं आहार ॥ ताकूं सुरत स्नेह निहार ॥ ता बिन एक घडी
नहिं रहै ॥ भेदी होय सो भेद कहै । सब मैं बडी कहा जो पूजा । जाकी स
मदीषि नहीं दूजा ॥ कहा सु सबकूं । लगा मल गग । कौं न पुरष से म
गाम भगा । कहा घटै सो घटै । कहा बटै सो बटै । घटै न बटै सो व
स्तु कहा घटै बटै भी ताहि बता । चरनदास गुरु सुषदेव । सो तो जां
नैं सब ही भेव ॥ १३ ॥ दोहा ॥ कूर के कहा जु अर्थ हैं ॥ अक्षर देकु दि
षाय ॥ निह अक्षर को रूप कं ॥ भिन्न भिन्न समझाय ॥ १४ ॥ चौपई ॥ उँकार का
कौ पीव ताको । महतत्त्व का रूप दिषावो ॥ मन चक्कर का कै सारंग । मन मन स दे
ऊ कै सैं संग । कौन घाट होल गै समाध ॥ कित जा देषै षेल अगाध । चौबीस सु
न्न है जहां जहां । बज्जर ताला लागे कहां ॥ बज्र द्वार बिन पावै कहा । बिन पाये
उरले घर रहा आठ महल का करो बषांन ॥ कासों कहिये पद निर्बान । जो
तम जानौं करधरे ता । तौ तुम भेद कहो अब केता ॥ दीप मुद्रा और मुद्रा रा
जा ॥ जासों सुधरै काया काज ॥ काया महल के जो तुम भेदी । ठौर ठौर का कुप

यमैंजेती। पांचतत्त्नकीइंद्रीदसयहीबतावो आगेंबस। चरनदासकागु
रसुषदेव। सोतोजानैंसबहीभेव॥ १ पी। दोहा। चारस्थ चौदहचौबा
रे॥ भेदीहोयसोजांनैं चरनदाससुषदेवकाबालकसोयहभे
दबषांनैं॥ २५ छ। दो। चंदकलाकितछिपैंबढैंजबकितसौं आवै॥ बा
दरकितसोंहोयफटैंजबकहांसमावैं॥ दीपलोसबुझजायजायकित
मोहिबतावो॥ रांतदिनंगकिजायपूछांकिहठौंभेरलषावो॥ चरनदास
सुषदेवसूंपूछतहैसिरनायकैं॥ तनछूटैजिवजायकितआवतहै
किंहठौरतें॥ २१ कबित। देषोहै तमासोदेहसमकेबिचारलेसमूरष
॥ नरहोयजोयाबातमेंहसैगो। चीतेकूंमारम्रगानषसबसूंषास॥ गायो
बाघनीकूंमारखोकसिघकूंग्रसैगो। बिल्लीकूंमाचूंहेप्रेमकोनगा
रोदियोदादरकूंपांचसर्पमारकैबसैगो॥ कहैचरनदासऐसेसेयेल
सोंलगाई॥ षासीचरियाकेसीसटूटेंरोबाजकोलसैगो॥ २२ दोहा। प
गलागूंसुषदेवकें॥ औरवारनैंजांव॥ गुप्तभेदमोसोंकह्योसबैनां
वऔरठांव॥ २३॥ सोतुमसोंपूछतनकरूं हेगयरषमकेदाय॥ यासाग
रसंदेहको॥ दीजै अर्थबताय॥ २४॥ इतिश्रीमाहाराजसाहिबश्री
चरनदासजीकृतसंदेहशागरसंपूर्ण॥ अथगुरअस्तुत
वर्नते॥ १ ब्रह्मरूप आनंदघन॥ निरबकारनिरलेव॥ मंगलकरन
दयालजी॥ तारनगुरसुष॥ १ सतियनमेंतुमसतिहो॥ सूरनमैंहोबीर
जतियनमेंतुमजतहो॥ श्रीसुषदेवगंभीर॥ २॥ पतितउधारनतुमबेध॥ ध त
र॥ मचलावनभेवसंकटसकलनिवारियै॥ जैजैश्रीसुषदेवजु॥ ३॥ चिंता
मेटनमोहरनदुरकरनजगबाधा॥ गुरसुषदेवकरयाकरो॥ चरनल

21

गसबसाध ॥ ४ ॥ दाता चारौ भेद के श्री सुखदेव दयाल चरनदा
स पर हूं जियै ॥ ५ ॥ अथ श्री हरि लिषते राग कान्हरा ॥ नमो सुषदेव हो
चरन पर वारनं ॥ दुंद संकट हरन कारन सुष मंगल परम आनंद
घन पत त के तासनं ॥ काम तक त्याग बैराग है मुक्त लौं ॥ तीन हूं
गुन नत तैं निरबिकारं ॥ महा निह काम अरु धाम चौथे परे हैं
सिध चेरी नई फिरैं लारं ॥ ज्ञान के रूप अरु ओर नृप सब मुनिन
मैं दया की नाव किये जीव पारं ॥ नद है नागोत मत नंनान परग
ट कियो तिमर कियो दूर औरधर्म धीरं ॥ मोह दल जीत अरु जन
संत के दंड नेनन के डिढ कारन नै बिडारं ॥ चरनदास के सी
स पर हाथ निज धीर दै पही मांगूं गुरु बार बारं ॥ ६ ॥ राग काफी ॥ क
हां कहूं तोहि पुकारूं ॥ हो करतार हमारे ॥ नाव अनंत नहीं जाको बहु
गुन रूप तिहारे ॥ अजर १ अमर २ अबिगत ३ अबिनासी ४ अलष
निरंजन स्वामी ५ पुरष पुरातन ६ पुरषोत्तम ७ प्रभू ८ पूरन ९ अं
तरजामी १० कृष्ण ११ कन्हैया १२ बिष्नु १३ नरायन १४ जोती
रूप १५ बिधाता १६ अपरमपर १७ मुकंद १८ मुरारी १९ दीन
बंधु २० ब्रजनाथ २१ जो द्रोपत २२ जगदीस २३ चतुर्भुज २४ बिसंभैं २५
सर्वप्रकासी २६ पारब्रह्म २७ प्रानन को नाता २८ सब नांघट घटबासी
२९ निरबिकार ३० परमेस्वर ३१ गिरधर ३२ माधो ३३ गोबिंद प्यारा ३४
कंवल नैन ३५ केशव मैं दस संदुम ३७ सब में ३८ सबसैं न्यारा ३९ रिषीकेश
४० मुरलीधर ४१ मोहन ४२ ४३ अचिंत ४४ अजोनी ४५ भगवत ४
६ बासुदेव ४७ भगवान ४८ ज्ञानी ४९ स्वामी ५० मोक्षनी ५१ दीनानाथ ५२

गुपाल ५३ । हरी ५४ । हरि ५५ । गरुड़ध्वज ५६ । घनस्याम ५७ । भक्तब
छल ५८ । औरदेवकीनंदन ५९ । करतासबबिधकामा ६० । आदि
प्रधान ६१ । माधुरीमूरत ६२ । धरनीधर ६३ । बलबीर ६४ । नंदन
दन ६५ । औरजसुधानंदन ६६ । सुंदरस्यामसरीर ६७ । प्रसनमु
ष ६८ । नरसिंघ ६९ । बिसंभर ७० । भक्तबछल ७१ । अषंड ७२ । अरूपी
७३ । ईस ७४ । अगोचर ७५ । औरजगतगुर ७६ । परमानंद ७७ । बकुंठ
वी ७८ । करुणामै ७९ । कल्यान ८० । अनंत ८१ । दयासिंघ । बनवा
री ८३ । धारनसंषचक्र ८४ । रुकमनिपति ८५ । आनंदकंद ८६ । बि
हारी ८७ । परमदयाल ८८ । मनोहर ८९ । नरहर ९० । किरपानिध ९१ ।
कंसनिकंद ९२ । रावनगंजन ९३ । जोति ९४ । लछमीनाथ ९६ । ज
गपनाथ ९७ । औरबद्रीनाथ ९८ । निर्गुन ९९ । सरगुनधारी दा
मोदर १०० । रघुबर १०१ । सीतापति १०२ । रामा १०४ । कुंजबिहारी १०५
दुष्टदलन । ६ संतनकोरिझावै १०७ । कलासिटकोसांई १०८ । दुषह
रनकेकौतिग अनगिन सेसपारनहिपांई । औरऔर आठनामकी
माला । जोनरमुषउचारै । आपबैकुंठकी सारीपीढी । एकओरसौं
कूंतारै । गुसुषदेवमंत्रनिजदीनौ । रामनामततसारा । चरनदासनिह
चैसोजपकै । उतरैभौजलपारा ॥ ६ ॥ अथ चरनौं के चिह्न के मगला
न चरं के दोहा ॥ दसचिह्न दहने चरन । वांवैंहै दसराक । जिनके निह
चलध्यानतें । कटैंजुबिघन अनेक ॥ १ ॥ श्रीसुषदेव अग्याद ई । चरनदा
सउचार । सो अबबरनकरतहूं । ग्रंथमांहि बिस्तार ॥ २ ॥ रागक
ल्यान । चरनचिह्नचितलाव । फिरेतेराजनमनहोयगा । परम

१४३

नाम

श्री

गलकछबिनिरषैं नमरअंकुसमनमपट काज। अंबरक्ष
तरकुलसजौराजतक्षजाधेनपद भाव। संघनमोलमसुधाह
दतासोंचितन्तरकाव। स्वस्तकंजबूफलकीसोभाजामैसुरतलगा
व।। अरधचंदषटकोंनमी नबुदेउर धरेषलषचाव। अष्टकों
नतिरकौंनबिराजै। धनुषबरनउर धाव। कोटकामवष ऊपर
वारूंनूपरसंदरपाव। श्रीसुषदेव चिह्नपदबरनै सोतूंहियेमें।
लाव। चरनदासहितराषमोरनिस बारबार बलिजाव। परा ग
क न।। जनमजनमकेलागेही आये।। देमंतर अब तिन्हैंबि
डारो।। कामक्रोधमोहलोभगरबनैंमनबौरायाकियो अपना
पो। जिनकेहाथपरेजियमेरो। घेरघेरीबहु उषपायो। एक
घडीमोहि छोडतनाहीं। लहररचढायकैबहुतनचायो।। कपड्यो
घरघरद्वारनचावै। उत्तमहरिकोनांवछुटायो।। अबकैसरनगहीहै तु
म्हारी।। चरनहीसदासउयानै।। किरपाकरयहब्याधछुटावो। गुरसुष
देवसयानैं।।१०।। आरतीरागभैरू।। मंगलआरतीयाबिधकीजै।। ह
रषपायआनंदरसपीजै।। प्रथमैंमंगलगुरहीज्ञान।। जिनसुंपायोप
दनिर्बान।। ज्ञाननैनप्रगटकियोजोर।। भागईरैनतिमरघनघोर
दुतियेमंगलश्रीगोपाल।। जनकोबहुहालबहुपततउधार। रामकृष्ण
पूरनअवतार।। दुष्टदलनसंतनरषवार।। त्रितीयेमंगलप्रभुजीकेसा
मानसरोवरमताअगाध।। तिनकीसंगतउडगयोसंसा।। कायापलट
गतहोगयोहंसा।। चौथेमंगलश्रीभागोत।। घटउजियारकीरतकू
जोत।। पापतापदुषमेटनहारी।। जिंहनबकाचढउतरोपारी।।

पंचवै मंगलश्री सुषदेव॥ तनमनसूं कर उनकी सेवा॥ चरनहीं दा
सचुरन चित लायो॥ मंगल चार अपे जस गायो॥ १॥ आरती मंगल 22
भैरूं। मंगल आरती कीजै प्रात॥ सकल सुबुद्धि विद्या घट गाई रात सूरज
जनम्या उजियारा। मिट गया औग नकुबुधंकारा। मन के रोग सोग
सब नासे सुमत नीर सुभ जल पूगासे॥ भै और भर्म नहीं व्है
राय। दुषधा गई एकता आई॥ ज्ञानवान कुलसुषे तीके सवसदेहम्या
ये अबजी के॥ घट घट दरसै बीदा पाला। रोम रोम सब होय ग
ई माला॥ दिष्टन औवै दुष जग जाला। काग कलट गत भरोम राला॥
अनहद बाजे बाजन लागे॥ चोर नगारिया तजत जभागे॥ गुरसुषदे
वकी फिरी दुहाई॥ चरनदास अंतर लै मेला ई॥ १२॥ आरती॥ औसैं
आरति करकुलसावै॥ दैपरकमांसी सविवावै। तनको थाल और मन
को चौमुष। ज्ञान ध्यान की बाती लावै॥ तत्त सार को घी नरतामैं॥ अगम मग
जगमग जोत जगावै॥ अरघ उरघ हित सूंकार फेरे॥ रचनां रचै फूल रषा
वै॥ सुरत मृदंग और निरत तंबूरा झेंगड झेंगड झांझ बजावै तालबी
नमुह चंग संबधुन॥ प्रेम मगन होय हरिगुन गावै। सोर नकल साउल
को राषै॥ धूप और अगर सुगंध धरावै। या बिध सूं सुष देव स्याम की॥ गग
य आरती को फल पावै॥ जुगल किसोर विरथ गैं नन सों चरनदास स
सबी बलि बलि जावै॥ १२॥ आरती॥ आरती आदि पुरस की काजै साधो
अगम अपार और चितमन दीजै॥ अद्भुत आरती उंकारा। तिरदेवा
होय जगत पसारा॥ पहलें मत्स्य रूप हरि धारो। वेद ल्याय संषासुर मारे

रई मंदाचल बास के ती। चौदह रतन मथे दध से ती। रूप बराह धार
हरि धाए। हिरनांछिछ हन धरती ल्याए। खंभ फाड़ि हिरनाकुछ स
मारे। नरसिंघ है प्रहलाद उबारे। बावन होय करूबल छल लीं
न्हें। तीन लोक तीनों डग कीन्हें। परसराम धारे छत्री संघे निकंदक
रडारे। राम रूप रावन दल मलिया। लंकाराज भभीषन मिलया
कृष्न रूप कै कंस पछारे। दरसन देह जसकल वधारे। बोध
रूप। अचर जगत तेरी को ता देख थ[illegible]बुध मेरी। निहकं लंक
निरलिप्त निरासा। संभल सुरत लिये जहां बासा। हरि है ए
का रूप बहु धारे। दस औतार आरती गाऊं। नि मैं होय पद मैं य
द्या पाऊं॥ चरनदास सुषदेव बताये। निर्गुन हरि सरगुन होय आ
ये॥१३॥ आरती॥ आरती रमता राम की कीजै। अंतर ध्यान निरष
सुख लीजै। चेतन चौकी सन को आसन। मगन रूप त कियाध
रदीजै। सोहं थाल थै चमन धरिया। सुरत निरत दो कबाती ब
रिया। जोग जुगत सें आरती साजी॥ अनहद घंट आप सूं बा
जी सुमत सांझ की बरियां आई॥ पांच पचीस मिल आरती गाई॥ च
रनदास सुषदेव को चेरो घट घट रसें साहिब मेरो॥१४॥ आरती
करत हसें मन मेरो॥ वार पार कुछ दीषै न तेरो॥ अमर अडोल
निरवृत न भेषा। निरगुन रहित रूप न हिं रेषा॥ चेतन आनंद
नित निरधारा निराकार निरलिप्त निरगरा। निराकार अ
[illegible] बरजत। निरगुन और सरगुन ते री गत। हाथ पांव न और

सीसघनेरै ॥ कैसै आरती करूं प्रभु तेरे ॥ सो हं बाती घीव अषं
डा ॥ एकही जोत बलै ब्रह्मंडा ॥ तुही थाल तुही आरती साजे ॥ तुही
घंटा तुही झालर बाजे चरनदास सुषदेव लषायो ॥ सुरत षकी
23 पै पारन पायो ॥१५॥ आरती ॥ गगनमंडल मैं आरती कीजै ॥ उन
मसी जस कल सज लीजै ॥ सुषमन छत्र तकुमध धरावै ॥ मनसमा
लन फूल चढावै ॥ घीव अषंड सोहं बाती ॥ त्रिकुटी जोत बलै दि
नराती ॥ पवनसाधनां थाल करीजै ॥ जामैं चौमुष मन धर दीजै
रविससि हाथ गहो तिंहमांही ॥ षिवदह मैं षिनबा वैंलाई ॥
संहस कंवल सिंघासन साजे ॥ अनहद झालर नितही बाजे ॥ इं
हि बिध आरती सांची सेवा ॥ परमपुरष देवन को देवा ॥ चरनदास सुषदे
व बतावै ॥ ऐसी आरती पार लंघावै ॥१६॥ आरती ॥ आरती गंगा माई की
कीजै ॥ बस बैकुंठ महासुष लीजै ॥ सुरगलोक सं गंगा आई ॥ शिव
कि जटा मैं आंन समाई ॥ सेवा कर भागीरथ लीनी ॥ मृतुलोक मैं परग
ट कीनी ॥ फूल पांन मिष्टांन चढावो ॥ कर कर दरसन सीस निवावो
सीस झुकाय न्हाय जो कोई ॥ पाप झडै और निर्मल होई ॥ चरनदास
सुषदेव बषानी ॥ पतततउधारन सुरसुर जानी ॥१७॥ रागासनेमें ॥ याबि
धगोबिंद गोपाल गावो ॥ भक्त बछल हरिनाम कहावो ॥ बेर भीलनी
के तुम षाये ॥ देषरिषीस्वर सकल लजाये ॥ जैसें साग बिदुर घर पायो ॥ दु
रजोधन को मान घटायो ॥ भक्त सुदामां के तंदुल लीन्है ॥ कंचन महल
अधिक सुष दीन्है ॥ ज्यौं कर मां की षिचडी षाई ॥ नेह लियो सब सुच
बिसराई ॥ प्रेम प्रीत कर भोजन कीजै ॥ बचे सीत संतन कूं दीजै ॥ तु

१४५
ग्रह

तुमरीबिभोप्रभुतुमरेंआगो ॥ हमसेंदीनअसोकहालागो ॥ चरन
दास भररा षीकाबी ॥ १ ॥ ओ के गे भ ॥ जैजैपारब्रह्म
प्रधान ॥ अक्षपावैगुरकेज्ञान ॥ ब्रह्मपुर का धाको धरेंगसरू
सोतो कहियें अधिक अनूप ॥ जैजैकंश्री रतिरदेव ॥ जैजैदस
औतार अभे ॥ जैजैवृंदावनिजधाम ॥ जैजैगोकलऔर नंद
गाम ॥ जैजैगोपीऔग्वाल ॥ जैजैसदाबिहारीलाल ॥ मोरमुकट
मुरलीवनमाल जैजैराधेकलमुरार ॥ जैजैब्यासबेद उचार
र जैजैमहाबदेत मुनि ॥ जैजै श्रीसुषदेव दयाल ॥ इनको
नामजपैजोकोय ॥ प्रेम प्रमभक्त पावतहै सोय ॥ चरनदा
ससुषवालहे ॥ हरिनन केपासरहे ॥ १ ॥ कोर कीसमे ॥ जैजैबृनम
चलअविबासी ॥ आपनहींसूब ॥ जोतिप्रकासी ॥ जैजैअखिल
निरंजनदेवा ॥ रिषमुनिसारद्दलहेंसेवा जैजैआदियुरसजग
दीस ॥ हर्षनतपहि नि वाकंसीस ॥ जैजैपगपतिसिरजनहार
व्यापरहोजीवजंतमंझारा ॥ जैसें भूमिभारधरहारी ॥ प्रगटहोतसं
तनहितकारी ॥ जैजैबपुधारेचौबीस ॥ लीलाकारनत्रिभुवनईस
जैजैकलमनोहरगाता ॥ नैनबिसालप्रेमकेदाता ॥ जैजैभक्तबछलभ
गवांन ॥ ब्याधकाटहैतिनकेध्यांन ॥ जैजैनिरगुनसरगुनरूप
नानांमाती अधिकअनूप ॥ जहांतहांछबिधारेरहै ॥ जाकीम
हमाकोकबिकहे ॥ जैजैहोसुषदेवबिराजै ॥ ममममस्तकपरहि
नराजै ॥ जैजैप्रेमसुधारसपीयें ॥ जैजैतिलकसिलमितीकीये ॥ जै
जैंसाधसपोसुषदाई ॥ चरनदासतुम्हरीसरनाई ॥ १ ॥ अ गु

देव। अं रा क न ।सतगुर पांचौ भूत उतारे। जनम जनम के
लागो ही भ्रम ॥ दे अंतर अबिलि लिहैं बिडारो ॥ कामक्रोध।
मोह लो भगरब मैं मन बौराय कियो अपं भायो ॥ जिनकोहा थ
परो जियमे रोघे राघेरी बहु दुष पायो ॥ एक घडी माहि छो
डि तबांही। लहर चढाय कै बहु तन वायो सचि ज्यों घर घ
र द्वार नचावैं ॥ उरमहरिको नांव छुटायो ॥ अब कै सरन गही है तुम्हरी। च
रन ही दास अयानै ॥ किरपा करम्म साध छुटायो गुर सुषदेव स यानै ॥ १३
राग धनासिरी ॥ अब मैं सतगुर सरनै आयो ॥ काम क्रोध मद पाप ज।
रयो तिरबिध नाप नसयो ॥ नसा न पाच मुई ॥ संग मम ताद्विष्ट
सूं काल डरायो ॥ किरिया कर्म अचार भुलायो नांतीरथ मग धा
यो ॥ मम कोस हज बचन सुनगु सके भ्रम को बो जब गायो ॥ ज्यों
ज्यों जपूं गरकं होवा मैं तुहमी माहि ॥ मायो जग रू सो रूठो त
न मेरो यों आपा नहि पायो ॥ वाकूं ज गन मेरो यो आपा
नहिं पायो ॥ वाकूं जपे जनम सोई जीते सोहं सुष बतायो च
रनदास सुषदेव हगासूं ॥ सभा रहे रस मायो १४ राग सोरठ ॥
गुरदेव हमारे आवोजी ॥ बहु तै दिन बसू लगो रमा हो ॥ आ
नंद मंगल लावोजी ॥ पलक न पंथ जुहारूं तेरो ॥ नैंनन परि
पग धारोजी बार सिहारी निसदिन देषूं ॥ हमरी ओरी निहा
हारोजी ॥ करूं डडवत बहुत मन सेती ॥ आंगन चौक पुराऊं
जी ॥ करूं आरतो तन मन वारूं ॥ बार बार बलजाऊंजी ॥
देय रिकम्मा सीस निवाऊं ॥ सुबसुन बचन अघाऊंजी

सब्द० गुरसुकदेवचरनदासा ॥ दरसन मांहि समाऊं जी ॥ १५ ॥ राग
सोरठ ॥ होअ वियो गुरदरसन की प्यासी ॥ इक टगी पंथ
निहारूं ॥ तन सूं जई उदासी ॥ रैन दिनां मोहि चैन नहीं है वि
ता अधक सतावै ॥ तरफ तरफ कलपनां जारी ॥ निरह चल
बुधन हिंआवै ॥ तन गयो सूक कंठ कंपते लागी ॥ हिरदे पाव
क बाटी ॥ छिन मैं लेटी छिन मैं बैठी ॥ घर अंगनां छिन गटी
भीतर बाहर संग सहेली ॥ बात नहीं समझावैं ॥ चरनदास
सुषदेव पियारे नैनन नाद रसावैं ॥ १६ ॥ राग भैरौं ॥ गुर बिन
मेरे औरन कोय ॥ जग के नांते सब दिये षोय ॥ गुर ही मात पि
ता और बीर ॥ गुर ही संपत जीव सरीर ॥ गुर ही जात बरन कुल
गोत ॥ जहां तहां गुर संगी होत ॥ गुर ही तीरथ बरत हमार औ
र सकल धर्म दीनें डार ॥ गुर ही नेंम जपूं दिनरैन ॥ गुर के ध्यां
न परम सुष दैंन ॥ गुर के चरन कंवल करि बास ॥ और न राषूं
को इ आस ॥ जो कुछ चाहैं गुर ही करैं ॥ नाचैं छाहि धूप ले ध
रैं ॥ आदि पुरस गुर ही कूं जांनूं ॥ गुर ही मुक्ति सरूप पिछांनूं ॥ च
रनदास के गुर षदेव ॥ और न कूं नालागी लेव ॥ १७ ॥ अथ जन्म
सु का अंग राग कडषा ॥ राषियै लाज महाराज गोपाल जू ॥ दी
न जन सरन आयो तिहारी ॥ लगो मोहि ध्यान डिड चरन नहीं

कवलमैंकीजियेक्रूपासुवहोबिबिहारी॥ बिषेजंजारसस्वाद
घेरोघनैं॥ पांचक्रूंचोरदुषदेहनारी॥ नीचबंऊछुष्वलवां
वानपन्चीसठपतकैनिसद्यौसहीघातहीडारी। पकरजराज
कूंग्राहषैचोतबै॥ टेरदेहेरकीनीपुकारी॥ गरुडतजधायन्चायेछु
टायो॥ तुरतहरीहियेब्याधतनबिचारीकूं ब्रह्लकियेप्रहलाद
कूंदरसदीयोदासहनूमानसूंप्रीतभारी। भीलनीऔरकामीअ
जामेलसेअधमअतिपततगनकाउबारी॥ पाडसुतक्रूंबचा
येजरतआगसूंद्रोपदीचीरबढ्योअपारी॥ नामदेसेनपीपाकबी
रासदननरसीदासमीराउधारी॥ कोटअबिगिनभक्तारदी
येतनकमें। कहोमेरीसुरतक्योंबिसारी। तोबिनाकहंजाऊंकाही
ठौरनांतेरेहीद्वारेकहूंभिषारी। सकलसैंहरनतुहीतारनतर
नस्यामसुषदेवगिरधमुरारी॥ चरनदासरनजीतकोआसरोतु
हीहैआपनैंजांनलीजेसंभारी॥ १॥ रागकडषा। साधोसोईजनस
रजोषेतमैंमंडरहैंनकिमैंदांनमेंरहैठाढा॥ सकललज्यातजैमहा
भिर्भेगजैपैजलीसाबजिनचायगाडा। भएबहुबीरगंभीरजो
धीरमतसबनकोजसकहतग्रंथहेगुई॥ तिनबिषैकछुइकना
मबरननकरूंसुनोहोसंतदेचिसोई॥ पितासूरुठकूपांचहीर
बरसकोटेगहिभक्तिकोपंथधायो। छलनरानाहिगोरेकपू
भई। जीतमैंदांनहरिदरसपायो॥ हठोप्रहलादहरिनामको
डेपनहीबापनै। त्रासदेबहुडिगायोरेकजबनाटरीरामके

शब्द०

ग्याकरा ड ह्रकूं मारकरि जिन जिना जितायो। कबीर दादू धनैं पह
रख कत रखनै नामदे सार बेबजात कूंदे सोन सदनो। भक्त बली
पीपा बड़ो रामकी ओर रखें चले सुधे॥ मलूका जैदेव गाज गाडका लगी
घरै सूर रैदास समुन नाहि मोड़ा। ध्यान बह कमे प्रेम रंज कजमामी
रमा खेचला कुदा घोड़ा। दास मीरां मिली प्रेम सन मुष चली॥ छोड द
ईलाज कुछ नांहि मांनी॥ ओर स्यों रीमंडी तोड ऊंची गदी दौड कमी
चला प्रेम जा नां। श्री सुषदेव रनजीत सावन्त कियो लडै कालजु षेबि
षेष भगाडे॥ बहुतसें नांलिये लल कातूं हूं किये। चरनदास
संग नांहि छाडे॥ ४९॥ राग काफी॥ हे जग के करतार तेरी कहा अस्तु
ति कीजे तुही एक अनेक भयो है॥ सब ही को आधार तुही सिर
जै तुही पाले तुही करै संघारी॥ जित देषूं तित तुही तुही है। नेरा
रूप अपार॥ तुही राम नरायन तुही॥ तुही कृष्ण मुरार। साधोंकी
रिछा के कारन॥ जुग जुग ले अवतार। तुही आद अंत मध तुही
है॥ अंत तेरा उजियार॥ हंसों देवता ही सूं प्रगटे तेही लोक क
विस्तार। जल थल मैं व्यापक है तुही। घट घट बोलनहार॥ गोबि
न्द और कोन है ऐसो। जासूं धारूं पुकार। तुही चतुर सिरोमन है
प्रभु तुही पतत उधारा। चरनदास सुषदेव तुही है। जीवन प्रान
अधार॥ ५०॥ राग काफी॥ तेरा गुन कर बषान पढ मेरी बुध कहा है
चतुर मुषी ब्रह्मा गुन गावे। तिन हूं न पायो ज्ञान गुणवंत।
संकर जब हारे। करते लागे ध्यान। गुन अपार कछु पार न आयो

सनकादिककथज्ञांन। गुणगावत नारदमुनि ध्यावे। सहंसमुष नसूं
सेस लीलाकोकछूना रनयारा। मापरवान न वेस॥ सक्ति घनी
अनिति नतमुम्हारी बहुत रूपबहु नाव॥ जबही जिचारू हिये
मैं हांरूं॥ अरज है रहि रंगव। अतअथाहकछूयाहनपाऊं। सो च
अचकरहि जाव॥ गुरसुषदेवथकेरन जीतमिकहु कौनकहावे। २
।रा प जा। रागगुनकोई नजानैहो। सेसमहेसगा वेस अरु ब्रह्मा
रहैथकानेहो। सुरतिनिरतबुधाम नहीसब देवभुलानेहो। जोगीजं
गमरिषमुनीतपसीसुरज्ञानैहो। छंकलगावैं अंतनयावैंगए हिरानैहो
यसूं मनुषकहांकहूसके बिषरस लिपटानेहो॥ चरनदाससुषदे
वदयाय बातयिछांनेहो। २२। राग काफी। रंभारांमांजीसांईअलषनिरं
जनरूपा॥ तूही एक अनेकसरूपा। तेरीजोतिसकलजग छाई। तूघट
घट रहो समाई तुही आदअनादकहावै। ब्रह्मादिक पार नपावै॥ अ
बिगत अबनासी जांना॥ निर्गुनसरगुनयहचानां॥ बहुबिधके षे
ल बनावे॥ सिरजै पालै बिनसावै॥ अचरजकौतगबिस्तारा॥ जनका
रनले औतारा॥ तुही है देवनकोदेवा। सनकादिकलहे नभेवा। चाहे
सुकरै पलमाही। तूही ब्यापकहै सबठांई। तुहीज्ञानीगुनी अपारा
पूरनपरमातमप्यारा॥ गुनबहुतकहांलौंगाऊं॥ बिनतीकरसीस
निवाऊं॥ सुषदेवगुरू बतलाया। चरनदास सरनतेरी आया। २३।
राग काफी। रांमांरांमांजी सुनलीजे बिनतीमेरी। मैं सरन गाही है तेरी। तै
बहुतेपतत नधारे॥ मैं जलसूं परउतारे॥ हूं सबकोनावनजानूं
अबकोई कोई भक्त बषानूं॥ अमरीक सुदामां नामा सो पुहचा

एनिधामां ॥ कृपा चबरस को बालतें दरस दियो गोपाला ॥ प्रह
लाद टेकेतें मराखी यों जानत हैं सब साषी । मोरी के फल तुम खा
ये तिरलोचन के घर आये ॥ पंडवन की करी सहाई । द्रोपदा
की लाज बढाई ॥ गनका कूं पार लंघाई ॥ कर्मा की षिचडी षाई
मीरां तुम्हरे रंग भीनी ॥ नरसी की हुंडी लानी ॥ धना को षेत जमा
यो ॥ सेंना बिडर घर पायो ॥ कबीरा कै बालध ल्याए । सब काज
कियो मन भाये सदनासैं सैना नाई ॥ ते बडू न किये मुकताई ॥
ग्राह सूं गजजा युद्ध छुटायो ॥ तै मो कूं क्यों बिसरायो । सनकादिक
बुह्मा धावैं ॥ तेरा सेस आदि जस गावैं ॥ तेरा बेद पार नहीं पाया ।
जिन नेत नेत बतलाया । मैं काम क्रोध नें घेरो । ममता की लहर न क
रा मोह लोभ के पंध परिया । तेरा नाम बिसर दुष भरिया । अब तुम
ही करो नबेरा । मोहि ज्ञान चरन को चेरा मैं पापी महा संतापी ।
अपराधी बहुत कलापी । तुम छाड कासपे जाऊं । यह दुष को मैं स
म झाऊं सुषदेव गुरू मैं पाया । जिन तेरा ही नाम बताया । चरनदास
आपनो कीजे मोहि मन तें दूर न करदीजे ॥ २४ ॥ राग रामकली ॥ पतत उ
धारन बिरद तुम्हारो ॥ जो यह बात सांच है हे हरि जी ॥ तो तुम हम कूं पा
रनु ॥ बलपनें औ रतरन अवस्था ॥ और बुढापे मांही हमसैं भई
सभी तुम जानौं ॥ तुम सूं नैंक हूं छांनी नांही ॥ अनगिन पाप किये
मन मांनें । नषसिष औगुन धारी हिरफिर कै सुनत सरनैं आयो ॥ अब
तुम कूं है लाज हमारी ॥ सुभ करमन को मारग छूटो ॥ आलस निद्रा घे
रो ॥ एक बात भली बन आई ॥ जग मैं कहायो तेरो चेरो दीनदयाल

गुपाल बिसंभर ॥ श्री सुषदेव गुसांई ॥ जैसें और पतित घने तारे । च
रनदास की हिये बांहीं ॥ ५ ॥ रा र क ॥ अब सुनौं जगदीस गुसां
ईं गरुड़ छिछनर देव बिसारे ॥ चरनकंवल की आयो छांई ॥ सत बि
स्वास यही हिये धारे ॥ तो छिन भूलूं ताकौ घरी ॥ इत चित सें मन न छै
चलियो है ॥ काहूं सें कछु नांहि सरी ॥ अब चाहो सो करो प्र
भु माहीं ॥ द्वार तुम्हारे सुरति धरी ॥ आरै भर कायरा पुकार चावो
भावें राषो निकट हरी ॥ अपनी चाह रही न कोई । जब सूं तुम्ही
री आस धरी ॥ आन भरोसो छाडि दियो है ॥ सकल बिकल छार
करी ॥ यह आपा तुमहीं कूं दीयो । मेरी मो में कुछ न रही ॥ आदि
पुरस सुषदेव सुनौं जी ॥ चरनदास यों टेर कही ॥ ६ ॥ रा बि
सा ॥ अब के करो सहाय हमारी ॥ दुष्ट दलन औ रन तो बचाव
न ऐसी साष तुम्हारी ॥ जन प्रहलाद असुर गह बांधो । तौ नौं ष
डग निकारी हिरनांकुस हति दास बचायो ॥ नरसिंघ को त
न धारी ॥ ऐंच ग्राह गज बोरन लागो । राम कहो इक बारी ॥ सुनत
पुकार पयादेही धाये ॥ तज के गरुड सवारी ॥ द्रोपदला जगता
रन कारन ॥ ल्याये सभा मंझारी । दीनानाथ लई सुधि बेगी ॥ बाढो
चीर अपारी ॥ जिन जिन सरन गही संकट में ॥ कहा पुरष कहा ना
रा ॥ वा ही जुग है रिक री सहाई ॥ रिव कन आमुरारी । गुर सुषदे
व बतायो तोकूं ॥ संतन को रषवारी ॥ चरनदास पग धारे मैं ॥
गुन पै रष छियो डारी ॥ ७ ॥ राग धनासिरी ॥ अब तुम करो सहाय

१४५
शा.द०:

हमारी मनकेरोगहेये गादीरघ तनकेबडे बिकारी तुमसो
बैद औरको दूसर। नाहिं दियाकूं नारी। सजीवन मूल नाम
रहोय जासूं सोहै दया तुम्हारी। किरिया कर्मकी औषद जे
ती रोग बढावनहारी।। दीजै चूरन ज्ञान भक्ति को। मेटो सक
ल बिथारी।। जनके काज पयादे धावन।। चरनकंवलपरि
वारी। मैं भयो दास अधानति हारो मेरी करो संभारी। जो मो
हि कुटिल कुचील जानके। मेरी सुरति बिसारी। चरनदास हैसु
षदेव तेरो दुष्ट हंसे गोभा री। पद राग धनासिरी। हरिजी संकट वे
गनिवारो। जनकूं भीर परी है भारी।। चक्रसुदरसन धारो कंस निकंद
न रावन गाजन। हिरनाकुस सा हि मारे।। दुष्टदलन और न[illegible] धा
रन प्रह्लाद उबारे। पांचौ पंडुरा बिनिये है।। करे दुन सघारे जिन
जिन दोष किये संतनसौं। सो सो ईहनडारे विमैं भक्ति करैजन।
न तेरे। ऐसे मनमो बिचारो। चरनदास के घरमें बैरी।। तिनकूं
क्यों न बिदारो। पद। राग बि[illegible] स। राघो जी लाज गरीबनिवाज
तुम बिन हमरे कौन संवारै। सबही बिगरे काज।। भक्तबछल हु
रिनाम कहावो। पतितउधारन हार।। करो मनोरथ पूरन जनके
सीतल दिष्टि निहार। तुम जिहाज मैं काग तिहारो। तुम तज अत
न जाऊं। जो तुम हरजी मारि निकासो।। और ठौर नहीं पाऊं। चरन
दास प्रभु सरनि तिहारी। जानत सब संसार। मेरी हंसी सो हंसी
तिहारी तुमकूं देषो बिचार। ४। राग बिलावल। प्रभुजी सरन ति

हारिमैं आयो। जोकोईसरनतिहारीनांही। नरकभमीदुखपायो।
औरनकेमनदेवीदेवा। मेरेमनतुहीभायो॥ जैसूंसुरतिसंभारी
जगमें। औरनसीसनिवायो। नरपतसुरपतआसतिहारी। यह
सुनकरिमैंधायो। तीरथब्रतसकलफलत्यागे॥ चरनकंवल
चितलायो। नारदमुनिऔरव्यासब्रह्मादिक। तेरोहीध्यानल
गायो॥ आदिअंतमधिजुगादितेरोजसबेदपुरानगायो। अब
क्योंनबांहिगहोहरिमेरी। तुमकाहेबिसरायो॥ चरनदासक
हैकरतातुही। गुरसुषदेवबतायो॥३॥ रा क रा अबकेता
रहोबलबीर। चूंकमोसूंपरीभारी। कुबुधकेसंगसीर। औसाग
कीधारसीहूंन॥ महंगाधालेनीर। कामक्रोधमदलोभमनवरमें
थितनथरततहांधार। मदहनहंबलवंतपांचौंप्राहगहरगं
भी। मोहपवननफकोरदारनहूरपैलीतीर। नावतौमंझधारम
नरमीहियेबाढीपीर॥ चरनदासकहैंकोईनांहिसंगी। तु
मबिनांहरिहीर॥४॥ रागसोरठ। अबजगफंदछुटावोजी
हूंतौचरनकंवलकोचेरो॥ परोरहूंदरबारतिहारे। संतनमां
हिबसेरो॥ बिनाकामनाकरूंचाकरी॥ आठोंपहरसबभतके
पाकरदीजे॥ मोहियहीबकुतेरो। षांनेंजादवकाहीमीकहियेतु
हीआसरोमेरो॥ जिउकाबिडारोतउकनछांडं। सेवासुमरनतेरो।
काहूंजैरअनदेवूनमसूं। रहेमहीनरफेरो॥ जैसैराखोत्यौंहीरह
हूं। करलीजोसुरफेरो। तेरेघरबिनकहूंनमेरेठौरठिकानौं
डेरो। मोसेपतितदीनकोहरिजीतुमहीकरोनबेरो। गुरसुष

राम०

देव दया करि मो कूं ॥ औरत्ति हारी फेरो ॥ चरदा स कूं स तेरा
बो ॥ यही इ नाम मेरे ॥ ३३ ॥ गा ॥ बि व ॥ तुम साहिब करता
रहो हम बंदे तेरे रोम रोम गुनहगार हो ॥ बकसो हरि मेर
हु सो दूरे मेल है सब फंद म गा दा ॥ ३ तम मेरे नाम है
बिस रै सो अंधा ॥ गुन तके औगुन किये ॥ तुमसूं कहा छिप
पाइये ॥ हरि घट की जानों ॥ रहम करो रहम मानदू ॥ यह
दास तिहारो ॥ भक्त पदारथ दीजिये ॥ त्या गाव नी नवा
सो गुरसुषदेव तब बारिलो ॥ अब मिहर करी जे ॥ चर नही दा
स गरीब कूं ॥ आपनों करि लीजे ॥ ३४ ॥ रा रा ली ॥ वार ब
रन सूं हरि जन के चे ॥ आप विस्तर हरि कसुमरे ॥ तन के उजल
मन के सूचे ॥ जो नपती जै सा षबता कं ॥ स्पोरी के धकटे पल
या ये ॥ बहुत रिषी स्वर कोई रहते ॥ तिनके घर रघुपति
महिं आये ॥ भील नी पांव दियो सलिता मैं ॥ सुध भये जल सब
को कजा नैं ॥ मंद हुतो सो निरमल हुवो ॥ अभिमानी नर षरा पि
स्याने ॥ ब्रह्माण हुती नृप हुते बहु ॥ बाजो संष सुपच जब ।
आयो ॥ बालमीक उजूर नकीनो ॥ जैजैकार भये सगा यो ॥
जात बरन कुल सोई नीको ॥ जाके होनता प्रगास ॥ गुरसुष
देव कहत है तो कूं ॥ हरि जन सेव चरन ही दास ॥ ३५ ॥ रा रा
क ॥ सब जानन मैं हरिजन प्यारे ॥ रह नी गति नकी को इ नपा
वे ॥ तन सूं जग मैं मन सूं न्यारे ॥ सुष सुनो अमरीक भूपकी ॥ दुरबा
सा जहां आयो ॥ लगो सराप देन राजा कूं ॥ चक्र सुदरसन जार

नधायो ॥ प्रभु जी आयो दुरजोधन के ॥ यह मन मैं गरबायो ॥ नांनां बिध
के बिंजन त्यागे सण बिदुर घर रुचि सूं पायो ॥ सतजुग त्रेता द्वापर क
लजुग मा नसंत को राषो ॥ भक्तौ बछल भगवांन सदा ही ॥ बेद पुरानन
मैं यों भाषो ॥ ब्राह्मण छत्री बैस सूद्र घर ॥ कहीं होय पर क्यों न बास ॥ ध
न कुल वह सुषदेव बषानैं ॥ यह तुमसु नौं चरन ही दास ॥ ३६ ॥ राग
काफी ॥ धन वे नर हरिदास कहाए ॥ राम भक्ति ही डिढ कार पकडी
औ न धर्म सब ही बिसराए ॥ आठ पहर गलतांन भजन मैं ॥ प्रेम
मगन हिये मैं उलसाए ॥ आप तिरै तारे औरैं कूं ॥ बहुत क पापी पा
र लंघाये ॥ प्रभु दरसन आसा ॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष न चाहे ॥ आठों
सिध फिरैं संग लागी ॥ नैं कन देषैं नैं न उठाए ॥ तिन को रिषसन
जाय करत है ॥ हरि सिव नह हरि दीको संग ही गाये ॥ ऊंची पदवी इंद्र
त तै ॥ देव वृंद देषि अधिक ललचाए ॥ कहैं सुषदेव चरन ही दासा ॥ धनमा
ता औसै जन जाए ॥ जीवत सो भाजग मैं पाई ॥ तन छूटैं हरिमांहि
समाए ॥ ३७ ॥ राग सोरठ ॥ मो कूं काहू न चहियै राम ॥ तुम बिन सब
ही फीके लागे नांनां सुष धन धाम ॥ आठ सिद्ध नौं निध आपनी
और जनन कूं दीजै ॥ मैं तौ चेरो जनम जनम को ॥ निज कर अप
नौं कीजै ॥ सुरग फलन की माहिं न आसा ॥ नां बैकुंठ न चाऊं ॥ च
रन कवल के राषो पासा ॥ यह बर माहि दिजै मांहूं ॥ मुक्ति न चाहूं भ
क्ति न मांगूं ॥ सुन सुषदेव मुरारी ॥ चरनदास की यही टेक है नैंन
रौ लन तुम्हारी ॥ ३८ ॥ राग भैरौ ॥ वह परमातम मेरा प्यारा ॥ नेह
लगा टूटै नहिं तारा ॥ तीरथ जाऊं न बरत करूं ॥ चरन कंवल को

९४१

पांवधरूं ॥ प्रांनपियारा मेरेही पास ॥ बचन न नांहि न फिरूंहदा
स ॥ पद न गीता बेद पुरांन ॥ एकही सुमरूं श्रीभगवांन ॥ और मु
कूं नहि नांके सीस ॥ हरिहीं हरि हैं बिसवा बीस ॥ कामकी
नहिं राखूं आस ॥ तिश्नां का दई है फांस ॥ नद्दम करूं न राखूं दा
म सहज ही होरहे पूरन काम ॥ सिध मुक्ता फल चारूं नांहि ॥ चित
ही रहे हरि संतन मांहि ॥ गुरु सुषदेव यही मोहि दीन ॥ चरन
दास आनंद लै लीन ॥ इ पं राग भैरों ॥ यौं कहै हैं हरिजी दया नि
धांन संत हमारे जीवन प्रांन ॥ संत चलें जहां संगही जांव ॥
संत को दीयो भोजन षांव ॥ संत सुलावें जिर तें सोय संत बिना
मेरे और न कोय ॥ संत हमारे माई बाप ॥ संतही को मैं राखूं
जाप ॥ संत को ध्यान करूं दिन रैंन ॥ संत बिना मोहि परे न चैन
संत हमारी देही जांन ॥ संतही की राखूं पहचान ॥ संत कीसक
ल बलैं पलैं वु ॥ संत कूं आपन सर्बस दैंन संतही देतथ रूं भौ
ता ॥ रिध्या कारन करूं अवतार ॥ सुषदेव के दुष सब निरवार ॥ च
रनदास मेरे परवार ॥ ४० ॥ राग सोरठ ॥ भक्तजन सो हरिके मन भा
वे ॥ निहकामी और युंम हियेमें ॥ अनन्यभक्ति चित लावे ॥ आ
न देखु जो मोती बरषे तो नांहीं पति पावे ॥ प्रभु के चरन कंवल को
अयर मंवर मयो लिपटावे ॥ सिध न चाहे रिध न मांगे ॥ हरसन
कूं ललचावे ॥ मुक्ति आदि दे चाह न कोई ॥ आसास कल गंवावे
रोमहोरोम पुलक सब देही गोबिंद के गुन गावे ॥ गदगद बं
नी कंठ न सासे नैनन नीर ढुरावे परमेसर मिलने की लहरे

इकआवैइकजावै ॥ कहैंसुषदेवचरनहीदासा ॥ हरिहूकेठल
गावै ॥४५॥ बिलावल ॥ हमारेचरनकंवलकोध्यांन ॥ मूरषजगतन
रमताडोलै ॥ चाहतजलअस्नांन ॥ सबतीरथवाहीसंप्रगटैगंगा
आदिकजांनजिनसेवतसबपातिगनासैं ॥ तितहोवैकल्यांन सु
कातगिरहीबानैधारी ॥ हैंसबहीअग्यांन ॥ हरिसोंहीएकोडदियौ
है ॥ पूजैकोचपधान ॥ हरिचरननकीमिहमाजानैं ॥ वैवेसंतसु
जान ॥ सोइनरमायाकेचेरे ॥ इनकूंकाहापहचांन ॥ चरनदास
सुषदेवगुरुनैं ॥ दीनौंअंजनग्यांन ॥ साचोप्रीतमसूरूपदेषोहै ॥
बिसरगयोसबआन ॥४६॥ रागनटवासारंगवाबिलावल ॥ हमा
रैरामभक्तिधनभारी ॥ राजनडंडैचोरनचोरै ॥ लूटसकैनहिंधा
री ॥ प्रभुपैसअरुरामरूपइये ॥ मुहरमुहब्बतहरिकीहीराग्यानजुग
तकेमोती ॥ कहाकमीहाजरकी ॥ सोनांसीलभंडारभरेहैं रूपा
रूपअपारा ॥ ऐसीदौलतसतगुरदीनी ॥ जाकासकलपसारा बां
टूंबहुतनहीकबहूं ॥ दिनदिनदौलतदूनी ॥ चोघामालदरब
अतिनीको ॥ बटालगैनकौडी ॥ मांहगुरुसुषदेबिराजै ॥
चरनदासबतजोरा ॥ मिलमिलरंकभूपहोबैगे ॥ कबऊंनआवैटोटा
छिलमिलरंकभूपहोबैगे ॥ कबहूंनआवैटोटा ४७ ॥ रागनट
वाबीलावल ॥ जिनरहारिधनमोंचितलावे ॥ जैसेमैसैंटोटा आ
हीलानसवायोपावै ॥ मनकारिकोठीनांवधजानो ॥ भक्ति
डकोनलगावै ॥ पूरासतगुरसाकीकरिके ॥ संगतबनजच

लावै ॥ ऊंडी ध्यान सुरत ले पुहचै ॥ प्रेमनगर के मांही ॥ सीधा सा
हूं का रासा चा ॥ हेर फेर कुछ नांही ॥ जित सौदागर सब ही सुखि
या ॥ गुरसुषदेव बसाये ॥ जन रणजीत विलम रहे कांई ॥ ऊंची
पंथ न आये ॥४४॥ रा ग दे ग र ॥ मन तूं राम के ब्योपारी ओ
बके षेप भक्ति की लादी ॥ बणज कियौ तें भारी ॥ पांचौ चोर
सदा गारो कत ॥ इनसूं कारि छूट कारी ॥ संतगुर नायक के सं
ग मिल चल ॥ लूट सकै न धारी ॥ देठ गमार मन मांहि मिलेगो ॥ एक कन
क एक नारी ॥ सावधान होय चल मइयो रहियो आप संसारी ॥ हरि
के नगर में जा पुहचैगो ॥ चरनदास तोकूं समझावै ॥ राम न बारम
वारी ॥४५॥ रा ग सो र ठ ॥ हरिया वनें की गत न्यारी है ॥ कोट तप स पाप
टन लिषन सूं रटे मूढ नारी है ॥ अठसठ तीरथ भर्मत डोले ॥ देह ग
ई सब हारी है ॥ निरजल बरत किये बहु भांती ॥ आस फल न कीधा
री है ॥ तप करने कूं बन जा बैठे ॥ की नीतु चातुधारी है ॥ पौं नअहारी
त न हूं गारो ॥ दरसै ना हि मुरारी है ॥ विद्या पढि पंडित होवा ॥ अर्थ करै
बहु भारी है ॥ अभिमानी ते जैमूगं वा या ॥ भ्यान येम बिला री है सां
च भक्ति बिन हरि नहिं रीझै ॥ बहु जागा सिर मारी है ॥ चरनदास
सुषदेव स्याम परि ॥ तनमन सूं बलिहारी है ॥४६॥ रा ग सो र ठ ॥ सुन
राम भक्ति गति न्यारी है ॥ जप जग संजम आस पूजा ॥ प्रेम सबन
परि भारी है ॥ ज्ञान बरन ये जो हरि जाते ॥ मौं गन काक्यों तारी है
सेवरी सरस करी मुरमुठि ते ॥ हीन कुची ल जो नारी है ॥ दस आस
न पति मोहन लागो ॥ सब ही ओर निहारी है ॥ होय अभिरास कहा

कहिटेरी ॥ षोटो चीअपारी है ॥ टेटी लौंडी कंसराजाकी दीनौं रूप करा
रा ॥ एक सूं एक अधिक ब्रजनारी ॥ कुबजाकी ती प्यारी है ॥ पांचौं पं
डव नजजस जो है ॥ मारी सो जसंवारी है ॥ बालमीक बिन काज
न हो तो ॥ ब्राह्मण संघ सुरारी है साधोकी सेवा मैं राचौ भूपकी सुरत
बिसारी है ॥ सैंन भगत के कारन हरिजी ॥ वाकी सूरत धारी है ॥ दा
स कबीर जात जुलाहा ॥ ब्राह्मण मिलन की षूरी है ॥ बन जा
रा घो बालध ल्याए ताकी करीस भारी है ॥ माघ सुनो रैदास चमा
र ॥ सो जगमें उजियारी है ॥ कन कज नेक काट दिषायो अ
ना मेलसद नां त्रिलोचन ॥ नां मां नांम भक्त धारी ॥ धनां जाट का
लूंमो रकूंबा ॥ बऊनाकि एनेो पारी है ॥ प्रीत बराबर और न दी
षै ॥ बेद पुरान बिचारी है ॥ चरनदास सुषदेव कहत है ॥ ताबस
आप मुरारी है ॥ ४७ ॥ राग री ॥ आवो साधो हिलमिल हरिगुन गा
वै ॥ प्रेम भक्ति की रीत समझकरि ॥ हित सूं राम रिझावै ॥ गोबिंद
के कौतगली लागुन ॥ ताको ध्यांन लगावै ॥ सेवा सुमरन बंदन
अरचन ॥ नौधा सूं चित लावै ॥ अब के औसर लोबन्यो है ॥ बहु
रदा वक बपावै ॥ भजन प्रताप तिरै भौसागर ॥ जुर आनंद ब
दा ॥ संतसंगत को साबन लैकरि ॥ ममता मैं लब हावै ॥ मन कूं
निर्मल करि जुंगलमगान रूप हो जावैं ॥ तालपषावज कांक मं
जीरा ॥ मुरलीसष बजावै ॥ चरनदास सुषदेव दयासूं ॥ ना वा
गंव न मियावे ॥ ४ ॥ राग बिलावल ब वा ॥ करले प्रभु सौं नेह

१५३
रा२०

रामत माली प्यार। कहीं गरवाजि मैं धरै। जीव जुआदि न चुगर जा
न बेलगा हटे का की। दया क्यारी संवार। जत्त सत डिट को बी
नही॥ बो वो तास मंकार सील छिमा के कूं पजे। जल प्रेम अ
पार॥ बैंमडोल नखें च के सी चो बाग बिचार॥ बल की करबू
काट कै॥ बो बो बीरज बार। सुमति सुबुध किसान कूं रा
खो रखवार धर्म गिलो॥ लजु प्रीति की॥ हित धनुष सुधार। झूठ क
पट पंछी न कूं॥ ता सूं मार बिडार॥ नहिं ना व पो ध्यालगो॥ फूलै रंग
फुल वार॥ हरि रस मातो होय के देख लाल बहार॥ संत संग
त फल पाइये॥ मिटै कुबुधि बिकार॥ न बसत गुर पूरण मिलै
चाखै अंमृत सार। समझावैं सुखदे बनी॥ चरनदास सम्हार। तेरी
काया में खिलै। सांचो गुल जार॥ ४९॥ राग मंगल॥ सोई सुहागन
नार पिया मन भावई॥ जप तें पिय के भेद न काहू दीजिये॥ तन मन
न सुरत लगाय कि सेवा कीजिये॥ पति की आज्ञा चाल पालपि
य को कहो॥ लाज लियें कुलवंत तजत नहीं सूं हो॥ ध न ध न हो
य जग मांहि॥ पुरख बड हित धरै। सब मैं नायक॥ होय जु सर
बर को करै॥ पिय को चाहो रूप॥ सिंगार बनाइये॥ पतिब्रता
कुलवीय मैं सां भाग पाइ॥ नौधा बसतर पहर वृपा रंग लाल हे
भूषन लझ न धार बिच तै बोले हो॥ रंग महल निरदोष कं मि
ल मिल भूर है। निर्गुन सेज बिछाव सीची कर हूर मैं॥ मंदर
दीपक बाल छिमा बाती घीव की॥ सुघर चतुर गुन सम लला

डिलीपीवकी॥ कहै गुरु सुषदेव यौ बालक मयो हियै॥ चरनदास ले
मीष जु प्रेम समोइयै॥ १॥ राग मंगल॥ परमगुरु सोई साध जु आया मां
पपे॥ भव के रोग मिटाय नाव निर्गुन जये पर निंद्या पर नार दर्ब
मांही हरै॥ डिग चाल न हरि सूं बीच अंतर परै॥ छिन न हि बिसरै
रामता हि निकटैं तकै॥ हरि चरचा बिन और बात मांही बकै॥ कूं
ड कपट छल भाल ए सकल निवारियै॥ जत सत सील संतोष वि
मांहि हियै धारियै॥ काम क्रोध मद लोभ बिडारन कीजियै॥ मोह मत
अभिमान नाक सरन दीजियै॥ सब जीवन निर्बैर त्याग बैराग
लै॥ नव बिधि है सो संत भांति कारूं न भे काग करम सब छोड़हो
य संसा गता॥ सिष्य मोस उलावसो ई साधु मता॥ जग सूं रहै उदा
स मन गा चि नाधरै॥ जब रीझै करतार दास आयनो करै॥ कहै गुरु
सुषदेव जु ओसा कीजियै॥ चरन हीं दास बिचार प्रेम मैं भीजियै॥ प
१॥ राग बिलावल॥ राधे कृस्न राधे कृस्न राधे कृस्न गाव रे॥ या देही
को कहा भरोसो॥ पल पल छिन छिन बीजत आव रे॥ कहा
अभिमान करै माया को॥ यह धोषा सा जान बावरे॥ मनषा जा
नम भाग सूं पायो॥ बहुर न कब ऐसो दाव रे॥ औसार जो
उतरो चाहै॥ सतसंग की चढ नाव रे॥ ज्ञान बलीग ह्वि पा
र मुकेतहै॥ निहचै तत्त पदारथ पाव रे॥ सतजुग मैं सत ही सत
कहते॥ त्रेता तप कर तेत न ता वारे॥ द्वापर पूजा राजमा नसी कलजुग
कीरतन हरि हरि रिझाव रे॥ तातै सब तज हरि ही हरि भज॥ निसदिन
चरन कंवल चित लाव रे॥ चरनदास सुषदेव चितावै स्याम मिलन को

यही उपाव रे ॥ ५२ राग ॥ बिलावल ॥ जामैं दोतारक कूं गी का । एक तौ
धंधा न गुरु का कीजै दूजै नाम धनी का ॥ कोट भांति करि निस्तवै
कीया संसार रतन कोइ ॥ असंबेद पुरान टटोले जिन मैं तिक
सा सोइ ॥ इन ही के पीछे सब ॥ जोग जग्य तप दानं ॥ जो बिधनो
धा नेम प्रेम सब ॥ भक्ति भाव मोक्ष ज्ञानं ॥ और सबै मत औसे भागे
ज्ञान विना सुख जैसे ॥ कुटंब कुटंब नेकूं टा ॥ भूषा ईन ही तैसे
थो प्याध मेव ही पूह चानो नामैं राखो नां हीं ॥ चरनदास सुषदेव
कहैं तैहै ॥ समस देषम नमांही ॥ ५३ राग आसावरी साधो भक्ति
न का करि लीले दिन दिन काया छीजे ॥ मकरत जे नो मुथुरा म
न मे कपट मजे तौ कासी ॥ जोरती थंसब ही ज ग न्हाया ॥ मांहि
छुटी जम फांसी ॥ भालंत है तिरबेनी राजे ॥ बिरला जन कोइ
न्हावै ॥ सुगरा होय सो नित उठ परसे ॥ निगुरा जान न पावै ॥ का
या अंदर घरमें हरि का हिये ॥ इत उत भूला लोग फिरत है ॥ धोखे कूं
सिंचन गावै ॥ जंतर रौ नाम सू डह लावन ता कूं सांच न मा नौ न
जन्है सार असार गहो है ॥ तापरि नपोस या नो ॥ चरनदास सुषदे
व कहत है ॥ निज कर मूल गही जे पारब्रह्म जिन सिष्ट उपाई
ताओरी चित दीजै ॥ ५४ राग बिलावल ॥ नमो नमो श्री रामजी
देवन के देवा ॥ स्यो नारद सनकादि लो ॥ काइ लिहै लंहन भेला ॥
एवी निर्गुन सूं न गा को तिग बिस्तारे ॥ साधन की रिछ्या करी दा
नें दल मारे ॥ जसरथ सा सुत भूले कहै कोई जानत नां ही ॥ इक स
तनं डदि षाडया आय नें मुष मा हीं ॥ गौरा नै पर चो लियो सिया

मेषव नायो ॥ दे षे रूप अनंत ही जब मन बौरायो ॥ आदि निरंजन
एक तूं दूजा नहीं कोई सुषदेव कही चरनदास कूं नित सुमरे
सोई ॥ ५५ ॥ राग बिलावल ॥ नमो नमो गोबिंद जी हूं दरसन तिहारे ॥
रासी उ षस बहरो आवागवन निवारो ॥ करमन को येरा फिरूं ॥
नहीं पायो नेरा ॥ अब कै ऐसी कीजियै ॥ दीजै चरनन बसेरो ॥ पंत
तत धार न तुम सुने ॥ बेद न मैं गाये ॥ अजामेल गनका ॥ तिरे ले पार
लंघाये ॥ एजी गुर सुषदेव बताइया ॥ ही तुम्हरी आसा ॥ आन
धर्म कूं छोडि के भयो चरन ही दासा ॥ ५६ ॥ राग जैजैवंती ॥ आदि
तो सनातन वोई ॥ अज अबिनासी है सांई ॥ जाको वही वारापा
र निर्गुन तत सार ॥ तासूं भयो जग सब आप निरबासी है आदे ॥
निराकार जानै ॥ सत चिदानंद मानै ॥ पुरष को रूप धरि माया
परकासी ॥ नेत नेत बेद कहै ॥ अस्तुति मांही रहै ॥ भेद कछु नां
हीं लहै थक थजासी है ॥ जोग ध्यान आवै नांहीं ग्यान सूं न गहे
जांई ॥ भगतो के हिये मांही सदा जो बिलासी है ॥ संतो हेत देह ध
रै आय के सहाय कैरै ॥ पिरथी को दुष हरै घट घट बासी है ॥ ए
हो चरनदास जन वासौं क्यौं न ला मन ॥ सुषदेव किरपा घन बोल
दई गांसी है ॥ ५७ ॥ राग जैजैवंती ॥ सांवरो सलोनों प्यारो मेरे मन भा
यो है माई ॥ कहा कहूं सोभा वाकी ॥ तीन लोक माया जाकी ॥ स
सहू की रसना थकी ॥ पार हूं न पायो है ॥ निर्गुन निराकार को क
काहो जानै सार ॥ संतो की सहाय काजै देह धर आयो है ॥ ब्रज हूं
मैं कौतग कीन्हें संतन को सुष दीन्हें ॥ मुरली बजाय गाय रीझ के

सु.दे.

रिझायो है ॥ जोगी जा को ध्यान लगावें गोद में खिलायो है ॥ चरन
दास सखी ऊपर सुखदेव कृपा कीनी ॥ जा को सो बिहारी
ए कपल में दिखायो है ॥ प ० राग मंजार ॥ बधाई सब ही बिरज
सुहाई ॥ मुदित भए बसुदेव देवकी मन में अति अधिकाई ॥
पुहुचे जाय महर मां हरी घर मांही ॥ कान्ह भेद न जानो ॥ ज
समत रानी बालक जन मों ॥ सब ये पोक रि मानों घर घर मं
गलचार भए हैं ॥ बंदनवार बंधाई मोत ॥ नमं बस्त्र पहर यहर
के नारि सबै सिर न्हाई ॥ करि कौतूहल मिल मिल गावैं म करै
उछाह घनेरा ॥ जाचक भीर बजत भई द्वारे बज न तद मामे
मेरा ॥ जिस लायक जो देखा सो दीना करी सुरूंखा भारी ॥ इक
आवत इक जात बिदा हो ॥ देत असीस महारी ॥ धन गोका
ल धन यो लमं कु मधन ॥ आये हैं जगदीसा ॥ ज्यो ब्रह्मा दिक
ध्यान धरत हैं ॥ लखि ई मन कोई सा ॥ उछ्द लन सं तन सुख
काजे लीन्हो है औतारा ॥ चरनदास सुखदेव कहत है जग
पति सिरजन हारा ॥ प ० राग मंजार ॥ नंद घर कौतक सकल सु
नवी ॥ जो जो बचन किये पे आगे सो आपूरन कीने ॥ भक्त ब
छल करतार गुसांई धरि आये औतारा ॥ रिद्धि कार न सा
दृरिखि नकी भूमि उतारन भारा ॥ जब जद भार बढे पिरथी ॥
पर ॥ तब तब हो तमहाई ॥ मरजादा पर सो तम ये ही बिगाडी स
बै बनाई ॥ निर्गुन सु सर्गुन बपु धारे ॥ क छनि वारन काजे ॥ जो
गेस्वर सिंह ध्यान लगावें ॥ नाम लिये अघ भाजै ॥ भाग बडे ज

समतरानी ।दरसबदी मैं आई ।। चरनदाससुषदेवकहत हैं सुरमु
निकरी बधाई ।। छं ।। राग मंझार ।। जगतपति देषमहर भरआ
ए ।। बाल चरितरही दिषलावन ।। आनंद अधिक बधाए ।। त
पकी मोपो नंदजसो धा ।। पिछलजनमअ धाई बपांमपोह
मसुतहो केषेलै मंबनमंकाई ।। बचनम मोडा आय बिराजे भक्तों
बससुषदाई ।। जो जो चाहा सो सुषदीया छयेकुवरकन्हाई ।। सा स्ति
यो सामी पसुतको हजमैं आवनकियो है ।। सुबरूपजायोनरनारि
नकूं दरसनआय दियो है ।। जबजबप्रगटेचारौं जुगमैं ।। सतक
लघापरत्रेता ।। चरनदास सुषदेवकहतहैं ।। संतनहीकेहेता
[redacted] गोकलमागबडाई ।। दरसनदे
बसुदेवकी ।। नंदघरप्रगटे आई ।। भादौंमासबदीबुधआठे
गिरह नछत्र नीके ।। जसमतरानीगोदसिरानी ।। भएमनोर
थजीके ।। भयो उछाहसुरगकेमांही ।। देवमनीहरषायेआ
आ य ने आपनेबैठबिवांनन ।। पुहपधूमकबरषाये ।। यह धरतीपर
फुलभई है ।। फूलउठाबनसारा । कालिंदीकूंबढो उमाहो ।।
क रिहैं लालबिहारा । किरपासपारहो उजागर ।। मरजादाबं
धा ।। चरनदाससुषदेवकहतहै ।। कारनआयनेसाधव ।। छं ।। राग
मझार ।। सषीरीसुनदेषआनीमैं आई ।। जसुधारानीबालक
जायो ।। यहतोहिआनसुनाई ।। नायडोलैं हंसहंसबालै ।। घ
रघरकहतबधाई भयो उछाहसकलगोकलमैं ।। बातम

ई मन माई। सुखिसुखि आपस मैं सुसकौ नैं दैन बधाई आणे
नृषम बसरलोसं भार॥ नरनारी रस पागे। बनसूं राहे गए
नंदद्वारे॥ ग्वाल सभी हरषाये बडी पोल के आगे जाचक
गाव नहीं कूं आंक। तुम हू दे हसिंगारा। सुषदे वाका मुष
देषैं री करि हैं जाक जला सा॥ औसे कहिव हरभंवन सिखा
री नमैं चरन नहीं दासा। हरि पाहि ला। फूलत हरि ब्रजनसे
नमहा हिंडोल नैं॥ स्याम मंडिट षंभ रेपे प्रेम डोरी लास॥ टे
कपट डोबैठ सजनी॥ आति आनंद बढाय। ध्यान के जहां
से हबरषे होय उमंग अला स। गुरमुषी जहां समकनी गै
फून हरिके दास। बुध बबेक बिचार गावें॥ सषी सहेली॥
साथ आगमलीला रटें सजनी॥ जहां ब्रज बिलास परम गुर
श्रीजन कफूले॥ फूलै श्री सुषदेव। चरनदास सषी सदा फू
ले। कोई न पावे भेव॥ ई४ राग हेली॥ भोरन मेरे कोय हेली॥
कोय हेली प्रान पियारे लाल जी। रोम रोम वेईर मे री आरी
हेली तन मन बायक सोय॥ जित देषूं तित लाल कूं री आरी
हेली दूजा नांही और॥ आदि अंत हे लाल जी सबै मधि सब
ठोर। देस काल सब लाल है री आरी हेली आवक पर ब है ला
ल॥ रह नैं बाये लाल जी॥ दसौं दिसा मैं लाल॥ सोवत नहीं मैं ला
ल है॥ री आरी हेली जागत नहीं मैं लाल॥ मांहि सषोपत लाल
जी॥ तुरिया ही मैं लाल॥ ज्ञान ध्यान सब लाल है॥ री आरी सबी
लाल ही गुर सुषदेव॥ चरनदास है लाल की। बिरला जानै भेव

९५ ।। राग हेली ।। ज्ञानी होवे हरिदास हेली एते कुल तारैं वही । फल न मुक्त चाहै न
ही री आरी हेली भक्ति करैं निबास ।। बीस चार कुल दादके री आरी हे
ली बीस नांनां के जांन । सोलह कुल सुसरा दके दादस सुनां बषां
न ।। बहनी के ग्यारह तिरैं री आरी ।। हेली दस भूवा के पार ।। मोसी के
कुल आवही ।। बेद कहत हैं चार ।। अष्टदस यौं ही कहैं री हेली कहै
साध आरु संत चरनदास सुषदेव जी कहै कम मता को कंथ ।। ९६
हेली ।। छुटै आन जंजाल हेली चरन कंवल के आसरे ।। भरम भूत
सब ही छुटै री आरी हेली छुटै बीमसांन ।। मूठ डीठ अब मालजौ न
ही घात को बान । सती चरबल ना चलै री आरी हेली नहीं रा
हु अरु केत । मंगल बृहस्पति मंद हैं न तही । जोग अवं देत ।। जो ति
आपर संनहीं री आरी हेली मानूं न देबी देव ।। सतगुर मोहि बतला
इया ।। साचो झूठो भेव ।। अठसठ तीरथ ना फिरूं ।। री आरी हेली पू
जूं न पाथर नीर ।। श्री सुषदेव छुटाइया ।। जनम मरन की पीर ।।
निहचल हो हरि की नई री आरी हेली सुमरूं निर्मल नाव ।। आन
ध्यान छिटिक सूं गही ।। मारग आन न जांव ।। गोबिंद जन और न
न जै री आरी हेली जाके मुंह डे छार ।। चरनदास यौं कहत हैं राम उ
तारै पार ।। राग केदारा ।। हरि कूं सुमर संट हरन कूं टकष्ट निवा
रनहार ।। जग तयो छुन भरन ।। भक्ति पूरन देय निहचल आनन
बांधो परन ।। आप मैं प्रहलाद राष्यो दियो नांही जरन ।। गिर सि
षर सूं डार दीनो ।। लगो कछु नां कारन ।। हीन जान सभार लीनो

किये॥ काटो धरन गजबांधो घडगा काढो डरु।लागोज्ञरन
अबबडा तेरो राम कितहे गहो वाकी सरन।दीठ होय प्रह
लाद भाषो डारसं कासुरन॥मोमें तोमें षडग षंमे मध्य ना
री नरन॥ थंम फटकरि भगा पर गाद धरे नरसिंघ बदन अ
सुर मारो जन उबारो पुहपबरषे सुरन॥मोहि गुरसुषदे
व कहियासेव चरन।बषदास तपाप नां छिन होय तारतर
न॥६८॥राग॥ हि।सुमरमन राम नाम तत सार।जिन
जिन सुमरे सो सो उतरे॥ भो सागर सूं पार बेद पुरान और षट
मां ही॥ तारन कूं यह भोग॥ जो पेपां चो प्रेत तजि वारे॥ अतरूं
डी नके भोग॥ साध न संजम पूजा आरचव तपकरे तप दान
नाम समान न फल काहूं मैं॥ करदेषी पहचान॥ जो जपके
रे धरे हिरदे मैं॥ आसा काल बिडार॥ तीन लोक मैं बंधन थ नहो
के॥ सो भा आगम अपार सब धर्म पर धंन नाम है सब रस
न सिर मोर॥ जिह चेप कडर हे यहा हीकूं।सकल बिकल त
जि दोर॥ ताभे भ्रांत न भरो ही दीवे पावे सु सब्बिचार॥ गुरसुषदे
व दियो छिद मो कूं चन हीं दास संभार॥७०॥राग बिलावल॥ अब
तू सुमर न करन मेरे॥ आगे ते पिछले अब के कीये पाप क
टै सब तेरे।जम को मुह न पावक की चोरासी ऊ षपेरे॥
न मैं कर्मसम की करजे हे॥ जागत ब्याधु तल केरे पे है सुक
ल मुक्त गति आनंद॥ अमर ही लोक बसेरा।जनमें।जनमें स
रै नजो नी आवे॥ या जग करे न फेरा।सुमरन करि जाने

कामक्रोधमदपापजरावैं॥हरिबिनऔरखमावैं॥गुरसुषदे
षदियोहैसुमरनबिनजिभ्याकरलीजै॥चरनदासकहैघे
रघेरकरिअधिकधर्ममनदीजै॥९॥रागकेदारा॥ऐसेनकरोंऐ
साजाप॥कटैंसंकटतेरे॥मिटैंसगरेपाप॥चेतचेतनषोजकर
लदेषआपाआप॥कागसूंजबहंसह्वैहैनामकेपरताप॥ध्यान
आतमसुरतिराषौ।छुटैंतिरगुनताप॥सुरतिमालासुमरनकरदे
षोउसकलसंतापपरामतिअगाधअछुतिबिमलअरूनि
हमाक।चरनदाससुषदेवकहियाबसेनिजपुरधाम।रा
गगौ॥रामरामरामरामरामगावो।मनकेरोगसकलबिस
रावो॥नामप्रतापसिलाजलतारी॥सोईनामजपोनरनारी
नामलेतप्रहलादउबारो।परगटह्वैहिरनांकुस
मारो।पतनजामेलसबजगजा॥नामलेतचढिगयो
बिवानैं॥सुवापढावतगनकातारी॥नामलेतनिजधाम
सिधारी॥सोईनामनारदमुनगायो॥वेदव्याससुषप्रगट
जनायो।हरिकेनामकोकौनबिचारा।सतसंगतमिलू
उतरोपारा॥स्योब्रह्मादिकनामउपासी॥आठसिधनौ
नामकीदासी॥सुकदेवगुरूनैनामबतायो।चरनदासह
रिसौंचितलायो॥१॥रागबिलावल॥रामनामचारौंवेदको
कहियतहैंजीको।पापतापदुषदूंदकूंमेटनकूंनीको।
एजीजिहसुमरैंरिझ्याकरीप्रहलादउबारो।निरगुनसे

९५८

सब

सगुन भए जानत जगसारो ॥ पूजा जप तप संजम जोग मैं सुख
ऊ न परसारी ॥ भावलिये सब ही फिरै बालक नर नारी ॥ जो हि
रदे ई दृढ करि गहै है हरिदरस न पावै ॥ चौरासी बंधन न कटै आवा
गवन न नसावै ॥ गुरु सुषदेव दया करी हरिनाम बतायो ॥ च
रनदास आधीन के निहचै मन आयो ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ सां
चा सुमरन कीजिये जामैं मीन न मेष ॥ ज्यौं गोसाधो कियो
बानी मैं षेष ॥ टेक ॥ गाहे डिब नावी धाहिय धार ॥ संतन की सेवा
कसै कुलकांन निवार ॥ जासूं प्रेम अंकुर पजै जब हरिदरसा
य ॥ आगे पीछे ही फिर प्रभु छोड न जाय ॥ चारमुकत बांदी भई
सिध चरनन माहि ॥ तीरथ सब आसा करै अघ देष नसां
हि ॥ कहै गुरु सुषदेवजी चरनदास गुलाम ॥ ऐसी धार न धा
रियै रहिये निहकाम ॥ ५ ॥ राग बिलावल ॥ ऐसा सुमरन कीजि
ये सु नहो मन मेर ॥ रसनां रपमत ॥ चासियै कर माला फेर ॥ निंदा
अकस न राषिये ॥ काहू दुष नहिं दीजे संतन सूं सनमुष र
हो गुरसेवा लीजे ॥ भूषे भोजन दीजिये प्यासे नीर पियावो ॥ स
चा बसे नीहो चबो अभिमान नसायो ॥ संत संतसौं मिल रहो गुर
मत सूं रहिये ॥ ग्यान धर्म नहि चालिये जम डंडन सहिये ॥ ता
मस सूं बिछ ज्योत जो सुषदेव बतावै चरनदास हरिहरि
जयै मुकत हो जावै ॥ ६ ॥ राग बिलावल ॥ ऐसे सुमरन कहा
सरै ॥ भवके रोग सोग नहिं [illegible] हिसा डुबे अकस जरे ॥ नारी

सुतसूं मोह किये॥ सेवक न हरि के प्रेम मझारे कुल नाते पर
वार संभारे॥ साधन की नहि टहल करे॥ माला तिलक सुधा
र संवारे॥ राषत छल बल मकर घने॥ अंतर और निरंतर औ
रें॥ सिंघ गऊं मुष रहत बने॥ ऐसी भक्ति नहि पावे
कर्म लौ भरु नरक परे॥ जम के डंड दहया वृक्ष कौं॥ ज
नम मरन यें नां हिठ रे॥ चरन प्रेम सहित जप कीजे॥ भीत
र बाहर ठघर नचे॥ चरनदास सुषदेव कहत है हरिरी फेजा
व्याध बचे॥ ७॥ राग बिलावल॥ माला फेरी कहा भयो॥ अंतर
काम न का नहि फेरा॥ पाप करत सब जनम गयो॥ पर
२ निंद्या पर नारन भूले॥ षों कपट की ओर नयो॥ काम क्रोध
मद लोभ न षो एक्कैर ह्यो मूरष मोह मयो॥ दुनिया संग समक
घर की नो॥ धन जोरन को परन लयो॥ दया धर्म दोऊं मन सौ छो
डे॥ मंगतन कूं नहि दान दियो॥ गुरसूं कूठ न गाल साधन सूं ह
रि को नांही नेह जयो॥ चरनदास सुषदेव कहत है कैसें
कहि ऐ मुक्त हुयो॥ ८॥ राग हेली॥ और उपासन कोय हे
ली टेक हमारे नाम की॥ आनसर न जाऊं नही म्हारी हेली
हे भी हे यूसों होय॥ जो गज्ञ तप नेम म्हीं री म्हारी हेली ना
म न दृढ़ नेर वा॥ सकल सिरोमन नाम है तन मन डारूं
वार॥ अठसठ तीरथ नाम म्हीं री म्हारी हेली नाम हमारे
नेम॥ नाम म्हीं सूरत चीर तूं ना॥ म हमारे प्रेम॥ बर्त हमारे
म्हीं री म्हारी हेली इष्ट हमारे नाम॥ अर्थ धर्म फल नाम म्हीं

नाममुक्तकोमुक्तम ॥ पटनलियनसबनामहीरीन्नरीहेली
नामगिरहसबदेव ॥ जोकुछहैसोनाम ॥ हीनामह्मारेभेव
रामनामसुषदेवदियोरीन्नरीहेलीसेराधेनामनमेंहो ॥ चर
नदासकेनाहीइहसमतुलकछुनांही ॥ १५ ॥ अथसगुनरुपा
सनाकोरास ॥ रागधनाश्री ॥ कैमंगलाचरनके ॥ दोहा ॥ चरनसत
गुरसुषदेवजी ॥ मेरीकरीसहाय ॥ निजवंदाबनधामकी
लीलादईदिषाय ॥ १ ॥ अबकछुकौतिगरासकोबरनतहैं
चरनदास ॥ लाललाडिलीकपासों ॥ पावैंनिजरसबास ॥ २ ॥
रागरासबिहागरा ॥ नृतकरतछबिसोंबनवारी ॥ टेरलई
सबहीब्रजबनिता ॥ मुरलीमधुरबजायबिहारी ॥ सुनत
श्रवनउठिधायप्रेमबसबिकलभईसुंदरसुकुंवारी ॥
गृहकेकाजलाजतजिपियकीउठधाईतनसुरतबिसा
री ॥ आगावनछबिहैरागमिलपांचपांचइकइककी
नारी ॥ आठआठइकइककेबेरामूरतवंतसकलपमहा
री ॥ तालछातीमुहचंगामजीरा ॥ ततननततनतूंरागथि त
न्यारी ॥ ताधीनाधीनातावीनावजतपषावज ॥ धंधंकरुकन
करुननननकारी ॥ इकइकगोपिनके ॥ संगइकइक
सुंदरनेषधायोगिरधारी ॥ ऐसोरच्योरासकोमंडलम
धराधिकाकनमुरारी ॥ गावतप्रीतबढावपरस्परमांन
क ॥ रतप्रियसोंपियप्यारी ॥ लेतमनायलाडलो ॥ प्यारेहंस
हंसबिहरतदेदेतारी ॥ ततथेईततथेईथेईथेईततथेई ॥

उरपतुरपसंगीतनृचारी नव बरलूपकरोमन मो
हनसेसषकोबरनतसोभी॥ मूग्र चौक्किसुरमुनिरिष॥
किन्नर॥ बाढीरेंमसरदनुजियारी॥ चरनदासमुषदेवस्याम
कीकृहु तिलीलाबलिहारी॥८०॥ रा॥ग॥राग॥भैरो॥ देषसषी
रासरच्यो सांवरे बिहारी॥ ब्रह्मा शिव इंद्र सेस नारद से
षकित भए॥ ऐसो कवि कौन करै बरनन अनूपमारी सो
हे सिरमुकट और नकुंडलन बिबितिलक भाल॥ किंक
नकटपीतबरनूपरझुनकारी॥ बजात नारिसु घर सषी॥
राधाजू चंदमुषी॥ ललितादिक सहचरी सिंगार सो संवा
री॥ कोऊ कंत बूरा कोऊ मुहचंग कोऊ कं ननावे गान मदंग
कोऊ कै तालदेत कोऊ सुरगठान नारी॥ बंसी मैं करत
गान बाकी सीम धरसांत॥ सारंगजबु करत भान स्याम
लेमचारी॥ कबहू कर जोर दोऊ नाचत हैं नवकिसोर का
बहूं हरि नृतकरत कबहूं पिप्यारी॥ तातातातत मतायेई
थेई थेई होय रही॥ बाढी निसमरदहोयि हरिकी नृत्यकारी
गमक नतिन कोउ दिषाव करत ये नाहियियो मुरली
धुनिसुनत मोहे मुनि जन ब्रतधारी॥ सुषदेव जी गुरु कृपा
चरनदास बहु प्रनाम करे रासकोलालासदियोपरग
ट द्रसारी॥ ॥री॥ राग॥ रारा॥ बिहागरा॥ रास में॥ नत कारत ने
नवारी मुदित मनोहर रंग बढावत॥ मगा[illegible] नंदु
लारी॥ मोरमुकट बी बसी सविराजत नाकबुलाक॥

सुढारी॥ कर मुरली छटकाछ नीका छै झलकौ। घो घरवारी॥ राधा
जु के सीस चंद्रका नीलंबर जरतारी॥ गावै सषी स्याम स्यामां
संग ग्रन षसिष रूप उज्यारी॥ ता धा नां ता धी नां धी ना बजत पषाव
ज ताल बीन गति न्यारी॥ ठनन ठनन नठ नूपर की कटि॥ झ न्न झन
नझन कारी॥ थेई थेई थेई थेई नचत दोऊ मिल॥ बिहसि बिहस मु
सकारी॥ चरनदास सुषदेव कृपा सूं पाये हरस मुरारी॥ राग रास
रा ली मै ॥ नृत्त त गोपाल लाल सन तम थेई॥ नष सिष सिं
गार किये राधा पर बांह दिये॥ सषि दोऊ संग मां चत सुर ताल तां
न देई॥ ननन नननं बूरगी बुगीड धकथ कथ मृदंग ताल॥ झमझम
मैं झांझ बत बीन बासुरी॥ झ न नझन कोर हो नया लत नका
र॥ राग गावत न कल्यांन॥ आर न टध ना सिरी॥ कबहू ले कान्ह
रा आलाप कमू सो रठ कौ॥ पर ज अबिहाग री के दारा आसावू
री कबहूं कि बिभास माल सिरी ललित रा कली॥ भैरौं कों बिला
बल धना निकर पद को चावरी॥ सुंदर बहु भेष धरैं रास को बिला
स करैं॥ मुनि जन मन हरै बंटो भा नंद चहु ठांई॥ प्रभु ति छबि कहा
कहूं किरपा सुषदेव च हूं॥ किरन दास हो यर हूं॥ चरन नास से गाही
न्त्र॥ राग रा च॥ सषी दोऊ सिक प्रीतम प्रिय प्यारी॥ मिल बेल
त है रास छबि कही न जाई॥ एका की एक सू सरस सो भा ब
नी॥ निर षि सब सुर मुनी रहे लुभाई॥ कोक करबी न लेसु
घर सुर ताल वै॥ गावत संगीत री झ त रिझाई॥ थूंगा नां थूंग ना धि
धू धू कतं॥ बजत मिरदंग गति सिसु हाई॥ तारमुरलि चग मर

रातीसुनपियजानीहो॥दरसदिषावोसावरेजबहियेसिरानीहो॥नां
तरषहूगातहो यहैहमरी॥मीनज्योपानीहो॥सुषदेवदुषसबहरो॥
काहेबिसरीबीहो॥चरनदासयहसषीतिहारी॥मिलजा[illegible]नी
हो॥चरनदासयहसषीतिहारी॥मिलजा[illegible]नीहो॥ ९१॥राग॥बि
हारा॥सुषबुधसबगाईबोयरी॥मैंइशकदिवानी॥तरफतहूं
दिनरैनसषीरीजैसैंजलबिनमीनी॥बिनदेषेमोहिकल
नपरतहै देषतआषसिरानी॥सुधआयेहियेमैंदौलागे नैनन
बरषतपानी॥जैसैचकोररटतचंदाकूंतैसैंपपीहास्वांती॥ऐसें
हमतरसतपिय॥दरसनबिरहबिथाइहिभांती॥जबतैंमीतबि
छोहाकूवा॥तबतैंकुंवमुहानी॥अंगअंगतकलातसषीरीरोंम
रोंममुरझानी॥बिनमनमोहनभवनअंधरेभरिभरिआवैछा
ती॥चरनदाससुषदेवमिलावो॥नैननआमोहिघाती॥९२॥राग॥
बिहागरा॥ भईहूंप्रेममैचूरहैपोहिदरसनदीजै॥हूंतोदास
तिहारीमोहनबेगषबरमालीजै॥हांनध्यानऔरसुमरनतेरे
चरननचितराषूं॥तेरोहीनामजयूंदिनरातीतोबिनऔर
नभाषूं॥तनब्याकुलजियरोंधोहीआवतपूरीप्रीतगलफां
सी॥तुमतौनिठरकठोरमहापियतुमकूंआवैहांसी॥बिरह
आगननषसिषसूंलागीमनमैंकलयनांभरी॥गिरेहीपरत
तनसंभलतनांहींरहतभवनमैंडारी॥कैबिषषापतजुय
हकाया॥कैतुम्हरेसंगरहसूं॥चरनदाससुषदेवबिछोहाते

रीसुं नहीं सहसुं ६३ राग कान्हरा तुमबिन अतिब्याकुलम
ई यां मोहू कूं दरस दिषावरे मोहन प्यारे चितवन नैंन हसन
दसनन की अटक रही हियमाहियां वहलटकन मरकन
चटकन पर मोर मुकुट की छबि छुइयां अधर मधुर मुरली
सुर गावत टेर बुलावत गाइयां हां हां षाऊं सीस निवाऊं और
परूं तोरे पइयां वारी हूं वारी मुषऊपर दोऊ कर लै हूं बलइ
यां अब तो धीर रहै नहीं रंचक हो सुष हो सुषदेव गुस
इयां चरनदास भई प्रेम बावरी आन गहो क्यों न बहियां
६४ राग परज तुम बिन कैसें जीऊं प्यारे नंदलाल मुष प्या
सकां भूला गत नांहीं तन की सुध न सम्हाल कलन परत क
ल कल उवाला वै छिन नां छिन छिन बेहाल बिरह बिथा को रोग
बढो है पीर महा बिकराल कहा कहूं कित जाऊं री सजनी को
न मेटै जंजाल लटक की चलन बांकी चितवन की चुनत कल्ले
जे माल न [illegible] मैं यह देह बरी सूल परयो न संजाल तर
फत हूं हियमें दो लागी नैना बरतन साल चरनदास सुख
मं पी निहारो सुषदेव दयाल आया कर दरसन दो
जै की जै बेगान हाल ६५ राग बिलावल लागी मोहन सो

ढोरी आनकानकुलकीतजदीनी कोऊकैसीबातकहोरी स्यामस॰
लोनेंकेरंगराती मगनभईकोइपरीठगोरी निरखतछबितनकीसुध
बिसरी प्रेमप्रीतरसमैंभईबोरी ऐसोरूपउज्यारोप्यारो सोभाबरननन
सेसथकोरी तीनलोकब्रह्मंडसकलसब जाकीमायासोंदरसोरी कांन
कुंडलगलमालबिराजै सीसमुकटमाथेतिलकफबोरी नखसिखभू
षनकोरिलियेंलकुटी कांधेसोहैपीतपिछोरी कलनपरतनिसदिनबि
नदेखें रोमरोममेंरेनहीरमोरी कान्हसुजानसदासुषदाई चरनदा
सकेहियेबसोरी रागझंझोटी आयामैंडोमोहनमदनगुपाल ना
नौरंगछबिसिषपाईनिरषतभईनिहाल बलिबलिजांदियांअंगगन
समांदियां मोहिद्दरसदियोलाल कोटमांनछबिमुषपरवारं बैंससो
हैलाल अद्भुतिरूपअनूपसांवरो सुंदरनैंनबिसाल घुंघरवारीअल॰
कैंफलकैंचिकनेंलांबेबाल चितवनतीषीनोंहमरोरत करलियेंबैंनगरि
माल गावततांनआनबांकीसैं चलतअनोषीचाल श्रीसुषदेववर
याकेसागरनटनागरनंदलाल चरनदासकूं किरपाकरिकेरीझर
ईउरमाल ६७। रागकाफी लूटकरीचालपैवारीजांदियां रैंनदिनां
सानूंध्यानतुसाडा नैनबचकेरूदिवांदियां कुंडलकांनमुकट
सिरसोहै सोभाअधिकसुहांदियां अलबेलीछबिबांकेनैनां
निरखतनैंनललुभांदियां जबबाजीप्यारेतैंडीबंसीषानपानबिस
रांदियां भूलगईघरकाजसबलाजकाडउरआंदियां चरनदास
हमरीतिहारी फूलीअंगनसमांदियां राषसरनसुषदेवपियां
रे चरनकवललिपटांदियां ६८ रागकाफी कोईसमझावोरी

मोहनलालाकूं ग्वालबालसबहीसंगलेकै सूनेंघरधसआवै याकीयाली
मोरीआलीमाषनदहनपावै लेकरिमटकी चटदेउटकैगटकैमाषनसोरै चटप
टचाटयौं छधरिपटकैनटज्योंसटकैप्यारो जबहूंजांउगागरीयामसनैहाडोरदैहै बि
हारी आगेआकरिकांकरमारैभीजेमोरीसारी जोअपनेंघरबैठरहूंतोअंगना
धूंममचावै जोकबहूंकैसोऊंसजनीसुफनैंदरसदिषावै मेरेपाछेलागोआलीजि
तजाऊंतितडोलै कहांलौंकहूंढीठलायाकीबानअटपटीबोल बांको
छैलमहाअलबेलोप्रागोहैब्रजमांही चरनदाससुषदेवपियारोरस
दारहोयागाई रागकाफी कोईआंननमिलावोरीस्यामसुजांनकूं नंददु
लारोमोहनसोहनब्रजबअनोषीछैला मदनगुपालमुकंदमुरारी मो
रोजीवनप्रानरी नैननीदनआवेसजनी कलनपरैदिनरैनां ब्या
कलभईफिरतहूंबौरी भूलीमांनअरूपानरी जोकोऊहितूहोयहैमेरो आ
नीलालनकीसुधलावै दरसदियायहरैं सबव्याधामोकूंदेजीदानरी छिन
छिनछिनआतिओरहोत्तहै लागीबिरहकोबांनरीह चरनदासकीपीरमिटा
वैंसुंदरसुषकेनिधांनरी १०० रागसोरठ म्हारेघरआयेहोसुंदरस्याम तनकीतप
तमिटीदेषतहीनैंननपायोआराम अंगनलिपाऊंचौकपुराऊंफूलबिछाऊं
धाम आनंदमंगलचारगवाऊं हूंयेपूरनकांम अबजागेसषीभागहमारे
मनपायोबिसरांम चरनदाससुषदेवपियाकूं हितसूंकहूंपरनाम १०१
रागसोरठ सोअबघरपायाहोमोहनप्यारा लषोआचानकअंजअबि
नांसोउघरगएदृगतारा जूमरहोमेरेआंगनमेंदरतनहीछिकरूंढा
रा रोंमरोंमहियमांहीदेषोहोतनहीछिनन्यारा मयोअचरजचरनदास
नपईपैषोजकियोबऊबारा १०१ रागसोरठ वृहघरीकोंनसीलागेमो

रे नैनां छोटी उमर मोल्लापन मारी जानूं ये कब वैनां जब लागे तब कछु
न जानी अब लागे दुषदैनां चरनदास सुषदेव कूं देषै तब पावै सुष चैं
नां १०३ राग मलार सो बिथा मोरी जानत हो अकि नांहीं नषसिष पा
वक बिरह लगाई बिकुरन दुष मन मांहीं दिन नहिं चैन नींद नहिं नि
स कूं निह चल बुधनि हैं मेरी कासं कहूं को ऊं हितू न हमारो लगन लहर हरि तेरी
तन भयो छीन दीन भये नैनां अजहूं सुध नहिं पाई छतियां दरकत तकरक रहै
ऐसे मैं प्रीतम दोउ दुष दाई जल बिन मीन पिया बिन बिरहन इन धीरज कक कैसी
यं छी जरे हैं तू गी बन मैं मेरी गति भई ऐसी तरफत हूं जियें निकत मांही तन
मैं अति अकुलाई चरनदास सुषदेव बिनां पीं दरसन दो सुषदाई १०४ रा
ग सोरठ मारे नैं नींद रस पियासी हो तन गयो सूक हाय हियबाटी जीवत हूं
वही आसा हो बिछुरन बिछुयारो मरन हमारो मुष मैं चलैं न गासा हो नी
दन आवै रैन हिलावै तारे गिनत अकासा हो मन कठोर दरदन
हिजां नैं तुम कूं नैं कन सांसा हो हमरी बाति दिन दिन औरै हाबि
रह बियोग उदासा हो सुषदेव पियारे मतर कून्यारे आन करो उर
बासा हो रनजीता अपनों कर जानों निज कर चरनन दासा हो
१०५ राग सोरठ ऊधो जी कहा रहे भगवान हम जाना का रूं नैं नो
हैं मोहन चतुर सुजान जब सूं नैनां नींद न आवै धीरज धरत न प्रा
न उमंग उमंग हियरो उलसत है वह सुंदर मुसकान जोग कथा
तुम काहि सुनावो हम कूं नाहीं ग्यान प्रेम प्रीत की रीत अनैनो षी का
पै होय बषान ऐसो हितू न को ऊ दीषै जाय सुनावै कान्ह बाटा बि

पाबिरहकीतनमेंसुधलोकपानिधान आवोदरसदिषावोप्यारेदे
ऊहमैंजायदांन चरनदाससुषदेवस्यामबिनतआंगनश्रोरपां
न १०६ रागसारंग ऊधोक्याजानैंहमऐजीवकी पातगबूंदचको
रचंदकूं श्रैसैंहमकूंपीवकी नेहकामांनबिकरकरिबेंची मारगए
हरितीरकी मालबियोगहियेबिचषडकै सुधनलईश्रापीरकी च
रनदाससषीनिसदिनतरफैं ज्योंमछलीबिननीरकी कहैंकब
श्रोरकरैंकुछश्रोरैश्रापरजातश्रहीरकी १०७ रागरेषता फरजं
दे नंदजूकादिलबीचभोवदा बरपायषूबनूपरसुंदरदेहांवदा व
हसांवरासलैंनामहबबूयारमन आसिस्तलटकचालमटकमेरे
श्रांवदा टीकासंदलकापेचदोमाथेपेश्रदासैं बरसरबिराजेश्र
कसरहीरेजडांवदा कुंललकलकातेहैंदरहरडगारामैं श्रावाज
बांसुरीकीसारीबजांवदा नामीजरीकागलमेंकटकाछनीबनी
पारेडपदेवालाबीडेचबांवदा करताहैनृतनादरघुंघरूझनकसौं त
ततत्थेईथेईगततलगांवदा जैनोकाश्रांनतांनकेंश्रबरकमांनसौ
पलकौंकाप्रेमतीरकलेजेचुभोवदा घायलकियाहैमेरेतांईउसकेई
ङाकनैं सुषदेवचरनदासकेजियमेंसमांवदा १०८ रागहिंडोल
ना हिंडोरेझूलतनंदकुंवार जोरीजुगलकिसोरबिराजैं नांनीपर
तकुहार कंचनषंभजटितहीरनसूं नगलागेतामांहि पटली
श्रधिकश्रनूपमसोहैडोरीसुरंगसुहांहि चहुंश्रोरबदराघिरश्र
।एउमंडघुहमंडघहरांहि गरजतमेघपवनझकझोरतदामनद

म[illegible]व नदमकइरहि गावतीतमतारसहेलीमिलमिलदैदैतार मेटादे
तबिसा[illegible]याल्हिता आनंदबढोअपार बलतमोरपपीहाकोयलदादरहंस
चकोर हरीभूमिरुसनइसुहाई मौरकरतअतिसोर भीजतराग रंगीले
प्यारेसोभाकहीनजाय चरनदाससुषदेवस्यामकीदोऊकरलेतबलाय
१०८ रागहिंडोलनी फूलतकोईकोईसंतलगानहिंडोलनै पौनउमाहउछाहध
रतीसोचसांवनमास लाजकेजहांउडतबगलेघोरहैंआहास हरषसोगादे
उमंभरोयेसुरतडोरीलाय बिरहपटडीबैठसजनीउमंगाआवैजाय सकल
बिकलतहांदेतझोटेबिपतगावनहार सबीबझतकरगारीतीरंगीपोंचो
नार नैंनबादलउमंडबरसैंदामिनीदमकात बुधिकोठहरावनाहीने
हकीनहिंजात सुषदेवकहैकोईबलीफूलैसीसदेतअकोड चरन
दासामनएबौरेजानबसनकूलछोड ११० रागहेली नोबिरहनका
बातहेली बिरहनहोयसोईजानिहै नैंनबिछोहाजाननीरीअरीहे
लीबिरहैकीनैंघात यातनकूंबिरहालगोरीअरीहेलीजैपींघनला
गोकाठ निसदिनषायेंजातहै देषूंहरिकीबाट हिरदेमैंपावकज
लैरीअरीहेलीतपनैंनामनएलल आंसूपरआंसूगिरैंयहहिमारो
हाल प्रीतमबिनकलनांपरैरीअरीहेली कलकलसबउकलो
हि डिगीपलंसननारहोकबपियपकरैंबांहि गुरसुषदेवदयाक
रैंरीअरीहेलीमोहिमिलावैलाल चरनदासइषसबमजैंसदारूं
पतिनाल १११ रागहेली तरसैमेरेनैनहेली रंगमिलनकबहो
यगो पियदरसनबिनबैपोंजिऊंरीअरीहेलीकैसैंपाऊंचैंन तारग
नतेबकूतेकियेरीअरीहेलीचितदेसुनापुरान बाटनिहारसहीर

कूंछाडदई कुलकांन लग्यौ माहे हीरङूं अरी हेली सुपिनहि नाआय
यह जोबन यौं ही चलो चलो जनम सिराय बिरहा दल साजैं रहे री अरी
हेली छिन छिन मैं दुष देह मन लालन को बस परो भई भाव सादेह गु
र सुषदेव कृपा करो जी अरी हेली दो जे बिरह छुटाय चरनदास पिय सुं मी
लैं सरन तुम्हारी धाय ११२ राग हेली तिनकूं कछू न सुहाय हेली प्री
त लगी घनस्याम सूं जो सुष है संसार केरी अरी हेली सो सब दिये बहाय
मंदन तजो अरू धन तजो री अरी हेली तजा कुल न की रीत मांन बडाई
सब तजी रहा एक हरि मीत भूष प्यास निद्रा तजी री अरी हेली तज दि
यो बाद बिबाद राग दोष दोऊ तजे तजो पांचन को स्वाद बहुत डरै सुक
वार है री अरी हेली कहै न काहू बात नजर रहै हरि ध्यान में सोते रैन
बिहात श्री सुषदेव मलै कही री अरी हेली बार म्वार मसं भार चर
नदास तो स्याम की वेई निबाहन हार ११३ राग हेली मोमन कछु न
सुहाय हेली प्रीत लगी प्यारे लाल सूं हंस हंस कैं टोंनों कियो री अरी हे
ली दै गयो मुरली गहाय जब ही सूं चेटक लगो री अरी हेली ढूंढूं
कुंजन मांहि बौरी हो डोरो फिरूं वह छबि दीषै नांही मोहि मिला वे सां
वरो राहू री हेली ता को बलि बलि जाव जनम जनम दासी रहूं को मूं
न छोडूं पाव है कोई पूरा राम को री अरी हेली मोहि बतावै ठौर जहां
बिराजै स्याम जी वह बड भागी पौर चरनदास ध्यस लगई री अरी हे
ली मोहि न मारो बांन श्री सुषदेव दिषाइयै मेरो जीवन प्रान ११४
हेली वह छबि कर बषान हेली जाकी बिसो नैं जो लगे हितू दैष तो सूं
कहूं री अरी हेली मोर न पावै जांन मोर मुकट माथे दिपै री अरी हेली

कुंडलसरवमांहि अलकैंवलखाईरहैं जोगीदेखतमांहे मोहनमधिवैं दांदियरी अरीहेलीसुंदरनैनबिसाल मोतीनासासोहनीं उरवैजंतीमाल नीमा अंगपारोमुञोरी अरदेलीयमयुमोरोफेर लालपदुकंपावमें मोन नराषतयेर पहूचनमेंपुहचीकडेरी अरीहेलीअगुरिनमुदरीछाप धर नमैमुरलीधरें गावतरीजतआपचरनदासतिकीभईरी अरीहेलीतन मनडारोवारगुरसुषदेवसदाहियाबुरीकहोमखार ११५॥ हेली॥ बंसीबट कीछांहिहेलीलाललाडिलीमैंलषे दोऊअपरेगावैहसैंअरीहेलीअरुडा रैंगरबांहि मोरमुकटमाथेदियेरी अरीहेलीसुंदरनैनबिसाल पीतंब रपटसोहमौंकरमुरलीउरमाल वाकेंबिराजैचंद्रिकारी अरीहेली लीलबसनजरतार नषसिषभूषनसोहनो अरुफूलनकेहारगुरसु षदेवबताइयारी अरुहेलीजबहमलियेपिछांन चरनदासतिनकीम ईलगोरहैंवहीध्यांन अथसंतसूरमाकाअंग। दोहा॥ संतसमा ननसूरमांकहैंरनजातबिचार टेकगहैसनमुषचलैंबांधिप्रेमह थियार ११७ रागसोरठ नांकोईसंतसमाननसूरा मोहसतेहि तसबसेनांमारी ऐसेसांवतपूरा छिमांकीढालगहीकरअपनेंबांधे सततरवारा कर्मभर्मकेदलकंपेलैंपिलपिलबारमबारा सुरतकोतीर हिरदेकोतरकसध्यानकमांनबनावैं प्रेमहाथसंषैचनलागैचोटनि सानैंलावै बुधिबबेककटारीबांधेंबचनबिलीसकोबरखी सतपुर सोंकेहियरेबेधेकहिकहिबतियांतिरती चतमैंचारचौगुनौतनकेसु निसुनिअनहदनूरी अगमपंथसरपगानडिगावैहोयजांयचकचूरा मनकुलासअासधरिपियकीसुलषेतमैंधावै चरनदाससुषदेव

कहतहैंअमरलोकपदपावैं ११८ रागसोरठवाआसावरी साधूपैजग
हैसोईसूराकाकेमुषपरनूररहैजबबाजैमारूतूरा कालेगीअरूग
जगाहबनावैं ईनकापरनउहेला सांवतमेघबनायचलतहैं रहन
हीसहजसुहेला याबानेंकोनेमपहीहै पगधरिफिरनउठावै जोकु
बहोयसोआगोहीआगेआगेहीकूंधावैं रणमैंपैठजडाजडबेलै स
नमुषसस्तरषावै षेतनछोडैकोईजूझैतबहीसोभापावै गुरसुषदे
वदियोहैहेला ऐसाहोयसोआवो चरनदासबांनासंतनकोतौ
लेसीसचढावो ११९ रागसोरठवाआसावरी साधोटेकहमारीऐसा
कोटजतनकरछूटैनांहीकोऊकरोअबकैसा यहपगधरासंभालअ
बलहोबालचुकैसोईबोल गुरमारगमेंलेमदीनेंअबदतवितनहिंडो
ले जैसैंसूरसतीअरूह्लापकडीटेकनटारैं तनकरिधनकरिमुष
नहीमोडैंधर्मनअपनौंहारै पावकजारोजलमैंबोरोटूकटूककरिडा
रो साधसंगतहरिभक्तिनछाडैंजीवनप्रांनहमारो पैजगहीसुदागन
लाजेलैंकनउतरैलाजा चरनदाससुषदेवदयासूं सबबिधसुधरै
काजा १२० रागसोरठ म्हारेराजनकीटेकतारीनांटरै लाषकरोको
ईकोटकरोजाकारूतैकुछनांसरै ज्योंकामीकूंतिरयप्यारी ज्योंलो
भीकूंदाम अमलदारकूंअमलपियारो ऐसैंहमकूंराम उछूटा
बेंगाहिया हिपकरू हारलकीलकडीभई अबकैसैंकरिछूटै मोसें
रोमरोमतनमनभई ज्योंप्रलादपैजडिढकीनीहिरनांकुसमेव
ऊभरे उबरेसंतअसुसरगहमारोपरहोहरिआवरे गुरसुषदेव
सहायकरीहै अबपापाछेकोपरै चरनहीदासबचननहीमोडैंसू

रसतामूयेंटरैं रागसारंग साधोटेकगईजाकोसबगयो
लाजगईअरूकाजगएसबबचनधर्मकछुनारहो जगमेंहांस
कोसतियमांही कायरपनपोदहगयो अबपछतायेंहोतकहाहैं
वहपानपतेरोबहगयो पैजतजीमुषकोरोहूंवो धिगधिगजीवन
तासको॥बोजगयोओछेकीसंगतम्रद्परताकुबासको चरनदास
सुषदेवकहेंयोंटेकनटेवोसिरदेवो॥बारबारनरदेहनयईहै अप
जसजगमेंकोलेवो १२२॥रागसोरठ॥साधोयोंमेषवहीजामेंटेकहैं क
टेकनहींतोकहाअरोसोटेकबिनारननतेकहे॥टेकबिनाकैसीसतवं
ती॥टेकबिनांहिंसूरमां टेकबिनांदाताभीनांही टेकबिनाजो
गीबुबनां टेकबिनानहिंभक्ताहरिको टेकबिनानहिंसिधहै
टेकबिनांसबभरमतडोलैं साधसंतअरूबेदकहतहैं टेकपकडचे
टधामकूं १२३ रागसोरठ साधोजेपकडीसोपकडी अबतोटे
कगहीसुमरनकी ज्योंहारलकूंलकडी ज्योंसूरानैंसस्तरलीनैं
ज्योंबनियैंनैंतपडी ज्योंसतवंतालियोसिंधोरा तारगह्योंज्योंमकडी
ज्योंकामीकूंतिरियाप्यारी ज्योंकिरपनकूंदमडी ऐसेंहमकूंरा
मपियारी ज्योंबालककूंपमडी ज्योंदीपककूंतलपियारो ज्यों
पावककूंसमरी ज्योंमछलीकूंनीरपियारो बिछरैंदीषैजमरी सा
धोंकेसंगहरिगुनगाऊं तातैंजीवनहमरी चरनदाससुषदेवडि
ढायो औरछूटीसबगमरी १२४ रागसोरठा अरेतैंगुरकेबच
नचितधररे छिनछिनतेरीआवघटतहै बेगासंभारोघररे

सीतलछिमाजतडिढकरिराषेगरयुमानजिवारो पचोइईब्रसक
रिअपनेमनजानीमकूमारो कायाकोटबहारजुगतिसूंसत
सिंघासनधरेसे तापरबैठअमरपदबीलैराजअमैपुरकरि
ज ये सबपरअमल चलैबतैरो तोसमऔरनकोई सेवासाहि
बलोहाकेतनबूदसमईहोई बिघनकलेसअपदानासैनेमै
लआनंदपावे चरनदाससुषदेवदयासूं रहनगहनसमझा
वै १२५ रागसोरठ जबागुरुग्यानगारेबाजे पांचपचीसौबडेम
वासीसुनिकेडकाभाजे डिढदसतकलेज्ञानजसावत आयन
गरकेमांही हरिकेदामभजनकेमांगो चित्तचौधरीपांही कानू
गोयलोभकेषोटेछलबलपाहीफूठे कामकिसानअसं मोहमु
क कदमसबेबांधकरिलूटे तिष्नाभितमदकोमातेपडगाडसौ
काढे मनराजाकोनिहचलऊडाप्रेमप्रीतिहितगाडे सुबुधदिवा
नसीलकोबकसीजतकोहाकिमभारी धर्मकर्मसंतोषसिपा
हीजाकेअग्याकारी सांचाकारिंदापटवारीधीरजनेमबिचारे द
याछिमाअरुबडीदीनतापूरीजमांभारे मगनहोयचोकसकम
करिके सुमतिजेवडीमांपे दरनदरबध्यानकोपूरनबाटापावै
आवे श्रीसुषदेवअमलकरिगाढोसबसदेसबसावे चरन
दासकूतिनकोनायबतनवरबानोपावे १२६ रागसोरठ जोनर
इकछतभूपकहावे सतसिंघासनऊपरबैठे जतहीचंवरढुरा
वे दयाधर्मदोऊकोजमहालेभक्तिनिसानचलावे पुन्यनगा

रानौ बनबाजे डुंडजे नसकल हलावै पापजलाय करै चौगानां हि साकु बुध
नसावै मोह मुकदम कादि मुलक संलावै राग बसावै साधन नाय बजित तिनने
जै देदे संजम साथा रामइहाई सिगरै करै कोई न उठावै माया निर्भै राजका
रै निहचल हो गुरसुषदेव सुनावै चरनदास निहचै करि जानौ बिरला
जन कोई पावै १२७ राजकल्यान। वह राजा सो यह बिध जानै काया
नगर जीत बैठाने कामक्रोध दो बल के पूरे मोह लोभ अस्तुति सावत सू
रे बल अपनो अभिमान दिषावै इनकूं मार राह गार धावै पांचो घाले
देह उठाई जब गढ़ में फेरी मन राई ज्ञान षड्ग ले दुंद मचावै कप
ट कुलता रहन न पावै चुनचुन दुरजन हनन सब डारे रहते सहते सक
ल बिडारे मन संत्रुस हे पग तै साई लरन जीव रहै नहीं कोई अचल
सिंघासन जब तू पावै मुकत चवर सी चेवर दुरावै आठौ सिध जह हो करजो
रैं सो ही ता कैं मुख नहिं मोरैं निहचल राज अमल कारै पूरा बाजे नौब
तऔ नहद तूरा तीन ताप रिषु को रछ ठासी वे नी सबते राक रैं वासी
गुरसुषदेव भेद दियानी को चरनदास मस्तगा कि टीको रन जीता य
हर ना पावै योपा के रना कधनावहावै १२८ अथ जोगका अंग राग
कडषा साधो सुर दियाजोग इहि विध कमायो मुलकूं सोध संकोच करि
संषनी यै चअपान उलटो चलायो बंधपर बंध जब बंध मैं लगे प
वन मई एक तन नगर जगायो छादका पलट करि सुरति दे दल धरी
द सौंपर कार अनहद बजायो रोक जब नवन कूं धार दसवै चढ़ो सु
न के तषत आनंद बैठायो सहेसदल कंवल को रूप अदभुत महा अ
मी सस उभंग अमी अमल गायो तेज अति पुंज पर लोक जहां जगमगे

कोटक्षबिमांनपर गासलायो उनमनाझोरचितहेतकरिबसरहे
देषनिजस्समनकांमिलायो कालअरज्वालजगब्याधसबमिटगाई
जावसूंब्रह्मगतिबेगपायो चरनदासरनजीतसुषदेवकीदयासूंअ
भैपदपसस्सबिगतिसमायो १२९ रागकडेषा साधोपिंडब्रह्मंडकी
सैरगुरगमकरी पारसियाजुगतिसूंचलबराई सहजहीसहजपगध
राजबअगमकूं दसौंपरकारमांगडबजाई षोलकपाटअरसबजुधारेच
टे कलाकेभेदकूंजालगाई पहलकेमहलपरजायआसनकियो इस
रेमहलकीषबरपाई तीसरेमहलपरिसुरतिजावसरही महलचोथेउ
हीगाई पाचवैमहलकूंसाधकोईपायहै महलछठवादियागुरबाता
इ सातवैंमहलपरकोटसूरजदिपैं आठवैंमहलअबिगतिगुसांई
रूपअदुतिलहेंअधिकअचरजजहां देषियादरससबबिपतजाई
सुषदेवकासहासूंबारनांगहात्र आपनेंपावकेभवनआंई चरनदास
आपादियाप्रेमप्यालापिया सीससदकैकियापूजपाई १३० रागक
डषा साधोपरसियादेसजहांभैसनांहीं घाटतिसलषजहांबाटसूझैन
हीं सुरतिकेचादनैसंतजाई चंदषोडसदिपैंगगउलटीबहैं सुषम
नासेजपरलंबदमकै तासकेऊपरैंअमाकातालहै जिलमिलीजोति
परगासझमकै चारजोजनपरैसुनअस्थांनहै तेजअतिपूंजपरलो
कराजै घायहमधसैभेरहीडंडहेउलटकरआपहीजैबिराजै नूरज
ममगाकैरेषलअगाधहै। वेदकेभेवनहींपारपावैं गुरमुषीजायहैंअम
रपदपायहैं सीसकालोमनजिपंथधावैं तीनसुनकेदरनजीतचोथे
बसे जनममरनमरनफिरनाहीहोई चरनदासकरिबासमुषदेवबक

सामसैंपूजबेगमपुरीअनरसोई १३१ रागसोरठ ऐसादेस
दिवांनांरेलोगोजायसोमांताहोय बिनसंधवामतवारेहूमेंजन
ममरनदुषषोय कोटचंदसूरजउजियारेरबिससिपुहचतनांही
बिनांसीपमोतीअनमोलकबऊदामिनऊमकांही बिनरुतफूले
फूलरहैंनतहैंअमृतफलरसपागो पवनगवनबिनपवनूबहतहैं
बिनबादरझरलागो अनहदझाबूंनवरगुंजारैं संषपषावज
बाजै तालघंटमुरलीघनघोरा भेरदमामेंगाजैसिंधगरजनांअति
हीभारी घुंघरूझनझनकारेंरंगानिरतकरैंबिनपगसेंबिनपाय
लठनकारैं गुरसुषदेवकरैंजबकिरपा ऐसोनगरदिषावैं चरन
दासवापदकेपरसैंआवागवनन्नसावैं १३२ रागसारंगवाबिला
वलवासोरठ साधोअजबनगरअधिकाई औघटघाटबाटजेहे
बांकीउसमारगहमजोंई सरवनबिनबऊबानीसुनियें बिनजिभ्या
सुरगावै बिनांनैनजाहांअवरजदीषैबिनांअंगलिपटावै बिनांना
सिकाबासपुहपकी बिनांपांवगिरचढियां ऐसाघरबडभागीपायाप
हरगुरूकाबानांनिहचलहोकरआसामारी मिटगयाआवनजांनां
गुरसुषदेवकरीजबकिरपा अनभैबुधपरगासा चौथेपदमेंध्यानं
दना चरनदासजहांबासा १३३ रागसोरठ सोगुरबिनघरकोंनदिषा
वै जिंहघरअगनजलैजलमांहीं यहअचरजदरसावै कांमधेंनज
हांमटीसोहै नैनहाथबिनडुऊन थोपै दूधाधोरादेवैमूषेदेपैईनापी
वैंजनजनादीसपियारेगुरगमबऊतअघावैं मूरषकायरओरअजेगा

सोवै नैकन पावै अंमृत अचवै वापद पुंहचै महातेज कूं धारै सोयज्ञ
मरनि तहां चलहो बैठे आवागवन निवारै मे दछिपावै तो फल पावै का
ज्ञ सैंन तिंक हिये वहअनुति है ठौर यह नूठी बडभागन संलहिये यासा
धन के बऊर षवारे रिष मुनि देवत जोगी करन न दे रैं बुधि हिरिलेरै हो
यन गोरस भोगी लोभी हल के कूं नहीं दाजै कहै सुषदेव गुसांई चरन
दास त्यागी बैरागी ताहि देऊ गह बांही १३४ राग सोरठ सो गुर समम मा
न तयाम न मेरा गगन मंडल में निज घर कीनों पंच बिसै नहिं घेरा ध्या
स छुधा निद्रा नहिं ब्यापे अंमृत अचवन कीनां कुटी आसन नहीं कोई ज बास
ग मैं चित नहीं दीनां दरसी जोति परम सुष पायो सब ही करम जलाये
पाप न पुंनीं दोऊ नहीं नाहीं जनम मरन बिसराए अनहद आनंद अलिउप
जावै कहन सकूं गति सारी अति लल चावै फिर नहिं आवै लगी अ
लष संवारी सहंस कंवल दल सत गुर राजै रूचि रूचि दरसन पाऊं
कहै सुषदेव चरनदासा सो विध नेहिबताऊ १३५ राग मलार
चहुं दिस झिलमिल झलक निहारी आगे पाछै दहनें बांवें तल ऊपर उजि
यारी द्रिष्टि पलट त्रिकुटी हो देषै आसन पदम लगावै संजम साधे डि
ढ आसन धरि जब थैसा सिध पावै बिन दामिनि चमकार बहुत हो सी पवि
नो लख मोती दीप मालिका बहुं दरसावैं जगमग जगमग जोती ध्यान
कतै तबन न के मांही पूनैं हो गति सारी चंद्र घनैं सूरज अछण कोजैसें सू
भर भरियां भारी यह तौ ध्यान प्रतिक्ष बताया सरधा हो य तौ कीजै क
हैं सुषदेव चरन हीं दासा सो हम सूं सुनि लीजै १३६ राग केदारा

औधूसहंसदलअबदेषसेतरंगजाहींपेषरी अबिअग्रडोसबसेप अंम
तबरषाहोतअगनि उडतेजंपुंजप्रकास नादअनहदबजतअद्भुतिमहाब्र
ह्मबिलास घंटकिंकनमुरलीबाजैसंषधुनिमनसांगना जहंतालमेरमदं
गबाजतसिंधगरजनजोन कालकाजतंपुंहचनोंताअमरपदकीपाव जा
तआठोसिद्धबाढीग्यानमधोआव करैगुरपरतापकएनीजाय पुंहचैसो
य चरनदाससुषदेवकिरपाजीवब्रह्मैहोय १३७ रागधनासिरी सेगुरगम
इहिविधजोगकमायो आसनअचलमेरकियोसीधोकसिबंधमूलगायो सं
जमसाधकलाबसकीनीमनपवनांघरआयो नोंदरवाजेपटदेराषेअरध
उर्धमिलायो नाभतलैपैडीकरपैठेसकलपतालगाईहै कंपोसेसकमठउक
लानौंसायररषाहदईहै उलटचलैमगफोरइकीसोगणअभेपदमांही उगअनि
उजियारोअभुंतिलीलाकहनसुननगामनांही जितभएलीनसबैसुधबिसरीषू
टीजगतबियाधा चरनदाससुषदेवदयासूंलागीसुन्नसमाधा १३८ रागधना
सिरी सोसाधीअैसेजोगजुगतिगतिभारी मूलहीबंधलगायजुगतिसूंमूदल
ईनौंनारी आसनपदममहादृढकीनौंहिरदेचिबुकलगाई चंदसूरदोउसम
करिराषेनिरतसुरतिघरइआई पवनफिरीपछमकूंदोरीमेरडीमेरचलाई
अैसेंहीलोकअमरपदपुहंचैसुरजकोटउज्यारी सेतसिंघासनसतगुरपरसेक
रिदरसनबलिहारी आपाबिसरपरमसुषपायोउनमनलागीतारी
चरनदाससुषदेवदयासूंजनममरनकुटीबारी १३९ रागमलार श्री
पदरामसूंकरिनेह बिषकीबूंदनपड़ैजितकाबरषतइकंतमेह चम
कतबिजरीगाजतगगनांबाजतअनहदघोर पंचमनषकतगलत
जितपांचौं मिटहैंनिसअरुभोर जाग्रतमिटकरिसुपनैंमिटहैंमि

टहूसषोपतजाय घटरि तुपइयै नांहिं ॥ औध ॥ एक हीरसदरसाय बि
नहींजोतैंबिनहींदोयैं उपजनषेतहैधीर लागातआचरजफलमहामु।
क्ताबिनहींसींचैं नीर राजागुरसुषदेवनबारैंसबहीकरैंबकसीस चर
नदासरासबपावैमिलहैबिसवेबीस १४० रागसोरठ ॥ औध ॥ ऐसोअम
धरापीजे बैठगुफामैंयहजगबिसरै चंदसूरसमकीजे जहांकमूल
चढाईत्राटी ब्रह्मज्वालपरजारी नरीनारिप्यालादेतकलालीबारैंम
क्रिषुमारी मांताहोकरिज्ञानषडगलेकामक्रोधकूंमारै घूंमतरहैंग
हैमनचंचलडबधासकलाबिडारै जोचाषैयहप्रेमसुधारसनिजपुर
पुंहचैसोई अमरहोयअमरापदपावैआवागवनिनहोई गुरसुषदेवकि
रपामनवारातीनलोकतिणबूझा चरनदाससरनजीतनएजबआंनं
दअंनंदसूझा १४१ रागसारंग पीवैकोईयहप्यालामतवारा सुरन
रमुनिज्ञामधकूंतरसैंगुरबिनलहैनबारा सुंदरकेघरनाठीजोरैब्रह्म
आगनजराई ज्योंसोधेओरबिस्नुचुवावैपीवैंसाधअघई सीताप्याला
नरिनारिदेवैहनमांनहंकारें ब्यासषेसनारदसनकादिकिरिया।
नाहिंबिचारें गोधानेंमच्छरुसंजमपूजा बिसरीसबकहाकहियेघूं
मतरहैंमहारसछाकेसुरगमुक्तनांचहियै श्रीसुषदेवसुधारसईबत
नितप्रतआचवनकीन्हीं चरनदासपैकिरपाकरिकैनिजप्रसादक
रिदीन्हां १४२ रागसारंग साधोयहप्यालामतवारहै अचवैगा।
कोईजोगजुगंताचितथिरस्थिरमनमारैहै चंदसूरदोऊसमकरिरा
षैब्रह्मज्वालअंतरबारै मुद्रलगोषैचरीजबहीबंकनालईबतजैरे।

भंवर गुफा मैं भाठी औटै मनकुं मनक सुषमन चुवैं सुगुरा पावैर
है तन एहीं बिन पायें उपजे मुवे सौ सनकादिक नारद सारद औरधि
यानैं नायें है सिध चौरासी हरिपद बासी मगन भया सब साधै है रामा
नंद कबीर नामदेअमर ऊये जिन जिन पिया गुरसुषदेव करी जब
किरपा चरनदास कूं सो दिया १४३ राग धनासिरी जो जन अनह
द ध्यान धरैं पंचौ निरबल वं चल याकै जीवत ही जु मरै सोधे मूलबं
ध दे राखे आसन सिध करै त्रिकुटी सुरत लगाय ठहरावै कुंभक पवन भ
रै घन गरजै अरु बिजली चमकै कौतिग गगन घरै बहुत भांति जहां
बाजन बाजै सुनि सुनि हिरदै धरै सहज सहज मैं होय परगासा ब्याधा स
कल हरै जग का आसबास सब छूटै ममता भीत जरै सुन्न सिषर पर
आपा बिसरै काल सूं नाहिं डरै चरनदास सुषदेव कहत हैं सब गुन ज्ञा
न गरै १४४ राग धनासिरी तब लै अनहद धोर सुनि इंडीय कितगल
त मन न हूवा आसा सकल भुनी घूंमत मैंन सिथल भई काया अमल जु
सुरत सनी रोंम रोंम आनंद उपज करि आलस सहज बनी मतवारे जैसी
झूंबू समाये अंतर भीज कनी भर्म कर्म के बंधन छूटे दुबधा बिपत
हनी आपा बिसर जगत कूं बिसरे कित रही पांच जनी लोक भोग सु
ध रही न कोई भूली ज्ञान गुनी होत हो लीन चरन ही दासा कहै सुषदेव
मुनी औसो ध्यान भाग सूं पइये चढि रहे सिषर अनी १४५ राग बि
लावल घट मैं षेल लेमन षेला सकल पदारथ घट ही माहीं हरि सूं हो
ये जु मेला घट मैं देवल घट मैं जाती घट तै पर भी न्यारे घट मैं मानसरोवर सू भर मोती और मराल घट मैं ऊंचा ध्यान न चूक कासो हंमाला

घटमैंबिनसूरजउजियारा रातदिनांनहिंसूझै भ्रंमतभोजनभोगलगा
तहैबिरलाजनकोईबूझै घटमैंपापाघटमैंधरमाघटमैंतपसीजोगा गु
नऔगुनसबघटहींमांहीघटमैंबैदऔररोगा राममक्तिघटहीमैंउपजै
घटमैंप्रेमप्रकासा सुषदेवकहैचौथापदघटमैंपुंहचैचरनहीदासा १४६
रागबिभास घटमैंतीरथक्यौंनहिन्हावो इतबितडोलोपथकबनेंती
भरमभरमक्यौंजनमगंवावो जोमतीकमैसुकारणकीजैअधरममैं
लकुटावो सीलसरोवरहितकरन्हइयैकामअगनकीतपतबुजावो रेवा
सोईछिमांकूंजानैंतामैंगोतालीजै तनमैक्रोधरहनननहिंपावैग्रैसापू
जाचितदैकीजै सतजमनासंतोषसरस्तागंगाधारजधारो जूठपटक
निरलोभहोयकरि सबहीबोझासिरसूंडारो दयातीर्थकमैनासाक
हियैपरसैबदलाजावै चरनदाससुषदेवकहतहैंचौरासीमैंफिरन
हींआवै १४७ रागबिभास घटमैंतीरथयौंतुमन्हावो तिनकोन्हान
अमरपदपुंहचौआदिपुरसनिहचैकरिपावो कासीसोननकरनोकी
त्रैकलमलसकलनसावो रहनगहनपुहकरकूंजानौं वांमैंमंजन
कौंनकरावो ध्यांनधारकडिढकरिपरसौहितकीछापलगावो इ
इजिनसोईबडीनाथा यहातसतकरिचित्तलावो भंवरगुफा
मैंहैतिरबैनी सुरतिनिरतलेधावो जोगजुगतिसंचुभकीलैकरि
कागपलटहंसाहोजावो तनमथकरगंरूमननदाबनतामैंरास
रचावो हिरदेकवलबिलैपरगासादरसनदेषअधिककुलसावो
गुरचरननमैंसबहीतीरथसिमटसिमटतहांआवो चरनदाससु

षदेवकहतहैंआपमैंमस्तगलेरचटायो १४८ रागपरज सुधारस।
कैसैंपइयैहो रूपकहाकिसठौरहैकैसैंकरिलहियैहो तेजकित
कितगागरीकितनरनेवालीहो कौनसमैंकिसघरबिषैंआचवैकि
नमांहींहो तुमसेजानैंभेदकंवलबहुतकनांहींहो पीकरकिसका
रजलगैओरस्वादबतावोहो फलयाकाकहिदीजियैसबषोलिलि
तावोहो सुषदेवसंपूछनकरैयहचरनहींदासाहो किरपाकरि
करिकीजियैमेंरीपूरीआसाहो १४९ रागपरज गुरुम्हारेप्रेमपिया
योहो तादिनतैपलटोभयोकुलगोतनसायोहो अमलचढ़ो
गगनैंलगौमनहदमनछायोहो तेजपुंजकीसेजपैप्रीतमफल
लायोहो गएदिवानेदेसदेआनंदरसायोहो सबकिरियास
हजैंछुटातपनेमभुलायोहो तिरगुनतैऊपररहूंसुषदेवबसा
योहो चरनदासदिनरैंननहींतुरियापदपायोहो १५० रागजैजै
वंती ऐसीजोज्ञानजानैंसोईजोगीभ्याराभाई आसनजोसिधक
रैत्रिकुटीमेंध्यानधरैबिनातेलदीवाबरैजोतिरूऊजारा संजमसं
भालसाधेमूलधारबंधबांधेसंषनीउलटसाधैकामदेवजारा प्रा
नवायुहीयेमांहीथेचिकैअपानलाई दोऊनीकैमिलिजाईऐसा मि
बेलधारा कुंभककोथकराबेमनहदआरतीकै सुषमनपैठिनौ
कैभागेजोबिचारा षोलिकैकपाटसिराकोऊंचदैसूरबिरा कामधें
नजावैतारा अमीकूंउतारा उनमनाजायलागैनिजघरमांहींजामे
जनममरननागैकूटैजगभारा गुरसुषदेवकहैकरनाईदिविधतै
है चरनदासहोयरहैआपकूंसंभारा १५१ रागसारंगबासोरठ।

पाचनमोहिनियोवलमानासातुचाऽ॥ औरसरवनियांमैननऔरस
नां॥ एकएकनैवारिवाधिगहिगहिलेलेजाहिं॥ निसदि
नउनहीकेरसपागोघरमैगहरतनाहि॥ अलिपतंगगाग
जमीनमिरगज्योंहोरहोपरआधीन॥ अपनोआपसंन्ने
रतनाहींविषैवासनालीनहूकुलवंतीटौनासीषोऽपनह
इसुरतिधरूं॥ गगनमंकलमैनलटाकूबातासूनिर
नरूं॥ भवरगुफामैदीपकबालूंमंतरएकपटूं॥ का
मक्रोधमधलोभनहोमकरिनालनीचेसहडूं॥ जत
नजतनमनेकरावौंकरिपीवधुटाऊं फिरनहीजाव
नघूं॥ चरनदाससुषदेवतावैनिजमननहीकरलूं॥
१५२ रागसोरठ तूसदासुहागनजारीहे पियकेसंगमिलीमधपीवै
तानैलागतप्यारीहे भंवरगुफामैभंवनबनायोबिनघिवजोतीजारी
हे सुषमनसेजमहासुषदाईभोगतभोगउलारीहे बसिकियोकंथा
चलैनपंप्याटौंनाडारेभारीहे आठपहरतुम्हरेरंगराचोहमदूंमिलैन
न्यारीहे पतिमनमांनीसोवटरानासोईरूपउज्यारीहे हमचारौजोसो
तितुम्हारीतुमगुरुज्ञामैहारीहे चरनहीदासमईतोहिसेवैंलागरहैं
नितन्यारीहे सुषदेवासिरछत्रहमारोसोबसभयोतुम्हारीहे १५३
रागबिलावल करनीकीगतिऔरहैकथनीकीऔरै बिनकरनीकथ
नाकथैबकवादीबौरे करनीबिनकथनाइसीज्यौंससिबिनरजनी बि
नसस्तरजैसौसूरमांभूषनबिनसजनी ज्योंपंडितकथिकथिजलैबैरा
गमुनावै आपकुटंबकेफंधपडेनांहीसुरझावैं बांझझुलावैपालनाबाल

कनहीमोहो बस्तबिहूंनांजानियैंजसोकरनीनांहो बकुडिंभीकरनाबिनां
कथिकथिकरिभूपे सतौंकथकरनीकराहरिकाममझाऐ कहैगुरुसुषदेव
जोचरनदासबिचारो करनारहनाडिढगहोपोथीकथनाडारो १५४ हेली
पांचसषीलैलार हेलीकायागमहलपगधारियै जोगजुगतिडोलाकरोरीअरी
हेलीप्रांनकहार कुंजकुंजसबदेषियैरीहेलीनांनांबागबहार मांनस
रोवरन्हाइयैसदाबंसतनिहार बिनांसीपमोतीबेनैंरीहेलीबिनागुंदफूल
नहार बिंनदामिनचमकारहैबिनसूरजउजायार अनहदउतबजे म
बीजैरीअरहेलीअचरजबहुतकष्याल तेजपुंजकीसेजपैकागाहे
हिमराल श्रीसुषदेवकृपाकरैरीअरीहेलीजबयहपावैभेद चरनदास
पियसूंमिलैंछुटैजगतकेषेद १५५ हेली जोगजुगतिकरहूहेलीजोचा ले
हैहरिसूंमिला आसनसंजमसाधकेरीअरीहेलीगगानमंडलकरिगेह
उलटीदिष्टचढाइयैरीअरीहेलीहोयसूरजपरगास कंमनमेंसबहीज
हैसहजछुटैजगआस प्रांनअपानमिलायकेरीअरीहेलीमूलबंधकूंबां
ध रसनाउलटलगाइयैसुरतिउरधकूंसाध बंकसुधारसपीजियैरीअरी
हेलीअनहदहोगलैतान भंवरफाटिढबैठिकै सुन्नसिषरकोध्या ग
न सुषमनमारगहोचालोरीअरीहेलीजबपुहचौनिजधाम अचल
सिंघासनबैसतहैजहांबिराजैरांम यहसाधनसुषदेवकीरीअरीहेलीजो
कोईजांनैसाध चरनदासअगिातहैदेषैषेलअगाध १५६ अथबैराग
कांअंगारगमालि चलाचलीजगबाटअचलहरिनांमहै मालमुलषचल
जायरजधामहै तेलफुलेललगायबहुतसुंदरगए नांनांकरभोगसोभीनर
नांरहै तेजतमकअौररूपजायजोबनघनां सकलबरातीजांहिंजायइलहन

वनां रोगीरोगा॥ आनवैदजांय औषधनलें जोतगपुस्तगइटविन
सरजेहोमिलें ज्ञानीपंडितपीरअधिकवेवसगाले गौसकुतबअव
दालपैगंबरसबचले एकैपीछैएकनहीरलगीचली नरपतिसुरप
तिजांहिअंतराहीगली रिषमुनिदेवतासिधजोगीस्वरजांहिगो जिनवसा।
कीनीमौनसोभीनररहांहिगो पांचतत्तगुनतीननहींठहरांहिगो स्वर्ग
मृत्यपातालसभीरलजांहिगो धरतीअंबरजायजायससिभांनहैं चरन
दाससुषदेवदयालियोजांनहै १५७।रागमंगल रहैरामकानामज
पैसोभीरहे वेदपुराननमांहिसाषयौंहीकहै जनममरनननहीहोय
नजौंनीआवई सतसिंघासनवैठअमरपुरपांवई जमजालभैकेटुट
भरमछुटजांहिगो लषचौरासीवंधसभीकटजांहिगो नोगमहलगोनदेह
गेहआनंदरहै डांकनसरपनसिंघभूतनांहीदहै साधसंगतगुरसेव
आयघरमैवमैवसैं कलकादियैलिलारजुकंडसोहनी नोविसलहन
धारसहजजीतैमनी ऊंचीपदवीहोयजगतसबपगलगै दुषजलेमा।
नमांहिदुरहीसोंतकै पापनजैंमुषदषदरसकोईकरै मक्तिपरापतनाहि
सुचरनोंआपरैं कहैगुरूसुषदेवचरनहीदाससूं सवमंतरसिरमोरसु
मरहरिनामकूं १५८।रागकाफी क्यादिषलावैंज्ञांनयहदकुबधिर
नरहैगा दारासुतअरूमालमुलककाकहाकरैअभिमांन रावनकुं।
भकरनहिरनाकुसराजाकरनसमांन अर्जुननकुलभीमसेजोधामां
टीफुयेनिदांन छिनछिनछिननतेरोतनछीजतहैसुनमूरषअज्ञांन।।
फिरपछतायेंकहाहोयगोजवजमघेरैआंन विनसेंजलपलगविसारि
तारसकलसिरकीहांन आजहूंचेतहेतकरिहरिसंताहीकीपहचा
ननोधानक्तिसाधकीसंगतप्रेमसहितकरिध्यांन चरनदाससुषदे

वसुमरलेजोचाहैकल्यान १५६ रामनामचिंतलावअरूसबसोगनिवा
रो सकलविकलसबमनकेटारोनिहचैकरियोग्राव तीरथबरतसमा
फलदेहै। रामनामतुलनांहिपारथांवनमुकतकरावन। समझदेषमनमांही। यहोय
डावोभेदनपावोकुछवनत्यागेहाथ॥ अरथविचारोतौतुमजानौकैसंतन
केसाथ। उमरगुंवावैतुछस्वादनमैंकरिपाचनसंजोग। अंतकालदुषहो
हियनेहीतनमनपलटैरोग। लोकपरलोकमहासुषपावैजोसुमरैंहरि
नाम। चरनदाससुषदेवकहतहैंहोवैपूरनकाम १६०॥ रागमालसि
री॥ फिरनहीरहनांहैआषरमौतनिदांन देषतदेषतबहुतकबिनसे
आवतनुम्हरीबार जतनकरेकोईनांनाबिधकेबचेनहींनरनार वै
जोगेस्वरबसकरिमौतीजडदिएबजरकिवाड होवैढेउसमरनांनाहीमा
टीगएदाड कितगएरावनकुंभकरनसेहिंनांकुससिसपाल संकर
दियोहोअमरबरजिनकुंसोभीपायेकाल पूरनबरननकाचकारेढब
कालगैबिलजाय आजमोरोकैकोटबरसकूंअंतनहींठहराय बातनअ
वधबलावाआवैछोडजगतकाआस गुरसुषदेवचितावैतोकूंसमझचर
नहीदास १६१ रागमालसिरी छिनभंगाकलरूपयहतनकैसारे जाकूं
मौतलगावहुविधसूंनांनांसंगलेबांन बिबअरूसस्तररोगबहुतहैंऔ
रविघनबहुतान निहचैबिनसैबचैनकौंहीजतनकियैंबहुतेनगिर
हनक्षत्रदेवमनायें साधेंप्रानअपांन अवरजजीवनमरवोसोचोयह
औसरफिरनांहिपिछलेदिनठगियनसंगखोएरहेसोयौंहीजांहि जोप
लहैसोहरिकूंसुमरोसाधसंगतगुरसेव चरनदाससुषदेवबतावैंपर
मपुरातममेव १६२ रागमालसिरी वादिनकीसुधराषिसोइदिनआवे

है जबजम [illegible] इतनुतावनआवै चलचलचलकहै भारी एकघडीकोईरषन
सकैकोपारेरू तैंप्यारी बिछुरैमातपितासुतबंधूबिछुरैकामनंकंथ जोबिछु
रै सोबहूरन मिलहैं जोजुगजांहिअनंत रामसंगातीनेंकन बिछुरैताहिसंभारत
नाही ॥ आपनीकायासोऊनआपनीसमझदेषमनमांही चरनदाससुषदेवचिता
वैछाडोजगाउरझेरा १६३ रागमालसिरी जानैकोईसंतसुजानयहजगसुपनांहै
सुपनकुटंबीआपामानैं सुपनवैरागीहै सुपनैलैंनासुपनैदेनांसुपनैनिर्भैभै सुपनैं
राजाराजकरतहै सुपनैंजोगीजोगा सुपनैंदुषयादुषचऊपावैसुषैनेभोगीभोगा सुपनैं
सूतारनभैडूबैंसुपनैदानादांन सुपनैंपियसंगपाव[illegible]कजरियासुपनैमानअपमान सु
पनैंज्ञानीगुरगमजागोअपनांरूपनिहार अज्ञानीसोवतसुपनैंमैंडसेअविद्या
नार चरनदाससुषदेवचितावैं सुपनांसोसबजगवत्रचरजसमझअगाधपरानी
मैंनगहेरागहिसू१६४ रागललित यहसबजानीझूठाठाठचेतसवेरे चालो
बाट जगसरायमैकहाभुलानैं मठीयारीकेमोहलुभानैं तुजकूंतोबडू
कोसनजानैं करिहिसावबनियेकीहाट कुटंबमित्रकोईहितूननेरा आप
नेंस्वारथहाकूंघेरा हांनहितेरानिहचलडेरा उठियेजूजैबेगउचाट चलनैं
कीततबीरनकीनैं पोटीरादेथाहनहीचानैं माजलौंकीषरचीनहिलीनी
गाफिलसोवतअजहूंघाट मघमांहीठगबागलगाए बडूतमुसाफरजिम
वरचाए असउनकूंबिषलाडूष्याए मारलिएस्वादनकेघाट सावधान
कोईहाथनआए बचकरिचलेसानिर्भैहोए उनकेछलकेपेचनषाए
मैंकनलागतिनकीओट मनचंचलकाघोडाकीजै ध्यानलगामसताहि
मुषदजै तेअसवारराहगहलीजै मैंसागरकाचौडफाट चरनदाससु
षदेवचितावैं आपनांजानैतोसमझावै १६५ रागआसावरी गुरमुषय

हजगाफ़ठलषाया साधसंतऔरबेदकहतहैं औरपुरानबगाया मृग
तिस्नांकेनीरमुलानां सीपीरूपाजांनां फरकसिलापरपीकपडीहै।
मूरषलाललुभानां सुपनेमैंसबठाठठटोहै कुलनांतेपरवारा दिष्टषु
लीजबसबहीनासेरहोनहीआकारा तातैंचेतभजनकरिहरिकोहंा
मतमनकंपागो वाधरगयेबहुरनहिंआवै आवागवननलागो या
सुपनेमैंलागयहीहैचरनदाससुषभाषो जोगेस्वरजापदमिलरहियो
तुरियाहितचितराषो १६६ रागबरवा पातनकोकहाजरबकरतहै औ
लाज्यौंगलजावैरे जैसेंबासजबज्यौंकाचकोठबकलगैबिगसावैरे क्रू
ठकपटसरूलबकरिकैषोटेकमैकमावैरे बाजीगरकेबांदरकीज्यौंनां
चतनांहिलजावैरे जबलौंतेरादेहपराक्रमतबलौंसबनसुहावैरे माय
कहैमेरापूतसपूतानारीउकमचलावैरे पलपलपलपलपलटैकायाछि
नछिनमांहिघटावैरे बालकतरनहोयफिरबूढाबिरधअवस्थाआवैरे
तेलफुलेलसुगंधउबटनांअंबरचतरलगावैरे नांनांबिधसौंपिंडसवा
रैजरबरधूरसमावैरे बैदहकीमकरैंबहुऔषधपंडितजापसुनावैरे
कोटजतनसोंबचैनक्योंहीदेबादेवमनावैरे जिनकूंकूपनौकरिजानैं
दुषमैंपासनआवैरे कोईजिडकैकोइग्यानबतावैकोईनांकचढावैरे यह
गतिदेषकुटंबअपनेंकाईनमैंमतउरजावैरे जबहीजमसोंपालापरिहै
कोईनांहिछुटावैरे औसरषोवैपरकेकाजैंअपनौमूलगंवावैरे बिनहरि
नामनहींछुटकारोबेदपुरानबतावैरे चेतनरूपबसैघटअंतरभरम
भूलबिसरावैरे जोटुकहूंटषोजकरिदेषैआपनहींमेंपावैरे जोयाहैचौ
रासीछुटैआवागवननसावैरे चरनदाससुषदेवकहतहैसतगसंगतम

नलावैरे १९७ रागबरवा तनकातनकमनरोसानांहीकाहेकरनगु
मानांरे ठाकरलगैनेंककहूंचलतें करिहैंप्रानपयानारे ऐंठअकड़
सबछांडबावरेतेजतमककहूतरानारे रंचकजीवनजगतमेंचेनोछिन
मांहीसरजांनारे मैंमैंमैंमैंकैयोंकरताहैमायामांहिलुभानारे बहुपरवा
रदेषकरिभूलामूरषमुगधअयानारे टेढोचलैमरोडतमूंछैंविषैबास
लिपटानारे आपनकूंऊंचाकरिजानैमांतोमधअभिमानारे पीरफकी
रऔलियाजोगारहैनराजारानारे धरनअकाससूरससिनासैंतेस
कोउनमानारे ठाढेघातकरैसिरपैजमताहैतीरकमानारे पलकपैं
डपैतककरिमारैकालअचानकबानारे स्वासनिकसफटआंषजांहिज
बकायाजरैनिदानारे ताकूंबांधनरककूलैजैहैंकीरहैंअगनतपानारे भ
जहूंचेतसीषलैगुरकीकरलेठौरठिकानारे अमरनगरपहचानसिदो
सातबनहीआवनजानारे हरिकीभक्तिसाधकीसंगतयहमतवेदपुरा
नारे चरनदाससुषदेवकहतहैं परमपुरातमजानारे १९८ रागसोरठ
यहतनबालूकासाडेरा जैसेंदामिनदमकचमककोछिननहिंरहनउ
जेरा मेडीमंडपमुलकषजानैंअरुपरवारघनेरा सोसबकोतिगसा
दीषतहैरानसेभारसवेरा गजघोडाऔरचाकरचेराआपरकोईन
तेरा जिनकेकारनभरमतडोलैकरतामेरामेरा थोडेसेजीवनकै
काजैबहुतैंकरतबषेरा कालबलीकीषबरनहींजबकरिहैअचा
नकघेरा कहैंसुषदेवसमझनरमौंदूछांडविषैउरकेरा चरनदास
हरिनामभजनबिनकैसेंहोयनबेरा १९९ रागसोरठ दमकानहीं
भरोसारेकरलेचलनेंकासामांन तनपिंजरेसैंनिकसजायगोपल

श्वे॰
मैंयंबीघूंनचलेतैंफिरतैसोवतजागतकरतघांनपांनाछिनछिनछिन
श्रावघटतहैदेहोतदेहकीहांन मालमुलकघर सुखसंपतमैंकेग्रो हूंवाग
तांतांन देषतदेषतबिनसजाय गमनकरमांनगुमांन कोईरहननपा
वैजगमेंहहूनितचैजान अजहूंसमझछाडकुटलाईमूरषनरअग्यांन
हेरचिनावैग्यांनबनानैगानावेदपुरांन चरनदाससुषदेवकहतहैंरामना
मउरग्यांन १७० रागकाफी यहबोलनाकितगयाकायानगरीतजकै दस
दरवाजे। ज्योंकेत्योंहीकौंनराहगयामनजकै सूंनादेसगांवभयासूंनासूंनेघर
केबासी रूपरंगकछुश्रौरैहूवादेहीभईउदासी साजनथेसोइरजनहुए त
नकूंबांधनकोरां चितासोवारलिटाकरितामैऊपरधराश्रंगारां देहगया
महलचहलसीतामैश्रामैरलमिलगयांमाटीमांही पुत्रकलत्रभाईबंदा
सबहीनेकजलांडी देषतहीकोनांताजगमैंमरेसगानकोई चरन
दाससुकदेवकहतहैंहरिबिनमुक्तनहोई॥ १७१॥ रागकाफी॥
मनजोरेभाईलोगोसमजोरे हमकहतपुकारें अरेहांनाहीरहनाकरनाथे
तपयांनां मोहकुटंबकेश्रौसरषोयोहरिकीसुधबिसराई दिनधंधेमैरैनना
दमैंश्रैसेंश्रावगंवाई श्राठपहरकीसाठघडियां सोतैबिरथायोई छिनइ
कहरिकोनांवनलीनोंकुसकहांतैंहोई बालकपाजवबेलनडोलानरन
भयामधमांता बिरधभयेचिताश्रतिउपजी दुषमैंकछुनसुहाता भूला
कहांचेतररमूरषकालघरोसरसांधे बिषकोलारथैचकरिमारैग्रायअचा
नकबांधे भूठेजगसूंनेहछोडकैसांचोनांमउचारो चरनदाससुषदेवक
हतहैंश्रपनांभलाबिचारो १७२ रागझंझोटी समझैनहीमायाकामतवार
भूलरहोधनधामकुटंबमैहरिगुरदियोबिसार पावडकोनलापथोगुनसंपू

७५ जोरचिविकार कामकेदामक्रोधयैलीधरबैठाहाटपसार कलकोटेविव
कपटरूपइग्यानिरखतोलनिरधार कमीदेरवैडिनकोकरिकेगिनगिन
धरतसुधार सुमरासालाऔरजमाईतिनसूंराखेप्यार साधसंतकूंकूणजा
नैंगीदांगोरुगंवार कहांलायाकहांलैनिकसैगाखवनैजायविचार कोई
देमखेवरजदेखतमासा छिनइकरामसंभार जरदेहीहैलालखमोलक
ताकीलखीनसार अंतसमैजैोंहासौंन्यारीदेउकरचालेगार यहजगसु
पनोंजोनबावरेआपरजमसंसार भुगतेकष्टजहांदुखपावैसोजावनदि
कार आवतकालअचानकनोपैकहैंसुखदेवपुकार चरनदासअबराम
सुमरलेजोंतरहोयहैपार १७३ रागनटबिलावल अरेनरयपनीला
नविचार स्वांसघटजानोघटतसदाहीताकूंवेगसंभार जोरजायसोबहु
रनआवै चरचैलाधनजारचैसोरतनअमोलकहीरावकरसूंमतडारस
तसंगतमैंहितचितराखोदुष्टनसंगनिवार मायाजालअरुसुरतकुटेव
कीताकूंमनसूंबिसार कामक्रोधअरुमोहलोभसेपरबडेबिकार ज्ञा
नखडगनअंतरपरजारोतासैंइनकूंजोर बिषैबासनांइंहिनकेसुखबूड
रहौसंसार चरनदासकूंकृचढाकेसुखदेवलियोउबार १७४ रागकेदारा
रेनरबैठोगंवावैजनम आवतैसीजायबीतोनांहिजानैमरमजनमपाहरि
भजनकरलेदेहकोयहीधरम लोकअरुपरलोकसुधरैरहैतेरीसरम
भक्तिसमकछुनांहिदीखैजोगजगतपकरम ज्ञांनधरमबिचारत्यागोभे
दरखोयेधरम।चरनदाससंतसंगतमिलकरिआवहरिकीसरन रांमसुखदा
ईसुमरलैवहीतारनतरन।१७५॥रागसोरठ॥ अरेनरअफलजनमतखोरे
मोलेलीकोबैलफिरतहैनिसदिनकोलूधोरे भक्तिबिहूनेंयरहेआएदे

वतबोझारोडेसांजानयैंवाकूंवाकोपतिकूडेऊपरछोडे नरमतनरमतम
मुषमएहोऊंचेआयचढोरे लषचौरासीजून भुततकरफिरतामैंनपरो
रे अबकैचूकैंबहुपछतैहोमानबचनतूमोरे चरनदाससुषदेवकहत
हैंहरिपदसुरतधरोरे १७६ रागबिलावल रेनरजनममनुषपायारे बा
तामेंबधकालजबआयासीसपकडकरिलेयारे अबक्याहोयकहाबनिआ
वैमांहिंअबिद्यासोयारे। साधसंगतगुरसेवनचीन्ही।तत्वज्ञाननहिंजोयारे॥
आगूसैंहरिभक्तिनकीनीरसनांरांमनगायारे चौरासीजमडंडनछूटेआवाग
वनकादोयारे। जोकछुकीयासोईअबपायाबांहीलरागोबोयारे साहिबसोचान्या
वपुकावे जैसाकायोंहीहोयारे कलपुकारैंसबसुनिलोजोवेतजावनरलोया
रे कहैंसुषदेवचरनहींदासायहमैंदीनपदगोयारे १७७ रागसारंगबानेट
बाधन्यासिरी नटज्योंनाचगएकितनैं दानासूरसतीसिधसाधकरावरं
कजितनैं रावनकुंभकरनसेजोधाबहुतककौंनगिनैं बहुतकइंद्रकछन
राजाकारनपेपूजतलोगजिन्हैं बहुतकभोगनानाविधसूंकरतेभोगवि
लास बहुतकतपसीबनकेबासीतनपरउपजीघास बहुतकरिषमुनि
ऊबोसासेदेतेअडिगसरूप बहुतकज्ञानीहरिसेवैठेकहतेआपकाआप
हमकैंयाजगजोचनआयेयहनहींअबलोदेस चरनदाससुषदेवदया
संकिरनहींवाकूंमेस १७८ रागसारंगबानटबाधन्यासिरी नटज्योंबा
वहीनाचगए तिनतिनभेषधरेंजगमांहींसोसोनाहिंरहे बहुतनस्वां
गधरेराजाकोबहुतकरंकभए बहुतकरूपकरनसेरूपेकोवनदे
नहुये बहुतकस्वांगसहीकेआयेहोगएजगनमये बहुतकचुडनमु
डनजोगीगुफाबनायछपे भीषमऔरद्रोणआचारजसेसूरावहुतथपे र

९६ नसूंपीठदईनहींकबहूंसनमुषबांनलपै बहुतजनासिधहोबैठेलोग
नचरनगहे बहुतककामीचतुरसयानैं कामनुतासबहै उतममध्य
मकाछकछेहैनांनंस्वागमचे चरनदाससुषदेवदयं संप्रेमीहोयनचे
१७९ रागसारंग दुनियांमगननरधनधाम लालचमोहकुटंबकेपागे
बिसरगएहरिनाम इकघडीछुटकारोनांहींबंधरदेष्याठौजाम पांचपह
रधंधेमैंमातेतीनपहरसंगबाम फलेफिरतमहागरबाएँबोलनमरेएचा
म दीपकलसजैयोंबिनसजायगेसतनकोपहीकाम साधसंगनगुरसे
वनकीनी सुमरेनांसारीराम चरनदाससुषदेवकहतहैकैसेंपावैठा
म १८० रागकाफी कोईदिनजीवैतौकरगुजारान कहेरगहराछाडदिवा
नैमजोचेकसकीबांन चुगलीचारीपरत्रियमिथ्या झूठकपटअरकान
दुनकूंडारगहोजतसतकूं सोईअधिकसयांन हरिहरिसुमरैछिननहिं
बिसरै गुरसेवामनठांन साधनकीसंगतकरिनिसदिनपावैनांकुछहा
न मुडोकुमारगचलोसुमारगपावैनिजपुरबास गुरसुषदेवविचिता
वैलोकूंसमझचरनहीदास १८१ रागकाफी एतेपरक्योंजगसगरूर छिन
भंगीयहतनबहुरोगीजरबरहोयहैधूर मृतमरेअधलेबांकीगतसबहूमूब
डसहैघर छैलबिकनियामायामधमैंमातावकमाचूर कामक्रोधकेग्रास
रबांधेभरहाभरपूर गुरकोज्ञानममनमैंप्याईअैसाहैयेबुर करअभिमांन
ज्यामसपचमानै हरिकूजानैदूर चरनदाससुषदेवबतावैसांईसदाहजूर
१८२ रागबिलावल रामनामसेकोबिसरायासीषोकपटरूपछलबलबहु
कामक्रोधमोहलोभलाया चारदिनांकाजगतसंचभा फूलेसुषमेंकहालु
भाया छिनइकसतसंगतनहींकीनी जनमअकारथषोपबहायाबादविवा

दस्वादकूंचोकस बिषैबासरसमैंलिपटाया दयाधर्मीहिरदेसूं
मूलापरानिंदयाहिंसाकूंधाया चौरासीलषभूंननगतकरिम
नुषसरूपम्यागसैंपाया लाह्याकछूनकीयाहासिलयोंहींउल
टामूलगंवाया श्रीसुषदेवपुकारचितावैं समझतनांकेतो रामरांम
समझाया चरनदासकलजुगकेनांहीहरिगुनगावनसारषु
नाया १०३ रागबिलावल नांहीरेकोईहरिबिनतेरो यहजगजं
लमहाउषदाई तामैंहैएकरैंनबसेरो आनफस्यामायाकेफंधन
मोहममतकीनैंउरझेरो स्वकरूकूटकारोनांहींबिषैस्वादष्यांचैं
नैंघेरो साधसंतसूंनेहनराषैदारासुतसंपतकौंचेरो अंतकालबडु
तैपछितैहैजबमारैजमआपथपेरो घरकेकारनघरघरडोलै पर
काजैंपचमरतघनेरो जोरतदामबामबसहोयकैकामक्रोधसूंहित
बडुनेरो जोचाहैतूनलोआपनैं तौह्यांसैकरिबेगनबेरो चरनदा
ससुषदेवकहतहैंछाडदेहसबबिषैबषेरो १०४ रागधनासिरी
आपनांहरिबिनऔरनकोई मातपितासुतबंधुकुटंबसबस्वारथ
हीकेहोई याकायाकूंभोगबहुतदेमरदनकरिकरधोई सोबीछूटत
नैकनकसकोसंगनचालीवोई घरकीनारबहुतहीप्यारी तिनमैं
नांहीसोई जीवतकहतीसाथचलूंगीडरपनलागीसोई जोकछियैय
हदेरवआपनैंजिनउजलमनधोई आवतकष्टरषतरषवारीचत
तप्रानलेजाई इसजगमैंकोईहितूनदीषैमैंसमझाऊंतोई चर
नदाससुषदेवकहैंयौंसुनलीजैनरलोई १०५ रागकाफेरा हरि
बिनकौंनतुम्हारोमीता कुंटंबसंगातीस्वार्थलागेतेरीकरूंकैंन

१९९ हिंचीनातैं प्रभु औरासं सुषमोड़ा झूठे लोगनसूं हित कीना आरु
मैं आपनी आंषों देषा कई बार दुष सुष होबीना संपत मैं सब ही धि
र आवैं बिपत पड़ैं आधि कोउ दुष दीना मूंठी बांध जनम नर लायो ।
हाथ पसार चले गोरीना घरि घरि स्वांग फिरे तिन कारन कपि ज्यौं नां
च न नाता धीना मुयें न संगी होंहि तुम्हारे बांध जलावैं देहें पलीता
गुरु सेवा सत संगन कीनी कनक कामनी संकरि प्रीना चरनदास
सुषदेव कहत हैं मरत मरत हरि नाम न लीना १९६ राग राम कली
धन धन वे नर हरि सिरनाए और पसु नस्संस बही नी चे परमारथ के
काम न आए आचर जनम न षा देही दुरलभ बड भागन संपाई नीनों
पन मैं नांहि संभारी झूठे धंधे यौं ही गवांई बालपनां षेलन मैं षोया त
रन भया संग नारी बूढा भयो कुटंब के संसे पावत है अति ही दुष
भारी जिन कारन तैं पाप कमाये सा नहिं चल है लारी तेरे ही सिर
आन पडैगा जै हो अकेले नरक मंझारी गरभ माहि तैं बचन कि
ये पे करि हूं भक्ति तुम्हारी ह्यां आवै कुछ औरे कीना प्रभु सें झूठा
हुवा अनारी हो सांचा अजहूं सु हो सांचा अजहूं सुमरन करि
हो हि दयाल मुरारी चरनदास सुषदेव कहत हैं आगे हू षपत
कि पैमो पारी २०१ राग राम कलि फिट फिट मूरष जनम गंवा
वो हरि की भक्ति साधकी संगत गुरु के चरनन मैं नहि आयो धन
के जोरन को दिढ की नौमहल बरन बृतधारो टेक पकड करि नारी
ले ई सिर पे बोझ लियो अतिभारो द्वैं हैं दुष नां नां बिध के रतन
मन रोग बढायो जीवत मरत नहीं सुष पैहो आवागमन को

नक्रोधकोकंपाषायोमयोअधानसबनको पांचपहरधंधेमेंषोएनामन
लेतनजनको तीनपहरनारीसंगमातेमानतसुषदिनको आपनकूं
ऊंचोकरिजानेंकरअभिमानबरनको संतसंगतकेनिकटनआवेंजोहेठाठ
तिरनको जमकिंकरजबआनगहेंगेतबनांवारचरनदो गुरसुषदेवस
हायकरेंगेआसरोदासचरनको १६४ रागकेदारा सोमेरोवोहोमानरे
भाई ज्ञानगुरकोराषहिपमेंबंधकटजाई बालपनतेंषेलषोयोगईतरु
नाई जिनकेकारनबिमुषहरितेंफिरतभटकाई कुटंबसबहासुषदेतो
नातेरेदुषदाई साधपदवीधारनाधरिकेछाडेकुंटलाई बासनांतजभोगज
गकेहोयमुकताईबहुरजोंनीनाहिंआवेपरमपदपाई चरनदासुषदेव
केचिरआनंदअधिकाई १६५ रागकेदाराबासोरठ भाईऐसेबषवीतोजा
तजेजलोजलत घटतजेसेंतारेजेंपरभात त्योंसपूंजीगाठतेरेसोघटतदिन
रात साधसंगतपैंठलागीलेलतैजोईहाथ बडोसोदाहरिसेंमारोसुमरलो
जेप्रात कामक्रोधदलालठगियावनजमतइनसाथ लोभमोहबजाजठ
गियारुगेहैंतेरीघात शब्दगुरकोराषहिरदेतेदमानहिघात आपनाच
तुराईबुधधरिमतकिरैइतरात चरनदाससुषदेवचरननपरसतजकु
लजात १६६ रागसोरठ भाईरेसुपनयहसंसार देहसुपनोजनम
सुपनांसूपनकुलब्यौहार मायसुपनोबापसुपनोसुपनसंततग्रेहना
र लाजसुपनोजातसुपनोसुपनअस्तुतिगार जोगसुपनोभोगसुपने॰
कियावेदनिषेद सुपनसोजोहोयमिटहैसुपनसुषअरुषद बंधसुपनो
मुक्तिसुपनोसुपनज्ञाबिचार सुपनहैसोछिनसजैहैरहैगोततसार च
रनदासुसुपनोब्रह्मसांचोएकरसनितजान सत्यसुपनोझूठसुपनोक

११८ हाकहूनिबोान १८७ रागसोरठ माईरेनजौजगजंजाल संगनेरेनो
हिंचालैंमहलबाहनमाल मानपितासुतग्रौरनारीबालमीठेबेनडार
कांसीमोहकीलाहिठगतहैंदिनरैंन छलधनूरादियोसबमिललाजनो
डूमांहि जोंनयपनेंकहामुलानैंनेनलाकौंनांहिं ० बाजग्रैसैबिडीउ
परभंवनलोपछाल मारेमाहिसेबलोगेजमसरबेसाल लहासंगोहरि
बिसारेजननदीनेंहार चरनदासमुषदेवकहियासमजमूढगवा
र १८८ रागसोरठ माईरेसमजजगब्योहार जबनाईनेरेधनपरमक
मकरैंसबहीप्यार यपनेसुषकूंसबहीचाहैंमित्रसुतग्ररूनार इन्हों
नौंग्रपबसकियोहैमोहबेडीडार समजनेलोकूंमैदिषायोलाजलकुटीमा
र बाजीगरकेबादरजैंपांकिरनचारपरधार जबैनेकूंबिलसोछेजरा
केरषिकार तबैनोसूलाजमानेकरैनेनेरासार इनकोसंगतसदाड
बहैमन जमूढगवार हरिग्रालमकूंसुनरलेकहैंचरनदासपुकार १८९
रागबिहागरा रसबग्रपनेस्वारथकेगरजी जगमैंहैननकोजैकाह
सूंग्रपलेमनकूंबरजी तैयैकंदघालबडाडैरेंइनलैंमडरजी हिरदैक
दरबाहरमिठबालैपरहछल है गोकंतजो सौंगदघायरगूठ्यकुबोलैं
नौसागरकेसोंतिरजी उबमुषदरददयानलिंबूमैंइनसंकुटाजोहरि
जो बैरीमिलरचुनिचुनिदेवे दिलकेमहरमकरजी इनकूंदोसवाते
कहिदीजे यहकलजुगकीमरजी उंनियामगतकुंलबउाषोटीदेषिको
तामेरोलरजी चरनदासइनकूंतजदीजैचलबसग्रपनेंघरजी २००
रागग्रासावरी साधारामनजैनेसुषिया राजापरजानेंमोदानासबहो

ष
देखेदुष्या जोकोईधनवंतजगतमेंराषतलाषहजारा उनकूंतौसंसाहैनिस
दिनघटतनबढतब्यौहारा विज्ञिनकेबडसुतचाकीनीकहियैऔरकुंटबपरवा
रा वैतौजीवनमरनकेकाजें भरतरहतदुषभारा नेंमीनेंमकरतदुषपावैक
रिअसनानसवेरा सताकूंदेखेकोइयहैजबमंगातौनेंघेरा चारबरनमैंकोऊ
नदेख्याजाकूंचिंतानांही हरिकीभक्तिबिनांसबदुषहैतमझदेषमनमांही
सतसंगतनऊहरिसुमरनकरिसुषदेवागुरकही या चरनदासबिपतासबतं
जिकैआनंदमेंनितरहिया २०१ रागसारंग नररामभजैंसुषपायहै दुष
जाजैंअरुपातिगनासैजौंरानिकरनआयहै चेतसबेरैंकहूंपुकारेंनांत
नरतपछतायहै जगतठाठसबद्यांकोसो नासंगनकोईजायहै बिनगो
पालतुम्हारोकोहेहमकूंदेहुबतायहै पकडबांधिजममारनलागेंजबको
होयसहायहै देषबिचारसमझमनमांहीतोबुद्धजोअधिकायहै तोतूंआ
वतलटहरिसौंहीचालौजनमसिरायहै चरनदाससुषदेवकहतहैंअबयां
हीअधिकसयांनहै गुरकीसरनसाधकासंगतप्रभुकाकीजैध्यांनहै २०२
रागभैरौ चेतौरेनरकरौबिचार छलरूपीहैयहसंसार सुपनांमातपितासु
तबंधसुपनांहैसबहीसनबंध देषैकहैसुनैसोसुपनां यांजगमैंनांहींको
ईअपनां सुपनांधरतीऔरअकासा सुपनांचंदसूरपरगासा सुपनांज।
लथलपावकपौन सुपनांजोगभोगअरुमौंन सुपनांमायाकाब्यौहार सु
पनांकुलनांतापरवार सुपनांदेसनांवऔरभेस सुपनांउतपतपरलैसेस।
सुपनांराजारानांराव सुपनैबानकबनांबनांव सुपनैलमरैमरैंअरुजागैं
सुपनैसोवैसुपनैजागैं सुपनाहैयहसबहीठाठ उठीपैंठजबमुंदगईहाट
जोकुछहैसोसबहीसुपनां सांचाहरिहरिहरिहरिजपनां कौंनकलाम
रषमस्तांन अजहूंसमझलेहगुरतांन गाफलतछाडभजोहरिनाम ।।

जो चाहै तूं निहाचल धाम ज्यौं सोवत सुपनैं दरसाय ज्यौं खुलै जब ही मिट
जाय ऐसैं ही सब सुपना जान अचल अखंड रहै भगवान सब ठां ब्रह्म
रह्या भरपूर नां कछु तिन निकट नहीं बहू दूर ओ कोई खोजै सोई पावै नेनद
रसीयह भेद बतावै गुर सुषदेव पुकार चितावैं झूठ सांच को न्याव चकावैं च
रनदास सब सुपना जांनैं सदा एक रस ब्रह्म पिछांन ॥२०२॥ राग मलार स
तगुर भौसागर डर भारी काम क्रोध मोह लोभ भंवर जित तर जतन नाव है
भारी तिष्णा लहर उठत दिन राती लागत झनिक कठोरा ममता पवन महा
धिक डरपावै कांपत है मन मोरा और मछ झड़ इ नानाविध के छिन छिन मैं ड
बपाऊं अंतर जामी बिनती सुनियें यह मैं अरज सुनाऊं गुर सुषदेव सहा
य करो अब धार जर हो लखकोइ चरनदास कूं पार उतारो सरन तुम्हारी सा
ई ॥२०४॥ राग बिलावल नकिन सीखो लीजो ऐले जीये अभिमानां दे दिन जग
मैं जावनां आषर मर जानां पाप पुन्य ले चालि तैं जम बैठ्या नां कहा हि
सावतु मैं देऊं गे जब जाय दिवानां मात पिता कोई कोंन ही बेगानां दर बज
हो पुत्र तैं नहीं मीत पिछानां एक सूं एक कहा होय गा ऐसा चलुलांनां कोफ
को चालै नहीं छुटैं इध खर पानां साहिब को करि रे धर्मी देसे यानां समझा
वै सुषदेव जी चरनदास ग्यानां ॥२०५॥ राग काफी ॥ घरी दो मैं मेलो बिछुरै सा मै
दैष तमासा चटपटा जो ह्या का सो कारि ऊपरै इक ठौर तिन सूं बहुरि न मिलनां
जैसें नाव नदी के ऊपर बाट बटेऊ आवैं मिल मिल जुदे होय पल मांह
आप आप कूं जावैं पावारी च फूल लय नेरे रंग सुगंध सुहावैं लागै खिलै केर
कुम्हलावें फेर हू दृष्टि न आवैं दारा सुत संपति को सुष ज्यौं भोर तारे सखि लावैं
ह्यां ई मिलै च रहयां ईनां सैं ताकूं कैंयो पछितावैं देक छलै कछु कर लै कर
नार है नी गहनां भारी हरि सूं नेह लगाव आपनौ सो तेरो हित कारी

बीजजमायो जरम जरम चौरासी आयो मनषा देही पाई ग्यान न की
कछु सार न जानी फिर आगे चौरासी आई आंष उघाड समझ मनमां
ही हिरदे करो बिचारा ऐसा जनम बहुर कब पैहौ बिरथा षोजगवो
हारा जानौं गे जब छाड चलैगो कोई न संग तुम्हारे चरनदास सुषदेव का
हत हैं ग्यान करो गे बचन हमारे १८८ रागबिहागरा रे नर हरि परताप न जा
नां तो कारन सब कुछ तिन कीनां सो करता न पिछानां जिंह प्रताप पे
री सुंदर काया हाथ पांव मुष नासा नैंन दिये जासं सब रस कै होय रहा पर गा
सा जिंह प्रताप नांनां बिध भोजन बस्तर भूषन धारै वाका नांहि नि
होरा मानै ताकूं नांहि संभारै जिंह प्रताप नूप भयो है भोग करै मनमा
नैं सुष ले वाकूं भूल गयो है करि करि बहु अभिमानें औधि की पार
करै मानासूं पल पल मैं सुध लेवै तो पीठ दिये है नित ही सुमरन देवो
किरतघो और नृण हरामी न्याव निसा पक नतेरै चरनदास सुषदेव क
हत हैं अजहूं चेत संवेरै १८९ रागबिहागरा और नर हरि का हेतनां
जीनां गर्भ मांहि जिन रिछ्या कीनी भोषा नैं कंदीनां जठर अगन सूंरा
षलियो है अंग अंग संपूरन कीनां बाहर आय बहुत सुष दीनो दूध सनबि नां
पेष्यायो दांत भयें भोजन बहु भांती हितसूं तो हि षुवायो और दियेबु
षनानां बिध के समझ देष मन मांही भूलो फिरत महा गरबायो तेरै कछु
जानत नांहीं तो कारन सब कुछ प्रभु कीनां ताकी नां जप कीजा ज
गबौ हारप गोही बोलै ते हि न आवै लाजा अजहूं चेत तउल टहरि सौं
ही जनम सुफल करि भाई चरनदास सुषदेव कहै यों सुमरन है सुषदा
ई १९०। रागकाफी गुमराई छाड दिवाने मेरष बावरे अतिदुरलभ नर दे

नरदेहनयागुरदेवसरनन्नआव जगजीवनहैनिसकोसुपनैांअप
नैांहांकोंनबनावरे तोहिपांचपचीसोनैघेरलियेलषचौरासीनरमा
वरेबीतगईसोबीतगईअजहूंमनकूंसमजावरे मोहलोभसंगागके
त्यागबिषैकामक्रोधकंधोयबहावरेसुष देवकहैंसबहीतजिकैमन
मोहनसंलौलावरे चरनदासपुकाररचितायदियोमतचूकैअौसोदा
व १८१ रागकाफी चलाआवैचलावैकाचौसकछूकरलेमाई।
ह्यांसैंचलनांहोयअचानकहीफिरपाछैरहैअफसोस पियकेबि
षकीमधवामतबामतवाराहोयरहाबेहोस बारमांहितौसूलबंबूल
घनेंऔरजानांहैकईकोस दमहीदमहीदमछीजतहै पलपलघटै
तनजोस मायामोहकुटंबकासुषअैसेजैसैदीषैमोतीओस सुषदे
वदियोकिरपाकरिकैरामरसकाप्यालानोस चरनदासकहैंयहीबा
तनलीसुनिलीजोदोनौंगोस १८२। रागसोरठ कछुतुमसुधरा
षोवादिनकी जादिनतेरीदेहछुटैगी ठोरबसैगीबनकी जिनके
संगबहुतसुषकरकै मुषटकितायहैंप्यारे अमकोत्रासहोंयब
कुनोंतीकौंनछुटावनहारे देहलैलौंतेरीनारचलैगीबडीपौल
लौंमाई मरघटलौंसबबारभतीजेहंसअकेलाजाई दरबगडे
अैसमहलषडेहोपूतरहैंघरमांही जिनकेकाजपचैदिनरातासो
संगचालतनांही देवपितरतेरेकामनआवैजिनकोसेवालावै
चरनदाससुषदेवकहतहैहरिबिनमुक्तनपावै १८३ रागसो
रठ मोकूंमैंअतिवाहीदिनकी जबयहपंछीमायालोभीत्यागै
पिंजरातनको सुतदाराकेमोहफसोहैलोभलगोहैधनको का

मक्रोधकोकयाबासपोञ्जाधीनरूबकौ पांचपहरधंधमैंषोएनामन
लैनभजनको तीनपहरनारीसौमातेमानतसुषइंदनको श्राय
नकौनचौकरिजानेकरिश्रमिमानबरनको सतसंगतकैनिकट
श्रावैजोहैगवतिरनको जमकिरजबश्रानगहैंगोतबनाधीरधरन
को गुरसुषदेषसहायकरैगोश्रासरोदासचरनको १५१ रागकेदा
रा सोमेरोकहोमानरेभाई ग्यानगुरकोराषहिएमैबंधकटजाई
बालपनतैषेलषोयोगाईतरुनाई हेतश्रजरूमस्तबरिहैजराश्रा
ई जिनकेकारनबिमुषहरितैफिरतनटकाई कुटंबसबढीसुष
केलोभीतेरेदुषदाई साधपदवीधारनाधरछाडकुटलाई बासना
तजभगजगकेहोएमुकताई बहुरजोनीनाहिश्रावैपरमपदपाई
चरनदाससुषदेवकेघरश्रानंदश्रधिकाई १५२ रागकेदारावासो
रेराग ॥ भाईश्रवधवीतीजाय स्वांसपूंजीगांठतेरे श्रंजलीजल
घटतजैसैतारेज्योंप्रभात स्वांसपूंजीगांठतेरे सोघटतदिनरैन सा
धसंगतपैठलागीलेलगौजोईहाथ बड्डोसोदाहरिसनारोसमर
लीजैप्रात कामक्रोधदलालठगिया बनजमसमतइनसाथ लोभ
मोहबजाजचुलिपालगोहैतेरीघात श्रीगुरकोराषहिरदैतोद्याम
हिषात श्रापनीचतुराइबुधपरमतफिरैइतरात चरनदाससुषदेवच
रननपरसतजकुलजात १५३ रागसोरठ भाईरेसुपनासुपनकुलबो
हार मायासुपनाबापसुपनासुपनसुतश्ररुनार लाजसुपनाजातसुपना
सुपनश्रस्तुतित्तिगार जोगसुपनाभोगसुपनाकियेवेदनिषेद सुपनरोजो
होयमिटहैसुपनासुषश्ररुषेद बंधसुपनामुक्तसुपनासुपनग्यानविचार
सुपनहैसोबिनसजैहैरहैगोततसार चरनदाससुपनाब्रह्मसाचोएक
रसनितजात सत्यसुक्लापूठसुपनाकहाकछ्निरबान १५४ रागसो

रठ भाईरेत जोजगजंजाल संगतेरे नाहिंचौबेंमहलबाहनमाल मा
तपितासुतऔरनारी बोलमीठेबैन डारफांसीमोहकीतोहिठगतहेदिन
रैन ॥ छलधनराढियोसबमिलनाजललाइमाहि जानआपनेकहाभूलातो
चेततानाक्योंनाहि बाजजैसेचिडीऊपरभवततैसोपरकाल मारतगहलेचले
गैलभूसरीयेसालतसदासंगीहरिबिसारोजनमरीनौहार चरनदाससुखदे
वकहियासमभजभूठागवार १९५ रागसोरठ भाईरेसमभजजगब्योहार
जवलाईतेरेधनपराकभकरेसबहीप्यार अपनेसुखकूंसबहीचाहेंमित्र
सुतअरुनार इन्हींतोआपबसकियाहैमोहबेडीडार सबनतोकैमैंदिवा
योलाजलकुटीमार बाजीगरकेबांदराज्योंफिरतघरघरधार नबैतोक
बिपतआवेजराकोरबिकार तबतोसलाजमानैकरेंनातेरीसार इनकी
संगतसदादुषहेसमभजभूठगवार हरिप्रीतभक्तसुमरनकरैहैचरनदास
पुकार १९६ रागबिहारा सबअपनेस्वारथकेगरजी जगमैंहैतनकी
जैकाहूसंअपनेमनकबरजी रोपेंफंदघातबहुडारैइनतेंतुंडरोजी हि
रदेकपटबाहरमिटबोलैपहहलेहैगोकहाजी सोगादेषाभजूवबहुबोलै
तौसागरकैसैतिरजी दुबसुषदरददरपानहिबूझै इनसुछुटाबौहरिजी वे
मितरचुनचुनदेयेदिलकेमहलभकरजी इनकूदोसकहाकहदीजैयहकत
भुगाकीभजरजी दुनियाआलकुटलनबहुघाटीदेषछातीमरीलतरजी चरन
दासइनकूतजदीजैचलबसुअपनेघररजी १९७ रागआसावरी साधोराम
भजैतेसुषपा राजापरजानेमीरातासबहटिबेडुषपा जोकोईधनबतज
गातमेराबतलाबहजारा तुनकेतोससाहेनिसदिनघटतबढतबोहारा
जिनकेबहुसुतनातीकहियेऔरकुटंबपरवारा वैतोजीवनमरनकेका
जैसेरतरहतदुषनारा नेमीनेमकरतदुषपावेकरिअस्नानसबेरा दाता
कूदेवेकुदुषहैजबमंगातौंनैघेरा चारबरनमेंकौनुनदेषाजाकूचिंताना
ही हरिकीभक्तबिनासबदुषहैसमभजदेषमनमाही सतसंगतअरुह
रिसुमरनकरिसुषरेवागुरुकहिया चरनदासबिपतासबतजकैआनंद

मेनित्तरहिया १८० रागसारंग ररामनजेसुषपायेहे दुषनाजेहैपात्त
गानांसेजैसोरानिकटन्ना पहे चेत्तसवेरैकरुपुकारैनात्तरतपछेताय
है जगत्तगठसबह्मांकीसोनासंगानकोईजापहे बिनगोपात्ततु
म्हारोकोहेहमकूदेलबत्तापहे पकडबांधजममारनलागेजबको
हापसहायहे दिषेबिचारसमरुमनमाहीतोबुधजोम्रधिकापहे
तोत्तम्रावनुलटहरिसोहीचात्तोजनमसिरापहे चरनदाससुषदेवक
हत्तहैम्रबपहीम्राधिसयांनहे गुरकीसरनसाधकीसंगात्तप्रभुकोकी
ध्यानहे १८८ रागभैरू चेतोरेनरकरोबिचार छलरूपीहैयहि
संसार सुपनाहैसबहीसनमध देषैकहैसुनेसोपना याजगमेंनाहीको
ईम्रपना सुपनाधरतीम्रोरम्रकासा सुपनाचंदसूरपरगासा सुपना
जलथलपावकपौन सुपनाजोगानोगम्रोरमौन सुपनामायाकाब्यो
हार सुपनाकुलनात्तापरवार सुपनादेसनावम्रोरुनेस सुपनांतुलप
तपरलेसेस सुपनाराजाराणाराव सुपनाबालकबनावनाव सुपनेल
गैमरैम्रोरुनागो सुपनेसोवैसुपनेंजागो सुपनाहैयहिसबहीगठ तुगी
पैठजबमुदाईहाट जोकुछहैसोसबहीसुपना साचाहरिहरिहरिहरि
जपना कोमुलामुरषम्रज्ञान म्रजरुसमरूलेहगुरज्ञान म्रफलतेछा
डमजोहरिनाम जोचाहेतूनिहचलधाम ज्योसोवत्तसुपनोदरसाप म्रा
षषुलेजबहीमिटजाप म्रेसेहिंसबसुपनोजान म्रचलम्रषडरहैभगा
वान सबुगब्रह्मरहाभरपूर नांम्रतिनिकटनहीबहुदूरजोकोइपा
वे सतगुरसुषदेवपुकारचितावें रूठ
नैसोइपावे तेतदरसीयहिभेदबतावे गुरसुषदेवपुकारचितावें
साचकोन्यावचुकावै चरनदाससबसुपनोजान सदाकरसब्रह्मपछान
२० रागमलार सतगुरजोसागारडरनारी कामक्रोधमोहलोभभंवर
जितलरजतनावहमारी लिपटालहरत्रश्नादिनरात्तीम्रागात्तम्रति
रूकझोरा ममतापवनम्रधिकडरपावेकांपत्तहैमनमोरा कैरमहा
डारनानाबिधकेछिनछिनमेंदुषपावे म्रंतरजामीबिनत्तीसुनियेयहि

सुपनेंकोअंग/चितावनी

मैंअरजसुनाऊं गुरसुषदेवमहापुकरोअबधीरजनरहीनकोई च
रनदासकूंपारउतारोसरनतुम्हारीसोई २०१ रागबिलावल ।अ
क्तिगारीबोलीजिंयेनजिंयेअभिमाना दोदिनजगमेंजीवनाअबर
मरजाना पापपुन्यलेचलिसैजमकेगथाना कहांहिसाबतुमदेऊ
गेजबजायदिवाना मातपिताकोईनानहीसबहीबेगाना दरबज
हांपुहचैनहीमीतपिछाना एकसरीकहीहोयगीकासाचतुलाना का
हूकीचालैनहीछूटैदधमरूपाना साहबकीकरिबंदगीदम्बंदाना स
मझैवसुषदेवजीचरनदासअपान २०२ रागकाफी घरीसमेंमेलाबि
छुरैसाधोदेषतमासाचलना जैसाअकोरिहूपेडकेबैठितिनसबूझरन
मिलना जैसेनावनदीकेनूपरबाटबटेऊआवे मिलमिलनरदेहोंहि
पलमांहीआपआपकंजावे याबारीबिचफूलघनेरेरंगसबभलेहोवें ग
यिषेलैफरकूम्हलावैकरैहटबिनसावै हारपुनसंतपकोरहजगसोमेली
अोसबिलावै हाइमिलेमसहाइनासेताकूकोपछलावै देहुजैले
कबुकरिलेकरनीरहनीगहनीमारी हरिसनहलगावआपनोसोले
रोहिनकार संतसमानकोलासबडोहेसाधमक्तिसमझावे चरनदास
होरामसमेलेगुरसुषदेवबतावे २०३ रागकाफी वहमेलासाईमल
२ हेसाधोजहांसंतोंकामेला जिनकेरहैसदाहरिचरचासमरैरामसुहेला
। कथाकहैंअरुकरैकीरतनग्यानध्यानसमझावैं सोवतजागतबैठैच
२ लतेगोबिंदकेगुनगावे बोलेइदूनबानीसबसूकुमनकुबुधछुटावे
हरिकीभक्तिसाधकीसंगतयाहिउपदेसबतावे मायातिलकरामकोब
।नांसुंदरभेषबनावे घरघरहोयआरतीमंगलनौधासंचितलावे
निसदिनआनंदरूपदिवालीसदाबसंतसुहायो प्रेममहोछानतहीनुम
वसबेवाठमननापो याबिधसंमनमगनहोयकरिभजनकरैंअतिभा
री चरनदाससुषदेवकहतहैघटमेंहोयउजियारी २०४ रागपर

ज रामधनजोकोईपावैहो राजबडाईइंद्दरपदवीसुरतनलावैहो
आठसिधनौनिधकेलालचनहीलागौहो तीनलोकतुछजानिकै
तामैंनहीपागौहो अर्थधर्मकामर्मोक्षकूकरलीनाहिठौनैहो चार
मुकत्तिवैकुंठलोकतुछबस्तनजानैहो सबमैंनीचाहोचलेमुषरू
ठनभाषैहो हिसाअकसबासनाकोईनेकनराषैहो साधकीकरिया
करीजबवहधनआवैहो चरनदाससेरकरूंकूंसुषदेवबतावैहो राग
परज जिन्हैहरिभक्तिपियारीहो मातपितासहजैछुटेसुतअरूनारीहो
होंनलाभनहीचाहियेसबआसाहारीहो जगसुमुषमोडैरहैंकरैध्या
नमुरारीहो जितमनवालागोरहैमईघटगुजियारीहो गुरसुषदेवबताय ६
।प्रेमीगतिन्यारीहो चरनदासचारोवेदसंभ्रोरेकछुन्यारीहो २०६ रेष
ताराग्रमल्यार तनकेजातकीरीतकूंकरिआपनीतनबीर इसजग
मोरारीसैंयारहोसुनयारमनगाोसाहअमीर इकदमकरारीहैनहीछिन
छिनमैफेरैरंगा कबहूंतोहैरासुषधनोसुनयारमनयारमनचलाव
चलवैटंगा हरूमतवशौकतथिरनहीमतदेषेहोममरूर वहरावता
कूंहैनहीसुनयारमनपारमनमालबडाईधूर जोहिसंदायसबचले
ज्योंआवदरगारबाल यादसिहावकीकरोसुनयारमनसमरहरिहरि
हालसुषदेवमतागुरनैमुझेकायमबतायाराम चरनहीदासाचितधरो
सुनयारमनपारमनजपोआगेजाम २०७ रेषता दोदिनकागामैजी ज
वनकारताहैकैागुमान एकबझाकरगीदीदकुरामकेपिछानै दावा
मुदीकाइरकरिआपवेतूदिलसेतीचलताहैअकडआकडजवानीका
जोशआन मुरझावकाजानतमझूंरूसियारहोसितावगफलतक
छाडसुहबतसाधौकीपूवजांन मौलतकाजौकवैसैंज्योंआवकाघू
बाव जातारहैगाछिनमैपछतायागानिदान दिनरातयावताहैइनि
याकेकारूबार एकपलभीयादसांईकीकरतानहीअजांन सुषदेवग्ग

स्र ज्ञानचारनदाससंकहैमजरामनामसो चापदमुक्तिकानिधांन
२०८ हेला ८ जगकेस्वावनजानहेलायोकोसंगनकीजियेयहि
संसारस्रसारहैरेस्र रेहेलाहरिसंकरिपहिचान कुटबसंगास्त्रा
योनहीरेहेलानाकोईसंगनजाय ह्याँईमिलह्याँईबीछरेताकं
फुरेबलाय महलदरबकिसकामकेरेस्र रेहेलाचलेकाइसा
य रामनजिइनसंपयेहारोस्रपनेहाथ जीवतकायाधोवनेरेस्र
रेहेलातेलफुलेललगाय मजलसकरकेबेठनेमुयेकागनषा
य लानमनपैंहरयेनहीरेस्ररेहोलाहांनजयेडुघनांहि ज्ञानीजन
वहींजानियेसबपुरषनकेमाहिंगुरसुषदेवचिंतावंइरेस्ररेहेलाच
रनदासहियरासुमुनयजनमडरलनमिलेबदकहतहैंसाघ २०९
हेला रेस्रहेलाप्रभुकोरगमजीव स्रनजोबनथिरनारहेरेस्ररेहेला
मतकरिगर्बगुमान छिनछिनस्त्रौसरजातहैहरिसंकरिपहिचान
स्रतसमेपछतायगोरेस्ररेहलाजबजमघेरेस्राय जिनकेसगतमिल
रहोकोईनछुटावेजाय बीतगईसोजानदेरेस्ररेहेलास्रजहूंसम
झावार सरनगाहोसतसंगकीगुरकेबचनसंभार स्रोसुषदेवबता
इयारेस्ररेहेलारामनामततसार चरनदासयोकहतहैलेलेगत
रोपार २१० हेला बोलनटेढीबानहेलामायामधमातारहै म
बहीस्रहेलागफिरेरेस्र रेहेलाछिनमेंबागरिसात स्रजबठाइग्रानेक
रेरेस्र रेहेलाकरैचोगानेदांम नांनारसकेस्वादलेषायफुलावेचाम।
करसंकबझूनदानदेरेस्ररेहेलासीसनानावेसाध जिभ्यासंहरिनाजपे
बझूतकरेबकबादप्रासुंतीरपन्नरमेंरेस्ररेहेलासुनेंनश्रीमागोत
स्रकडस्रकडमनमाहियोजानबडोकुलगोत परबांईदेषेचलेरेस्र
रेहेलाबाकीबांधीपाग सोदेहीकिसकामकीयेहैस्वानकाग पुत्रक

त्तन्न रहैरेन्म्रहेत्ता सुषमैक रैत किलोत्त हरिनगात्तन सूने हना कहै क्रोध
केबोल धर्मकर्म कछु नाकरै रेन्म्र रेहेला नही सत्तसंगा त्तगुर सप्रीत्त हरि
चरचासो जरमरै यहि डूबनकी रीत्त जगाकूं साचो जानिकै रेन्म्र रेहेलाह
रिकूं दियो बिसरा म्नत्त समै जम त्रास देडारै नरक मझार ष्मीसु षदे
वन्मैसैकही रेन्म्र रेहेसलाछाडुबिषे जजात्त चरनदासन जराम कैसोई
नुत्तारै पार २११ हेली यहि न्मोसर फिरनाहि हेली राम भजन करि
।लीजिये यहि त्तनाछिनाछिन जात्तहैरीन्म्ररी हेली ज्यो त्तुरवर की छांहि
पिछलो दिन सब षोगारीन्म्ररी हेली किया त्तुहरि षुंसीर रहे सोन्मैसे जानित्ते
स्योन्मजली कोनार बचैसोला हालीजियैरीन्म्ररी हेली सत्त सगात्त के मांहि
हिल मिलहरिजस गायै डिठत्ताजी की बाहि जनम सुफल जब हो यगोरी
हेली कुलपारायन होय एकन्मोर सोपादीत्ति रै रसना हरि गुन गाय यहिस
मत्त पही बेदहैरीन्म्ररी हेली यहि साधन को भेव चरनदास हियै मैंधरोक
हियागुरसुषदेव २१२ हेली न्मोर न मीत्ता कोय हेली समऊस मारा राम
जी जीवत्त न्मोरि न्मोक रैरीन्म्ररी हेली मुकत्त करै तो हि न्मरु सब स्वारथ के सुषे
सगोरीन्म्ररी हेली न्मत्त न कोई साथ डुष मैं सब ही रलिमिली डुष मैं सुने
न बात्त कल्लकुरिन की बूझते रीन्म्ररी हेली पाछे डारे घात्त तिनकं
तू न्मपनो कहै सोवै षीहीजात्त मेदन न्मपनो दी जिपैरीन्म्ररी हेली कौन
कैसो होय हिरदे की हर दे रहेहरि हो जान सोय कैसे गुर न्मपनो जीनिये
रीन्म्ररी हेली कैसन सगात्त बास गुर सुषदेव बताव ई देष चरनह दास २०
३ यहि नही न्मपनो देस हेली ह्यां न ही मन दीजिये न्मपने घर कूं चालिये
रीन्म्ररी हेली करि जोगन को भेस कांनन मुद्रा जोग की रीन्म्ररी हेली ज्ञा
नज दासिर धार चोला भक्ति सुहावनो धार जन्मसान मारसेला सत्तबे
रागा की रीन्म्ररी हेली सीलत्त न भूल रमाव जत्त की लिंगी कीजिये बार मबा
बजाव करस जलाधूनी करो रीन्म्ररी हेली फूकै दसवै द्वार न्ममल सुधा
रस पीजिये बाढै रागा न्मपार इस बानै पिय कं मिलै रीन्म्ररी हेली न्मोत्तरव

१८४

सदा सुहाग नु होय गुर सुषदेव बताई चरनदास बन सोय २१४
अं अथ ज्ञान को ग्रंथ बरनै राग कडषा साधो गुर दया अपके यो बिचारो
रू र अरु सांच झूठ समक रि मूलत सं भाया अरु ब्रह्म कूं किपो न्यारा
पांच और तीन देह को ठाठ है तास कूं लगत है सब बिकारा ब्रह्म अ
डोल अबोल तोल है औ रलिप्त है निरबिकारा जाके रूप न नहीं र
य अरु नाव सुर त न नहीं सोई निजतत है निराकारा सुरत अरु निर
त होऊ जहां थके रहै तहां बिन ना न अतिउजारा बिना गुरमुषी को
इ पुरुष चूके नास बै के नक और कामना घेर मारा चलै सोई संता
न बैन होय सूरमा ज्ञान अरु ध्यान को करि अहारा आवा अरु जा
वन की टूट फांसी गई पायो गुरभेद आपो तिमर सारा चरनदास सुष
देव मिले नर म सब दल तमिले होय रनजीत अबगत निहारा २१५
राग कडषा साधो ब्रह्म दरियाव नहीं वार पार आदि औ मध्य अ
रु अंत सूझै नहीं नेत नहीं नेत बेद्र पुकारा मूल न परकित सीव रूत
अ लल हरै ठ सके को पार गुण है पारा बिषै महादेव से मीन बडु तै ज
हां होय परगट कमी गोत मारा तासमें बुदबुदे अंड उपजे मिटैं गुरद
इ दिष्ट जा सूं निहारा हु का व छि दे अन्न नीर कामे व करि जगो ज ब आ
र निरषी बहारा मरजिया पैठि पाथाह पाई न हूय का काई रहा फि
र न आया गया थाल ना जकूं मल यो यास बैन या आचर जु आपन गावा
या पाल बिन सिंधु अरु निरानंद है आप ही आप है निराधारा च
रनदास सुषदेव दोऊ न ता रल मिले तुरत ही मिटा या षोज सारा २१
६ राग धनासिरी सहज ग तत्ति ज्ञान समाधि लगाई रूप नांव जहां किर
पा छूटी कूं मे रहन न पाई बिन आसन बिन सिंजम साधन परमात म
ष्रध पाई स्रो सकती मिल गा के न्याहे मन माया नहीं राई मगन र हु
इ व मधुप दोऊ भेटे चाहि अचाह मिटाई जीवन मरन गा के सो लागो

तबतेंआपगवाई मैंनाहीनिषीसषहरिराजेआदिअंतमध्याई
सक्याकर्मकौनकूंत्यागोकाकीहोयमुक्ताई सकलआपदाब्या
घटरीसबूझईकहांमोमांही सबहमहीरामानहीयईऐसबरामां
हमनाही नितआनंदकालमेंनाहीगुरसुषदेवसमाधा चरनदास
निजरूपसमानेंयहितौसमझआगाधा २१७ रागधनासिरी निरंतरल
टलसमाधलगाई ल्वैसैलगीटरैनहीकबहूंकरनीआसछुटाई
काकोजपतपध्यानकौनकोकौनकरैअबपूजा कीयोबिचारसैकनहीं
निकसैहरिबिनऔरनदूजा मुद्रापांचसहजआगतिसाधीआलसआ
।सनसोई सबरसब्रह्मभूलजबसोधाआपाबिसरजनहोई भूलेबंधमुक
तिगतसाधनज्ञानबिबेकभुलानाआतमआरूपरमातमभूलेभयोततरा
लतानां अचलसमाधअंतनहीताकोगुरसुषदेवबताई चरनदासकोयो
जनपईऐसागरलहरसमाई २१८ रागसोरठ होलबागलजोजानेसोईजाने
सबकीदिष्टपडेअबिनासीकोईकोईजनपहिचाने रेषजहांनहीषिचसकैरठ
हैनाकाराई चीतचेतेरानासकैरेपुस्तगतिषानजाई सेतस्यामनहिरातापं कै
।राहरीभांतिनहिहोरै आतिआसंघआदिइअकथहैकहसुनमनकोई सबस
मैंअसबदसनमेंसबिआगासबमांही कटैजलैभीजैनहींछीजैहलैचलैबह
नाहीनहिंगाढानहिंझीनांकहियेनहिसमझमनहिनारी बालातरनांबुढानांहीनां
वहपुरषननारी नहीदूरनहिनिकटहमारैनहीपरगटनहिंगूझै ज्ञानआंषकी
पलकउघाडीजबदेषोरेसूझे वासतगतपतपरलैहोईवहदोऊतेन्यारा
चरनदाससुषदेवदयासोसोईतत्तनिहारा २१९ रागसोरठ साधोसमझोअ
लषअरूपा गुप्तसूगमपरगटसंपरगटअसोहैनिजरूपा भीजैनहीनीरसव
हतनताहनसस्तरकाटे छोटामोटाहोयनकबहूंनहीघटैनहीबाढै पवन
कनीनहिसोषैताकोपावकतैजननजारै सीतनउलगुधमसुषनहेपुहचेनांहीम
रैनमारै इकरसचेतनअचरजदरसैजासमतुलनाहिंकोई तापटतत्त

१८५

कोई दिष्ट न आवे वही वही पुनि वोई भीतर बाहर परब्रह्म है आडपिंड
सून्या रास सुखदेवा गुर ने दिखलाया चरनदास आता २२० रागपूरज गुरू
ही रै अल्लख लख पाया हो देखत ही तैसो सो झलकंत लो न घुल्ला पाया हो निज सिंध ढूंढ़ केम
। पक्क कही आप न पाया हो राम ही रामा हार रहा हम मल्लगेवा पाया हो बरन के रे
हम है हो तो सब ने मन भुलाया हो फल चाहन न वो लोग पे हारि हे रहि
राया हो ज्ञानमिट इतने सिंठो अब तो देह मिटाया हो सो च सम मऊ गाइ सब ही
चरनदास आन समाया हो २२१ राग धनाश्री साविला बल्लवा सो रठ
साधो भाई यह जग पोषत नाही तीन पहर सम दो बिच सिरजा पेट न
कासै मांही जल की पोट को टपका को अबिल बुरा को नीर भूप
को पूत सीग सा के सति प्यों को नीर सुपनै भूपत देव सुपनै को
सरू जे गल को तर गनका को सील लंचत तन को नार सबहन नार
मास वकू सासि रैन कुमर गई धन रत की छाती यह सब कहन के हाव
देषी वीटा ले साथी हाथी नैसे ही भूव जगत सब नाही तेह बिचारे पाया
चरनदास सुखदेव दया स्वामी व मिलाया २२२ रयारा नकली सतगुर
रमो हि पढायो लेषन लिखा न आही ये ते नाव ह कागज मथ्या चढायो
नाल गामात न माये बिंदी आरू न पीत न हिकाल्ला नीसे बेडा बैडा टेढा नाही
ना वह आले ज जाला लाकू हे ष कीन कर मीस बही साधन मा सि
हैं नई औरके ता रेमुक तन दीसे आवे जाके पढे पढन सब छुटै आसा पोथी
फाडी मे तोम पो करम का ही नाक है संरस्ती नाढी गुर से पढयो आतर
आगम देस चटसाला चरनदास जब पडत कऊ ये धार तिलक तुर माला २२३
रागरामकली वह अक्षर को बिल्ला पावे आक्षर के लागै न बिंदीस तगुर से
नहीसेन ब ता वे अक्षरही नाद वेद आद पंडित चतुर ज्ञानी अज्ञानी पावन आ च
र न रही भीनो अक्षर ही वारों वाणी सुख्या सेस महेश्वर ते रहीर सुर रहे सिध
त गुन मुनि आदि ब्रह्म कल्ले हरिकिसन हुजार पाक जहा को मा पा वै सा गुजो

गा जुगात अर अरही त्यौं सामाधा आगै सिध मुकत फल अरही अर
हीतन मनसाधा रबि ससि तारा मंडल अरही अरही धरन अकासा
अरही नीर पवन अरु पावक नरक सुरग अरबासा अरही अतपतपर
लै सरही अरही जाननहारा चरनदास सुषदेव बतावैं निश्च अरहै सब सू
न्यारा २२३ राग भैरु सकल निरंतर पाया हरि कुं सकल निरंतर पाया
माटी भांडे षांड षिलौंना ज्यौं तरवर मैं छाया ज्यौं कंचन मैं भूषन राजै म
रतू दरषन मांही पुतली बंन बंन मैं पुतली उतिया तौं कुछ नाही
ज्यौं लोहे मैं ज्यौं हर परगट सत हीना नैं बानैं ऐसैं राम सकल घट माहीं
बिन सतगुर नही जानैं मिहंदी मैं राग गंध फूलन मैं ऐसै ब्रह्म अरु माया ज
ल मै पाला पाले मैं जल चरनदास दरसाया २२५ राग एमन सषी राहि
ल मिल रहि या जीव पुहप मध्य ज्यौं गंध बिराजै पिंड मांहि यौं जीव जैसैं
अगन काष्ट के अंतर लाली है मिहंदीव मांटी मैं भांडे है जैसे इध मध्य
ज्यौं घीव सुषदेव गुरु तिमरनमा यो ज्ञान दिपा करदीव चरनदास कहैं
परगट दरसै ओ आमरनमृइ तनीव २२६ राग सारंग साधो अर जनि रामु सु व
न राम का नाम रंग नार कि कानानं नहीं नाही घर धाम का मात पिता कु
ल गौत न बांकैं नै धन पुर गांव म का रूप न रेष नहीं कुछ हि पालै स नहीं का
नाम का मरघन लेना चन रसन नहीं नासा तुचा न बोलता चाम का आदि न
अंत न आदै मैं दिन नहीं छिन मान [illegible] का देषा सुना कहौं न हिं जाई न हिं
स्याम का चरनदास सुषदेव बतावैं नहि बिनसै नहि जाम का २२७ रा
ग सारंग घट घट मैं रमना राम रहे हो बेतन [illegible] जल पाहन मर घ
ट मैं भेन रमरहो [illegible] ब्यापक ल षचौरासी समर
हो परगट मान ऐसैं हरि दरसैं सपट मैं नहि यमरहो आपा जाने मल

फिरआपननषतिषूसंनहींहमरहौ चरनदाससुषदेवहीलगायो बच
नबिलासनगमरहौ २२८ रागमालसिरी तेरीगतअपरंपारपार
कैसैंपइयेहो जोगजुगतिकरिजुगतहारेगनइंअबुधनहिंपाई चौ
तबुधमनकीगमजहांनांहीसुरतिथकेथकजांई नेतनेतकहिनिग
मपुकारैंकहूकोऊकैसेपावै ध्याननलागौंज्ञाननसूझैअनमैहूफिर
आवै निरगुनरूपतेरातेनआसनकिहबिधलषहैकोई ब्रह्मासेस
महेस्वरथाकेसकलसिरोमनसोऊ बानीशब्दरहितमुरयापदगुरसुष
देवसुनायो चरनहीदाससमझसबबिसरीषोजतषोजहीरायो २२९
रागधनासिरी वाबिनऔरनकोयहीगुलजारीरे जगफुलवारीफुल
रहीहैनानांरंगअनंत आदिबिरछताकीयहिसबलीलानीतहररहतबसंत
पांचडालपचरंगाहैरेसायाबहुतबिचार अनेनगतिकुछकहतनआवैंफू
है लेपुहपअपार पातफूलफलसोंनेरेहोहोछिपछिपजांहि निहचलइम
इकरसरहैरेगतपतपरलैनांहि बिनसीचैबिनमूलकोरेअचरजअधिक
सुबास जलतिलतबिलोसुषदेवहैरेनहीचरनहीदास २३० रागबिहागरा
तेरेबहुतरूपबहुबानी तूहीएकअनेककहायोहैंजितजानीजिनजानी रबिससि
बिस्नुमहेस्वरतूहीतूहीचतुरबिनानी रिषमुनिदेवतसिधतूहीतूहीहैब्रह्मज्ञानी
है तोबिनइजोऔरनपइयेगावतबेदपुरानी कोऊकहैंमायाहैइजीतोवह
कितसूंआनी तूआकासपवनअरुपावकतूधरतीतूपानी तीनोंगुनतोही
संनिसैतोहीमांहिहिसमानी दसअओतारतूहीधरआयोतूइथेतूहीध्यानी
तूहीरासतुहीरासबिलइयातूहगाकुरबुकरानी तूहीगुरदेवबिराजेचर
नदाससिषमानी गुप्तप्रगटसबतूहीतूहैअनुतलीलागानी २३१ रागबि
हागरा यहसबएकएकहीहोइ ज्यौंकैऐसैंमनकाडोरगुहेहै काहूमाला
पोई एकहीस्वांससकलघटब्यापकतूंतोकाहेंजुदाई हमकूंवहीजगासारा

तबतैंआप गंवाई भैनाहीनषसिषहरिराजैआदिअंतमध्याई संध्याकर्मे
कैंनकुलागेछाकीहोय मुकताई समलेकंआपदाष्याछटरीसबउईकहंस्पे
माहीं सबहमहीरामानहींपईऐसबरामांहमनाहीं नितआनंदकालभैनांहीगु
रसुषदेवसमाधा चरनदासनिजरुपसमाने पूहतैंासमरुआ गाधा २१७ रागध
नासिरी निरंतरअष्टलसमचलगाई ऐसीलगीटरैनहैंफबहुंकरनीआसकु
टाई कर्मकीजपतपध्यानकैंनकेकोनकरेअबपूजा बिपोबिचारनैंकनहींने
गसेहरिबिनऔरनदूजा मुद्रापांचसहजगतिजापा आलसआसनसोई सब
रसब्रह्मूलजबसोधाआपबिसरजानहोई भूलेबंधमुक्ततगतसाधनरहानबे
बेकभुलानां आतमआसपरमातमभूलेमनभयोतत्तगलतानां अचलसमा
धअंतनहींकोगुरसुषदेवबतलाई चरनदासकोधोजनपईऐसाबारनहर
समाई २१८ रागसोरठ हेअबिगतजोजानैसोईजानै सबकीदिष्टपडेअबिना
सीकैाईकोईजनपहचानै रेषजातनहीकिचसमैरठहरैनांजांराई बीतच
तेरानंसबैरेपुरनगलिघानजाई सेतस्यामनहिंरातापीलाहरीभातिनही
तोई आतिअसरुपंलोदिष्टआकपैतिकहुसुनसकेनकोई मबेसमेपुरुसबदेसन
भैसर्वंगेगगनसबिमाहीं कटेजलेभीजैनहैबीजेदरलेचलेवहनाहीं नहिंगाढा
नहिंभीनाकाहींनहिंसदामनहिभारी बालालरनाबुढा नांसीनावरुपुर
षननारी नहींइरनहीनिकाटहिमारेनहीपरगटनहिंगूझै ज्ञानअंाषकी
पलकउघाडेजबदेषेतेरेसूझै रासउतपलपरलेहोईबहुदेउलेनारा
चरनदाससुषदेवदयासूसोईतततनिहारा २१९ रागसोरठ साधोसमु
भैबालघघरुपा भूमसरुपप्रगटसुपरगटऔसोहैनिजरुपा भीजैनही
नीरसूबहतनताहिनसस्तरकाटै कोटमेघरहोएनकबहंनहिंघटैनहीबा
बाधै पवनकाभीनहिंसोषेताकूं पावकतेजनजारै सीतउस्नउषसुषेहन
पूंहचैनावहमरेनमारै इकरसचेतनपेचरजदरसैजासमतुलनहिंको
ईदूजा नापटतनकोईदिष्टनआवैरहैपहोपुनबोई भीसरबाहरपूरहैसे

१८) हैश्रेअपिउसंन्यारा सुषदेवा गुर भेद बतायो चरनहीदासावारा २२० रा
गपरज गुसम्हारैश्रंतलषलषा पाहो देषत ही ऐसें ग एजतलीनपुताया पहे
नषसिषढूंढ्श्या पकं कहीश्रापनपायाहो रामही मांहारहहुमसूत
गवापाहो बरतकीहैम हीं हिनेंसब नेंमभुलापाहो फलचाहनवारेग
योहरिहेरसिरायोहो ज्ञानामिटगाजं मिटाश्रसरेहमिटापाहो सोचसम
ही झसबगई चरनदासनसायाहो २२१ रागधनासिरी वा बिलावलवासो
रठ साधो भाई एहजगयो सतनाहीं मीनपहरसमंदाबिचमिरगाषेत
श्रासमासेमांही जलकीयोटकोटधूंवांको श्रषिलवहसकोतीर बांझको
पूतसीगससाके मसली श्रांकोनीर सुपनैको सुपदबे सुपनेको श्रसज
गतकेधार गनकाकोसील नाच भ्रतनको नारसंश्या हतनार श्रा
वसकूसुसिरैन के सरजतधनरनकी छाती एहसबकहन्वासबदेषी पी
टीले भागी हाथी श्रैसैंही मूठेजगत सब नाहीं भेद बिचारे पायो चरनदास
सुषदेवदायासूसांचहीसांच मिलाया २२२ राग रामकली मन गुरुश्रेद
रमोहि पढायो लेषनली घान स्याही सेती नावहका गजमध्य चढायो नां
तगमांतनभयैबिदीश्रसूनपीतनहि काला श्रैडाबैंडाटेढा नाही नां
श्रातजंजाला ताकूंदेष फकीरनी सबही साधनभागे सिघेमपभोरकेता
रेमुवात नदिषेस्नागे जाके पढन पढन सबकू ऐसा सापेपी काडी मैं तो
मयो करमकाहीनहकैसुरत्ती ठाठी गुरसुषदेवपढायो श्रद्दरश्रेग
मदेसचदसाला चरनदास जबपंडित हूयेधारतिलकउरमाला २२३
रागसकली वह श्रक्षररकोई बिरला पावै जाश्रक्षरकेलैगेनबिदीसत
गुरसैंनहीबतावै हरहीनादबेध तपंडितहरहराजानीश्रज्ञानी श्रावनश्र
दारहरहीजानेहरहींचारौबानी ब्रह्मासेसमहेस्वर हरही हरहीति
रगुनमाया हरहीसत्तालिपेश्रीतारा हरघातकाजहीं काया पांचेंभुस्
जो गजुगत हर हरहीतनैसमाधा श्रा षेतिंधमुक्तफलहरहीद

रहीतनमनसाधा रविससिताराँमंडलदूरहीदूरहीधरनआकासा
दूरहीनीरपवनअरुपावकनरकासुरगहरबासा दूरहीउत्तपतपर
लैदूरहीजाननहारा चरनदाससुषदेवबताबैनिसअदूरहैसबसूं
न्यारा २२४ रागभैरुं सकलनिरंतरपाया हरिकूं सकलनिरंतरपाया
माटीभांडेउ षांडषिलौनैंजैसेतरवरमेंछाया जैसेंदरपनमेंमुषनराजैं
मूरतदरपनमांही पुतलीषंभषंभमेंपुतलीदुतियातोकुछनाहीं ज्यों
लोहैमेंजोहरपरगटसूतहीतानैंबांनैं ऐसैंरामसकलघटमांहींबिनस
तगुरनहींजानैं मिहदीमेरंगगंधफुलनमेंऐसेंबुदरससमाया जलमें
पालौषीतेमैंजलचरनदाससदरसाया २२५ रागएमन सषीरीहिल
मिलरहियापीव पुहपमधजैंगंधबिराजेपिंडमांहिंयोंजीव जैसेंअ
गनकाष्टमैंअंतरजानीहैं मिहदीव मांटीमैंभांडेहैतैसेंइधमधजैंसों
पीव सुषदेवागुरतिमरनसायो ज्ञानदियाकरदीव चरनदासकहैं
परगटदरसोअमरअषंडततसीव २२६ रागसारंग साधोअचरजानि
गुनरामका नामरजादठिकानानांहींनांहीठाराधामका मातपि
ताकुलगोतनवाकैमेषनपुरषाबामका सपनरेषनहींकुछाकिरि
यालैसनहींछांनामका सरवनलोचनरसनानहींनासातुचानघो
लाचामका आदिनअंतनअधउर्धनहींठिगनांनहींलोषका देषा
सुनांकहानहिंजाईनदिषेतानहिंस्यामका चरनदाससुषदेव
सुनावैनाहिंबिसराहेनाहिंजामका २२७ रागसारंग घटघटमेंरमता
रमरहैरे चेतनतजेभजनपाहनमूरषभरममैंभरमरहैरे एक
अषंडरहैरेसबबा पकनलषचौरासीसमरहेरो परगटमांनबैसें
हरिदरसैसंपटमैंनदिषमरहैरो आपाजानिभूलाफिरआपनन
षसिषसूंनहीहमरहेरो चरनदाससुषदेवहीरलगयोबचनबि
लासनगमरहेरो २२८ रागमालसिरी तेरीगतअपरंपारपारसो

सैंपई पैरो जोग जुगत्त करि जुगत्ता हारे उनहूं सुधन हिं पाई चित्त बुध
मन की ग म जहां लों तिं सुरत्ति पहुंचे एक जोई नेत नेत कहि निगम
म पूकारैं कऊ कोऊ कैसें पावै ध्यान नलागे ग्यान न संू जैसेन तैसें हुं
फिर आवै निर्गुन रूप निरालंभ आसन किंह बिध लषहै कोऊ ब्रह्मा सेसम हे
ख रथा के सकल सरो मन सोऊ वानी शब्द रहित्त तुरी आ पद गुर सुष देव स
नायो चरन दास सन कसब बिसरी षोजत्त षोज हिरायौ २५५ रामा मा
लसिरी वाबिन और न कोय व ही गुलजा री रे जग फुल्ल वा रीफूल रही हो
नांनां रंग अनंत आदि बिर हृत्ता कीय हसन लीला नित्त ही रहत्त बसंत
यांब डालय वरंग है रे सा षाब फुत्त विचार अंनुत्त गत्त का फूक हत्तन आ
वे फूले पुहप अपार पात फूल फल सो हनै रे हो हो छि पछिपन जां हिंन
हबल फूर्मे इक रस रहे र ऊत्त यत्त परलो नांहि बिनसी चै बिनमूल
को रे अब रज आपिक सुबास जित्त त्तित्त षिलो सुष देव है रे नहीं चर
नहीं दास २५६ रामां रामां जी सांई अलष निरंजन त्यात्तूही एक अने
क अव स्या त्तेरी जोत्त का स कल जग छाई तूं घट घट रहो समाई तूं ही आ।
दि अनादि क हा वे ब्रू हा दिक या र न पा वे अबि गत्त अबिना सी जा नां।
निर्गुन सरगुन पहचानां बहु बिध के भेष बनावे सिरजै पाले बिनसावे अ
चरज कीति गा बिस्तारा जन कारन लै औतारा तुही है देवन को देवा सनका
दिक लहैं न भेवा चा हैं सुक रै पल मांही तुही बाप क है सब ठांई तुही ज्ञा
नी गुना अपारा प्रन परमातम प्यारा गुन बहुत कहां लौं गाऊं बिनती
करसीस निवाऊं सुषदेव गुरू बतलाया चरन दास सरन तेरी आया।
२५७ रांमां रामां जी सुन लीजै बिंनती मेरी मैं सरन गही है तेरी तैं बहु
तै पतित उधारे भौ जल सं पार उतारे हैं सब के नांव न जांनं अ
ब कोई कोई न कब षानं अंबरी क सु द्रामां नामां सो धु हचाये

निजधामा ध्रूप्यांचब रसकोबाला तेदरसदियौगोपालाप्रह
लादटेकतुमराखी यौजानतहैंसबसाखीस्योरीवोफलतुमखा
ये त्तिरलोचनके घरआयेपंडरनकीकरीसहाई छोयदाकी
लाजबढाई गनकारूपारलंघाईकरमांकीखीचड़ीखाई मी
रांबाहरिकेरंगराचीनी नरसीकीहुंडीलीनीधनांकोखेतजमायौ
तेसागाबिडरघरयायौ कबीराकेबालधल्यापसबकाजकि
एमनलायेसदनासेसैनानाई तेबऊत्तकिए मुकताई ग्राहसूग
गजायछुडायौत्तेमोकूंमोबिसरायौ सनकादिकबु साधावेत्ते
रासेसआदिजसगावेत्तेराबेदपारनहिपायाजिननित्तनेतब त
लाया मैंकामक्रोधनेघेरा ममत्ताकीडरडरजेरामोहलोभकेफं
देपरिया त्तेरानामबिसरउधनरिया अबतुमहीकरौनबेरामोहि
जानचरनकोचेरा मैंपायीमहासंतापीअपराधीबहूतकलायी
तुमछाडकासपैजाऊंयहदुषकौनैसमझाऊं सुषदेवगुरुमैंया
याजिनत्तेराहीनामबत्ताया चरनदासआयनाकीजैमोहिनत्त
दानूबरदीजै रष८ रागकाफीहोमगाकेकरत्तारत्तेरीकहाअस्तुति
कीजै तूहीसिरजैतुहीयालैतुहीकरैसिघार जित्तदेषूत्तित्ततुहीतु
है त्तेरारूपअपार तुहीरामनरायनतूही तुहीकृस्नमुरार साधौ
कीरछ्याकेकारनजुगजुगलेअौतार तुहीआदिऔरमध्यतुही
है अंतत्तेराउजियार दानौदेवत्तोहीसंघ्रुगटे तीनलोकविस्तार
जलथलमेंव्यापकहैतुही घटघटबोलनहारत्तोबिनऔरकौन
हैऐसोजोसोकरपुकार तूहीचतुरसिरोमनहैप्रभु तुहीपतत
उधार चरनदाससुषदेवतुहीहै जीवनप्रानअधार रष९ रागका
फीकहाकहत्तोहियुकारहेठोकरत्तारहमारे नांवअनंत अनंतनही
नाकोबहुगुनरूपतिहारे अजरअमरर अबिगतर अबिनासीध

अलषनिरंजनस्वामी ५ पुरषपुरातन ६ पुरषोत्तम ७ पूर्न ८ पूर
ण ९ अंत्तरजामी कृस्न ११ कन्हैया १२ बिसुनरायन १४ जोत्ती स्रूप १५
बिधात्ता १६ अपरमपार १७ मुकंद १८ मुरारी १९ दीनबंधु २० भुजना
था २१ जादौंपत्त २२ जगदीस २३ चत्तुर्भुज २४ निर्गुन २५ सर्बप्रगासी
२६ पारब्रह्म २७ प्रानन को दात्ता २८ सब ठां घटघटबासी २९ निरबि
कार ३ गोबिंद अपारा ३४ कंवलनैन ३५ केसो ३६ मधुसुदन ३७
सबमैं ३८ सबसैं न्यारा ३९ रिषीकेश ४० मुरलीधर ४२ मोहन ४२ ३
४३ अषिल ४४ अजोनी ४५ जगवत्त ४६ बासुदेव ४७ जगबाना
४८ ज्ञानी ४९ ध्यानी ५० मौनी ५१ दीनानाथ ५२ गुपाल ५३ हरी ५
४ हरि ५५ गरूडपूज ५६ घनसामां ५७ चक्रकुल ५८ और देवकी
नंदन ५९ करत्ता सबबिध कामा ६० आदि पूधान ६१ माधकरीमू
रत्त ६२ धरनीधर ६३ बलबीरा ६४ नंदनंदन ६५ औरजहुधान
दन ६६ सुंदरस्याम सरीरा ६७ पुसराम ६८ नरसिंघ ६९ असुरसन
र ७० अचल ७१ अषंड ७२ अरूपी ७३ ईस ७४ अगोचर ७५ और रज
गत्तगुर ७६ परमानंद ७७ बहुरूपी ७८ करूनामै ७९ कल्यान
८० अनंता ८१ दयासिंध ८२ बनवारी ८५ धारन संषचक्र ८ छबि
हारी ८७ परमदयाल ८८ मनोहर ८९ नरहर ९० किरपानिध ९१
फलदात्ता ९२ कंसनिकंदन ९३ रावनगंजन ९४ जगपत्ति ९
५ लक्ष्मीनाथा ९६ जगन्नाथ ९७ औरषईनाथा ९८ निर्गुन ९९ स
रगुन धारी १०० दामोदर १०१ रघुबर १०२ सीत्तापत्त १०३ रामां १०
४ गुन धारी... संत्तन को रिछक १०६ सकलसि
ध कुंजबिहारी १०७ दुष्टदलन ह संत्तन को रिछक
भको साई १०८ अघहरन के कौत्तिग अनगिन सेसपार न हियां ई
सौ और आठ नाम की माला जोन र मुष उचारै आप नै कुल की सारी
पीढी पर सो और सौ कुंत्तारै गुरसुषदेव मंत्रा निज दीनौ रामनाम
... रनदास निह चै सो जय कै उत्तरो नौ जल पारा २६
... री सुहज जगत्त ज्ञान समाधलगाई रूपनां बजहां
कर या कूची ... रहनन नया ईबिन आसन बिन संजम साध

न परमातमसुषपाई सोसकतीमिल एकभयेहैं मनमायानहींराई
मगानरऊं उषसुष दोऊमेटे चाहमचाहमिटाई जीवनमरन एकसो
लागे तबतैंआपगंवाई मैंनांहींनषसषहरिराजे आदिअंतमधाई
सं[illegible] क्याकर्मकौनकूलागैकाकीहोयमुकताइ सकलआप
दाव्याधटरीसरसवइ ईकहांमोमांही सवहमहीरामांनहींयइ
यै सवरामांहमनांही नितआनदकालनैनांहींगुरसुषदेव
समांधी चरनदासनिजरूपसमानैयहतोसमऊअगाधी
५३ रागधनासरी निरंतरअटलसमाधलगाई वैसीलगी
टरैनहिकवकूं करनीआसकुराई काकोजपतपध्यान
कौनकौ कौनकरैअवपूजा कियोविचारनैंकनहींनिक
सैहरिबिनऔरनदूजा मुद्रायावसहजगतसाधी आलस
आसनसोई सबरसबूलमूलजबसोधा आपाविसरजनहो
ई भूलोबंधमुकतगतसाधन ज्ञानबवेकभुलानांआ
तमऔरपरमातमभूलेमनजयोततगलतानां अवन
समाधअंतनहींताकोगुरसुषदेवबताइ चरनदासपा
योजनयश्यैसागरलहरसमाई ५४ रागबिहागराबाबिला
वलआरूअलषअरूपहैकोईसाधूजानैं ज्ञानगुरूअंजनल
जीजबडुबधाजानैं तिमरभरमछिनमैंभजैऔरहोयप
रगासाजोगजुगतसाधननहीं जहांबुलाविलासायाव
पचीसोतिरगुनीकूठीजहांकाया एक अषंड अगाधहैन
हींयइयैमाया चरनदाससतगुरमिलेआज्ञाननसाया

आतमहीआतमलषा कोईऔरनपायो॥ २६३ रागललित
साधो अधिकअनूपमरूपा निर्मलदेसनिरालंनआस
न चेतनपुरसअरूपा नौऔरत्तीनयांपदरसनांहीइक
रसनगरनिहारे पलकयेंइका उलटामारग चलनसकै
पचहारे जनमनमरन रूपनहिरेषा सूरतमूरत्तनाही
आदिअंत्त औरमध्य अगोचरसत्तगुरलेपुलचाईपहय
बासनादतैंकीनौं दिष्मुष्नहीआयो चरनदासगुर
किरपाकीनी आतमआतमपायो॥ २६४ रागमलार नावि
हागरागुरबिन कौन डबोवनहारा ब्रह्मसमंदमैंजोकेंा
ई बूडोकुटगए सकलाबिकारा सिधअगाधअथाहअव
लहै जाकोबारनपारा नाकीलहरमिटत्तवाहीमैं कौन
त्तिरैकोन्यारा त्तिरगुनरहित्त सदाहीचेत्तन नांकारूपउनहा
रा निराकारआकारनकोई निरमलअत्तिनिरधारा अप
रीअलषअरूपअनादी तिमरनहींउजियारा तामैंअउदि
पलमैंकर ज्यौंजलमधेतारा कालज्वालमेंभूतीनांही तहांनहीभ्रम
भारा चरनदाससुषदेवदयासे बूडगयेहीपारा॥ २६५ रागकेदाराबासो
रठ सोलषहमनिर्गुनहमअरपाई जहांनवेदकतेबपुंहचे नहींठकु
राई चारबरनआसरमनाही कर्मनांकाई नर्कऔरबैकुंठनांही नहीं
तनताई प्रेमऔरजहांनेमनाही लगननांलाई आवनजानजहांजोग
नांही नहीसिधाई एकब्रह्मअषंडअबिचल मायानांराई ज्ञान
औरअज्ञाननांही नहींमुकताई चरनदाससुषदेवसमतहांडूईजर

जाई २६६ रागबिभासवाबिहागरावाबिलावल गुप्तमतेकीबात
राजानैंसोईजानैं परमज्ञानजगतकोदेषो ज्ञानमुसएकहीसानैं
चलनीकीगतसबकीमतहै मनमेंअधिकसयानें गहअसा
रसारकंडारैंनिहचलबुधनहिंआनैं हंरंगोजगकूंनाहिंसूझेंसैं
ननहींकोईमानें कासंकरूं औरकोसुनैंसजनी कहूंतोकोप
हचानैं सतगुरुसाक्कूंजावतमांहीं मरषमुगधअयानैं चरनदासक
हैंसमझूनाहिंसौंइ फिराफिरजगारोठानैं २६७ रागबिहागरा सुन
होमुकतमुकतकहूंतेरी बेदपुरांनजंजीरजरीहै सबहीमतमारग
मिलघेरी तैंतोमुकतबहुतकीकीनी जिनपापनतलफेरी बंधन
सकलछुटायकाटदूं जोआधीनहोयतूमेरी सुरगपतालठौरन
हिंतोकूं डोलतघेरीघेरी अचलपुरससूंजायमिलाऊं तोहिज्ञान
साधनकीचेरी सुषदेवगुरुजबकिरपाकीनीतूनांहींकहूंहेरी चर
नहींदाससवासनांतजकै आपहीआपकरीहैनबेरी २६८ रागसाव
हैकोईजानैंभेदहमारा सबहममेंहमसबकेमांहीं मैंब्यापकमैं
न्यारा हमअडोलहमअ[illegible]तनिसदिन हमंब्रह्महमहमन्यारा
हमहीनिरगुनहमहींसरगुन हमहींदसऔतारा हमहींएक
बहुतहोषेले हमहींसकलपसारा हमहींज्ञानध्यानपुनह
महीं हमहींधारनहारा हमहींआदिअंतपुनहमहीं हमहींर
पअपारा महाराजहमवारपारहैं हमहींजगतजियारा हमहीं
गुरसुषदेवाबिराजैं हमहींतितैंहमन्यारा चरनदासघटहमहींबोलैं
समझैसमनवारा २६९ रागकाफी मैंकोईअजबरूमेराअजबत

मासाजोर मेरैहीपिंडखंडब्रह्मंडामैंपूरनसबठौर मैब्रह्मा
मैविसुमहादेव मैकमलामैंगोर मैरविचंदछहइंद्रायन
मैंगरजत्तघनघोर मैंगुनत्तीनयांवत्तमैंही मैंदसदिसव
ह्रूंश्रौर मैनिहरूयत्तूयपरनानांनिसदिनकरत्तकिलोर मैं
गुत्तामैंमुकत्तायरगाट मैहीजरमजत्तोर चरनदासमो
बिननहींखंक ह्जाकोऊश्रौर ७० रागसोरठसाधोनर
मांयहसंसारा गत्तमत्तलोकवडाईउरफंसैसैहोछुटका
रा नरमयडेनांनांबिधसेती तीरथबरत्तश्रचारा देहकर
मश्वाभिमानीमूले छूछुपकरत्तडारा जोगीजोगजुगत्तक
रखूलेपंडितबेदपुराना घट्दरसनयगश्चापयूजावैंपह
रपहररंगबाना जानत्तनाहिश्रायहमकोहैं कोहैवहनगवा
नांकोयहजगत्तवौनगात्तलागो समझैनाश्वज्ञाना जाकीरनत्तु
मडत्तवितडोलात्ताकूपावत्तनाहीचरनदाससुखदेवबत्तायौ हरि
नारायनमांहीर ७१ रागसोरठहारेगुरुमात्तगावत्तलायाहोश्वान
वदेवकीसेवात्यागी श्चजश्वबिनासीधायाहो हरियूरनयरसो
निहवैसोछाडोऊठीमायाहो इकरसश्वात्तमनित्तहीजानौं छिनचं
गहिकायाहोवाहैमुकत्तवकरैत्तनकिरयां नरमश्वधिकनरमा
याहो बोकरयेडबबूलशूलबेश्वंबकहोकिनषायाहो श्चपनांषोजन
कियानहिंकबहूं जलपाहनमटकायांहो जैसैफलसेवनसैंमलको
कीरश्चधिकपछतायाहो ज्ञानप्रदीपघकारैमहानिध बिनभेदी
किनपायाहो चरनदासघटसौहंसोहं तामैंगलटसमायाहो ७२

२७२ रागसोरठ म्हारे गुरु हाँ निगार दिखाया हो उलटी बाट घाट जहां नांही निज पुर वास बसाया हो बंदन सूरग गगन हितारे रात द्यौस नहि प्याया हो नहीं तिमर जहां वादन नांही नहीय धूप नहीं छाया हो मनसों अगम सुगम नहि बुधसो श्रवनै बंतन लाया हो श्रौर कहो कैसैकर पावे निगम नेत जिंह गाया हो है परति हु उदै सूरज ज्यों संपट नांहि छिपाया हो बिन गुरगम के अंजन आंजे दिष्ट नहीं दरसाया हो जनक जहां सुषदेव बिराजै चरनदास मिल धाया हो जगकी व्याध लगन नहि पाई किरपा कर पुचाया हो २७३ रागसोरठ ना ज्ञा सावरी सत गुरु निज पुर धाम बसाये जित के गये बहुर नहि आये मौज लबक आनन्द पाये जोगी जोग जुगत कर हरि ध्यानो ध्यान लगावे हरि जन गुरकी दया बिनां यौं दिष्ट नहीं दरसावे पंडित मुंडत बुडत ढूंढो पढ सुन बेद पुरानैं जासों वे सब पाये चाहैं सो वे नेत बषानैं जोगम जती तपा सिन्यासी सब ही बहु दिस धावें सुरत निरत की गम जहां नांही वेकहा वो कैसे पावैं ऐसा अटपटा बेगम नगरी निरगुन पाया चरनदास सुषदेव गुरु नैं किरपा कर पुहचाया २७४ रागसोठ ना दूर करगम हद्द के भाव कि निरगुन से जा बिछी जहां पवन गवन नहि होय जहां जा सुरत बसी जहां तिरगुन बिनि बिन जहां नहीं सूरज ससी जहां हिलमिल के सुष मांनमुकत की हंस हंसी जहां पिप्रा प्यारी मिल एक कि सो साउ ईनसी जहां चरनदास गलतां ना कि सो भाग्य धि काल सी २७५

रागसोरठमां सुनसुरत्त गीली हे कि हरिसायार कारे जबछूटै वि
षमविकार एक भौजलत्तु रत्तति रे तुमतिरन नै छत्तबिसार गगन
मैं ध्यान धरे रसझूत्तपीवे हे कि विषयासकलहरे वारसी सं
तोषसिंगार हिमां की मांग भरे षबयावौ त्तजलगवार षमर
घरयु रषबरो कहैवरनदासायिय देषगुत्त के पांवयरो २७
६ रागसीठना जीवब्रात्तमविगारीहैपुरषकू चलरही जवयि
यबिसराई हे जनैंजब बांहगही तैं लाजगंवाई हे कि यावनयक
रलई तेरे त्तनिलगेलगवारयजीसोसगजइते त्तोजनमजनम
रहीभूकविजमत्रमारसही कहैवरनदासबिनलालबिनजीगल
जात्तबली २७७ रागसीठना दुषनिर्गुनकै बालासोकिनेहलगा
बौरीजाको भज रषभरहेदेसमहलबेगमयुरी जहांसदासुहाग
नहाय्रियासो मिलरकुरी जब श्रागगयनहिहाय भुकत्तवेरी त्ति
रा कहैवरनदासगुरमिलेसोई जोरकुबौरी जबसुषसागरकेबी
चकिलहरीहोरकुरी रागसीठनां तूसुनहेलंगारबौरी तूयाबोघेर
पवीसोघेरी विदेनासनां कीहिवेरी वारीवारीदोरी तैंपियन्ततीबो
रासीफूलीचंगचंगके सुषमैं फूलीमायालाईदोरी तैं कामनकोधसं
नेहलगायौ मकम मांतासबजगनरमायौ मोहयारबाकोरी
वरनदासकहैं सुकदेवबत्तावै निर्गुनकैलासोहिमिलावै जोड्ष
चेत्तनहोरी २७९ रागसीठना पर्चासाहैउधदाई जिनधीरजसो
पत्तरसियाकाडो वाकोरम मोहयारषियौ गाढो क्रोधसोंप्रीत्तल
गाई जिनजत्तसत्तदेवरसामुषमोडा दयावहनसोंनात्ततोडा

सुनत्तसौंकविसराई जोधर्मपित्ताकेघरसंछूटी किमांमायसो योहीरूठीकुमत्तयडोसनयाई संत्तोषबुरचाकाकाहानमा नां चवीदीनत्तासोरिसठानामायामषबौराई चरनदासक हैंजबनिज्यत्तयावै श्रीसुषदेवसरनत्तुषावै सीलसिंगारख नाई २७० रागसीठनां डुकदरसनदेहोरप्यारे बिनदेषैंमोहि कलनपरत्त यहदेहजरत्तहैव्याकुलप्रानहमारे तेरीनेहम ढकचौरयूंमलटकाहियचटकीनंदडुलारे तेरीसुंदरसूरत्तमो हनीसूरतनैनांअतिमत्तवारे तुमसोकोछैरससदानदे लाअलबेला बांकारेमैंक चरनदासातुमसुषरासाआसापुरखोत्रारे २७२ रागसी ठनो ग्रहावाजत्तकरतगुमांनमुरलिप्यारंगभरी तेमोहेमोहनछैल छिबीलेकेहम्महरी सुनबांसुत्ताबडभागतनकीसीवनलकरी कछुटोनांकीनौंहेबिचत्तरसुघरघरी निसबासरलागीरहैपिय्यार केअधरधरी ब्रजसगरोदियोनचायहापभरकीबंसुरी हेरीतां नमधरसुरहेबरषावत्तप्रेमझरी सुनकेमुनरिषमुनदेवमहेस समाधटरी चरनदासभईसषीहेतहीसुषदेवबरी २७३ रागसीठ नां तेरीछिनछिनकीजतआउसमनबाजकुंभाई दिनदोकाजी बनजांनछाडदेगुमरांही सुनमूरषनरअज्ञानचेतत्ताकैंनांही कहांभूलोफिरत्तगंवारजगतमूठेमोही किपेकामक्रोधसोंने हगाहीहैअकडाई मत्तवारामापामांहिकरत्तहैकुटलाई तेरोसं

१९३

गीकोऊनांहिगहैंजबजमबाही सुषदेखचित्तावैतोहिसागहै
मूलाई चरनदासकहैंभजरामयहीहैसुषदाई २८४ रागसोरठनां
च तुमदेषोहरिकीलीला साधोकहेनसुननगामूनांही वहआपसवा
लविस्तारै वहआपकरैयुतपारै जबचाहेतबहोमारैयाजग
मैंधूमभवाई वहतत्रनृत्तकोतिगलावै रंककेराजदिलावै
राजाकूंरंककरावै यहगतीकिनकूंनहिपाई वहबुबरजपेल
मचावैयाथपुन्यकेन्याववुपावै आपदेवैश्रोरादवावै ६
क २ककंहैयमिराई जबपापबदणकंआवै हरिआपहीधोइबहावै
ज्योंकंमारनजावै संतौकीकरैसहाई चरनदासकहैजोचाहो सुषदे
वसरनआवआवो तुमसाईसैलौलावो वैरैहैदुष्षमिटाई २८५ राग
काफी घरीदोमेंमेलबिछुरैसाधोदेषतमासाचलनां जोह्यांआकरफू
ऐरकहै तिनसंबङ्डरनमिलनां जैसैनावनदीकेऊपर बाटबटेऊ
आवैं मिलमिलजुदेहोंहिपलमांही आपआपकंजावैं सावारीविचफ
लघनेरेरंगसुगंधसुहावै लागौथिलेफेरकुम्हलावैंऊरैंहटबिनसावैं
बिनसावैं दारासुतसंपत्तकोसुषज्यौं मोतीब्रोसबिलावैस्वा
ईमिलैश्रौरस्मांईनासै ताकंज्यौपछतावै देवाकुलेषोकुकर
लेकरनी रहनीगहजीनारी होरसोनेहलगावैश्रायनौसोति
रोहित्तकारी सतसंगतकोलानाजवडोहैसाधजतसमजावैचर
नदासबोरामसुमले गुरसुषदेवबतावै २८६ रागकाफीसहमे
लासोईनलाहैसाधोजहांसंतौकामेला जिनकेरहैसदाह
रिचर्चासुमरैरामसुहेला काष्याकहैश्रौरस्वारैकीरत्तनगपानध्या
नसममावै सोवतजागतबैठेचलते गोबिदकेगुनगावैबोलो

इन्द्रतबानीसबसों कुमतकुबुधकुटावै हरिकी नत्कसाधकी संगत यहउपदेसबतावै मालातिलक रामकोबानासुंद रभेषबनावै घरघरहोय आरतीमंगल नौधासोंचित्तलावै निसदिनआनंदरूपदिवाली सदाबसंतसुहायो प्रेममहोछ नित्तहीउत्सव सबैठाठमनभायो याविधसोंमनमगनहोय कर भजनकरै अतिभारी चरनदाससुषदेवकहतहैं घट मैंहोयउजियारी२८७ रागसोरठआनन्दआबिलावल सोनै नौमोरेतुरियातत्तपदअटके सुरतनिरतकीगमनहीसजनी तहांमिलनकूंलटके भूलोजगतबकतकुछऔरैबेदपुरा ननठठके प्रीतरीतकीसारनजानैं डोलतनटकेनटके किरियाकर्मनमेंउरझे एमायाकेअटके ज्ञानध्यानदोऊ पुहचतनांही रामरहीमाफटके जगकुलरीतलोकमरजा दा मानतनांहीहटके चरनदाससुषदेवदयासों तिरगुनतजकरसटके २८८ रागआसावरी साधोमनहीं संमनलाषा सुरतनिरतसोंहरप नमांजा अलषपुरषदरसाषा गंगाजमनांऔरसुरसतीतिरबेनीमें आषा आठसहसीरपभंवरगुफामें तबमैंउलटसमाषा उलटा मारगसुन्नसरोवर पुहकरनामकहावै सुगुरापुहचैजोगजुगतसं निगुराजानन पावै चरनदासगुरुकिरपाकीनी सिंधकू पाहलर षासा सुषसागरमेंचुबकीलेकर आतमरामंन्हाषा २८९ राग पूरबी मनबांवलबेगमपुरबसियैं तिमें देसकालगमनांहीं ज नमकिंकरकूं हसियै जइयेकहांवहीसहलनगरी संतबबेकीजानें यहीयहीहैयहीयहीहैपरगटकहीनछानैं बादबिबादन थाधापर

पै कलहकलेसनवोछ अमरहोयअमरायदयसैं जामन
मरनन होई बाघसजायवहीजनसुगुरा सोसुखकुकथ्यूकया
वै आतमरामवेदेहीसमनमुख चरनदासदरसावै २८९ राग
मनवांछवगतनगरसमानां विसावेदजहानहिपुहवे वैसा
देसादिवानांपांवत्ततती नैं गुनपरगट तहांअलषकोपानां
अमलअबोलअडोलअलेवंडित प्राहपरमातमवानां जलपषा
नकीसेवालाद्यैं औसेलोगअपानां ग्यानकलाकामरमनजानैं पं
डितभरममुलानां चरनदासगुरकिरपाकीनी सोपुरकिप्रांनों
प्रानां आतमरामईकंगीकीहूपै परमततजिनजानां २९० रामका
न्सरा इननैंनननिराकारलहा कानसुननसकौनपतीजे जान
अजांनहोसहजरहा जितदेषुतितमलषनिरंजन अमरअडो
लअबोलमहा जोलजगतविचामिलमिलऊके अगमअगाध
रपूररहा आसषलपाजववेगमहूवा भरमकोटजवलुरतदहा
सवमेंईसवऊपरराजे सुन्नसरूपीठेसठहा जीवनमुक्तमपाम
नमेरा निर्भैनिर्गुनभ्यानगहा गुरसुषदेवकरीजवकिप्रा चर
नदाससुषसिंधवहा २९१ रागजकरी ब्रह्मअरूपधरेबऊरूप
कहोकोऊकैसासरूपकहै सवमैंहैऔरसवसैंन्यारा हैकोईभे
दअनूपलहै कहूंकहूंमरषगुंगानपाहै कहूंकहूंवकताबेदप
ढै कहूंकहूंराचरंकउघसुपहे कहूंकहूंभोगीभोगमेंबैठे कहूंकहूं
राधेरूपबनायो कहूंकहूंमोहनरासरचै मुउमुंडजावेफेरमना
वे प्यारपीतकेचावचहे कहूंकहूंसुरतमोहनीमूरत कहूंकहूंला
लनफंदपरे कहूंकहूंमधवाकहूंकहूंप्याला कहूंकहूंपीवतप्रेमभरे

कहूंवाकूं ज्ञानी नां नां बानी कहूं भरममैं भूल रहे सुषदेवा गुर हो स
मजावैं चरनहीदासा चरन गहे २८२ रागबिहागरा सबजगपांच तत
हकोउ पासी तुरिया अतीत सबन सों न्यारा अबिनासी निरबासी को
ई परजै देषल मूरत सो पिरथीतत जानैं कोई ध्यावै पर जैतीरथ सोज
नकोतत मानैं अगन होत्री सरज पूजा सो पावक तत देषा पव
न पैबकूं नवकूं रावै बाय तत कालेषा कोई तत अकास
सकूं पूजै ताकूं ब्रह्मतावै जो सबको देषन मैं आवै सो पंषी
अलष कहावै परम तत यांचौं सें आगै गुर सुषदेव बषानैं
चरनदास निहचै मन आनैं बिरला जन कोई जानैं २८३
रेषता राग जंगला तज के जगत की रीत कूं कर आय ना तत
बीर इस जग मरोसे आर हो सुनयार मन यार मन ग ऐसा
हकबीर इकदम करारी है नहीं छिन छिन मैं फेरे रंग काच
ह तैरा है रांसुष घना सुनयार मन यार मन बल बिचलबेद
ग बूड़ा मत तबजौं कत्तापरनहीं मत्तदेष हो मगरूर ठहराव
ताकूं है नहीं सुनयार मन यार मन जगल बडाई पूरजा हि
षासा सबचलै ज्यौं आबदरागिरवाल याद साहिब की करो
सुनयार मन यार मन सुमरह रहा अरहाल सुषदोषसत्त
गुर नै मुकें कायम न तायारा मचरन हीदासा चित्तधरो सुन पा
रमन यार मन जपे आठों जाम २८४ रेषता देदिन का जग मैं जीव
न करता है कैं गुमान एक हैराउर गोदी टुक राम कूं पिछान दावा
षुदीका इरकार आपनैं तैं दिल सेती चलता है अकड अकड जवानी
का जोस माल मुरशदा का मान समझ के अस्तियार हो सिताब ग

फलतकं छाड सुहब्बतसा ौंकीषूबेंजांन दौलतकाजौक औसैं ज्यौंआ
बकाइबाबजातारहैगाछिनमैंपछतायगा निदांन दिनरातषोवताहैडा
नियांकेकारुबार एकपलजीया हमांईकीकरतानहींअजांन सुषदे
वगुलस्पानचरनदाससूंकहैं मजरामननामसों चापदमुकाकानियांन
१९४ रेषता फरजंद नंदजूकादिलबीचनांवदा बरपायषूबनूपरसुंदर
सुहांवदा वहसांवरासलौनां महबूबयारमन आहिसलटकचालम
टकमेरेआंवदा टीकासंदलकाषेंचकेमा थेपेओरहासों बरसरबिराजे
आफसरहरिजडांवदा कुंडालझलकतेहैंदरहरडुगोसमैं आवाज
बासरीकासीरीबजांवदा नीमांजरीकागलमैंकटकाछनीबनी पी
रे डुपहेवाला बीडेचबांवदा करताहैनृत्यनादर घंघरूझनकसोंत
ततततततथेईथेईथेईगतलगांवदा नैनोंकीआनतानकेअबरूकां
मांनसों पलकोंका प्रेमतीरकलेजेचुभांवदा घायलकियाहैमेरेत
ईजुसकेदसवालैं सुषदेवचरनदासकोजियमैंसमांवदा १९६ रागा
काफी मोहनबांसुरीमैंरैरोरी तामैंहोकूटैरोंनांकीनैं सरवनस
निहियोधेरोरी जबसेंबिरहबिथ्यातनदौरी परबसहैमनमेरोरी बा
कुलहोदेषनकोंधाई नैनंनसूंमगाहेरोरी स्यामसुंदरबिनकछुनसु
हावै कोईमिलावैनेरोरी सुषदेवसषीतोपैबलिजाऊं करहनिहोरो
तेरोरी चरनदासमहोरहंतुम्हारी कबसुनावोबैरोरी १९७ इतिश
बदसंपरणंसमाप्तं श्रीसुषदेवजीनमः अथशब्दालिख्यते रागकड
षा साधोब्रह्मदरियावनहींवारपार आदिओरमध्यकहूंअंतस
कैनहींनेतहीनेतबेदौंपुकारामलपरकित्तेसीबकुतलहरैंउठेंसकै
कोपायगुणहैंअपारा बिरंचमहादेवसेमीनबडुतेजहांहोयपरगट

कामीगोतमारा लासमैंबुदबुदे ऊंडउपजेंमि टेंगुरदई दिष्टजालसंतिहारा ।
छुकाछबिदेसम अतीतकामेषकरिजगेजबभागानिरषीबहारा मरजिया
पैठिआथाहपाईनहींषकाछ्यांईरहांफिरनआया गया पाला मकंमूल ।
षोयासबैमया अ चरजआपनगंवाया पालबिनसिंधओरनिरआनंद
हैआपहीआपहैनिराधारा चरनदाससुषदेवरोऊनहारलमिलेवरतहीमि ।
टगयाषाजसारा १ रागमलारवासोरठ सोगुरबिनबूहघरकौंनदिषा
वै जिंहघरआगनजलैजलमांहींयहअचरजदरसावै कामधेनजा ।
हांठाढीसोहैनैंनहायाबिनदुहुंनां धावैदूधाथोडादेवैचषैंदेषैदनां ।
पीवैंजनजगदीसपियारेगुरगमबहुतअघावैं मूरषकायरचोरआजो
गीसोवैनैकुानणावैं अमतअचवैवापरपुंहचैमहातेजकुंधारैं होय
अमरनिहचलहोयबैठैआवागवनतेवारै मेदछिपावैंतौफलपावैका
हूसैनहींकहियै वहअद्भुतिहैठौरअनंदीबड नागनसंलहियै पासा
धनकेबहुरष वारेरिषमुनिदेवतजोगी करननदेवैंबुधहरिलेवैंहो ।
यनगेरसभोगी लोभीहलकेकूंनहींदीजेकहैसुषदेवगुसांई चरनदा ।
सत्यागीबैरागीनाहिदेऊगाहबांही २ रागबिलावल औसाहोदरवेसहीजगा
कूंबिसरावै ईमांनसबूरीसांचसूंसोईबकस्याजावै जनजरऔरजिमी
नकूंदिलमैंनहींलावै फिकरफकीरीकुंबुराबहजिकरछुटावै फेफा ।
केकागुणयहीराजककरैयारा कारफकिनाअलसषघनांआनंदआगा
धा रेस्याजतबलवांनहैहरिकूंआपनावै आषरकूंसीहारहीनिहचैकरया
वै एजरकूंधारैरहैसबसूंनीचा सुषदेवकहीचरनदाससूंपावैपरकूंचा
३ रागबिलावल अजबफकीरीसाहिबीनागानसंपरयै प्रेमलगैजग
देसकाकुछऔरनचाहियै रावरंककूंसममानिनैंकुछआसानांहीं आ

ठपररसिमेटेरहैं आपनेमांहीं बैरप्रीतउनकेनहींनहींबादबिबा
द रहैसेजगमेंरहैंसुनैं अनहदनादा जोबोलेंतोहरिकथानहींमौं
नहीरावैं मिथ्याकटुबादुरबचनकाबकूंनहींभाषैं औरदयाधीर
सीलतानषसिषसंधारैं पांचोंचेतेबसकरैमनसूंनहिंहारे दुषसुष
दोनोंकेपरेआनंदरसावैं जहांजाएआस्थलकरैमापापबनजा
वै हरिजनहरिकेलाडुलेकोईलहैनभेवा सुषदेवकहीचरनदासस्
करात्तिनकीसेवा ४ रागसोरठ मोकूंकछूनचहियेंराम तुमबिनसब
हीफीकेलागैंनानासुषधनधाम आठसिधनौनिधआपनीओरज
ननकूंदीजैं मैंतोयेहीमांगतहूं मनमेरोनिजकरिअपनोकीजैं सुर
गफलनकीमोहिनआसानांबैकुंठनचाहूं चरनकंवलकेराषोपा
सापट्रउरमाहिउमाहूं भक्तिनछाडूंमुक्तिनमांगूंसुनबदेवमुरारी
चरनदासकीएहीटेकहैतजूनगैलतुम्हारी ५ रागरामकली भक्त क
जनसोहरिकेमनभावै निहकामीओरप्रेमहियेमेंअनन्यभक्ति
चित्तलावैं आनदेवजोमोतीबरषैंतोनांहीपतिपावैं प्रभुकेचरनकं
वलकेऊपरभंवरभयोलिपटावै सिधनचाहेरिधनमांगेदरसनकूंल
लचावै मुकतआदिदेचाहनकोईआसासकलगवावैं रोमरोम
पुलकसबदेहीगोविंदकेगुनगावैं गदगदबानीकंठउसासैंनैनन
नीरढुरावै परमेश्वरमिलनेकीलहरेंइकआवेइकजावैं कहैंसुषदे
वचरनहींदासाहरिहकंठलगावैं ६ रागरामकली पततउधारनबिरधतु
म्हारो जोएहबातसांचहैहरिजीतोतुमहमकूंपारउतारो बालपनेऔरत
रुनअवस्थाओरबुढापेमांहीं हमसैंभईसजोतुमसूंनेकहछानीनांहीं
आनारीनपापकियेमनमानेंनषसिषऔगनधारी हिरिफिरकैसुनहमरबैं

आयो अब तुम कूं है लाज हमारी सुभकरमन को मारग छूटो आलसानि-
द्रा घेरो एक ही बात भली बन आई जग मैं कहायो तेरो चेरो दीनदयाल
गुपाल बिसंभर श्री सुषदेव गुसांई ऐसैं और पतित घन तारे चरन सरन की
गहियै बांहीं २ रागरामकली आर जन तौ जगदीस गुसांई तीर हतन सं-
तरदेषा बिसारे चरन कंवल की आस छाडि सत्ताबिस बास याही हियै धा-
र्यो तो ही तन मन लै रा कष्टरी ऋलावित सैं मन षैं चालियो है काहू सैं कछु नांहि
सरी अब चाहो सो करो प्रभु तुम ही द्वार तुम्हारे सुरतु आरी भावैं नरक सु-
रगपुं ह चावो भावैं राषो निकट हरी आपनी चाह रही नहिं कोई जब-
सं तुम्ह ली आस धरी आंन भरोसो छाड दियो है सकल बिकलस ब-
छार करी यह आपा तुम ही कूं दीयो मेरी मो मैं कछु न रही आदि पुरस
सुषदेव सुनौ जी चरन सरन पर्यौ टेर कही ८ रागगौरी सब जग भरम भु-
लानां जैसें ऊंट की पूंछ सं ऊंट बंधी ज्यों भेड चाल है जैसें षर का
सौग सं सकू कर की देषा देषी चाली तैसें कलवाजा हर भैरों सेदम
सानी काली गांव भूमिया हित करि धावैं जांय बसाही दौडे सहेस-
र वरद्ध धरत है लोग लुगार बौरे ताषैं भाव स्यां न गई बकौ उन कूं-
ल्यांय जी मा वैं टेढ चमारन कूं सिर नावैं ऊंची जात कहावैं इथ पत
पाथर सं मांगैं जा के मुष नाहिं नासा लपसी पपडी दे र करत है वह-
न ही षावै मांसा वा के आगे बकरा मारैं ताहि न हित्या जानैं लेलो
ह मा षे सं लावैं ऐसे मूढ अघ्याने कहैं कह मरे बाल क स्या वो बडी
आर बलदीजै उनके आगे बिनती करतें असतु वन हिरदा भीजै
मोपे मर डै के पगला गैं साध संत की निंद्या चेतन कं तज पा ह

नए जैसें औसा यह जग अंधा सतसंगत की ओर न फांकै भक्ति करत सुक
चावैं चरनदास सुषदेव कहत हैं क्यौं न नरक कूं जावै ९ राग गौरी ओन
रक्या सूतन की सेवा दिष्ट न आवै मुष नहीं बोलैं नां लेवा नां देवा जिं
ह कारन घी जो तज लावै बहु पकवान बनावै सो पर चैत न अधिक
चाव संवह सुपनै नाहि षावै रात जगावै भोपा गावैं कूं ठा मंड हलावै कु
टंब सहित तो हि पैरव डावै मिथ्या वचन सुनावै नाहि नरो सै जनम गंवा
वै जीवत मरत न सापा बडभागन नरदेही पाई षोवै आपने हाथा
चार बरन मैं मेला बुध का नीच ऊंच क्यौं न होई जो कोई झूठी आसा
राषै अगति जाय गासोई ता तै सतबिसवास टेक गहु भक्ति करो हरी
केरी चरनदास सुषदेव कहत है होय मुकत गत तेरी १० राग बिला
वल सब सुषदायक है हे राम रूप घन हिजानै मन मैं धारि धारि कामना
और त कूं माने एजी जो चाहे संतान कूं जपलाल बिहारी सुंदर बाल
क होय गेघर के उजियारी एजी जो चाहै त धन घनां सेवो कृष्ण मुरा
री साष सुदामां की सुनौं दई द्वि भौ अपारी एजी जगत बडाई जो चाहै
सुमरो जदुनाथा नाचु ब तूत के चेत रये जगत नाफे मा था ।। एजी
जो सिध लू वो ही चाहे को हरि हि ये ध्याना । सिध परापत होंहिं गी चू
व है पर वाना ।। एजी चरन नहीं दास सह वो चाहै मज ले भगवानां । कहै
गुरु सुषदेव जी हो मुक्ति निदानां ११ राग बिलावल । ऐन र हरि प
रताप न जानां ।। टेक ता का रन सब कु छ तिन की नां सो कर रता
ना पिछानां ।। जिह प्रताप तेरी सुंदर काया पांव सुष नासा । नैन
दिये नासूं सब सूझै पर हा पर गासा ।। जिह प्रताप न तो बिध

भोजन बस्तर भूषन धारै वाका मांहि नि होरा मानैं ताकूं नांहि संभारै ।
जिह प्रतापत भूपन भयो है भोग करै मन मानैं सुषदे ताकूं भूल गयो है ।
कर कर बहु अभिमानैं अधिकी प्यार करै माता सूं पल पल मैं सुध लेवै
तो पी शट दियैं हो तुं तही सुमरन सुरत न रैवे फिर तद्धी और न्हूण हरामा
न्या बानि सा फत तैरै चरनदास सुषदे वक हैं आजहूं चेत संवेरै १२ राग
बिहागरा औरे नर हरि को हेत न जानां उपजायो सुमरन के काजैं तैं कु
छु औरै ठानां गरभ मांहि जि नारे ह्या कीनीं होवा तैं कूं दीनां जठर अ
गन संताप लीयो है अंग संप्ररन कीनां बाहर लाय बहुत सुधली नीर
सना बिनां पैप्या यो दांत नये भोजन बहु नांनीहित संतोहि सुवायो और
दिये सुष नांना बिध के समझ देष मन मांही भूलो फिरत महा गरबा ।
यै लषो छु जानत नांही तोकारन सब कुछ प्रभु की नांव की नां ज ।
का जा जगा सौ हार पगो ही बोलै तो हिन आवैला जा आजहूं चे ।
त उलट हरिसौं ही जनम सुफल करि नाई चरनदास सुषदेव कहै ।
यो सुमरन है सुषदाई १३ राग रामकली फिर फिर मुरष जनम गं
वायो हरि की भक्ति साध की संगत गुर के चरनन मैं नहि ल्या
यो धन जोरन को हित कीनीं महल नकरन बूत धारो टेक
पकड कर नितु लीसै ई मिरै पै बीऊ लिये आतिमा होरा । कैहैं दु
ष नांनां बिध के मन मन रोगा बढा यो जीवन मरत न नहीं सु
ष पै है आवा गवन को बीज जमायो । नरम नरम चौरासी आ
यो मन न षादे है ही पाई यातन की कछु सार न जानी फिर आयो

चौरासी आई आंष उघाड समझ मन मांही हिरदे करो बिचारा ऐसा जन
म बहुर कब पैहो बिरथा षोवै जग ब्यौहारा जा तैं गेज बछाड चलो गे कोई न
संग तुम्हारे चरनदास सुषदेव कहत हैं याद करो गे बचन हमारे १४ राग राम
कली धन धन वे नर हरी सरनाए और पसुन सम सब ही नीचे परमारथ के काम
मन आये अचर जमन षा देही दुरलभ बहु भागन सै पाई ती नो पन मैं नाहि सं
भारी झूठे धंधे यो ही गंवाई बालपना षेलन मैं षोया तरुन भये संग नारी बूढा भ
ये कुटंब के सोसे षावत है अति ही दुष भारी जिन कारन तैं पाप कमाये सो ना हैं
चलहैं लारी तेरे ही सिर आन परैगी जैहौ अकेले नरक मंझारी पर न मां हि तै
बचन किये थे करि हूं भक्ति तुम्हारी सो वा के कछु और ही ढांग प्रभु सें झूठा हू
वा अनारी हो सांचा अजहूं सुमरन करि हो हिरदे ग्याल मुरारी चरनदास सुषदे
व कहत है आगे रूप तत कियै सौ पारी १४ राग कान्हरा हरि बिन कौन तुम्हा
रो मीता कुटंब संगाती स्वारथ लागे तेरी काहू के नाहिं चीता तैं प्रभु सैं आरी
सूं मुष मोड़ा झूठे लोगन सूं हित कीता और तैं अपनी आप षोंदे षा कई बा
र दुष सुष होबीता संपत मैं सब ही घिर आवैं बिपत पड़ैं आधि को दुष दी
ता मूठी बांध जनम नर लायो हाथ पसार चलै गोरीता घरि घरि स्वांग
फिरै तिन कारन कपि ज्यौं नचत ताता धीता मुये न संगी होहि तुम्हारे
बाध जलावे दैह पलीता गुरु सेवा सत संगन कीना कनक कामनी
सूं करि प्रीता चरनदास सुषदेव कहत है मरत परत हरि नाम न
लीता। १६। राग कान्हारा धनवे नर हरि दास कहायो। राम भक्ति ही ढ
ढ करि पकड़ी आन धर्म सब ही बिसरा रा आठ पहर पालन नानन जन
मे प्रेम समानाहि ये मैं झूठ न सारा। आपति रैन भोरे भोरे न कूं बस्त क पापी

पारलंघाए प्रभु हरनबिन औरन आसा अर्थधर्मकाममोच्छन
चाहे। आगैसिधफिरैंसुंगालागीनैकनूदेषेनैननु वाए। तिन
कोरिषमुनिजापकरतहैहरिजनहरिदोकसराहीगए कंची
पववीइंद्रहुमैदेवतनुदेषआधिकललचाए केहैसुषदेवच
रनहींदासाधनमाता कैसेजननजाए जीवतसोनाजगमैपाइन
नकछैहरिमांहिसमाए॥१७॥रागमारुगा। नरदामनजेंसुषपाय
है दुष मांनैओरबालानासेंजौंरानि कटनआपोहे। चेतुंस
बैंकउ पुकारेंनोतरअनपछतापेहे। जगतगठसबह्यांकीमो
मांसंगनकोईजायहै। बिनगोपालतुम्हारोकोहैहमकूदेहुब
तायहै। पकडेबांधजमसारनलोगीजबकोहिपसहायहै देष
बिचारसमझमनमांहीलेबुधिजोआधिकापाहै तौतूआवतुल
रहारिसौंहीचाल्लोजनमलिराहुहै चा चरनदासमुषदेवकह
तैहैअबपहाआधिकसपानैहै। गुरकीसरनसाधकीसंगत
प्रभुकोकीजैध्यानहै। रागलालितोना यहसबजानौजुवाठाठ।
चेतसवेरैचालौबाट जगमसरापमैंकहांभुलानौंमाठिपारीके
मोहिलुभानौं तुरकूतोवहकोसनजानौं करिहिसाबबनि
पैंकीहाट कुटंबमित्रकोईहितनतेरा आपनेस्वारथकूघेरा।
हाटानाहतेरानिहचलडेरा मुठपैंडूजैवेगाघाट चलनेकी
नतबीरनकीनी षोटीराहपाहनहीचीन्ही मजलौंकीषरची
नहिलीनी गाफिलसोवतआजनेहैंघाट मघमांहीठगाबालगा
राबहुतमुसाफरजितपरचाए औरउनकूबिषलाइपापे

मारत्तिरास्वादनकेघाट सावधानकोईहाथनल्याए बचक
रिचलेसीनिर्मैधाए उनकेछलकेपेचनपाए नैकनलागी।
तिनकीआब मनचंचलकाघोड़ाकीजै ध्यानल्याप्ताहि ८
मुषदीजि हो,पन्नसवारवाहिग्राहिलीजे सीसागरकाचौडा
काट चरन दाससुषदेवबितावे आपनोंजीनेलोसमझावै तेरेम
लेकीबातबतावे बारबारकेहेंतोडाट १९ रागबिहागरा ।
जबतेंएककरएककरिमांनां कौनकयेकोसुनंनैहारा हैकोकिंन
नपहचानां। तबकोज्ञानीज्ञानकहांहैज्ञेपकहांवहानां ध्या
नीध्येहजहांनहीपइयैतहांतपइयेध्यांनां जबकहांबंधमुकत
जुगतइयाकाकोआवनजांनां कोसेवगाओरकौनुसहायककां
हांलोनकितहोनां जबकोउपजेकौनमरतहैकौनकेरैपछ
तांनां कोहैजगतजगतकोकरतातिरगुनकोन्नस्यांनां तुमतुम
औरमैंमैंनांहीसबहीदेबिसरानां। चरनदाससुषदेवकहांहैंजो
हैसानगावानां रागमलार सतगुरसोसागरइरमारी कामक्रोधमो
लो हैं हमनेबरजितलरजतनाहइमाती तिष्णालहरजुगतदिनरा
तीलागतआनिझकजोरा। ममतापवनआधिकडरपावेकांपतहैमन
मोरा ओरमहांडरनांनांबिधकेछिनछिनमैंदुषपांगे अंतरजामी
बिनतीसुनियेयहमैंअरजसुनाजूं गुरसुषदेवसहायकरोअबधी
धीरजरहीनकोई। चरनदासकूंपारउतारोसरनतुम्हारीसोइ २१।
रागमलार बधाईसबहीबिरजसहाई। मुदितजसोबसुदेवदेवकी।
मनमैंअतिअधिकाई। पूंतजेजामहरघरमांहीकाहूभेदनजानो।

जसमत रानी बालक जनम्यौं सब नैं पौ करि मानौं घर घर मंगलचा
रमा हैं बंदन बांधा ई। नौतन बस्तर पहर पहर कै नारि सबै धिर आ ई।
करि कौतू हल मिलमिल गावत न ई द्वारै बजत दमामे भेरा। जिसुदा
एक देषा सो दीनो करी सरूपा भारी। एक आवत इक जात विदाहो
देत असीस महारी धन गोकल चल पौरव भवन धन आए हैं जगदी
सा प्यो ब्रह्मादिक ध्यान धरत हैं लषि इसनंकों ईसा डुएदल
न संत न सुष काजै लीनो है औतारा चरनदास सुषदेव कहत हैं।
जगपति सिरजन हारा २२ राग मल्लार … नंद घर कौतिगाक
रन न ब्राने जो जो बचन किए ऐ आगे सो आ पूरन कीने भक्त बछ
लक रता रगुसांई धरि आए औतारा रिद्धा कारन साधरि ष नकी
भूमि भुता रन भारा जब ब्रज मारग बढत पिर पी पस्त बत बहोत सम
दी मरजादा पर सोत मये ही बिगाड़ी सबै बबनाई। निरगुन सूं सरगु
न बपु धारै क एनिवारन काजै जोगीस्वर जिंह ध्यान लगावैं नामा।
न्नि पै आध भाजें भाग बडे जसमत रानी के दरसन दीनें आई। च
रनदास सुषदेव कहत हैं सुन मुनि करी बधाई २३ राग मल्लार ज
गतपति देष महरधर आए बाल चरित्र रही दिषला वन आनंद अ
धिक बधाए तप कीनौं पों द नंद जसोधा पिछले जनम आघाई।
बर मांगो यों हम सुत हो कै षेलौ भुवन मंझाई बचन न मोहा आया
बिराजे भगतौं बस सुषदाई जो जो चाहा सो सुषही या द्दै कुंवर क
न्हाई … प्रेम सा पमुक तको ब्रज मैं आवन कियो है सुष उपजा
यौ नर नारिन कूं दरसन आया दिषियो है जब जब प्रगटे चारौं जुग मैं स

तकरलघपरचेला चरनदाससुषदेवकहतहैं संत नहीं केहेना
२५४ रागमल्लार सषीरी आजगोकलभागबडाई दरसनदेवसुदे
वदेवकीनंदघरप्रगटेआई। मोदेंमासबदीबुधिआठेंगिरहता
ह्नत्ररनीकी। जसमतरानीगोदलिरानीनएमनैारपजीकी। मसा
ठआहावरगावेमाहींदेवलनी हरषाये आपनेंप्रपनेंबैठबिवा
ननपुहपआषिकवरषाये परयघरनीपरफुलनईहैफूलनगवा
बनसारा कालिंद्रीकुंबदानुमाहीकारिहैंनालेबिहारा किरपा
७ सागरहोयपूजागारमरजादाबंधबाधना। चरनदाससुषदेवकह
तेहैंकारनआपनेंसाधन २५ रागबसंत वहदेसअठपटाबिक
टपंथ कोइगुरमुषपुहचेहोयसंत बऊतचलेमधचावचाव।
औरनसंकहीआवआव। हमनेंपुहचतुम्हेंदेवसाय केसोजानयों
सुलमदोय बऊतकतपसीकष्टसाध बऊतकपंडतपोथीलाद
बऊतकचुंडअजटाधारा चलेओरपावकजाराजारा। बऊतक
मुंडंतपूजाराय बऊतकनेतिपिछलीसाय बऊतकजोगी
पवनजीत हरिमिलबेकीकरेंरीत कायरपाकेबाटमांहिं। कर
६ बुकआगेचलेजाहि वेकनककामनीलियेघेर सोमीतनकेप
डफेर। कोइगुनतेंसेंलुटकरिआगेजाय जहांरिधसिधलेवेंलगाय।।
सुषदेवकहैंसबडारिआस। कोप्रेमीपुहचेंचरनदास १ साधोआतम
पूजाकरेकोय जोईकरैसोइमुक्ताहोय नेहनगरमेंसेवाधारैधारा।
आठपहरकरैबारबार तनमनबचनसंभारलेव सनमुषदेषोअ
पनांदेव दयापुहपमालाबानाव छिमासीलचंदनचढाव दिपैदीन

ताहाथजोर साचेरंगभैमनकूंबोर घटघटपीतराषमांति र
सत्गावहोवैसावधांन परसनतासोईधूपदीप सुषदेवकहे पौरं रूप
मीप चरनदासहैासंगानछोर लछ्मईलषचदूंग्रोर होरागाध
मात्न ग्रादिपुरसत्रबिगातित्रबिनासीनानांकोत्मिालावैरे ग्राप॥
होग्रापग्रोरनहीकोई बहुतकरूपबनावैरे ग्रापहीग्रामोहन॥
ग्वालगवालहोमुरलीग्रानबजावैरे ग्रापहीबृजकीबनताहोकरब
नकूंदौरीग्रावैरे ग्रापहीगोपीकान्हबिराजेग्रापहीरासरचावैरोग्रं
नरध्यानहोयफिरग्रापकीग्रापहीढूंढनधावैरे ग्रापहीब्याकुल
ग्रपदेषकेलीलाप्रेमबनावैरे परगटहोयसबनसुषदेवैग्राप॥
हारंगबढावैरे गौरनपैजबषेलमिटावैग्रापग्रापरहजावैरे॥॥
कबहूंएकग्रनेंकवनहैबिधबेग्रातिमावैरे सतचितग्रानंदरूप
सदाहीसुषदेवैहासमजावैरे चरनदासहोसमजसमझकरिग्रापहीग्रा
नंदपावैरे ३ राधमल मैंतोघेंषेलूगीजाय जितमेरोपियबसे ब्या
धनुपाधनसैसेकोईग्रानंदहीग्रानंदलसै नितहीफागुनबकससहोरी
षेडिलकबहूनहीपा मुकतपदारथफ्युवापइयेग्रापासरबसषोय॥॥
जितकौंसिपाच्यौब्रह्मादिकषेलतचावहीचाद रिषमुनिदेवतषेलत रं
निसदिनकरिकरिबहुतकसावभागबडेनुनहीकेजानौवापदलागै
धाय ज्ञानध्यानकेरंगमैबूडेसोईपुहचेजाय ॥गुरसुषदेवबताईहम
कूंजबसूबाढीप्रीत चरनदासकूंग्रतिलतचायेसुनिसुनिक्षाकीरीति
रागधनाश्री साधोप्रेमनगरकेमाहिहोरीहोरही जबसूंषेषेषेला॥
हमहूंचितदेंग्रापनहूंकूंषोरही बहुतनकुलग्रोरलाजगवाईरहो

होनकोइ काम नांचनउठैंकनगावनलागैं भूलितनधनबाम बहूतन
कीमतिसारंगीहै जितकूंलागोप्रेम बङ्हूतनकूंलपनीलसुधना
हीकौंनकरैसोनेम बहूतनकूंगदगदहीबानीनैंनननीरढुरा य ।
बहूतनकूंबौरापनलागोकांकीकहीनजाय प्रेमीकीगतिप्रेमीजानैं ।
जाकैलागीहोय चरनदासगुरुनेहनगारकीसुषदेवाकहीसोय ६ राग
सोरठ तूंसदासुहागननारीहे पियकेसंगामिलीमधपीवैतातैंलागतप्या
रीहे भंवरगुफामेंभवनबनायोबिनाघिवजोतीजारीहैं सुसुषमनसेजमहासुषदा
ईजोगतजोगहुलारीहे बासिकियोकंथाचलैनपंषाटीएंडारीमारीहे आठपहर
तुम्हरेरंगरातीहमकूंमिलैनबारीहे पतिमनमानीसोपटरानीसोईरूपउज्यारीहे ।
हमचारौंजोसौतितुम्हारीतुमगुणआगेहारीहे चरनहींदासमईतोहिसेवैंलगीर
हैंनितलारीहे सुषदेवासिरछत्रहमारोसोबसमयोतुम्हारीहे ६ रागबिलवल घट ।
मेंषेललेमनषेला सकलपदारथघटकीमाहींहरिसूंहोयजुमेला घटमेंदेवल
घटमैंजातीघटमेंतीरथसारे बेगहीआवतलटघटमांहीबीतेपरमीन्हारे घट
मैंमानसरोवरसुन्नरमोताओरमराला घटमैंअंचाध्यानशबदकासोहंसो
हंमाला घटमैंबिनसूरजउजियारारीतिदिनांनहींसूझे अंमृतभोजनभोय
गलगतहैबिरलाजनकोईबूझै घटमैंपापीघटमेंधरमीघटमैंतपसीजोगी
गुनओगुनसबघटहीमांहीघटमेंबैदओररोगी रामभक्तिघटहीमें ।
उपजैघटमेंप्रेमप्रकासा सुषदेवकहैंचौथापदघटमेंपुहचैचरनहींदा
सा रागमलार चहुंदिसफिलमिलझलकनिहारा आगेपीछेदहनेबांवें
तलकपरउजियारा दिष्टपलटत्रिकुटीहोदेषोआसनपरमलगावैं। संज
मसाधेडिहआराधै। जबऐसीसिधपावै बिनदामिनचमकारबहूतहो।

सीपबिनां लड मोत्ती दीपमाति का बहुत दरसावैं जगामगा जगामगा
जोती ध्यानफलै तब नन के मांही पुरन होगतिसारी चंदन घनें सूर।
जन्मण का ज्यों सूं नरानरि या नारी पहुंतौ ध्यानप्रति हो बती पासर
धा होय तौ कीजै कहै सुषदेव चरनहीदासा सो होमसूं सुनलीजे ॥ ८ ॥ रागा
मलार सोगुरगामम गगन न यामन मेरा गगनमंडलमे निजघर कीनो पंच।
बिसै नहिं घेरा प्यास छुधा निद्रा नहिं ब्यापै अमृत चवनकीनी छुटी आ
सबासन हिं कोई जन मैं चिंतन नहिं दीनां दरसी जोत परम सुष पायो स।
बही करम जलाये पाप पुन्य दोऊ भेनां बीज जनम मरन बिसरारा आन
हद आनंद अति उपजावे कहन सकं गति सारी आति लल चावे फिर
नहीं आवे लगी लाल षसूं पारी सहस कवल दल सतगुर राजे रूचरु
चदरसन पाऊं कहै सुषदेव चरनही दासा सो बिधि तोहि बताऊं ९।
रागा बिलावल करनी की गति न्यारे रहै कथनी की न्यारे बिन करनी।
कथनी कथैं बकबादी बोरे करनी बिन कथनी इसी ज्यों ससि बिन
रजनी ।। बिन सस्तर ज्यों सूरमा सूषन बिन सजनी ज्यों पंडत कथि कथि भ
लैं बैरागा सुनावें आप कुटंब के फंद परे नांही सुर कावै बांक छुलावे पा
लनां बालक नहीं मांही बतीवइं नां जाति पै जहां करनी नांही बइंडि
मी करनी बिनां कथि कथि करि मुये संतौं कथि करिनी करी हरि की सर
हृये कहै गुरु सुषदेव जी चरनदास बिचारो करनी रहनी दिढ गहो चायी।
कथनी डारो १० रागा परज सुधारस कैसें पइये हो कूप कहा किस
वौ रहै कैसें करनहिं पैहों नेजू कित किन गागरी कितन रनें वाली हो
कैसें षुलै कपाट ही को तारनातालती हो तुम सें जानें भेद बूं आरु बहुत

कनांहींहो पीकारिकिसकारजलगौऔरस्वादबतावौहो फ
लयाका कारिदाजियैसबषोलिजनावोहो सुषदेवसूंपुछनकरै।
पहचरनंहींवासाहो।किरयाकरिकरिकीजियेमेरीपूरीआसा।
हो ११ रागपरज समझसकोईइकपावेहो गुरबिनतपतबु
झैनहींप्यासानरजावेहो बकुतमनुषहुढतफिरैअंधरेगुरसेवै
हो तिनकूंकूंमझैनहींऔरनकहादेवैहो अंधरैकंअंधरामिलाना
रीकूंनारीहो कांफलकेसैहोयगासमझैनअनारीहो गुरासिषदोऊ
राकसेराकैव्योहाराहो गगनपैसैडूबकैबैनरकमंझाराहो सुष
न देवकहेचरनदासमूंईकामनकूंराहो ग्यानमुक्तिजबपाइये
मिलैसतगुरपूराहो १२ रागमल्लहिया सुमरमनरामनामततसार
जिनजिनसुमरेसोसोतरेभौसागरसूंपार बेदपुरानऔरषटमांही
तारनकूं यहीजोग जोपिपांचोप्रेतादनिवारैअरुइंद्रिनकेभोग साध
नसंजमपूजाअरचनऔरकरैतपदांन नामसमाननफलकाहूमैं
करदेषीपहचांन जोजपकरैधरैहिरदैमैंआसासकलबिडार। तीन
लोकमेंधनधनहोवैसोनामअगमअपार सबधरमननपरधाननामहैस
बइष्टनसिरमौर तिहचेपकडरहोयाहीकूंसकलबिकलतजिदौ
र नामैंग्यानमरोहादीषैपावैब्रह्मबिचार गुरसुषदेवदियोडिढमोकों
चरनहींदासाभंभार। १३ रागमल्हार सषीरीसुनिदेषमअीमैंआई।
नसुधारानीबालकजायोयहहतोहिआनिसुनाई। नायनडोहैनेहंस
हंसबोलैघरघरकहतबधाई मषोगछाहसकलगोकलमेंबाजम
इमननमाई सुनसुनिआपसमेंमुकयानिदेनबधाईलागी भूषनबस्तर

त्तोसंभारन नरना रीरसपागो बननूर रहेगा रानदपारे अवाल्लसनीह
रषाये बडीपौत्न केआगैजा चक गा वनहीकूआपे। मेघुर जाके
बनें आंके तुमरु देहसिंगारो सा थ चलैगी जायमिलैगी हो यहैकौलगा कहि
नारो सुषदे वाकामुषदेषेगी करिहै अधिक कूलासा ऐसे सेकहि
वहस वनमिधा रामने चरनहीदासा १४ रागबिहागरा। साधो। नि
दकमित्र हमारानिंदककूनिकटे हीरायूहोंनन देऊन्यारा पाछे। नि
द्या करि अघधोवै सुनिमन मिटे बिकारा जैसे सोनाता पनआगनमें नि
रमलकरे सुनारा घनअहरनकसहीरानिबटे कोमतलषह जारा ऐसे
जाचतइ सतकू करनजागतजियारा जोगाजतजपपापकटनहि
तकरैसकलसंसारा बिनकरनीममकरमकवानसबेमिटेनिंद
कप्यारा सुधीरहोनिंदकजमांमाहीरामनहोतनसारा हमिरीनिंद्याक
रैवारामतरीभौजलपारा निंदकके चरनौंकी असुति भाषूं बारंबारा चरन
दासकहेसुनियौं साधोनिंदकसाधकभारा १५ दोहा। अचरज अलष अपा
रहेलावाकीगति नहीपाइये बहुनिषेद जोपेकरैरे अरे हेलातो जाइगा हार।
बानीथाकिबुधहपकैरे अरेहेलाअनंतेपाकिथकिजाय ब्रह्मादिकस
नकादिहूनारदथकिगुणगाय वेदथके औरव्यासहूरे अरेहेलाज्ञानीय
केअरुज्ञान संकरसेजोगीथकेकरिकरिनिरमलध्यांन बहुतककथिहो
गएरे अरेहेलाकैकनानिपटीकऊ बाचकपानीकहतहैहमनेंपायासऊ॥
पांचौरंद्रियनसोंलषैरे अरेहेलाताकूंसाचनमांनि जोजोइनसंदेखियेति
नकीनिह चैहांनि गुरसुषदेवसुनांवाईरे अरेहेलासरूचरननहीदासा
आपनेंहीपरगासमैंआपरहापरगास १६ रागबिहागरा वाबिला वल्ला

अबहम अपान गुरु सैं पाया ॥ दुबधा षोय एकता दरसी निहचल होय
रह्या या हिरदा सुध हुवा बुधि थिर मन चाह रही नहीं कोई ॥ नां कुछ सुनूं
न पर सूं बूझूं अलट पलट सब षोई ॥ समझ भई जब आनंद पाये आतम मा
आतम सूझा सूक्षम पाया सलट न मन मेरा नैंकन का हूं अमर हूं आ मैं सब कूं न मैं
सब मोहिं मैं सांच यही कर जांनां यही वही है वही यही है दूजा भाव मिटा
नो सुषदेव नैं सैं बस सु षदीनें तिरपत होय अघाया ॥ चरनदास निकसा न
हीं रंच कपर मात दरसाया ॥ १७ ॥ राग आसावरी जब सैं मन चंचल घर आ
या ॥ निरमल तन या मैं लाया ॥ सारे तीरथ ध्यान जु न्हाया निरबासी होय आन
द पाये या जग्या सुष मोडा पांचौं मई सहज बल मेरे जब इनका रस छोडा
मैं सब छूटे अबको लूटे दूजी आसन कोई सिमट सिमट रहा अपने मांही
ग सकल बिकल नहीं होई ॥ निजमन हूवा मिठ या दूजा को बैरी मीनां ॥
बंध मुक्ति का संसा नांही जनम मरन की चींता ॥ सुगुरु सुषदेव नैं व
मोहि दीया जब सूं यह गत साधी ॥ चरनदास सवा कुरर हुये छुट गए
बाद बिबादी ॥ १८ ॥ राग आसावरी ऐमन आतम पूजा कीजे जितनी
पूजा जग के मांहीं सब हून को फल लीजै ॥ जो जो देही वाकूं रचा रे तिन
मैं आप बिराजे देवल मैं देव तहै परगट आछी बिधसूं राजे तिरगुन मंवन से
माल पूजिये आनन रस हो न न पावें जैसे कूं तैसा ही परसो प्रेम अधिक ज्य
जावें ओर देवता दिष्ट न आवें धोषे कूं सिर नावें आदि सनातन रूप सदा
ही मूरष ताहि न धावें घट घट सूझे कोई यक बूझे गुर सुषदेव बतावें ॥ च
१९ रनदास यह सेवन की ये जीवन मुक्त फल पावे ॥ राग आसावरी हम तो आ
तम पूजाधारी समझ समझ करि निहचे कीनी और सब न पर मारी ओ

1326-MS.

208

सबसुखहोयजबचरनपरसगुरुदेवके वेआतमतत विचारेंकरि दरसनआतमचेरवो। ३ दोहा दुषमे टनसुषकेकरन चरनदासवेसाध ज्ञाताज्ञानबिज्ञान केदेवेंमत्ताअगाध साधमुकतिनहिंचहतहेसिधन चाहतसाध। स्वर्गलोकनहिंचहतहेजिनकामत्ताअ गाध ५ चोपई इडापिंगलासुषमनुधारै आसन बज्रनागानीचोरौ पदसअंगुलगहौबेषटचक्रलौ जै जबबोजेअनहदतूरजहांमननिजकरदीजे षेच रीमुद्रात्रिकुटीआवेअमतपीवेपरमसुषपावे मेरुडंडकूं प्रानचांलावो सुन्नसिषरजबनगरीपावो जानगरीमेंचंदनभा न पुंहचेसाधुचतुरसुजान जहांजातपातनांवनहिंनाता से तम्मयसनेहिंरोता जोगजगतयजहांनदाना तीरथबत जहांनाहन्हांना किरियाकर्मजहांनहिंपूजा मैंतूनत हैएकनदूजा जहांसाकद्यौसनहिंरात्ता एकैब्रह्मत्रय डबिधात्ता चरनदासरामकीघाटीपुंहचेगुरमतसूरा आर्छीबुध बादबडुठानेंकरनीकरैसोपूरा ६ छप्पे वैराग्यकेमध्यजोग कीजुनबिचारें आपन्यौ केलोरहेओरनामनुषनिहारो चा रबारनितकरेजापजेआराधे सुन्नमकरेआहारआगारोपतलो साधे आसनपद्मलगाएकोसीधीराषेमेर वेवीहिंपेलगापायेप तकजापकरिहेर ७ दोहा कुंभकआवप्रकारकेतिनमेंनत मएक केवलकुंभकजानिपेताकुंसाधिबिसेष ८ त्रिकुटीमें तीरथअगमतिरबेंनीजिहनाम न्हायजोगवीजुमतसपूरन

२) रामचंद मुहल्ला ऐका २) कान याजीतापुर का
२०४ ॥) वसीस्यिए वेट जगनोका २) गुला वपमने ....का

॥हांसबकाम ६ रनजात वहि जहां जाइयेत्रिकुटीतीरथ
धाम

२) चुनिमाली कदिया
२) गुमाचकोर
२) मोहरुसायणि
२) सीवुलुहारारहमतपरका
२) ईसरजालपुरका
२) स्रप्याजालापुरका गुपालका
२) कासुवरि" कुसलेका
हजु वेटाभोजाका
२)
२) गुमानिकेव्याहमदीया
२) जंगारामकेवेटकेव्याहमदिया
२) हिरा वेटा कालका
२) कोला वेटासिरिरामका
२) जुवालापाणेवाला
२) गिरधारि जगजितपुरका
२) जदुकुवनपुरका
॥) जसावादेविराहमपरका
२) उदाभोजपुरका
२) चंदनगुमानीका
२) गीरधारी मुहल्ला" का
२) रए वालुहार" देवेनका
२) रायसीबरुहकिका
२) दजुलुहारका
२) काहामगलोर
२) विहारिनथुदावनी
६) व्यहामदिया चौल २)
वेटारामवकासका
२) मोहनामाडे
२)
.. धला लवेटासदका
जगजीतपुरका
२) कलामीसतरिक
२) लेवावेटाचेताका
२) ननसीवम
२) पारुनाइक
२) नि .. दरजमालपुर
२) नोवलकेजालापुर ..
२) मानीसुमारका
२) .. मसुखजगजीत
पुरका

